कीर्तन
रस-स्वरूप

कीर्तन रस-स्वरूप

श्री श्री आनन्दमयी संघ

विषय-सूची

निवेदन

श्रीश्रीमाँ की असीम कृपा तथा भक्तवृन्दों के एकान्त आग्रह से "कीर्त्तन रस-स्वरूप" ग्रन्थ प्रकाशित किया गया। इस बृहत् और विचित्र संकलन में अनेक दुष्प्राप्य तथा लुप्त-प्राय उत्कृष्ट संगीतों का संग्रह किया गया है। इसके सिवाय और भी कुछ सङ्गीत हैं जो किसी दूसरे स्थान में नहीं मिलते और मातृभक्तों के पास जो अमूल्य हैं—जैसे, श्रीश्रीमाँ के मुख के स्वतःस्फूर्त सङ्गीत, श्रीश्रीमाँ के मुखसे गीत तथा नानीजी के द्वारा रचित सङ्गीत। माँ प्रायः कहा करती हैं,—"तुम्हारे इस शरीर के सभी अस्तव्यस्त हैं, नहीं देखते!" माँ के इस "अस्तव्यस्त" ख्याल ने वाङ्मयी मूर्त्ति प्राप्त कर ली है—माँ के मुख के इन स्वतःस्फूर्त्त संगीतों के माध्यम से।

लेखक अपने लिखित ग्रन्थ में तथा गायक अपने रचित और गीत संगीत में निज हृदय का भाव संचारित कर देते हैं। इसी कारण जो उनका ग्रन्थ पढ़ता है या उनके संगीत गाता है, उसके मन में लेखक और गायक का भाव उत्पन्न हो जाता है। माँ के द्वारा रचित तथा गीत संगीतों में भी माँ ने अपना भाव संचारित कर दिया है जो मातृभक्त उन संगीतों को गाता है उसके हृदय में वह भाव उत्पन्न होने से उसका शरीर-मन रोमांचित तथा पुलकित हो उठता है।

अनेक प्राचीन मन्त्र-साधकों के संगीत भी इस ग्रन्थ में सम्मिलित कर दिये गये हैं। हिन्दी बंगला दोनों प्रकार के सङ्गीत हैं। बंगला शब्दों के उच्चारण के कुछ नियम ग्रन्थ के प्रथमांश की पादटीका में दिये गये हैं। इससे बंगला संगीत गाने में सहायता होगी।

श्रीश्रीमाँ के आश्रमों में कुछ स्तुतियाँ नित्य पढ़ी जाती हैं वे तथा साथ-साथ देव-देवियों के अनेक उत्तम स्तुतियाँ भी इस ग्रन्थ में सम्मिलित कर दी गयी हैं।

"कीर्त्तन रस-स्वरूप" सङ्कलन की परिकल्पना, प्रस्तुति तथा नामकरण हुआ था स्वयं माँ की प्रेरणा से। इस ग्रन्थ में सन्निवेशित संगीत गाकर, सुनकर और पढ़कर रसास्वादन कर सकने से मातृ-स्मृति जाग उठती है तथा मातृ-संग का फल मिलता है। इसी रसास्वादन के सुयोग को सहजलभ्य कर देने के उद्देश्य से ही यह "कीर्तन रस-स्वरूप" पुस्तक प्रकाशित कर दी गयी।

नवरात्र प्रतिपदा
सितम्बर, १९६० ई० }

प्रकाशक

श्री श्री माँ के श्रीमुख के संगीत

(इतिहास सहित)

१

हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल।

दादाजी के मुख से माँ ने सुना था। पश्चात् अपने ख्याल से माँ वही हरिनाम लेती थीं। लेते लेते वह कभी "हरि ॐ" रूप से प्रकट होता था। माँ हरिनाम लेती थीं—यह बात सुनकर अनेक लोग इसी हरिनाम का कीर्तन करते हैं। हम लोग भी अपने नित्य कीर्तन में यह नाम करते हैं।

२

हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे॥

माँ ने अपने पित्रालय में बचपन में यह नाम सुना था। बाद में अपने ख्याल से समय समय पर यह नाम करती थीं। यह बात सुनकर बहुत लोग यह नाम भी करते हैं।

३

जय शिव शंकर बम बम हर हर।

भोलानाथजी* के शैव-शाक्त होने के कारण माँ से यह नाम करने

---

* इनका कौलिक नाम श्रीरमणीमोहन चक्रवर्ती था। भोलानाथ नाम से परवर्ती समय में परिचित हुए थे।

के लिए कहने पर माँ के ख्याल से वही नाम होने लगा। इसलिए हमारे नित्य कीर्तन में भी यह नाम किया जाता है।

४

हरे मुरारे मधुकैटभारे, गोपाल गोविन्द मुकुन्द शौरे।

एक बार पौष-संक्रांति के दिन कीर्तन के समय भावावस्था में श्री श्री माँ के मुख से यह नाम बहुतों ने सुना था। कोई कोई इस नाम का भी कीर्तन करते हैं।

५

माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ।

भाईजी (स्व० ज्योतिषचन्द्र राय) ने स्वयं ही 'माँ' नाम का प्रचार किया था। अनन्तर भाईजी ने सुना, बहुत पहले एक दिन शक्ति-पूजा के किसी उत्सव के समय यह नाम भी माँ के मुख से निकला था। परन्तु बहुतों को यह ज्ञात नहीं है।

६

ॐ माँ

शाहबाग में एक बार भावावस्था में श्री श्री माँ के मुख से यह नाम निकला था। सुर से 'माँ' 'माँ' नाम करते करते यह निकल आया था।

७

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम।
सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम॥

सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम।
सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम ॥
रामराम रामराम रामराम रामराम।
राम राम राम राम राम राम राम राम ॥
राम राम राम राम.............

यह नामकीर्तन माँ के मुख से सुनकर हम में से कोई कोई इस नाम का जप और कीर्तन करते हैं।

८

कृष्ण कन्हैया बंशी बजैया गैया चरैया।
हा रे रे रे........

एक दिन माँ तारापीठ में अर्ध-शायित अवस्था में थीं। उस समय सुबह के ७ या ८ बजे होंगे। एक अलौकिक प्रकाश के भीतर माँ विराजमान थीं। अगणित स्त्री-पुरुष – बालक-वृद्ध, युवक-युवतियाँ, प्रौढ़-पौढ़ाएँ — किसी किसी के हाथ में झंडा, ध्वजा आदि सहित सबके सब आकुल भाव से मत्त होकर हिलते-डोलते, महाध्वनि करते हुए अलौकिक हृदयस्पर्शी स्वर में गगन-पवन आप्लुत करके दीर्घ पथ पर सीमाहीन एक-धारा में महान भाव की गति से यह कीर्तन गाते-गाते धीरे-धीरे चलते जा रहे थे -- इस प्रकार की बात ही माँ के श्रीमुख से सुनी गयी है।

उपरोक्त पद के साथ निम्नलिखित पदों को भी माँ मिला मिला कर गाया करती हैं—

कृष्ण कन्हैया मेरे नैया।
प्राण कन्हैया पार लगैया।
हा कन्हैया प्राण कन्हैया।

आओ कन्हैया आओ कन्हैया।
आओ मेरे नैया प्राण कन्हैया।
कृष्ण कानाई कहाँ नाई।
मेरे कानाई कहाँ नाई।
कानाई कानाई कहाँ नाई।
प्राण गोपाल ब्रह्म गोपाल।
गोपाल गोपाल गोपाल गोपाल।
प्राण गोपाल ब्रह्म गोपाल।
जय नन्दलाल यशोदा दुलाल।
प्रेम गोपाल ब्रह्म गोपाल।
ब्रजेर राखाल जय नन्दलाल।
गोविन्द गोपाल गोविन्द गोपाल।
प्राण गोपाल हा गोपाल।
हा गोपाल प्राण गोपाल।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण।
प्राण कृष्ण हा कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण।
कृष्ण कृष्ण...........

९

हरि हरि गाये जा, प्रभु को रिझाये जा।
प्रेम हरि नाम को, लिये जा भाई दिये जा॥

एक बार इसके कुछ पद माँ ने सुने थे। बाद में एक बार माँ शिलाँग पहाड़ पर मोटर से जा रही थीं। रास्ते में मोटर रुक जाने से माँ थोड़ा पैदल चलते-चलते इन पदों को कीर्तन के रूप में मिला-मिला कर अपने

सुर से अपने ही मन में गा रही थीं। विभु ने इस कीर्तन को सुर के साथ लिख रखा है।

१०

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे।
हे नाथ नारायण वासुदेव॥

इस प्रसंग में माँ ने कहा—"एक बार मथुरा में रात के लगभग १२ बजे, मान लो, जैसे कोई सरस सुकण्ठ एक पक्षी गा गा कर उड़ते चलते रहने पर, धीरे-धीरे गली-कुचों में ऊपर उठकर बहुत दूर चले जाने पर जैसे—वह पक्षी कौन है? तुम्हारे प्राणों के प्राण, प्राण-पक्षी, वही ब्रह्मगोपाल, आत्मा जो कुछ कहते हो। शब्द के साथ ही साथ जल बरफ की तरह विग्रह। वह विग्रह शून्य पर कदम रखते हुए विद्युत-गति से सुन्दर अंगभंगि का गठन लेकर नादध्वनि के लय की तरह बहुत दूर जा गायब हो गया।" साथ का एक मनुष्य बोल उठा—"कैसी सुकण्ठ मधुर ध्वनि! ऐसी तो कभी सुनी नहीं है। पक्षी तो नहीं—अदृश्य में किसी के सुकण्ठ से घूम-फिर कर गाने पर जैसे—"

११

हे गोविन्द माधव, जगन्नाथ जगद्बन्धु।
दीननाथ दीनबन्धु, जगन्नाथ जगद्बन्धु॥
पतितपावन करुणासिन्धु, दीननाथ दीनबन्धु।
पतितोद्धारण प्रेमसिन्धु, दीनदयाल दीनबन्धु॥

एक बार प्रयाग के अर्धकुम्भ में डा० पन्नालालजी ने त्रिवेणी-तट पर माँ तथा माँ के भक्तों को लेकर निवास करने के उद्देश्य से तम्बू और

झोपड़ी लगायी थी। वह जब मोटर में बिठा कर माँ को अपने तम्बू में लिये जारहे थे तब माँ मोटर में बैठे-बैठे ही गुनगुनाते हुए अपने भाव में उन पदों को मिला-मिला कर अपने सुर में गाने लगीं। हमने उन पदों को लिख रखा है।

१२

जय गंगाधर शिरोपर, परिधाने बाघाम्बर।
देव देव महादेव, महादेव देव देव॥
स्वमम्भू विश्वनाथ, हे नाथ विश्वनाथ।
हे नाथ विश्वनाथ, हा नाथ विश्वनाथ॥

पूर्वोक्त बार ही (अर्धकुम्भ के समय) एक दिन माँ यमुना के ऊपर से नाव में चलते-चलते संगम की ओर जा रही थीं। संगम में पहुँचने के पहले ही माँ अपने मन से पहले की दो पंक्तियों को मिला-मिला कर अपने ही सुर में गुनगुनाते हुए गा रही थीं। विभु उसी सुर में सुर मिला कर ऊँचे स्वर से सबको लेकर गाने लगा। माँ तो कहती हैं— "ऐसा-वैसा जो कुछ हो जाय, बस।"

द्वितीय २ पंक्तियों के पदों को विशेष भाव और सुर से एक बार काशी में शिवरात्रि के दिन माँ ने मिला-मिला कर बहुत देर तक कीर्तन के रूप में गया था।

१३

आओ मेरे सलोना छलिया रे, वनमाली रे।
आओ मेरे सलोना छलिया रे, वनवारी रे॥

सोलन के राजा श्रीयुक्त दुर्गा सिंह (योगी भाई) ने शिमले में एक

नया मकान बनवाया है। वह माँ को आदर के साथ उस मकान में ले गये थे। उसके भीतर एक दिन सुबह ७।८ बजे तक माँ अर्धशायित अवस्था में थीं। बगल के कमरे में रह कर मुझे कुछ कीर्तन की ध्वनि सुनाई पड़ी। झट मैं वहाँ पहुँच गयी। देखा, माँ अपने भाव में लेटी हैं। माँ न जाने कैसे अपूर्व और अवर्णनीय भाव और सुर से गा रही थीं। मैं उस हृदयस्पर्शी सुर को सुनते-सुनते सिहरित, पुलकित तथा मन्त्रमुग्ध हो गयी। आँखों में आँसू आ गये। पद, सुर और भाव से वह स्थान किस प्रकार अलौकिक भाव से पूर्ण हो गया था वह अवर्णनीय है। कुछ क्षणों के अनन्तर माँ ने विभु को इशारे से बुलाया। माँ उस समय बात भी नहीं कर रही थीं। नेत्र अर्धनिमिलित थे। विभु के आने पर माँ ने उस सुर को पकड़ रखने के लिए इशारा किया। इस समय पकड़ न रखने से फिर पकड़ा नहीं जा सकेगा, अप्रकट हो जायगा—इशारे से इसे भी समझा दिया। मानो विशेष किसी का प्रकाश है। शायद वह चले जायँ, इसीलिए मानो उन्हें आदर और आग्रह से ग्रहण करने के लिए इशारा किया। विभु बहुत आग्रह से उस सुर को पकड़ने की चेष्टा करने लगा और उस सुर और पदों को कुछ विशेष भाव से पकड़ भी लिया। बाद में माँ ने कहा था—"तुम एकान्त में बैठ कर बीच-बीच में उसे गाने की चेष्टा करना।"

अब दिखाई पड़ता है, कभी लोगों के सामने जभी वह गाने लगता है उन मामूली पदों को भी ठीक ढंग से नहीं गा पाता—न जाने उसे कैसा एक भाव आ जाता है। भीतर से मरोड़ कर आँखों में आँसू आ जाते हैं। गला रूँध कर भीतर से काँपते हुए रुलाई आ जाती है।

इस प्रसंग में एक बार माँ ने कहा था—"कीर्तन और ध्वनि जब स्वयं-प्रकाश, तब जल जैसा बरफ, वैसा ही ये शब्द ताल, लय, सुर और भाव के साथ श्री राधा-विग्रह स्वयं ही आकुल, आप्लुत-स्वरूप में जाग्रत है।"

१४

हे पितः, हे हित, हे ब्रह्मतत्त्वम्।
हे पितः, हे हित, हे ब्रह्मभूतम्।
हे पितः, हे हित, हे ब्रह्मस्वरूपम्॥

काशी में सर्व प्रथम संयम-व्रत हो रहा था। उस समय सुबह ८ बजे से ६ बजे तक मौन होता था। एक दिन माँ अर्धशायित भाव से मौन धारण किये थीं। माँ देख रही थीं—माँ के सामने दक्षिण-मुखी होकर बैठा है ४।५ वर्ष का एक बालक। बालक के सिर पर लम्बे-लम्बे केश हैं। वह बादामी रंग का कपड़ा पहने हुए है और उन पदों को गा रहा है। माँ मौन का ध्यान समाप्त होने पर उन पदों को गाने लगीं। विभु कीर्तन आरम्भ करते ही देखता है कि माँ उसी कीर्तन को गा रही हैं।

उस दिन से हर साल संयम-सप्ताह के मौन-भंग के बाद इस पद को गाने के लिए माँ ने कह दिया, दूसरे समय गाने से मना कर दिया। इसी कारण दूसरे समय यह पद गाया नहीं जाता।

इस पद का अन्तिम "ब्रह्मस्वरूपम्" शब्द अस्पष्ट होने के कारण बाद में माँ ने उसे स्पष्ट कर दिया था।

१५

जपो नाम अविराम प्राणाराम प्राणाराम।
कृष्ण नाम जपो राम अविराम प्राणाराम।
राधाकृष्ण सीताराम शिवदुर्गा कालीनाम।
जपो नाम अविराम प्राणाराम प्राणाराम।

जपो नाम प्राणाराम राम राम राम राम ।
प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम ॥

माँ वृन्दावन में हरिकुज में थीं। एक दिन सुबह डा० पन्नालालजी माँ के पास बैठ कर जप कर रहे थे। डा० पन्नालालजी की ओर देखते हुए माँ इन पदों को अपने भाव में सुर मिल-मिला कर गा रही थीं। विभु इस कीर्तन को माँ के साथ-साथ कभी-कभी गाया करता है।

१६

क्या करूँ, कैसे करूँ, कैसे भोग लगाया करूँ ?
सब ही तो तू ही तू है, कैसे करूँ, क्या करूँ ?

पूर्वोक्त घटना के कुछ दिन बाद ही माँ हरिकुंज की कुटिया में बैठे अपने भाव में विभोर होकर सांसारिक दृष्टि से परे रहकर देख और सुन रही हैं। एक स्थान में पूजा के सामान, भोग आदि लेकर बैठे महाप्रभु की राधामाई नाम की एक वृद्धा भक्तिन व्याकुल भाव से भगवान के लिए क्रन्दन कर रही हैं तथा पूजा करने की चेष्टा कर रही हैं। और ऊँचे स्वर से गा रही हैं—"क्या करूँ"······आदि। वृद्धा केवल गा रही हैं ऐसी बात नहीं, मानो प्राण-मन सौंप कर गद्‌गद् भाव से भगवान के चरणों में अपने को लुटा दे रही हैं। उस समय मानो उन्हें किसी ओर का ख्याल ही नहीं है।

इस स्थान में भी मानो एक दिव्य प्रकाश है! माँ हमें जिस प्रकार देखती हैं उसी प्रकार विविध भाव-भंगियों से न मालूम और भी क्या क्या दृश्य-अदृश्य की बातें बतलाया करती हैं। माँ कहती हैं—"तुम लोग कहते न हो कि —'यत्र यत्र नेत्र हेरे तत्र तत्र कृष्ण स्फुरे।' पर तुम लोग

स्मरण रखना—उस अप्राकृत लीला में विविध भाव-भंगियों से दृश्य और अदृश्य में, अनेक रूप अरूप में वह स्वयं ही वही है। वही तो है।"

इस प्रसंग में निम्नलिखित घटना उल्लेखनीय है। एक दिन माँ काशी में सत्संग में बैठी थीं। नारायण स्वामी ने पूछा—"माँ, सुना अबकी कोई एक आदमी वृन्दावन में अपने शरीर में आग लगा कर यमुना के जल में कूद पड़ा था। असली घटना क्या है माँ?"

उत्तर में माँ ने कहा—"सुना एक बुड्ढा अपनी पत्नी के साथ ६।७ वर्षों से वृन्दावन में रहकर साधन-भजन कर रहा था। उसका लड़का ग्वालियर में काम करता है। उस बूढ़े का चेहरा, गत बार तुम्हारे आश्रम में शुक्राचार्य नाम से जो आदमी श्रीमद्भागवत का पाठ करने आये थे बहुत कुछ उन्हीं के ऐसा था। उसका शरीर खूब गठीला था। उसके गुरुजी वृन्दावन में ही रहते हैं। वह आदमी बड़ी निष्ठा के साथ साधन भजन करता था। यमुना के तीर तीर में ही भजन कर, लेट-बैठ कर उसका समय बीतता था। किसी से वह मेल-जोल नहीं रखता था, अपने ही भाव में रहता था। सुना, यमुना के भीतर ही एक राधागोविन्द विग्रह पाया है। उसी की पूजा करता और अपने भाव में रहता था।

"उस आदमी ने शायद किसी से सुना था कि वृन्दावन का रजः (धूल) खाना अच्छा है। इस लिए वहाँ का रजः खाते-खाते वह कठिन रोग से सित हो गया। बाद में इलाज करा कर फिर अच्छा भी हो गया था। तब अकसर वह कहा करता था—'यमुना मैया, अब ले ले।' यमुना के तीर पर भी वह इसी भाव से पड़ा रहता था।

"और भी सुनाई पड़ा कि, वह एक दिन घी, मिट्टी का तेल और दियासलाई लेकर यमुना के तीर पहुँचा। वहाँ जाकर क्या किया? अपने कपड़ों में घी-तेल डाल कर दियासलाई से अपने शरीर में आग लगा दी।

उसके बाद जब आग खूब जल उठी तो यमुना में कूद पड़ा। आवाज सुनकर कुछ लोग वहाँ दौड़ आये और उसे जल से ऊपर उठा कर तीर के बालू पर लिटा दिया। सारे शरीर में जलने के घाव हो गये थे। उनमें बालू लगने से कैसा भयंकर हो गया था, वह तुम समझ ही सकते हो।

"इस घटना के बाद से वह साधु बाबा इस शरीर (माँ) को देखने के लिए बहुत व्याकुल हो पड़ा और इस शरीर का नाम ले लेकर पुकारने लगा।

"इधर यह शरीर भी उस समय बहुत ठीक नहीं था। हरिबाबा के सत्संग में सदा ही समय पर जाया जाता था। परन्तु उस समय यह शरीर अच्छा न रहने से बाबा के यहाँ और उड़िया बाबा के आश्रम में हर प्रोग्राम में जाना नहीं होता था।

"इतने में एक दिन उसका लड़का आया और अपने बाप की हालत बता कर बोला कि वह माँ का दर्शन करना चाहता है। उसके बाद उस वृद्ध की पत्नी तथा उसकी एक पड़ोसिन दोनों ने आकर बहुत विस्तार के साथ वह घटना बतायी और इस शरीर को वहाँ ले जाने के लिए बहुत आग्रह प्रकट किया। तथा और भी कहा कि वह नाम लेकर 'माँ माँ' कह कर पुकार रहा है। इसके बाद उस स्त्री के लड़के ने भी आकर खबर दी। इस तरह इस शरीर को ले जाने के लिए वे आकर बैठे रहते थे।

"एक दिन उन्हें बता दिया गया—'अच्छा देखा जाय, क्या किया जा सकता है।' फिर एक दिन आकर उन लोगों ने जाने के लिए कहा। अबकी उन्हें बता दिया गया—'अच्छा तीसरे पहर आना।'

"एकाएक उस दिन दुपहर से ही शरीर कुछ स्वाभाविक स्थिति में आया। तीसरे पहर के सत्संग में हरिबाबा के यहाँ जाया गया। वे शायद आशा भी नहीं करते थे कि यह शरीर वहाँ जायगा। जाते ही कहा गया—'दोपहर से यह शरीर चलने लायक हो गया है, इसलिए आया गया।' वहाँ का सत्संग समाप्त होने पर आश्रम में आकर कुछ क्षण बाद परमानन्द से मैंने कहा—'चलो उस बाबा को देख आवें।'

"वे वृन्दावन के एक बहुत पुराने मन्दिर में रहते थे। वे जानते थे कि यह शरीर किसी गृहस्थ के घर नहीं जाता। हरिबाबा के सत्संग से लौटती मोटर में ही वहाँ जाने की बात हो रही थी और कोई कह रहा था कि रास्ते से योगेन बाबा को भी ले लिया जाय क्योंकि वह यहाँ का बहुत पुराने निवासी हैं। शहर के बहुत से मकानों तथा मन्दिरों को वह जानते हैं। पर चलते समय वह भी यहाँ आ पहुँचा। वह भी साथ चला।

"वहाँ पहुँचने पर दिखाई पड़ा, बाबा को ऊपर से नीचे उतारा जा रहा है। इतने कष्ट के भीतर भी चेहरे पर किसी प्रकार के क्लेश का चिह्न नहीं दिखाई पड़ा।

"उसे जब बताया गया कि—'बाबा मैं आयी हूँ।' तब उसने आँखें खोलकर देखा और हाथ उठाया। इस शरीर ने उसके सिर और छाती में हाथ दिया। शरीर के किसी-किसी स्थान से खून निकाल रहा था। थोड़ी देर वहाँ रहकर पुनः हरिबाबा के कीर्तन में आया गया। इसके दूसरे दिन ही सुनाई पड़ा कि वह श्रीधाम प्राप्त हो गया है।"

[जो वृद्धा "क्या करूँ········" आदि गा रही थी, उसका चेहरा बहुत कुछ उसी आदमी की पत्नी की तरह था।]

१७

श्री कृष्ण का द्वादश-अक्षर मन्त्र।

श्री श्री पूज्य हरिबाबा महाराजजी की महती इच्छा से एक दिन माँ ने द्वादश अक्षर मन्त्र गाकर सुनाया। बाद में कथित किसी समय माँ अपने ख्याल से इस मन्त्र का कीर्तन करती थीं। उस समय से कोई-कोई माँ के श्रीमुख से सुनकर नित्य इसका जप भी करते हैं। माँ ने यह भी कह दिया था—"तुमलोग स्वयं इस मन्त्र का उच्चारण कर कीर्तन न करना। किसी विशेष महात्मा के मुख से सुनने पर साथ-साथ कीर्तन करना। जप करने में निषेध नहीं है।

१८

ओहे वृन्दावन श्याम, ओहे अखिलपति श्याम।
हे विट्ठल विट्ठल विट्ठल पाण्डुरंग हरि।
हे पाण्डुरंग हरि हे पाण्डुरंग हरि।
हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि।
हा विट्ठल विट्ठल विट्ठल पाण्डुरंग हरि॥

वृन्दावन धाम। माँ फूस की झोपड़ी में लेटी हैं। माँ के पास अदृश्य रूप से कोई गा रहे हैं।

१९

गौरीशंकर सीताराम, व्रजवासी राधेश्याम।

बचपन में इसे श्री श्री माँ लोगों के मुख से सुनकर गाया करत थीं।

२०

नाम करे जा, नाम करे जा, नाम करे जा।
हरि नाम करे जा, सीताराम नाम करे जा।
राम नाम करे जा, शिवदुर्गा नाम करे जा।
शिवदुर्गा काली नाम करे जा, राधाकृष्ण नाम करे जा।
हरि हर नाम करे जा।

नाम करे जा, नाम करे जा, नाम करे जा।
नाम करे जा, नाम करे जा, नाम करे जा॥

१९५८ ई० के मई महीने में माँ एक दिन सन्ध्या के पूर्व राँची आश्रम के काली मन्दिर के दरवाजे के सामने खड़ी होकर कुछ क्षण आरती देख रही थीं। उस समय अपने भाव से लोगों की ओट में काली माँ की ओर देखकर इस प्रकार की बातें माँ के मुख से निकली थीं—"तुम लोकालय में अब तक प्रतिष्ठित थीं। विशेष कुछ तो बताया नहीं।" परन्तु माँ ने इस विषय में किसी से कुछ कहा नहीं था। घटनाचक्र से इन बातों का आशय बाद में प्रकट हुआ।

राँची आश्रम की काली-मूर्ति स्थापना का तथा और भी कुछ प्रत्यक्ष कहानी का इतिहास भक्तों में कोई-कोई जानते हैं। इसलिए यहाँ उसकी पुनरुक्ति अनावश्यक है। वह मकान पहले वास-गृह के रूप में बनाया गया था। इस कारण यद्यपि बाद में छोटी मन्दिर-चूड़ा छत के बीच में ही बनायी गयी है किन्तु रास्ते से अपरिचित व्यक्तियों के निकट मन्दिर का अस्तित्व ही नहीं प्रतीत होता। ऐसी मनोमुग्धकारी मूर्ति भीतर स्थापित है उसे बहुत लोग ही नहीं जानते।

उस दिन एक भद्र पुरुष ने आकर माँ से बातें कीं। कुछ विशेष काम और बात के लिए उन्हें कई दिनों बाद आने को कह दिया गया। निर्दिष्ट दिन पति-पत्नी दोनों की माँ के साथ सुबह काम और बात की बात हो गयी। भोजन के बाद उस भद्र पुरुष की पत्नी के 'और भी कुछ बात है' माँ से कहने पर माँ ने उनसे काली मन्दिर की गली में जा प्रतीक्षा करने के लिए कहा। उन दिनों उस गली में माँ प्रतिदिन ही तीसरे पहर चार बजे तक विश्राम लेती थीं। थोड़ी देर बाद माँ वहाँ बात करने के लिए गयीं। पत्नी से बातें समाप्त होने पर उनके पति ने भी आकर माँ से भेंट की। उनकी सारी बातें खतम होने पर भी दोनों ही बैठ रहे।

इस समय मा ने कहा—"माँ काली की मूर्ति बहुत सुन्दर है न ? लोग कहते हैं दर्शन से आकर्षण होता है। परन्तु वह जहाँ बैठी हैं खुला प्रकाश न रहने से अच्छा दर्शन भी नहीं होता। वह जैसा दर्शन देंगी। जो करें ठीक ही है।"

इस प्रकार की बात उन्हें मानो अच्छी तरह सुनाई नहीं पड़ी। माँ ने देखा, कुछ कहने का भाव है। इतने में भद्र पुरुष ने माँ से कहा—"माँ, मेरे एक मित्र की विशेष बात है।"

कहा—"उस मित्र का बचपन पूर्वी बंगाल में बीता। जब बरिसाल में थे तब उनके मकान के सामने ही एक छप्पर के घर में काली माँ का मन्दिर था। भद्र पुरुष प्रतिदिन नींद से उठकर दरवाजा खोलते ही काली माँ का दर्शन पाते थे। पाकिस्तान हो जाने के बाद वे अपना मकान छोड़कर सपरिवार राँची में आ निवास कर रहे हैं। काली माँ के नित्य दर्शन से वंचित होने से उनके मन में बहुत दुःख हुआ। बचपन से ही उन्होंने मन में ऐसा शुद्ध संकल्प कर रखा था कि, भविष्य में हालत सुधर जाने पर अपना मकान बनावा कर उसके सामने मन्दिर बनाकर उसमें काली माता को स्थापित करेंगे। परन्तु उनका वह शुद्ध संकल्प अभी तक कार्यरूप में परिणत नहीं हुआ। गत वैशाख मास में एक दिन रात को उन्होंने स्वप्न में देखा—मानो उन्होंने मन्दिर बनाने का कार्य आरम्भ कर दिया है। मन्दिर में काली माता को स्थापित करने की परिकल्पना तथा आयोजना कर रहे हैं। ऐसे समय स्वप्न में वाणी सुनी कि काली माँ कह रही हैं—'मैं तो यही हूँ—आनन्दमयी माँ के आश्रम में।' इस प्रकार की बात सुनने के साथ-साथ स्वप्न के दृष्टि-पट पर राँची का आश्रम और उसके आस-पास के सब कुछ उनके सामने स्पष्ट भासित होने लगा। वह स्वप्न में हो कातर भाव से काली माता को लक्ष्य कर बोल उठे—'तो क्या माँ तुम क्षण भर के लिए भी मेरे यहाँ न आओगी ?' स्वप्न टूट गया। परन्तु उनके मन में कुछ दुःख का भाव छा गया।"

इस घटना की बात सुनकर माँ ने भद्र पुरुष से कहा—"अपने मित्र को कल ले आना।" फिर हँस कर माँ ने कहा—"जिसने माँ से बातें की हैं सभी उसका दर्शन करेंगे।" भद्र पुरुष ने कहा—"वह बात प्राइवेट है।" माँ ने कहा—"उन्हें कहना, इस शरीर से कहने में कोई हानि नहीं है।" माँ के राँची आने पर इस स्वप्न की बात माँ से कहने की इच्छा उनमें पहले ही थी।

दूसरे दिन रात को वह सज्जन माँ के पास आये और सबके सामने उस घटना को और भी स्पष्ट रूप से बताया। छलछलाते नेत्रों से माँ की ओर इकटक देखते हुए उस सज्जन ने पूछा—"तो मैं क्या करूँगा माँ?" माँ ने कहा—"देखते जाओ, क्या होता है। तुम मन्दिर की चेष्टा करो। उसके बाद जो हो जाय। वह जो करें।"

इस घटना को सुन लेने पर सभी ने सोचा, उस दिन सन्ध्या आरती के समय माँ के ख्याल से जो बातें निकली थीं उसके बाद ही मानो काली माता का लोकालय में आने की खबर प्रकट हुई है।

राँची आश्रम की काली माता के विषय में हाल की और भी एक अलौकिक घटना माँ के श्रीमुख से सुनने का सौभाग्य हमें हुआ है। पूर्वोक्त घटना के दूसरे दिन माँ दुपहर को मन्दिर की गली में विश्राम कर रही थीं। ऐसे समय माँ ने देखा कि मन्दिर के दरवाजे के सामने एक ग्रामीण बालक सारे अंगों में धूल-मिट्टी पोते और आधे नंगे शरीर में तन्मय होकर ये दोनों पद गा रहा है—

नाम करे जा, नाम करे जा, नाम करे जा।
नामे रुचि भावे पुष्टि हबे रे (तुइ) नाम करे जा॥

माँ ने बाद में बताया था—उस दिन भी लेटे-लेटे माँ काली माता के उद्देश्य से अपने ख्याल में कह रही थीं—"कल तो वैसा किया। आज भी कुछ करोगी क्या?" उस बात के प्रसंग में माँ के ख्याल में आया था—"गोपाल भी तो मन्दिर में हैं।"

श्री श्री माँ के स्वतःस्फूर्त संगीत

१

जीवेर भाग्ये अवैराग्ये परम पद मिलवे ना रे।
(ताइ) करो सार एक, वैराग्य-विवेक, परिहरि वासनारे॥*
वैराग्येर मात्रा कता, बुझवि काजे होले रतो,
(ओरे) तखन देखवि अविरतो कान दिके तोर मन टाने रे॥
त्यजिये सकल कर्म, आचरो मानव धर्म,
(ओरे) नित्य निर्विकार ब्रह्म चिन्त चित्ते बारे बारे॥
बाहिर होते डाकि मन, हृदे राखा अनुक्षण,†
(करि) ब्रह्म भेलाय आरोहण तरह भव सागरे॥
होले अहंकार हतो, सब द्वन्द्व निवारितो।
(देखवि) स्वभाव हइबे स्थितो ज्ञेय सत्य परात्परे॥

(१३४२ सन, फाल्गुन मास। विन्ध्याचल।)

---

* बंगला के स का उच्चारण हिन्दी श की तरह, व का उच्चारण ब की तरह और य का उच्चारण शब्द के शुरू में बैठने पर ज की तरह है जैसे—यात्री (जात्री), यार (जार), येथाय (जेथाय). किन्तु शब्द के बीच या अन्त में रहने पर इस य का उच्चारण हिन्दी के य की ही तरह होता है, जैसे—शयन शयन), समय (शमय)।

† बंगला में 'क्ष' का उचारण 'क्ख' की तरह है।

इस घटना की बात सुनकर माँ ने भद्र पुरुष से कहा—"अपने मित्र को कल ले आना।" फिर हँस कर माँ ने कहा—"जिसने माँ से बातें की हैं सभी उसका दर्शन करेंगे।" भद्र पुरुष ने कहा—"वह बात प्राइवेट है।" माँ ने कहा—"उन्हें कहना, इस शरीर से कहने में कोई हानि नहीं है।" माँ के राँची आने पर इस स्वप्न की बात माँ से कहने की इच्छा उनमें पहले ही थी।

दूसरे दिन रात को वह सज्जन माँ के पास आये और सबके सामने उस घटना को और भी स्पष्ट रूप से बताया। छलछलाते नेत्रों से माँ की ओर इकटक देखते हुए उस सज्जन ने पूछा—"तो मैं क्या करूँगा माँ?" माँ ने कहा—"देखते जाओ, क्या होता है। तुम मन्दिर की चेष्टा करो। उसके बाद जो हो जाय। वह जो करें।"

इस घटना को सुन लेने पर सभी ने सोचा, उस दिन सन्ध्या आरती के समय माँ के ख्याल से जो बातें निकली थीं उसके बाद ही मानो काली माता का लोकालय में आने की खबर प्रकट हुई है।

राँची आश्रम की काली माता के विषय में हाल की और भी एक अलौकिक घटना माँ के श्रीमुख से सुनने का सौभाग्य हमें हुआ है। पूर्वोक्त घटना के दूसरे दिन माँ दुपहर को मन्दिर की गली में विश्राम कर रही थीं। ऐसे समय माँ ने देखा कि मन्दिर के दरवाजे के सामने एक ग्रामीण बालक सारे अंगों में धूल-मिट्टी पोते और आधे नंगे शरीर में तन्मय होकर ये दोनों पद गा रहा है—

नाम करे जा, नाम करे जा, नाम करे जा।
नामे रुचि भावे पुष्टि हबे रे (तुइ) नाम करे जा॥

माँ ने बाद में बताया था—उस दिन भी लेटे-लेटे माँ काली माता के उद्देश्य से अपने ख्याल में कह रही थीं—"कल तो वैसा किया। आज भी कुछ करोगी क्या?" उस बात के प्रसंग में माँ के ख्याल में आया था—"गोपाल भी तो मन्दिर में हैं।"

श्री श्री माँ के स्वतःस्फूर्त संगीत

१

जीवेर भाग्ये अवैराग्ये परम पद मिलबे ना रे।
(ताइ) करो सार एक, वैराग्य-विवेक, परिहरि वासनारे ॥*
वैराग्येर मात्रा कता, बुझबि काजे होले रतो,
(ओरे) तखन देखबि अविरतो कान दिके तोर मन टाने रे ॥
त्यजिये सकल कर्म, आचरो मानव धर्म,
(ओरे) नित्य निर्विकार ब्रह्म चिन्त चित्ते बारे बारे ॥
बाहिर होते डाकि मन, हृदे राखो अनुक्षण,†
(करि) ब्रह्म भेलाय आरोहण तरह भव सागरे ॥
होले अहंकार हतो, सब द्वन्द्व निवारितो।
(देखबि) स्वभाव हइबे स्थितो ज्ञेय सत्य परात्परे ॥

(१३४२ सन, फाल्गुन मास । विन्ध्याचल ।)

---

* बंगला के स का उच्चारण हिन्दी श की तरह, व का उच्चारण ब की तरह और य का उच्चारण शब्द के शुरू में बैठने पर ज की तरह है जैसे—यात्री (जात्री), यार (जार), येथाय (जेथाय), किन्तु शब्द के बीच या अन्त में रहने पर इस य का उच्चारण हिन्दी के य की ही तरह होता है, जैसे—शयन शयन), समय (शमय)।

† बंगला में 'क्ष' का उच्चारण 'क्ख' की तरह है।

२

आमि कारे वा ऐखन डरि !
आमि बाहिया चलेछि तरी !
होक ना कैनो तुफान भारी !
डुबबे ना हय तरो।

याँर यात्री, ताँर-इ तरी।
(आमि) ताँर भरसाइ करि।
आमि कारे वा ऐखन डरि !

(आरे) ये यात्री, सेइ तो तरी,
आबार सेइ तो तुफान भारी।

(से ये) तातेइ डोबे, तातेइ भासे,
सेइ ये भाइ काण्डारी।
आमि ताँर भरसाइ करि।

(१३४५ सन। देहरादून।)

३

ओहे जीवेर जीवन धन।
तुमि बुद्ध, तुमि शुद्ध, तुमि नित्य निरञ्जन।
तुमि मुक्त, तुमि शान्त, तुमि शिव-नारायण॥

येथाय यतो भव ज्वाला, हच्छे सेथाय माया-खेला,
(तुमि) घुचाओ एबार भाङ्गा गड़ा, ओरे आमार पागल मन।

(२५ आश्विन, १३४६ सन।)

४

गोकुल-विहारी, दयामय हरि,
वृन्दावन वनचारी।
गोवर्द्धन-धारी, हे कृष्ण मुरारी,
अधरे मुरलीधारी।
राखालिया मति, अगतिर गति,
विश्व वेदन-हारी।
हृदि पद्मासने, जागो प्रेमानने,
चित्त आलोक करि।
ओहे दयामय, प्रभात समय,
हृदि रञ्जन-कारी।
हे व्रज-विहारी, मुकुन्द मुरारी,
जागो जागो जागो हरि।

(१३४५ सन। २७ फाल्गुन)

दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा।
दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा।

ब्रह्ममयी मा आमार ब्रह्म गोपाल.........।
ब्रह्म गोपाल आमार ब्रह्ममयी मा.........।
मा, मा मा आमार ब्रह्म गोपाल।

जय दुर्गा, दुर्गा दुर्गा।
जय दुर्गा, जय दुर्गा।

जय दुर्गा, शिव दुर्गा।
जय दुर्गा, मा दुर्गा।
दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा।
दुर्गति-नाशिनी जय मा दुर्गा।
काल-विनाशिनी जय मा दुर्गा।
दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा जय मा दुर्गा।
भक्ति-प्रदायिनी जय मा दुर्गा।
ज्ञान-प्रदायिनी जय मा दुर्गा।
शान्ति-प्रदायिनी जय मा दुर्गा।
आनन्द-दायिनी जय मा दुर्गा।
प्रेम-प्रदायिनी जय मा दुर्गा।
दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा जय मा दुर्गा॥

६

गोपाल गोविन्द गोपाल गोविन्द ॥ ४ ॥
गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द ॥ २ ॥
गोपाल गोपाल गोपाल गोपाल ॥ ३ ॥
गोपाल गोपाल ब्रह्म गोपाल ॥

ब्रह्म गोपाल प्राण गोपाल ब्रह्म गोपाल प्राण गोपाल।
प्राण गोपाल ब्रह्म गोपाल प्राण गोपाल ह्म गोपाल॥

ब्रह्म गोपाल यशोदा-दुलाल, जय नन्दलाल यशोदा-दुलाल।
यशोदा-दुलाल जय नन्दलाल प्राण गोपाल प्रेम गोपाल॥

जय नन्दलाल नन्ददुलाल यशोदा-दुलाल जय नन्दलाल।
ब्रह्म गोपाल यशोदा-दुलाल जय नन्दलाल ब्रजेर राखाल॥

ब्रजेर राखाल जय नन्दलाल यशोदा-दुलाल ब्रह्म गोपाल।
जय नन्दलाल यशोदा-दुलाल ब्रह्म गोपाल प्राण गोपाल॥
हा गोपाल प्राण गोपाल हा गोपाल प्राण गोपाल।
हा गोपाल............

७

चले ना चले ना आस गो जननी
तोमा छाड़ा दिन चले ना।
तुमि ये आमार ऐक आपनार
तोमा छाड़ा दिन काटे ना।
एसो एसो मागो बोसो हृदय पद्मे*
दिवस रजनी आर काटे ना।
विषयेते मन परवशे गमन
तोमार दिके तो मा याइ ना।
(मागो) दाओ शुद्धा भक्ति होक अनुरक्ति
तोमा छाड़ा यैनो (किछु) चाइ ना।
स्वार्थ भरा मन चाइ धन जन
तोमाके तो मा चाइ ना।

---

* (७) बंगला में किसी व्यञ्जन के साथ य, म अथवा व लगने पर प्रायः उस व्यञ्जन का दुगुना उच्चारण होता है। जैसे—मनुष्य (मनुष्ष), आत्मा (आत्ता), पद्म (पद्द) आदि। किन्तु कुछ शब्दो में उस प्रकार के म का स्पष्ट उच्चारण बंगला में भी होता है। जैसे—जन्म, युग्म (जुग्म), उन्माद, ब्राह्मण आदि।

(मा) करोगो करुणा छलना करो ना
आर आमाय छेड़े थेको ना ॥ *

८

एसो गो जननी ओगो गुणमणि
कैमने काटि मा दिवस रजनी।
लओ गो तुलिया सदय हइया
तुम ये आमारि एकमात्र जानि ॥
सर्वहारा मागो मन आतङ्के भरा
कोथा याबो मागो होये दिशाहारा।
दैओगो आश्वास होक मा विश्वास
तुमि ये आमारि एकमात्र मानि ॥ †

---

* (७) माँ के मुख से दूसरे के द्वारा रचित संगीत का एक पद सुनकर किसी ने कहा था कि उसके साथ और भी पद संयुक्त होने से अच्छा होता। माँ भी उसी समय हँसते हुए अपने भाव में मिला-मिलाकर गाने लगीं।

† (८) माँ के पास एक व्यक्ति है। उसके हृदय का व्याकुल भाव देखकर उसके अन्तर की बातें माँ मानो मिला-मिलाकर हँसते-खेलते गाने लगीं।

वैराग्य, ऐश्वर्य, शैशव आदि संस्कृत शब्दों के ऐ-कार का उच्चारण बंगला में शैल, वैशाख आदि की तरह ही होता है। किन्तु कुछ खास बंगला शब्दों में ए-कार का उच्चारण हिन्दी ऐ-कार सा होता है, जैसे, एक (ऐक), केमन (कैमन), देख (दैख), गेलो (गैलो) आदि। परन्तु हिन्दी ऐ-कार के उच्चारण के अन्त में जो एक हल्की य की ध्वनि निकलती है उसे छोड़ कर केवल उसके प्रथमांश का ही उच्चारण उस प्रकार के बंगला ऐ-कार में होता है।

९

हरि बोले डाक रे ओ मन गुरु बोले डाक।
परम पद पावे यदि चरण तले पड़े थाक॥
पशु पाखी तारा सबे प्रहरे प्रहरे जागे।
तुमि मन लिप्त सुखे घुमेर घोरे मारछो झाँक॥
हरि बोले डाक रे ओ मन·········
मनमोहनेर मन दुराचार
शिशुर मतो स्वभाव कइ तार।
जाने ना से आचार विचार
सेइ भावना नाइ को तार।
हरि बोले डाक रे ओ मन·· ····।

१०

कि दिये पूजिबो ब्रह्ममयी?
देखि ना ब्रह्माण्डे किछु
आछे कि ना तोमा बइ।
पूजार यतो उपचार
आमि किगो दिबो आर।
तोमा बिना ए ब्रह्माण्डे
कोथाय आर आछे कइ॥
अणु होते परमाणु
सकलि तोमारि तनु।
सर्व तत्त्वे तुमिइ आमार
तोमातेइ आमि रइ॥

---

(९) कुछ पद माँ ने सुने थे। बाद में बात-बात में पद मिला-मिला कर माँ ने गाया।

(१०) पूर्व श्रुत प्रथम २।१ पंक्तियाँ लेकर माँ अपने भाव में मिला-मिला कर गा रही थीं। उसी को लिख लिया गया है।

११

आय सबे भाइ हरि बोले आनन्दे हरिगुण गाइ रे
आय सबे भाइ—
हरि बोले बाहु तुले (आय) डाकिया बैड़ाइ रे
डाकिया.........बैड़ाइ रे।
हरि बोले बाहु तुले (आय) काँदिया बैड़ाइ रे
काँदिया बैड़ाइ रे (३)।

हरि बोलले दिबेन धरा ऐ ये आमार मनचोरा
(नामे) पागल करा पूर्ण करा
(ऐ) श्यामल सुन्दर भाइ रे।
आय सबे भाइ—
हरि बोले बाहु तुले (आय) नाचिया बैड़ाइ रे
नाचिया बैड़ाइ रे॥

हरि हरि हरि बोले (चलो) नामे मेते याइ रे
(चलो) प्रेमे मेते याइ रे
हरि बोल हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल भाइ रे।
आय सबे भाइ—
प्राणेर ठाकुर कोथाय आमार (चलो) खुँजिया बैड़ाइ रे
खुँजिया..................बैड़ाइ रे॥

आय सबे भाइ—
हरि हरि हरि बोले नगरे बैड़ाइ रे।
आय सबे भाइ—

बने बने मनेर कोणे (आय) खुँजिया बैड़ाइ रे
(शुनि) प्राणेर ठाकुर आछेन प्राणे, ऐ राखाल राजा भाइ रे।

आय सबे भाइ—
हरि हरि हरि बोले (आय) नाचिया बैड़ाइ रे।
एसो एसो प्राणेर ठाकुर (आमरा) नामे मेते याइ हे
मधुर मंगल नाम (आमरा) मने प्राणे गाइ हे
भुवन मंगल नाम (आमरा) मने प्राणे गाइ हे।

आय सबे भाइ—
हरि बोले बाहु तुले (आय) डाकिया……………बैड़ाइ रे
काँदिया……………… बैड़ाइ रे
खुँजिया………………बैड़ाइ रे
नाचिया………………बैड़ाइ रे।

आय सबे भाइ—
हरि बोल हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल॥ ४

हरि बोल हरि बोल………………

१२

चल सखी चल देखे आसि यमुनार कूले गो।
चल सखी चल देखे आसि यमुनार तीरे।
चल सखी चल देखे आसि यमुनार घाटे।
आमार गृहे थाका…………
आमार घरे थाका होलो ये दाय गो॥
चल सखी चल…………

कदम तलाय (प्राणेर) ठाकुर
बाँशिटि बाजाय मधुर मधुर
मधुर मुरलीर सुरे प्राण करे आकुल गो।
चल सखी चल............

त्रिभङ्गेर बाँशरीर सुरे
व्रजगोपीर प्राण हरे
राधाराणी रहे उचाटने गो।
चल सखी चल..........

राधाराणी मातोयाले
(ऐ) प्रेममयी डेके बले
चल चल चल मिलि सबे घाटे गो॥
चल सखी चल..........*

१३

हरेर्नामैव नामैव नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥

(तोरा) व्रजेर बालक बोल बोल हरिबोल॥
(ऐ नाम) कोथा होते के आनिलो बोल हरिबोल॥
(ऐ नाम) गोलोके गोपने छिलो बोल हरिबोल।
(ऐ नाम) जीवेर भाग्ये उदय होलो बोल हरिबोल॥

---

* १२—काशी में कन्यापीठ की लड़कियाँ झूलन, जन्माष्टमी, नन्दोत्सव करती हैं। उस समय माँ हँसते-खेलते लड़कियों के साथ इन पदों को मिला-मिला कर गा रही थीं।

जीव उद्धारण महानाम बोल हरिबोल।
महा उद्धारण ऐ नाम बोल हरिबोल।
(तोरा) मायेर दैओया एइ हरिनाम बोल हरिबोल।
(नामे) पापी तापी उद्धारिलो बोल हरिबोल ॥
(नामे) अजामिल वैकुण्ठे गैलो बोल हरिबोल।
(नामे) जगाइ माधाइ उद्धारिलो बोल हरिबोल ॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल।

(नामे) ध्रुव प्रह्लाद तरे गैलो बोल हरिबोल।
(नामे) ध्रुव ध्रुव-लोके गैलो बोल हरिबोल ॥
(ऐ नाम) नारद जपेन वीणा-यन्त्रे बोल हरिबोल।
(ऐ नाम) ब्रह्मा जपेन चतुर्मुखे बोल हरिबोल ॥
(ऐ नाम) पञ्चानन लन पञ्चमुखे बोल हरिबोल।
(ऐ नाम) पार्वती लन महासुखे बोल हरिबोल ॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल।

(ऐमन) आर हबे ना मानव जनम बोल हरिबोल।
(ऐ नाम) यतोइ बलो ततोइ भालो बोल हरिबोल ॥
(ऐ नाम) जिह्वाय आपन वश थाकिते बोल हरिबोल।
(तोर) कण्ठागत प्राण थाकिते बोल हरिबोल ॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल।

(नामे) ये दिन गैलो से दिन भालो बोल हरिबोल।
(ओरे) नाम नामीते नाइ रे प्रभेद बोल हरिबोल ॥
(ओ मन) श्वासे श्वासे नाम हबे रे बोल हरिबोल।
(एक बार) गौर बला एइ हरिनाम बोल हरिबोल ॥

(एक बार) निताइ बला एइ हरिनाम बोल हरिबोल।
(ओरे) गदाधरेर मुखेर बोल बोल हरिबोल॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल।

(ओरे) नामेर गुणे देखवि अभेद बोल हरिबोल।
(नामे) आँधार हृदय हवे आलो बोल हरिबोल॥
(नामे) आपद विपद दूरे याय रे बोल हरिबोल।
(ओ तोर) सकल आशा पूर्ण हवे बोल हरिबोल॥
(ओरे) शुष्क तरु मुञ्जरिबे बोल हरिबोल।
(ओ मन) नीरस हृदय सरस हवे बोल हरिबोल॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल।

(हरि) नाम बिने आर नाइ रे गति बोल हरिबोल।
(ताइ) नामे निये रतिमति बोल हरिबोल॥
(ऐ नामे) मिलाय शुद्धा भक्ति बोल हरिबोल।
(ऐ नाम) निते निते लागबे भालो बोल हरिबोल॥
(येइ) हरि बिकाय नामेर मूले बोल हरिबोल।
(सेइ) हरिनाम रइलि भुले बोल हरिबोल॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल।

(ओरे) नाम ये रे तोर पथेर सम्वल बोल हरिबोल।
(ओरे) बलार सुयोग थाकृते हरि बोल हरिबोल॥
(ओरे) ऐके ऐके दिन गैलो रे बोल हरिबोल।
(ओ तुइ) मजबि यदि प्रेमरसे बोल हरिबोल॥
(ओ तुइ) मजबि यदि नामरसे बोल हरिबोल।
(तोर) मानव जनम सफल हवे बोल हरिबोल॥

(ओरे) भुवन मंगल मधुर ए नाम बोल हरिबोल।
(नामे) दिग् दिगन्त शुद्ध हबे बोल हरिबोल॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल।

(ऐ) हरे कृष्ण हरे कृष्ण बोल हरिबोल।
कृष्ण कृष्ण हरे हरे बोल हरिबोल॥
(ऐ) हरे राम हरे राम बोल हरिबोल।
राम राम हरे हरे बोल हरिबोल॥

(तोरा) प्राण खुले बाहु तुले बोल हरिबोल।
(तोरा) नेचे नेचे बाहु तुले बोल हरिबोल॥
(यार) ये नामेते मजे मन सेइ तो हरिबोल।
नामे प्रभेद कोरो ना रे बोल हरिबोल॥
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल।*

१४

जय मा भवानी, जय मा शिवानी
जय जगद्धात्री चण्डिके।
ईशानी ईश्वरी जय महेश्वरी
महाविद्या जय अम्बिके॥
तुमि मा शिवानी, तुमि मा भवानी
जगत-पालनी जगत-जननी।
विश्व-विलासिनी, विश्व-विमोहिनी
विश्व-संहारिणी मा दुर्गे॥

---

* (१३) इस गाने की कुछ पंक्तियाँ माँ ने कहीं सुनी थीं। बाद में उसके साथ पद मिलाकर गाने पर हम लोगों ने भी उसमें कुछ योग दिया है।

मनोरमा मनमोहिनी कल्याणी करुणामयी।
अभया अभयदायिनी रक्षा करो मा सङ्कटे ॥*

१५

जय मा भवानी जय मा शिवानी ब्रह्म सनातनी जय दुर्गा।
जय दुर्गा जय दुर्गा जय दुर्गा जय दुर्गा ॥
कालविनाशिनी जय दुर्गा दुर्गतिनाशिनी जय दुर्गा।
सत्य सनातनी जय दुर्गा ब्रह्म परात्परा जय दुर्गा ॥
दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा मा दुर्गा जय दुर्गा--------

शक्ति-दायिनी जय दुर्गा भक्ति-दायिनी जय दुर्गा ॥
ज्ञान-दायिनी जय दुर्गा ब्रह्मविद्या-दायिनी जय दुर्गा।
मुक्ति-दायिनी जय दुर्गा श्री दुर्गा जय दुर्गा ॥
दुर्गा दुर्गा मा दुर्गा--------

भुवन-मोहिनी जय दुर्गा जगत् उद्धारिणी जय दुर्गा।
प्राण-स्वरूपिणी जय दुर्गा ब्रह्म सनातनी जय दुर्गा ॥
महाभावमयी जय दुर्गा ज्ञानसत्तारूपिणी जय दुर्गा।

दुर्गा दुर्गा जय दुर्गा दुर्गा दुर्गा मा दुर्गा।

आत्ममयी मा ब्रह्ममयी मा सत्यमयी मा ज्ञानमयी मा।
प्रेममयी मा भक्तिमयी मा शक्तिमयी मा शान्तिमयी मा।
सत्यमयी मा जय उमा आनन्द-प्रकाशिनी जय मा मा ॥

---

* (१४) सोलन के महाराजा साहब देवी भागवत का अनुष्ठान करा रहे थे। माँ अपने भाव में मिला-मिलाकर इन पदों को गा रही थीं।

१६

गुरु गोविन्द ब्रह्म नाम मा दुर्गा शिवराम ।
सीताराम जय सीताराम राधेश्याम जय राधेश्याम ॥
गुरु गोविन्द गुरु गोविन्द गुरु गोविन्द गुरु गोविन्द । २
सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम ।
सीताराम सीताराम सीताराम प्राणाराम ॥
हा राम सीताराम सीताराम सीताराम ।
हा राम प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम ॥
राम राम राम राम राम राम राम राम ।
राजाराम राजाराम राजाराम (जय) राजाराम ॥
प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम ।
जय राम जय जय राम जय राम जय जय राम ॥
जय राम सीताराम जय जय राम सीताराम ।
राम राम राम राम राम राम प्राणाराम ॥
जय सीताराम जय सीताराम जय सीताराम जय सीताराम
जय सीताराम जय सीताराम······*

१७

जय गङ्गाधर शिरोपर परिधाने बाघाम्बर ।
देव देव महादेव महादेव देव देव············
हे नाथ विश्वनाथ विश्वनाथ विश्वनाथ ।
स्वयम्भू विश्वनाथ स्वयम्भू विश्वनाथ ।

---

* (१६) १९५२ ई० में बम्बई में एक दिन माँ मिला-मिला कर इन पदों को गा रही थीं। उसीके अनुसार लिख लिया गया था।

विश्वेश्वर विश्वनाथ हे नाथ विश्वनाथ ।
हा नाथ विश्वनाथ हे नाथ विश्वनाथ……

१८

हा राम हे राम सीताराम सीताराम ।
हा राम हे राम रामराम रामराम ॥
रामराम प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम ।
जय राम श्रीराम रामराम रामराम ॥
विश्वेश्वर विश्वनाथ गोपेश्वर गोपीनाथ ।
रामराम सीताराम रामेश्वर प्राणाराम ॥
विश्वरूप विश्वनाथ विश्वरूप व्रजनाथ ।
हे नाथ गोपीनाथ हे नाथ व्रजनाथ ॥
राधानाथ प्राणनाथ श्यामसुन्दर राधानाथ ।
राधाकान्त राधानाथ हे नाथ दीननाथ ॥
दीनबन्धु दीननाथ जगबन्धु जगन्नाथ ।
हा कृष्ण हा नाथ हा कृष्ण हा नाथ ॥
हा कृष्ण हा नाथ…………

१९

कालीतारा महाविद्या षोड़शी भुवनेश्वरी ।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा ॥
बगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका ।
एता दशमहाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्त्तिताः ॥
दया करो दयामयी तुमि मागो विश्वमाता ।
आमि ये मा दीन हीन तुमि ये गो जगन्माता ॥

तुमि मागो जगद्धात्री महामाया मनोरमा।
सृष्टि-स्थिति-लयकर्त्री सत्य-स्वरूपिणी श्यामा॥
कृपा करो कृपामयी तुमि ये गो चित्स्वरूपा।
चरणे प्रणमि जया विश्वविलासिनी उमा॥*

---

* (१६) इस गाने के प्रथम कुछ पदों के अतिरिक्त आगे के पदों को माँ ने अपने खयाल से कहा था।

श्री श्री माँ के द्वारा गीत संगीत

१

कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहि माम् ।
राम राघव राम राघव राम राघव रक्ष माम् ॥
कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण हे ।
राम राघव राम राघव राम राघव राम हे ॥
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे ।
राम राम राम राम राम राम राम हे............

२

(जय) राधे राधे कृष्ण कृष्ण हरे राम हरे हरे ।
(ऐ नाम) बलो वदने शोनाओ काने बिलाओ जीवेर द्वारे द्वारे ।
(नामे) वाञ्छा पूर्ण हय, अन्ते मोक्ष सुनिश्चय ।
(नामे) त्रिताप ज्वाला याय गो दूरे, शमन भय हरे ॥
(नामे) गोलोकेर हरि, वामे निये श्रीराधा प्यारी ।
युगलरूपे हृदयकूपे सदा विहरे ।
(जय) राधे राधे कृष्ण कृष्ण............

३

ज्ञेय भगवान ध्येय भवगान प्रेय भगवान श्रेय भगवान ।
ज्ञेय भगवान ध्येय भगवान प्रेय भगवान श्रेय भगवान ॥

हे भगवान हे भगवान हे भगवान हे भगवान।
हे भगवान हे भगवान हे भगवान हे भगवान॥
मंगलमय हे भवगान प्रेममय हे भगवान।
प्राणमय हे भगवान आनन्दमय हे भगवान॥
हे भगवान हे भगवान..................

४

भजो रे भैया राम गोविन्द हरे।
जप तप साधन कछु नहि लागत खरचत नाहि गठरी॥
सन्तत सम्पद सुख के कारण जासु भूल पड़ि।
कहत कबीरा राम न जा मुख ता मुख धूलभरी।

५

जय राम श्रीराम जय जय राम।
जय राम श्रीराम जय जय राम॥

६

रघुपति राघव राजा राम पतितपावन सीताराम।
जयतु शिवाशिव जानकी राम जय रघुनन्दन जय सीताराम।
रामराम रामराम रामराम रामराम।
रामराम रामराम रामराम प्राणाराम॥
रामराम प्राणाराम रामराम प्राणाराम।
प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम सीताराम॥
सीताराम (जय) सीताराम सीताराम (जय) सीताराम।
(जय) सीताराम (जय जय) सीताराम (जय) सीताराम।
(जय जय) सीताराम॥

७

धरो लओ धरो लओ लओ रे किशोरीर प्रेम
निताइ डाके आय।
निताइ डाके आय आय गौर डाके आय।
(प्रेमे) शान्तिपुर डुबु डुबु नदे भेसे याय
धरो लओ धरो लओ...............
(प्रेम) कलशे कलशे ढाले तबु ना फुराय।
(प्रेमे) पाड़ भाङ्ग्ये ढेउ लागिलो गोरा चाँदेर गाय।
धरो लओ धरो लओ...............
(प्रेम) नित्यानन्द गौरचन्द्र आपनि विलाय।
(प्रेम) ये यतो चाय से ततो पाय तबु ना फुराय।
धरो लओ धरो लओ...............

८

हरिबोल हरिबोल हरि हरि बोल।
केशव माधव गोविन्द बोल॥

९

सत्यम् ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म।
शान्तम् शिवम् अद्वैतम् ब्रह्म॥
आनन्दरूपम् अमृतम् यद् विभाति।
एकमेवाद्वितीयम् ब्रह्म॥

१०

के रे ए नूतन योगी एलो नदेर माझारे।
मरि कि रूप-माधुरी पागल करिलो मोरे।

योगीर मुखेते ओ कि मधुर ध्वनि,
आमि आर ना शुनि ऐमन ध्वनि,
ये ध्वनि शुनिया धनी सुरधुनी उजान धरे।
कैशोर वयसे मरि ओ कि रूप-माधुरी,
(से ये) कौपीन-करङ्गधारी होयेछे रे ब्रह्मचारी।
ना जानि कार प्रेमेर तरे ।।

(देखलेम) 'रा' बलिते नयन झरे,
'धा' बलिते धूलाय पड़े,
(से ये 'राधा' 'राधा' बलते नारे)
ऐमन देखि नाइ आर त्रिसंसारे ।।

आमार होलो ए कि बलो बलो सखी,
योगीर रूप देखिये मुग्ध आँखि।
(आमार) प्राणपाखी पोड़ेछे बाँधा,
बाँधा पोड़ेछे जनमेर तरे ।।

(बाँधा पोड़ेछे पोड़ेछे) (योगीर प्रेम-पिञ्जरे बाँधा········)
(प्राणपाखी आर उड़ते नारे, बाँधा········)
(आमार गृहे येते पा ना सरे, बाँधा········)
आमि योगीर पदे प्राण सँपेछि,

---

(१०) माँ के अष्टग्राम रहते समय यह गाना दूर से कोई गा कर चला गया। उसके बाद से ही माँ इस गाने को गाती हैं। कैसी आश्चर्य की बात—दूर से केवल एक बार सुनकर आँखर (कीर्तन में जो पद मूल संगीत के साथ इच्छानुसार जोड़ दिया जाता है उस) के साथ समूचा गाना माँ के खयाल में रह गया !

(गृहे याबो ना, याबो ना) एइ तो बाहिर होयेछि,
गृहे याबो ना, याबो ना ।

(आमि योगीर सङ्गे ये याबो) (कारो बाधा मानबो ना गो)
(आमि द्वारे द्वारे मेगे खाबो, आमि योगीर सङ्गे ये याबो)
(आमि सङ्गेर साथी होये थाकबो, आमि योगीर सङ्गे ये याबो)

११

हृदय-दुआरे आजि के डाकिलो ।
काहार मधुर वाणी शुनिलाम······ओ, ओ कि शुनिलाम ।
शुनिलाम, शुनिलाम-ओ शुनिलाम-ओ ।

शुनिया से वाणी तार—
(घरे) रहिते ना पारि आर,
हृदय व्याकुल आजि होइलो, होइलो, होइलो······ओ······
(आमाय) घरेर बाहिर आजि कोरिलो, कोरिलो, कोरिलो···ओ···
मोह मदिरा पिये
(आमि) अचेतने छिनु शुये
के आजि आसिया मोरे जागालो, जागालो, जागालो···ओ···

१२

आय सबे मिलि, बाहु दुटि तुलि
हरिगुणावली गाइ रे ।
गाहिते गाहिते नाचिते नाचिते
आनन्दधामेते याइ रे ।

पिक-शुक-सने मिलाइया तान
अलिकुल सने मा‍ताइया प्राण
आय सबे करि हरिगुणगान
कोथा के रहिलि भाई रे।

(हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल भाई रे)

समीरण सने दिगन्त व्यापिया
तरुकुल सने काँदिया काँदिया
गाओ हरिनाम जीवे जागाइया
समय बहिया याय रे।
(हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल भाई रे)

राङा भानु सने मिलिया मिशिया
कमल-चरण-युगल चुमिया
चिदानन्द धने हृदये लइया
सदानन्दे थाकि भाई रे।
(हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल भाई रे)

(ताँरे) देह-प्राण-मन देहो रे ढालिया
लहो रे ताँहारे आपन करिया
भवपारे याबे हासिया हासिया
बसिया दयालेर नाय रे।
(हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल भाई रे)

चौदिके छाइया उठियाछे रोल

'हरि हरि बोल,' 'बोल हरि बोल'
ओइ शोन आबार किसेर गराडगोल
निताइ बुझि डेके याय रे।
(हरि बोल, हरि बोल, हरि बोल भाई रे)

१३

हरि बोल हरि बोल हरि बोल बोले
के रे ऐमन नाचे गाय?
ध्वनि कि मधुर शोना याय।

काल गियेछे यारा माधाइ
एसेछे कि तारा दुभाई
आज कैनो नामे मिठा पाइ
शुने तापित प्राण जुड़ाय।

एइ हरिनाम शुनि कतो
मने तो धरे ना ऐतो
आज कैनो नाम मन्त्रेर मतो
अन्तरे पशिलो माधाइ।

शुनेछि भाई काङ्गाल पेले
गौर-निताइ याय रे चोले
आय तबे याइ दुभाई मिले
पड़िगे दुइ भाइयेर पाय।

पापेर बोझा दूरे फेले
दुभाई निबो दुभाई कोले
नाचबो गाबो हरिबोल बोले
भय कि रे शमनेर दाय।

हरि नामे दिये साड़ा
डेके आय भाई सकल पाड़ा।
(भव) पारेर वाञ्छा करे यारा
तादेर तो एइ समय याय।

ऐमन दयाल गैले चोले
"पार करो पार करो बोले"—
काँदते हबे भवेर कूले
समय गैले के आर पाय।

कि जानि प्रेस कारे बले
ता नाकि भाई नामे फले
(दयाल) गौर-नितायेर शरण निले
से धन नाकि पाओया याय।

ये आनन्दे दु'भाई नाचे
से आनन्द प्रेमे (नामे) आछे
ऐमन सुजन थाकते काछे
से धन कैनो हाराइ हेलाय।
ध्वनि कि मधुर शोना याय।

१४

हरि बोल मन निकटे शमन यावे जीवन रबे ना।
डाकार मतो कोरे यदि डाको तारे
(तबे) शमने समन जारि कोरबे ना।
यदि थाके पुँजी माझी हबे राजी
अन्य कथा आर शुधाबे ना।

भाई-बन्धु यतो दु'-चार दिनेर मतो—

सङ्गेर साथी केउ हबे ना।

रविसुत एसे बेन्धे निबे कसे

कारो कथा आर शुनबे ना।

ईशान बले भाई आर तो समय नाइ

राधा-गोविन्द नाम भुलो ना।

(आमि) यखन या करि यात्राकाले हरि

श्री हरिर नाम यैनो भुलो ना॥

१५

राधा मम प्राण राधा मम ज्ञान।

राधा मम ध्यान राधा नाम सार।

प्रेममयी राधा राधा अङ्गे आधा।

राधा नाम साधा बाधा नाहि तार।

आमि दिवस रजनी राधा नाम ध्वनि।

करि, मात्र जानि राधा मूलाधार।

राधा आद्या शक्ति राधा भक्ति-मुक्ति।

राधा अनुरक्ति भक्त श्रीराधार।

श्रीराधिका यन्त्रे दीक्षा राधा मन्त्रे।

करि बाँशी यन्त्रे नय रन्ध्रे फुत्कार।

से तन्त्रे सा-रे-गा-मा पा-धा-नि सप्तमा।

आलाप संयमे बाजे सहस्रार।

१६

राधा— ओ मा नन्दराणी, तोर नीलमणिर जन्ये की
गोकुल छाड़िबो ?
से या मने लय ताइ करे,
किछुइ कओ ना तारे।
ऐमन देखि ने आर जगत् जुड़े,
(मा तोर कानाइयेर मतो) से कि तोर ऐतोइ आदुरे !
मा तोर डरे डरे आर कतो वा सबो ?
मागो, भाण्ड-भरा ननी छिकाय तोला थाके,
कि जानि कइ थेके, कैमन कोरे दैखे,
यखन घरे केउ ना थाके, ढुके सेइ फाँके,
यतो खाय आर ततो छड़ाइया राखे,
यदि केउ वा कखन दैखे, ताड़ा दैय मा ताके।
करे भाण्ड भेङ्गे कतो उपद्रव।

नन्दराणी— राधे, सात नय, पाँच नय, आमार ऐका नीलमणि
ऐक मुखे कतो खावे चीर-ननी (ता कि जान ना, जान ना)
(आमार गोपाल ये की साधनार धन, ता कि--------)
(कतो आराधना करे, पूजे महेश्वरे, गोपाल-धने कोले
पेयेछि गो)

(आमार आर ये लच्य नाइ गो राधे)
(आमारे मा बले प्राण शीतल करे)
घरे कतो आछे, तबु तोदेर काछे
कैनो गिये याचे किछुइ ना जानि।

(या होक) अबोध बाछाधने मारिस् ने धरिस् ने।
(तारे कटु कथा बलिस ना गो)
तोदेर ननीर कड़ी सकल गुणे दिबो।

राधा— मागो, ननीर क्षति वरं कड़ी दिले सारे।
आरो कतो करे कि कबो तोमारे।
आमरा थाकि घरे, से याय वनान्तरे।
'राधा' 'राधा' बोले बाँशरी पुकारे।
(तार) से मुरली स्वरे केउ ना रइते पारे,
(बाँशी बाजाय कतो भक्ति करे) (शुने यमुनार जल
उजान धरे)
(बल मा) आमरा कैमन कोरे कुल राखिबो।

नन्दराणी— राधे, बाँशी बाजाय कानाइ, बले 'दादा' 'दादा'
तुमि शुनले शुनते पारो, 'राधा' 'राधा'!
(यखन तार बलाई दादा दूरे थाके
'दादा' 'दादा' बोले डाके)
(आर) ना हय मेने निलेम, बले वरं 'राधा'
गुरुजनेर नाम निते कि बा बाधा।
(मिछे) सादा मने कादा लागाओ कैनो राधा,
किसे बिना दोषे तारे बाधा दिबो।

राधा— मागो, एकटि दुटि नय, कि कबो तोमारे
मोदेर सने कानाइ कतो काण्ड करे,
आमरा याइ ओपारे दधि बेचिबारे।
पार-घाट थेके से पाटुनीर काज करे।
(भाङा) नाये भरा भरे डुबाय से साँतारे

भये आमरा काँदि कतो उच्चैस्वरे,
देखे तोमार कानाइ कतो रङ्ग करे,
शेषे कि कानाइयेर हाते पड़े प्राण हाराबो ?

नन्दराणी— राधे, कतो घाट कतो नेये माझी आछे,
तबु कैनो सबे याओ कानायेर काछे ?
(ऐका) तारे दोषो मिछे, तोदेर इच्छा आछे।
नइले कैनो ऐतो लेगेछो तार पाछे ?
(कैनो) भालो डिङा थुये ओठो भाङा नाये।
(तारे) कि दोष दैखाइये मन्द कबो !

राधा— मागो, आर ऐक दिनेर कथा कइते नाहि सरे,
नाइते गैलाम सबे वसन रेखे पारे,
कानाइ चक्र करे से सब निये हरे,
कदम गाछे चड़े कतोइ व्यङ्ग करे।
(आमरा) दाँड़ाये करजोड़े कतो विनय करि तारे,
तबे वसन दिलो पेड़े तोर केशव।

नन्दराणी— राधे, आइ मरि छि छि, एकि लाजेर कथा,
मुख तुले ताइ (आबार) बलते एलि हेथा।
कुलवधू हये लाजेर माथा खेये
कूले वसन थुये के बा नाय बलो कोथा ?
(भाग्ये) कानाइ राखलो तुले, भये दिलो फेले,
(कानाइ शिशुमति दुधेर छेले)
अन्ये वसन निले बलो कि ये हतो !
(तोदेर) जाति-कुल-मान कोथाय बा रहितो।

(राख) राई, जटिलारे पेले बले देबो।
(तोदेर घटार कथा)।

राधा— मागो, पाये पड़ि हाते धरि शत बार,
तोमार काछे कये ऐके हलो आर।
थाक् कानाइयेर साजा, मोदेर बाँचा भार,
जा होंक तारे किछु बलो नाको आर।
(मा तोर) कानाइ यैनो याय निति निति पाड़ाय,
(तबु) जटिलारे बलिस ने गो, के कि बलबे ताय।
मा, से यतो खेते चाय, तारे खावाइबो।
(मा, तोर कानाइ ऐका कतो बा खाय!)

श्रीमुक्तानन्द गिरि (नानीजी)

रचित और गीत संगीत

१

मन रे, भवे एसे रंग-रसे भुले रयेछो,
ओरे मन, अबुझ मन ! एबार गुरुदत्त तत्त्व भुलेछो।
जेनो के कार, साजे भूतेर बाजी,
सकल मिथ्या फाँकि !
ओरे मन, अबोध मन ! कामादि इन्द्रिय दश
सब जनाइ तोमारि वश।
सुकर्मे हइओ ना अलस,—एइ मिनति करि।
भवेर व्यापार नयगो सुसार,
सबइ मिथ्या फाँकि !
मन पाखीते दैय गो फाँकि
कार भरसाय भुलिये रइलि
शमन दमन करबे यदि मन, दुर्गा बोले डाको।
आर गुमान करिओ ना मन, आमार कथा राखो।
मन रे, तोमार जोरे षड़रिपु जोर करियाछे भारी।
ओरे मन, अबोध मन ! जन्मावधि पुषि यारे
याबार काले चाय ना फिरे,
देह-पिञ्जर शून्य कोरे उड़िया याय मन पाखी।
भवेर व्यापार नयगो सुसार
सबइ मिथ्या फाँकि।

(यखन) मनपाखी दैय गो फाँकि, कार भरसाय भुले रइलि
शमन दमन करबे यदि मन—दुर्गा बोले डाको।

[स्वरचित]

२

अन्तर आत्मा गो तोमाय देखलेम ना।
देहे थेके करो छलना।
तोमार छलनार छले,
इष्ट तत्त्व याइ गो भुले,
कैमन करे करबो तोमार साधना।
अन्तरे अन्तरे थाको,
डाक दिले कथा ना कहो,
चित्तेर स्पन्दन कभु खुले दिले ना।
देहेर मध्ये सूक्ष्मरूपी
कभु तोमाय नाहि देखि,
दया करे आँखिर बन्धन खोलो ना !

[स्वरचित]

३

आर किछुइ माँ चाइ ना श्यामा चाइ शुधु चरण दुखानि।
रविर सुते बाँधबे यखन दिस् गो माँ तुइ अभय वाणी।
यखन निते आसबे शमन हात बाड़ाये धरबि तखन।
लुकिये लुकिये यास्नि मागो दिस् गो तोर चरण खानि।
दशेन्द्रिय हबे अचल, तोरे डाकबार थाकबे ना बल।
कैमन करे डाकबो तोरे शिखाये दिस् काने काने।

४

जय शिव शम्भु, हे शिव शम्भु, वृषवाहन दिगम्बर हे !
शिङा-डमरु-त्रिशूल-धारी, बम् बम् बोले डमरू बाजिछे।
शिरे जटा, कण्ठे विषधर, कैलास-शिखर-आसीन हे
भस्म-भूषित अङ्ग, ढुलु ढुलु आँखि, भूत प्रेत सङ्गे नाचिछे हे।
कार्तिक-लक्ष्मी-सरस्वती क्षुधानले कातरे काँदिछे हे
सङ्गे भगवती, सबाइ अस्थिर-मति, ताँरि सङ्गे कलह करिछे हे।

[स्वरचित]

५

एसेछो माँ विश्वमाझे ब्रह्ममयी नाम रटाये,
अचिन्त्य रूपेते आछो हृदय माझे लुकाये।
तोर जगते हाट बसाये, तुइ रइलि माँ मुख लुकाये,
डुबु डुबु हलो जगत् एक बार तुइ माँ देख ना चेये।
तोमार-इ घर तोमार बाड़ी खास तालुके बसत करे
(मोरा) भूतेर बैगार खेटे मरि तोमाके माँ ना जानिये।
षड़रिपुर मायार जाले, तोमाके माँ रइलाम भुले,
जागिये दे माँ कुण्डलिनी नाभिमूले पद छोंयाये।
तोमार ऐ चरण-स्पर्शे श्वास चड़िबे ऊर्ध्व पाशे
ब्रह्मरन्ध्र भेद करिये अभय पदे नाओ मिशाये।
क्षुधा तो लेगेछे श्यामा, एबार मोरे खेते दाओ माँ,
माखन-छाना-सर ननी तोर काछे माँ चाइ ना आमि,
सुधा पान कराये श्यामा दे ना माँ उदर पूराये।
सुधार भाण्ड तोमार घरे मिलबे ना आर कारो द्वारे।
कार डरे ऐ सुधाभाण्ड रेखेछिस् माँ बल लुकाये।

क्षुधार ज्वालाय आकुल होये धरार परे रइ लुटाये।
तोर नामे कलंक रबे जीवन यदि याय चलिये।

[स्वरचित]

६

कृष्ण केशव हरि नारायण
कालीय दमनकारी।
देवकी-नन्दन खगेन्द्र-वाहन
पूतना निधनकारी।
बलिरे छलिते हरि आसिले वामन रूप धरि,
स्वर्ग मर्त्य पाताल समस्त जुड़ि।
इन्द्र वज्र दमन गोपिका जन रमण
गिरि गोवर्द्धन धारी।
श्री नन्देर नन्दन वकासुर निधन
असित असत्त्य देहधारी।
हिरण्य नाशन प्रह्लाद तारण
भयद नृसिंहरूपधारी।

७

कोथाय हरि दीनबन्धु दीने दया करो ना।
साध करे आनिले भवे कभु साड़ा दिले ना।
(आमि) वने खुँजि मने खुँजि तबु देखा पेलाम ना।
तोमार श्रीचरण बिने
धैरय ना माने प्राणे,
काङाल बोले तुमि मोरे पाये ठेले फेलो ना।

तोमार चरण पावार आशे
खेया घाटे रइलाम बोसे,
तुमि मोर काण्डारी होये एबार पारे नाओ ना।

८

भुल भुल भुल सकलि भुल,
भुल भाङ्गते लागे गोल।
भुल भाङ्गिबार भावना भेवे
मन ये होये याय व्याकुल।
मने भाबि बलबो सत्य
बुद्धि ए करे वीरत्व,
छयटा रिपु छय दिके याय
जेगे ओठे गण्डगोल।
सूक्ष्म रूपे आछेन यिनि
काउके दैखा दैन ना तिनि
एक मिनिटे छाड़े देह
कान्नाकाटिर पड़े रोल।
[स्वरचित]

९

दुर्गा देवी बसो पूजार घरे,
सिंह-वाहने खड्ग-हस्ते देखिबो तोमारे।
लक्ष्मी आर सरस्वती कार्त्तिक गणेश,
शिवेर पार्श्वे महादेव शोभियाछे बेश,
बाघ-छाल परिधान हस्तेते त्रिशूल।
बम् बम् बम् बले बाजाय डुम्बुर।

हंस पेचक साथे साथे इँदुर ओ मयूर
पदतले शोभियाछे असुर महिषासुर।
पाद्य अर्घ्य दिया तोमाय करिबो वरण
पुष्प - दूर्वा - विल्वदले पूजिबो चरण।
भोग - नैवेद्य साजाये करिबो निवेदन,
धूप-दीप-आरती दिये करिबो पूजन।
[स्वरचित]

१०

चित्तेर-इ स्पन्दने रयेछि बन्धने मन तो खुलिते पारि ना।
ओरे अबोध मन, सदाइ करिस् विचरण
देशे-विदेशे तोर कभु नाइ माना।
आबार नीरवे आसिये हृदये वसिये
करिस् नाना छलेर मन्त्रणा।
देह मध्ये छयटा रिपु वलवान
बुद्धिर संगे युद्ध करे अविराम
तबु तो ना कभु पाइलाम विराम
कार-ओ कथा केहो शोने ना।
सूक्ष्म रूपे आछे देहेर सारथि
से तुष्ट थाकिले ना हय अधोगति।
से ये सत्य सनातन नित्य निरञ्जन
कभु तारे मन! भुलो ना।
[स्वरचित]

श्री मौनानन्द पर्वत (भाईजी)

रचित संगीत

१

तोमारि साधना तोमारि वन्दना,
हउक आमारि जीवन सम्बल।
तोमारि स्तवे तोमारि भावे,
पराण आमारि हउक उछल।
आमि आकाशेर पाने
तोमारि सन्धाने अनिमेषे चेये रबो ;
आमि चाहिबो ना किछु, कबो ना कथाटि,
केवल चरणे लुटाबो निये आँखिजल।
आमि तोमारि असीमे घुरिबो, फिरिबो
तोमारि महिमा गाने।
आमि तोमारि आनन्दे रबो सदानन्दे
तुलिया तोमार नामेर हिल्लोल।
आमार सकल कर्म सकल धर्म,
तोमार पूजार लागि।
परिहरि दूरे बुद्धि-विचार,
रातुल चरण करिबो सम्बल।*

---

* शाहबाग, १३३३ वंगाब्द ; "पागलेर गान" नाम से यह गाना छपा था।

तोमाय नमो हे नमः, आमाय क्षमो हे क्षमो,
तोमाय डाकितेछि मागो बार बार;
पाइले (तोमार) चरणेर छाया संशय यावे टुटिया
आमार श्रान्त हृदय हइवे शीतल।

— माँ —

२

तोमारि चरण-रेणु माखि अङ्गे धन्य हइते चाइ;
मरमे मरमे जीवने मरणे तोमारि हइया याइ।
हृदि-शतदले पद-शतदल क्षण राखि करो त्रिताप शीतल,
आमारे पवित्र करो निरमल—(यैनो) दिवानिशि तोमा पाइ।
हे चिर वाञ्छित, हे चिर सदय! पराण आमार करो गो तन्मय,
तुमि आमिमय, आमि तुमिमय—(यैनो) श्रीचरणे लय पाइ।

— माँ —

३

तोमारि चरणे आमार पराण पिरीति निगड़े बाँधो हे।
आमार बलिया येखाने या आछे, तोमार करिया लओ हे।
अतल, अगाध, अपार तोमार, सुधा-विगलित प्रेम-पारावार,
(ताय) डुबाइया दाओ आमि ओ आमार, सुन्दर चिर नवीन हे!
आमारे भाङ्गिया करो चुरमार, ओहे प्रियतम, प्राणेश आमार,
तोमार बाहिरे यैनो मोरे आर कोथा दैखा नाहि याय हे।
तुमि कतो बड़ो गिरि हिमाचल, आमि क्षुद्र अति हीन, निःसम्बल
तोमारि छायाय करिया शीतल, तोमार काङाल करो हे।
सुखे, दुःखे, मोर जीवने, मरणे, पुलके, विषादे, घुमे, जागरणे।
लुटाये पड़िते तोमार चरणे आमाय शकति दाओ हे।

आपनार माझे करि अहंकार, तुलि वृथा कतो बेसुरा झंकार,
लाजे मरि शेषे करि हाहाकार; चरणे टानिया लओ हे।
आमार स्वभाव करा अपराध, रागद्वेष, हिंसा, वाद, विसम्वाद,
"जीवे क्षमा, दया" एइ तव साध, आमाय प्रसन्न हओ हे।
तव शुभ इच्छा करिते पूरण, आमार सर्वस्व करह हरण,
पागल करिया दाओ प्राण-मन, घुचाओ मर्म-वेदना हे।

– माँ –

४

तोमारि चरणे पराण आमार
लओ मागो उपहार
आमार संसार जीवन आमार
हासि आर अश्रुभार।
तोमारि कारणे उचाटन मन
भकति बन्धने करियो बन्धन,
हृदय-वीणाय रागिणी तोमार
झङ्कारियो अनिवार।
खुले दिओ मोह-अन्ध दुनयन
सर्वमय तोमा करि दरशन,
जीवने मरणे पूजिते तोमाय
सर्वमयी सर्वाधार।
आमारे विस्मृत करिओ विभल,
तोमारइ काजे आकुल पागल,
तुमिमय मागो रचि भूमण्डल
लभि प्रेम-पारावार।

— माँ —

५

आत्म-समर्पणे करि मृत्युपण
देह-तरीखानि दाओ भासाइया ;
चेये रओ मार मुखे निरवधि,
दाँड़ पाल, हाल सकलि छाड़िया।
यदि उठे पथे बादल बातास,
ना करिओ भय, ना करिओ त्रास;
रुद्ध करि भाषा, प्राणेर स्पन्दन,
जड़ेर मतन थाकिओ बसिया।
कभु अहंकार हइले जाग्रत
भकति विश्वासे करियो संयत ;
मुखे, बुके श्वासे रेखो मातृ-नाम
धन जन गेह सकलि भुलिया ;
मायेर मोहन मूरति मधुर,
राखिओ हृदय-दर्पणे आँकिया। *

— माँ —

६

हरषे-विषादे किंवा सुखे-दुःखे, अविराम डाको माँ, माँ, माँ, माँ !
मातृ-गर्भ हते यखनि पड़िले, विश्व-जननी निल तुले कोले ;
करिलो दीक्षित "ओंया" मन्त्रे, डाकिते शिखालो माँ, माँ, माँ, माँ।
आपनाते भर करिया आपनि, गियाछो भुलिया आदि महाध्वनि।
साइ वेद-तन्त्र खुँजिया बेड़ाओ असीम अनन्तेर सीमा।

* मुसौरी, ज्यैष्ठ १३४१ वंगाब्द।

यदि ईशतत्त्व जानिबारे चाओ, नाना रूप यतो माँ-बीजे डुबाओ,
भास आँखिनीरे, माँ माँ माँ बले, करो पथेर सम्बल आनन्दमयी माँ।
मायेर शेष भिक्षा* करिया स्मरण, लक्ष्य-नामे बाँधो देह प्राण मन,
शिशुर मतन हासिया नाचिया, अविराम डाको माँ, माँ, माँ, माँ।†

— माँ —

७

ऊषा-अरुणे प्राण-विजने करो मायेर नाम गान,
जननी अमृत-सिन्धु! पापी तापीर प्राणाराम।
मातृ-नामामृते पाखी शत शत
घुमन्त धरणी करिलो जाग्रत,
मनोभृङ्ग विमोहित—परिमल करे पान,
मातृ-नाम-गाने सिन्धु नृत्यपर,
प्रेमाकुल चित्त सरित् निर्भर,
प्रमोदित चराचर—(करे) प्रेमामृते प्राणदान।

— माँ —

८

बहु दिन गत हयेछि वञ्चित ओ तव श्रीपदे जननि,
अन्तरे सञ्चित हइयाछे कतो अश्रु-विजड़ित वाणी!
स्तब्ध आकाशेते पेते आछि कान,
एलो एलो बोले शिहरिछे प्राण;
तापित चित्तेर मौन निश्वासे तपत निखिल धरणी।

* (६) "मेरे लिए प्रतिदिन दस मिनट तक 'नाम' करो"—जीव के निकट माँ ने यही भिक्षा माँगी है—शुद्ध आत्मचिन्ता के हेतु।

† "मातृदर्शन"—पृष्ठ १३४।

सब काड़ियाछो आरो केड़े नाओ,
सकल बन्धन छिन्न करे दाओ;
शुधु रेखो अधिकार श्रीपदे तोमार,
काँदिते दिवस यामिनी।

— माँ —

६

गान गाओया आज हलो शेष;
कृताञ्जलि चेये आछि तोमारि निदेश।
मरमेर भाषा प्राणेर रागिणी
श्रीचरणे सत्रि सँपेछि जननि,
शून्य नयन पुण्य स्वपने
विभोर करियो शेष।

दियो शुद्धा भक्ति प्रेम सुविमल,
तोमारि चरणे विश्वास अटल,
भेङे मायास्वप्न झावि आँखिजल
लीला मोर करो शेष।

मनने, मरमे, स्वपने सघन—
आकुल हइया प्रेमाकुल मन,
माखि पदरेणु दियो ए जीवन
धन्य हइते शेष।

प्रणव-अमृते सिक्त करि प्राण,
जीवनेर दिवा करो अवसान;
नियो, सत्रि नियो, काङाल करियो—
दियो स्मृतिटुकु अवशेष। *

— माँ —

* कार्त्तिक १४, १३३५ वंगाब्द।

१०

तोमारि इच्छा करिया पूर्ण
आमारे धन्य करो हे।
आमार–आमार करि चिरनाश
प्रेमे तव प्रिय, गड़ो हे।
दुःख दाओ यतो सुखे सहिते
विरहे मिलने हेरि विभासित ;
तोमारि साधने तोमारि महिमा,
तोमारि प्रेरणा हे।
आमि आकाशे पातिया कान
शुनियाछि महागान ;
उदार हृदय-सागरे डुबिया
पेयेछि अगाध प्रणय हे।
सगुणे निर्गुणे करि विमिश्रण
विभिन्ने अभिन्ने मूर्ति मनोरम ;
अरूप स्वरूप पूर्ण निराकार
मागो, हेरिबारे आँखि दाओ हे।

— माँ —

११

अमार साधन भजन सकलि तुमि,
कभु देखि तुमि, कभुओ बा आमि,
कभु नाइ आमि तुमि।

कभु देखि तव नाइ काया छाया
कभु देखि आछो सेजे महामाया,
कोथाय बा आछो कोथाय वा नाइ,
खुँजिया ना पाइ आमि ।

हे अनादि - अन्त जगत-जीवन,
घुचाओ मरम निविड़ क्रन्दन,
राखो अविच्छेदे मिलने विच्छेदे,
ओ राङा चरणे स्वामी ।

— माँ —

———

श्री श्री माँ के आश्रम में गीत

नित्य कीर्तन और प्रभाती कीर्तन

१

श्रीश्रीमातृका-ध्यान

ॐ धृत-सहज-समाधिं बिभ्रतीं हेमकान्ति
नयन-सरसिजाभ्यां स्नेहराशीन् किरन्तीम् ।
मनसि कलितभक्तिं भक्तमानन्दयन्तीं
स्मितजितशरदिन्दुं मातरं धीमहीह ॥१॥

तपन-शकल-कल्पं कल्पवृक्षोपमानं
शरणागतजनानां तारकं क्लेशपाशात् ।
हृदय-कमलमध्ये स्थापयित्वेह मातुः
विहितविविधकल्पं पादपीठं भजामः ॥२॥

२

भजो माँ आनन्दमयी, जपो माँ आनन्दमयी,
गाहो माँ आनन्दमयीर नाम रे ।
भजो माँ, जपो माँ, गाओ माँ, बलो माँ,
डाको माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ ।

३

जय शिव शङ्कर, बम बम हर हर
हर, हर, हर, हर, हर, हर, हे ।

हरे मुरारे राम राम हरे हरे
रा-आ-म, रा-आ-म, रा-आ-म हरे।
(जय) राम, राम, राम, हरे।

४

गुरु-स्तोत्रम्

भवसागर - तारण - कारण हे।
रविनन्दन - बन्धन - खण्डन हे।
शरणागत - किङ्कर - भीत मने।
गुरुदेव दया करो दीन जने॥ १॥

हृदि - कन्दर - तामस - भास्कर हे।
तुमि विष्णु प्रजापति शङ्कर हे।
परब्रह्म परात्पर वेद भने।
गुरुदेव दया करो दीन जने॥ २॥

मन - वारण - शासन - अङ्कुश हे।
नरत्राण तरे हरि चाक्षुष हे।
गुणगान - परायण देवगणे,
गुरुदेव दया करो दीन जने॥ ३॥

कुलकुण्डलिनी - घुम - भञ्जक हे।*
हृदि - ग्रन्थि - विदारण - कारक हे।
मम मानस चञ्चल रात्रि-दिने।
गुरुदेव दया करो दीन जने॥ ४॥

---

* घुम = निद्रा।

रिपुसूदन मङ्गल - नायक हे।
सुख - शान्ति - वराभय - दायक हे।
त्रयताप हरे तव नाम - गाने।
गुरुदेव दया करो दीन जने॥ ५॥

अभिमान - प्रभाव - विनाशक हे।
गतिहीन जने तुमि रक्षक हे।
चित शङ्कित वञ्चित भक्तिधने,
गुरुदेव दया करो दीन जने॥ ६॥

तव नाम सदा शुभ साधक हे।
पतिताधम - मानव - पावक हे।
महिमा तव गोचर शुद्ध मने,
गुरुदेव दया करो दीन जने॥ ७॥

जय सद्‌गुरु ईश्वर - प्रापक हे।
भव - रोग - विकार - विनाशक हे।
मन यैनो रहे तव श्रीचरणे,
गुरुदेव दया करो दीन जने॥ ८॥

५

हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल।
हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल······

प्रणाम-मन्त्र

१

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ १॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ २॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ ३॥

गुरोर्मध्ये स्थिता माता मातृमध्ये स्थितो गुरुः।
गुरुर्माता नमस्तेऽस्तु मातृगुरुं नमाम्यहम्॥ ४॥

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्त्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥ ५॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्त्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥ ६॥

२

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः॥ १॥

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ २॥

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमयि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ ३॥

शरणागत - दीनार्त्त - परित्राण - परायणे।
सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ ४॥

भवतापप्रणाशिन्यै आनन्दघन - मूर्त्तये।
ज्ञान-भक्ति-प्रदायिन्यै मातस्तुभ्यं नमोनमः॥ ५॥

३

जयन्ती मङ्गलकाली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा शिवा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥

४

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शङ्कर - प्राणवल्लभे।
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति॥
माता मे पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्॥

५

विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय
कर्णामृताय शशिशेखर - भूषणाय।
कर्पूरकुन्दधवलाय जटाधराय
दारिद्र्य-दुःख-दहनाय नमः शिवाय॥ १॥
नमः शिवाय शान्ताय कारणत्रयहेतवे।
निवेदयामि चात्मानं गतिस्त्वं परमेश्वर॥ २॥

६

सद्यः पातकसंहन्त्री सद्यो दुःखविनाशिनी।
सुखदा मोक्षदा गङ्गा गङ्गैव परमा गतिः॥

७

रामाय रामचन्द्राय रामभद्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥ १॥
आपदाम् अपहर्त्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥ २॥

८

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः॥ १॥
कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमोनमः॥ २॥
हे कृष्ण करुणासिन्धो दीनबन्धो जगत्पते।
गोपेश गोपिकाकान्त राधाकान्त नमोऽस्तु ते॥ ३॥
पापोऽहं पापकर्म्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो हरिः॥ ४॥

९

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥ ॥
असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय आविराधिर्म एधि॥ २॥

१०

यदक्षरं परिभ्रष्टं मात्राहीनञ्च यद् भवेत्।
पूर्णं भवतु तत् सर्वं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

११

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः
हरि ओम् तत्सत्॥

सान्ध्य कीर्त्तन

१

श्रीश्रीमातृका-ध्यान

(प्रभाती कीर्त्तन द्रष्टव्य है)

२

भजन

(जय) हृदय-वासिनी शुद्धा सनातनी (श्री) आनन्दमयी माँ ।
भुवन उज्ज्वला जननी निर्मला पुण्य-विस्तारिणी माँ ॥
राजराजेश्वरी स्वाहा स्वधा गौरी प्रणव-रूपिणी माँ ।
सौम्या सौम्यतरा सत्या मनोहरा पूर्णपरात्परा माँ ॥
रविशशिकुण्डला महाव्योमकुन्तला विश्वरूपिणी माँ ।
ऐश्वर्य्यभातिमा माधुर्य्यप्रतिमा महिमामण्डिता माँ ॥
रमा-मनोरमा शान्ति-शान्ता-क्षमा सर्वदेवमयी माँ ।
सुखदा वरदा भकति-ज्ञानदा कैवल्यदायिनी माँ ॥
विश्व-प्रसविनी विश्व-पालिनी विश्व-संहारिणी माँ ।
भक्त-प्राणरूपा मूर्त्तिमती कृपा त्रिलोकतारिणी माँ ॥
कार्य्यकारणभूता भेदाभेदातीता परमदेवता माँ ।
विद्याविनोदिनी योगिजनरञ्जिनी भवभयभञ्जिनी माँ ॥
मन्त्रबीजात्मिका वेद-प्रकाशिका निखिलव्यापिका माँ ।
सगुणा सरूपा निर्गुणा नीरूपा महाभावमयी माँ ॥
मुग्ध चराचर गाहे निरन्तर तव गुणमाधुरी माँ ।
(मोरा) मिलि प्राणे प्राणे प्रणमि श्रीचरणे जय जय जय माँ ॥

डाको, माँ माँ माँ माँ माँ माँ माँ।
बलो, भजो, जपो, गाहो माँ माँ माँ॥

३

जय शिव शङ्कर बम् बम् हर हर।

४

हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल, हरिबोल।

५

प्रणाम मन्त्र

(प्रभाती कीर्त्तन द्रष्टव्य है)

आरती

१

ॐ जय जगदीश हरे। प्रभु जय जगदीश हरे ॥ टेक ॥
भक्त-जनन के संकट क्षण में दूर करे ॥

जो ध्यावे फल पावे दुःख मिटे मन का। (प्रभु दुःख ....)
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का ॥ १ ॥

मातापिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी। (प्रभु शरण ....)
तुम बिन और न दूजा, आश करूँ जिसकी ॥ २ ॥

तुम पूर्ण परमात्मा, तुम अन्तरयामी। (प्रभु तुम ....)
परब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ३ ॥

तुम करुणाके सागर, तुम पालन-कर्त्ता। (प्रभु तुम ....)
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ॥ ४ ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति। (प्रभु सबके ....)
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ५ ॥

दीनबन्धु दुःख-हरता, तुम रक्षक मेरे। (प्रभु तुम ....)
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ६ ॥

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। (प्रभु पाप ....)
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ७ ॥

२

(जय) अम्बे गौरी मैया।
(जय) मङ्गल-मूरती मैया ॥ टेक ॥
तुमको निशिदिन ध्यावत
हरि ब्रह्मा शिवजी,
माँग सिंदूर विराजत टीका
टीका मृगमद की ॥ १ ॥

कानन कुण्डल शोभित
नासाग्रे मोती
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत
राजत सम-ज्योतिः ॥ २ ॥

सिन्दूर की थाली (जय) केशर की प्याली
गुलाब-गेंदा-चम्पा-जूही, लावत भेंट चढ़ावत प्यारी
प्यारी हरियाली ॥ ३ ॥

गावत सब जन आरती
श्रीमाता जी को।
सेवा करके पावत सेवा
गावत प्रेम देवन को ॥ ४ ॥

३

ॐ जय शिव ओम्कारा
ॐ (जय) हर शिव ओम्कारा ॥ टेक ॥
ब्रह्मा-विष्णु-सदाशिव अर्द्धाङ्गी गौरी ॥ १ ॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे। (हे शिव पञ्चानन···)
हंसासन गरुड़ासन वृष-वाहन साजे॥ २॥

दोभुज चतुर्भुज दशभुज ते सोहे। (हे शिव दशभुज···)
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे॥ ३॥

तक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी। (हे शिव मुण्डमाला···)
चन्दन-मृगमद शोभे भाले शशधारी॥ ४॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अङ्गे। (हे शिव···········)
ब्रह्मादिक सनकादिक प्रेतादिक सङ्गे॥ ५॥

कर में श्रेष्ठ कमण्डल-चक्र-त्रिशूल धरता। (हे शिव···········)
जगकर्त्ता जगहर्त्ता जग - पालन - कर्त्ता॥ ६॥

ब्रह्मा विष्णु-सदाशिव जानत अविवेका। (हे शिव···········)
प्रणवाक्षर के मध्ये तीनों ही एका॥ ७॥

(जय गुण) ये शिवजी की आरती जो कोई गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मन-वाञ्छित फल पावे॥ ८॥

४

(ताँरे) आरती करे चन्द्र तपन, देव मानव वन्दे चरण,
आसीन सेइ विश्व - शरण, ताँर जगत - मन्दिरे।
अनादिकाल अनन्त गगन सेइ असीम महिमा मगन,
ताहे तरङ्ग उठे सघन आनन्द - नन्द - नन्द रे।
हाते लये छय ऋतुर डालि, पाये दैय धरा कुसुम ढालि,
कतोइ वरण, कतोइ गंध, कतो गीति कतो छन्द रे।
विहग-गीत गगन छाय. जलद गाय, जलधि गाय,
महापवन हरषे धाय, गाहे गिरिकन्दरे।

कतो कतो शत भकत प्राण हेरिछे पुलके गाहिछे गान,
पुण्य किरणे फुटिछे प्रेम, टुटिछे मोह-बन्ध रे ॥

५

आनन्दमयी माई प्रेममयी माई
अति अद्भुत मधुरमयी अद्भुत मधुरमयी
आनन्दमयी माई माई।
दयामयी स्नेहमयी कृपामयी करुणामयी
मधुमयी अमृतमयी प्रेममयी शान्तिमयी
चिन्मयी माई माई।
सद्गुरु ज्ञानदा मोक्षदा माई।
सारदा वरदा अन्नदा माई॥

६

आरती कीजे श्री रघुवर की,
दशरथ-नन्दन सीतावर की।
भक्ति का दीपक प्रेम की बाति,
साधु सन्त करें दिन राति॥
आरती हनुमत के मन भावे
आरती भक्तन के मन भावे,
रामचन्द्र की—
दशरथ-नन्दन सीतावर की॥

७

ज्योति से ज्योति ज्वला दो राम
ज्योति से ज्योति जगा दो॥

श्री गौराङ्ग की मङ्गल-आरती

८

मङ्गल आरती गौर किशोर।
मङ्गल नित्यानन्द जोड़हि जोड़॥
मङ्गल अद्वैत भकतहिं सङ्गे।
मङ्गल गावत प्रेम तरङ्गे॥
मङ्गल बाजत खोल करताल।
मङ्गल हरिदास नाचत भाल॥
मङ्गल धूप दीप लइया स्वरूप।
मङ्गल आरती करे अपरूप॥
मङ्गल गदाधर हेरि पहूँ हास।
मङ्गल गावत दीन कृष्णदास॥

श्री राधाकृष्ण की मङ्गल-आरती

९

मङ्गल आरती युगल किशोर।
जय जय कहतहिं सखीगण भोर॥
रतन प्रदीप करे टलमल जोर।
निरखित मुखविधु श्याम सुगौर॥
ललिता विशाखा आदि प्रेमे आगोर।
करत निरजन दोहे दुहुँ भोर॥
गावत शुक पिक, नाचत मोर।
चाँद उपेखि मुख निरखे चकोर॥
विविध यन्त्र बाजत घन घोर।
श्यामानन्द आनन्दे बाजाय जयढोर॥

श्रीकृष्ण की मङ्गल-आरती

१०

जय जय मङ्गल आरती दुहुँ की।
श्याम गौरी छवि उठत झलकि॥
नवघने यैनो थिर बिजुरी बिराजे।
ताहे मणि आभरणे अङ्ग साजे॥
करे लइ दीपावली हेम थाली।
आरती करतहिँ ललिता आली॥
सबहुँ सखीगण आनन्दे गावे।
कोई करतालि देइ, कोई बजावे॥
कोई कोई सहचरी मनहिं हरिखे।
दुहुँक अङ्ग पर कुसुम बरिखे॥
इह रस कहतहिं बलराम दासे।
दुहुँ रस माधुरी हेरइते आशे॥

श्री गौराङ्ग की दुपहर की भोग-आरती

११

भजो पतित पावन श्रीगौर हरि
श्रीगौर हरि नवद्वीप - विहारी,
जय जय दीन दयामय हितकारी॥ (जय जय)
सुनो सुनो शची - सुत, करो अवधान।
भोग मन्दिरे प्रभु करह पयान॥ (जय जय)
वामेते अद्वैत प्रभु, दक्षिणे निताइ।
मध्य आसने बैसेन चैतन्य गोसाइँ॥ (जय जय)

अद्वैत - घरणी आर शान्तिपुर - नारी।
(आनन्देर आर सीमा नाइ रे)
हुलु हुलु देइ यबे गोरा - मुख हेरि॥ (जय जय)
चौषट्टी मोहन्त आर द्वादश गोपाल।
छय चक्रवर्त्ती आर अष्ट कविराज॥ (जय जय)
शाक शुकुता आदि नाना उपचार।*
आनन्दे भोजन करेन शचीर कुमार॥ (जय जय)
दधि दुग्ध घृत छाना आर लुचि पुरी।
आनन्दे भोजन करेन नदीया विहारी॥ (जय जय)
भोजन करिया प्रभु कैलो आचमन।
सुवर्ण खड़िकाय कैलो दन्तेर शोधन॥† (जय जय)
बसिते आसन दिला रत्न - सिंहासने।
कर्पूर ताम्बूल योगाय प्रिय भक्तजने॥
फुलेर चौआरी घर फुलेर केयारी।
फुलेर रत्न-सिंहासन चँदवा मशारी॥
फुलेर मन्दिरे प्रभु करिला शयन।
गोविन्ददास करे पाद - सम्भाषण॥
फुलेर पापड़ी प्रभुर उड़े पड़े गाय।
तार माझे महाप्रभु सुखे निद्रा याय॥
श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभुर दासेर अनुदास।
सेवा अभिलाष माँगे नरोत्तमदास॥

---

* शुकुता = बिना मिर्चे की एक तरकारी।
† खड़िका = दाँत-खोदनी।

श्री गौराङ्ग की सन्ध्या समय की आरती

१२

भालो गोराचाँदेर आरती बाणी। (भालो बाजे)
बाजे संकीर्त्तन मधुर ध्वनि॥
(आमार गौर आगे)
शङ्ख बाजे, घण्टा बाजे, बाजे करताल।
मधुर मृदंग बाजे शुनिते रसाल॥
विविध कुसुम कुले वनि वनमाला।
कतो कोटि चन्द्र जिनि वदन उजाला॥
(रूप झलमल् झलमल् झलमल् झलमल् करे)
ब्रह्मा आदि देव याँके जोड़ करे।
सहस्र वदने फणी शिरे छत्र धरे॥
शिव, शुक, नारद, व्यास विसारे।
नाहिं परापर भाव भरे॥
श्रीनिवास हरिदास पञ्चम गावे।
गदाधर नरहरि चामर ढुलावे॥
वीर वल्लभदास श्रीगौर चरणे आश।
जग भरि रहल महिमा प्रकाश॥

श्रीकृष्ण की सन्ध्या समय की आरती

१३

हरत सकल सन्ताप जनम की,
मिटत तलब यम काल की।
आरती किये जय जय,
मदन गोपाल की॥

गो-घृत रचित कर्पूर बाती,
झलकत काञ्चन थार की।
मयूर-मुकुट पीताम्बर शोहे,
उरे शोहे वैजयन्ती माल की॥
चरण-कमल पर नूपुर बाजे,
आँजरि कुसुम दुलाल की।
सुन्दर लोल कपोलक छबि सों,
निरखत मदन गोपाल की॥
सुर-नर-मुनिगण करतहिँ आरती,
भकत वत्सल प्रतिपाल की।
हुँहुँ बलि रघुनाथ दास प्रभु,
मोहन गोकुल बाल की॥
आरती किये जय जय मदनगोपाल की।
(मदन गोपाल की, यशोदा-दुलाल की)
(यशोदा दुलाल की, श्री नन्दलाल की)
(श्रीनन्दलाल की, गोपालबाल की)
आरती किये जय जय मदनगोपाल की॥

———

स्तवावली

गणेशाष्टकम्

यतोऽनन्तशक्तेरनन्ताश्च जीवा
यतो निर्गुणादप्रमेया गुणास्ते ।
यतो भाति सर्वं त्रिधा भेदभिन्नं
सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥१॥

यतश्चाविरासीज्जगत् सर्वमेतत्
तथाब्जासनो विश्वगो विश्वगोप्ता ।
तथेन्द्रादयो देवसङ्घ मनुष्याः
सदा तं गणेशं················॥२॥

यतो वह्निभानू भवो भूर्जलञ्च
यतः सागराश्चन्द्रमा व्योमवायुः ।
यतः स्थावरा जङ्गमा वृक्षसङ्घाः
सदा तं गणेशं················॥३॥

यतो दानवाः किन्नरा यक्षसङ्घा
यतश्चारणा वारणाः श्वापदाश्च ।
यतः पक्षिकीटा यतो वीरुधश्च
सदा तं गणेशं················॥४॥

यतो बुद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षो-
र्यतः सम्पदो भक्तसन्तोषिकाः स्युः।
यतो विघ्ननाशो यतः कार्यसिद्धिः
सदा तं गणेशं................ ॥५॥

यतः पुत्रः सम्पद्यतो वाञ्छितार्थो
यतोऽभक्तविघ्नास्तथाऽनेकरूपाः।
यतश्चार्थधर्मौ यतः काममोक्षौ
सदा तं गणेशं................ ॥६॥

यतोऽनन्तशक्तिः स शेषो बभूव
धराधारणेऽनेकरूपे च शक्तः।
यतोऽनेकधा स्वर्गलोका हि नागा
सदा तं गणेशं................ ॥७॥

यतो वेदवाचोऽतिकुंठा मनोभिः
सदा नेति नेतीति यत्ता गृणन्ति।
परब्रह्मरूपं चिदानन्दभूतं
सदा तं गणेशं................ ॥८॥

श्रीगणेश उवाच

पुनरूचे गणाधीशः स्तोत्रमेतत् पठेत् तु यः।
त्रिसंन्ध्यं त्रिदिनं तस्य सर्वकार्यं भविष्यति ॥९॥

यो जपेदष्टदिवसं श्लोकाष्टकमिदं शुभम्।
अष्टवारं चतुर्थ्यां तु सोऽष्टसिद्धीरवाप्नुयात् ॥१०॥

यः पठेन्मासमात्रं तु दशवारं दिने दिने।
स मोचयेद्बन्धगतं राजवध्यं न संशयः ॥११॥

विद्याकामो लभेद् विद्यां पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात्।
वाञ्छितान् लभते सर्वानेकविंशतिवारतः ॥१२॥

यो जपेत् परया भक्त्या गजाननपरो नरः।
एवमुक्त्वा ततो देवश्चान्तर्धानं गतः प्रभुः ॥१३॥

श्रीगणपति-प्रणामम्

एकदंतं महाकायं लम्बोदरं गजाननम्।
विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम् ॥

श्रीश्रीगुरुस्तोत्रम्

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१॥

अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥

अनेकजन्मसम्प्राप्त – कर्मेन्धनविदाहिने।
आत्मज्ञानाग्निदानेन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥४॥

गुरुरादिरनादिश्च गुरुः परमदैवतम्।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥५॥

गुरुर्देवो गुरुर्धर्मो गुरुर्निष्ठा परं तपः ।
गुरोः परतरं नास्ति नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥६॥

गुरोर्मध्ये स्थिता माता मातृमध्ये स्थितो गुरुः ।
गुरुर्माता नमस्तेऽस्तु मातृगुरुं नमाम्यहम् ॥७॥

गुरोर्मध्ये स्तितं विश्वं विश्वमध्ये स्थितो गुरुः ।
गुरुर्विश्वं नमस्तेऽस्तु विश्वगुरुं नमाम्यहम् ॥८॥

चिन्मयं व्यापितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥९॥

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम् ।
बिन्दुनादकलातीतं तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१०॥

ज्ञानशक्तिसमारूढ़स्तत्त्वमालाविभूषितः ।
भुक्तिमुक्तिप्रदाता च तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥११॥

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः ।
तत्त्वज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥१२॥

वन्देऽहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं श्रीमद्गुरुम् ।
नित्यं पूर्णं निराकारं निर्गुणं स्वात्मसंस्थितम् ॥१३॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्त्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥१४॥

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः।
मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ १५॥

मत्प्राणः श्रीगुरोः प्राणो मद्देहो गुरुमन्दिरम्।
पूर्णमन्तर्बहिर्येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ १६॥

शोषणं भवसिन्धोश्च प्रापणं सारसम्पदः।
यस्य पादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ १७॥

संसारवृक्षमारूढ़ा पतन्ति नरकार्णवे।
येनोद्धृतमिदं विश्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ १८॥

स्थावरं जङ्गमं व्याप्तं यत् किञ्चित् सचराचरम्।
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ १९॥

सर्वश्रुतिशिरोरत्न - विराजितपदाम्बुजम्।
वेदान्ताम्बुज - सूर्याय तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ २०॥

श्रीविष्णु-स्तोत्रम्

अविनयमपनय विष्णो दमय मनः शमय विषयमृगतृष्णाम्।
भूतदयां विस्तारय तारय संसारसागरतः॥ १॥

दिव्यधुनीमकरन्दे परिमलपरिभोग - सच्चिदानन्दे।
श्रीपतिपदारविन्दे भवभयतोदच्छिदे वन्दे॥ २॥

सत्यपि भेदापगमे नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम्।
सामुद्रो हि तरङ्गः क्वचन समुद्रो न तारङ्गः॥ ३॥

उद्धृतनग - नगभिदनुज - दनुजकुलामित्र - मित्रशशि-दृष्टे।
दृष्टे भवति प्रभवति न भवति किं भव-तिरस्कारः॥ ४॥

मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवताऽवता सदा वसुधाम्।
परमेश्वर परिपाल्यो भवता भव-ताप-भीतोऽहम् ॥ ५ ॥

दामोदर गुणमन्दिर सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द।
भवजलधिमथनमन्दर परमं दरमपनय त्वं मे ॥ ६ ॥

नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ।
इति षट्पदी मदीये वदनसरोजे सदा वसतु ॥ ७ ॥

श्रीविष्णु-वन्दना

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

श्रीविष्णु-प्रणामम्

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥

श्रीरामचन्द्राष्टकम्

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनम्।
स्वभक्तचित्तरञ्जनं सदैव राममद्वयम् ॥ १ ॥
जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम्।
स्वभक्तभीतिभञ्जनं भजे ह राममद्वयम् ॥ २ ॥

निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम्।
सभं शिवं निरञ्जनं भजे ह राममद्वयम्॥ ३॥
सदा प्रपञ्चकल्पितं ह्यनामरूपवास्तवम्।
निराकृतिं निरामयं भजे ह राममद्वयम्॥ ४॥
प्रपञ्चहीन - निर्मलं विकल्पहं निरामयम्।
चिदेकरूपसन्ततं भजे ह राममद्वयम्॥ ५॥
भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम्।
गुणाकरं कृपाकरं भजे ह राममद्वयम्॥ ६॥
महर्षिवाक्यबोधकैर्विराजमानवाक्पदैः।
सरोजजन्मसेवितं भजे ह राममद्वयम्॥ ७॥
शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम्।
विराजमानदैशिकं भजे ह राममद्वयम्॥ ८॥
रामाष्टकं पठति यः सुकरं सुपुण्यं
व्यासेन भाषितमिदं शृणुते मनुष्यः।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं
संप्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्॥ ९॥

इति व्यासविरचितं श्रीमद्रामचन्द्राष्टकं समाप्तम्

श्रीरामस्तोत्रम्

नमामि भक्तवत्सलं कृपालुशील-कोमलम्।
भजामि ते पदाम्बुजं ह्यकामिनां सुधामदम्॥ १॥
नवीनमेघसुन्दरं भवाम्बुनाथमन्दरम्।
प्रफुल्ल-कञ्जलोचनं मदादिदोषमोचनम्॥ २॥

प्रलम्बबाहुविक्रम - प्रभा-प्रमेय-वैभवम् ।
निषङ्गचापशायकं भजे त्रिलोकनायकम् ॥ ३ ॥

दिनेशवंशमण्डनं महेशचाप - खण्डनम् ।
मुनीन्द्रवृन्दरञ्जनं सुरारिवृन्दगञ्जनम् ॥ ४ ॥

मनोजवैरिवन्दितं भवाब्धिपारकारकम् ।
विशुद्ध - बोधविग्रहं समस्तदूषणापहम् ॥ ५ ॥

नतोऽहमिन्दिरापतिं सुखाकरं सतां गतिम् ।
भजे सशक्तिसानुजं सतीपतिप्रियानुजम् ॥ ६ ॥

त्वदङ्घ्रिपङ्कजं नरा भजन्ति ये विमत्सराः ।
पतन्ति नो भवार्णवे वितर्कवीचिसंकुले ॥ ७ ॥

विविक्तवासनाः सदा भजन्ति मुक्तिदं मुदा ।
निरस्य चेन्द्रियादिकं प्रयान्ति ते गतिं स्वकाम् ॥ ८ ॥

तमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुम् ।
जगद्गुरुञ्च शाश्वतं तुरीयमेककेवलम् ॥ ९ ॥

भजामि भाववल्लभं कुयोगिनां सदुर्लभम् ।
स्वभक्तकल्प - पादपं समस्तसेव्यमन्वहम् ॥१०॥

अनुरूपभूपतिं नतोऽहमुर्विजापतिम् ।
प्रसीद देहि मे विभो पदाब्जभक्तिमाशु ते ॥११॥

पठन्ति ये स्तवं शुभं नराः अनन्यचेतसः ।
व्रजन्ति नात्र संशयस्तदीयभक्ति-संयुताः ॥१२॥

इति श्रीतुलसीदासकृतं रामस्तोत्रं समाप्तम् ॥

श्रीरामचन्द्र-प्रणामम्

रामाय रामचन्द्राय रामभद्राय वेधसे
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ १ ॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ २ ॥

श्रीश्रीकृष्ण-स्तोत्रम्

ॐ नमो विश्वरूपाय विश्वस्थित्यन्तहेतवे ।
विश्वेश्वराय विश्वाय गोविन्दाय नमोनमः ॥ १ ॥

नमो विज्ञानरूपाय परमानन्दरूपिणे ।
कृष्णाय गोपीनाथाय गोविन्दाय नमोनमः ॥ २ ॥

नमः कमलनेत्राय नमः कमलमालिने ।
नमः कमलनाभाय कमलापतये नमः ॥ ३ ॥

वर्हापीड़ाभिरामाय रामायाकुण्ठमेधसे ।
रमामानसहंसाय गोविन्दाय नमोनमः ॥ ४ ॥

कंसवंशविनाशाय केशि - चाणूर - घातिने ।
वृषभध्वजवन्द्याय पार्थसारथये नमः ॥ ५ ॥

वेणुवादनशीलाय गोपालायाहिमर्दिने ।
कालिंदीकूललोलाय लोलकुण्डलवल्गवे ॥ ६ ॥

वल्लवीनयनाम्भोजमालिने नृत्यशालिने ।
नमः प्रणतपालाय श्रीकृष्णाय नमोनमः ॥ ७ ॥

नमः पापप्रणाशाय गोवर्द्धनधराय च।
पूतनाजीवितान्ताय तृणावर्त्तासुहारिणे ॥ ८ ॥

निष्कलाय विमोहाय शुद्धायाशुद्धिवैरिणे।
अद्वितीयाय महते श्रीकृष्णाय नमोनमः ॥ ९ ॥

प्रसीद परमानन्द प्रसीद परमेश्वर।
आधिव्याधिभुजङ्गेन दष्टं मामुद्धर प्रभो ॥१०॥

श्रीकृष्ण रुक्मिणीकान्त गोपीजनमनोहर।
संसारसागरे मग्नं मामुद्धर जगद्गुरो ॥११॥

केशव क्लेशहरण नारायण जनार्दन।
गोविन्द परमानन्द मां समुद्धर माधव ॥१२॥

इति पूर्वतापनीयश्रुतिषु श्रीकृष्ण-स्तोत्रं समाप्तम्।

श्रीकृष्णकर्णामृत-स्तोत्रम्

हे देव हे दयित हे जगदेकबंधो।
हे कृष्ण हे चपल हे करुणैकसिंधो ॥
हे नाथ हे रमण हे नयनाभिराम।
हा हा कदा नु भवितासि पदं दृशोर्मे ॥ १ ॥

अंसालम्बितवामकुन्तलभरं मंदोन्नत - भ्रूलतं
किञ्चित्कुञ्चितकोमलाधरपुटं साचिप्रसारेक्षणम्।
आलोलाङ्गुलिपल्लवैर्मुरलिकामापूरयन्तं मुदा
मूले कल्पतरोस्त्रिभंगललितं जाने जगन्मोहनम् ॥ २ ॥

हे गोपालक हे कृपाजलनिधे हे सिंधुकन्यापते
हे कंसांतक हे गजेन्द्रकरुणापारीण हे माधव।
हे रामानुज हे जगत्त्रयगुरो हे पुण्डरीकाक्ष मां
हे गोपीजननाथ पालय परं जानामि न त्वां विना ॥ ३ ॥

कस्तुरीतिलकं ललाटफलके वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे नवमौक्तिकं करतले वेणुं करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचंदनञ्च कलयन् कण्ठे च मुक्तावलिं
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः ॥ ४ ॥

लोकानुन्मदयन् श्रुतिं मुखरयन् क्षौणीरुहान् हर्षयन्
शैलान् विद्रवयन् मृगान् विवशयन् गोवृंदमानंदयन्।
गोपालं सम्भ्रमयन् मुनीन् मुकुलयन् सप्तस्वरान् जृम्भयन्
ओङ्कारार्थमुदीरयन् विजयते वंशीनिनादः शिशोः ॥ ५ ॥

संध्यावंदन भद्रमस्तु भवते भो स्नान तुभ्यं नमो
भो देवाः पितरश्च तर्पणविधौ नाहं क्षमः क्षम्यताम्।
यत्र क्वापि निषद्य यादवकुलोत्तंसस्य कंसद्विषः
स्मारं स्मारमघं हरामि तदलं मन्ये किमन्येन मे ॥ ६ ॥

इति श्रीविल्वमंगलकृतं श्रीकृष्णकर्णामृतस्तोत्रं समाप्तम्।

श्रीकृष्णताण्डव-स्तोत्रम्

भजे व्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं
स्वभक्त चित्तरञ्जनं सदैव नन्दनंदनम्।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनाद-वेणु-हस्तकं
अनंगरंगसागरं नमामि कृष्णनागरम् ॥ १ ॥

मनोजगर्व-मोचनं विशाल-लोललोचनं
विधूत-गोपशोचनं भजामि पद्मचक्षुषम्।
करारविंदभूषणं स्मितावलोक - सुन्दरं
महेन्द्र-मान-दारणं नमामि कृष्णवारणम् ॥ २ ॥

कदम्बपुष्पकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं
व्रजांगनैकवल्लभं भजामि कृष्णदुर्लभम्।
यशोदया समोदया सकोपया दयानिधिं
उदूखले कृतग्रहं नमामि नन्दनन्दनम् ॥ ३ ॥

नवीन - गोपनागरं नवीन - केलिमन्दिरं
नवीन-मेघसुन्दरं भजे व्रजैकसुन्दरम्।
सदैव पादपंकजं मदीयमानसे निजं
दधातु नन्दबालकः समस्तभक्तपालकः ॥ ४ ॥

समस्त - गोपनागरी-हृदं व्रजैकमोहनं
भजामि कुञ्जमध्यगं प्रसूनभालशोभिनम्।
विरिञ्चिजिष्णुसेवितं सहास-बालसंगिनं
दिने दिने नवं नवं नमामि नन्दसम्भवम् ॥ ५ ॥

गुणाकरं सुखाकरं कृपाकरं शुभाकरं
सदा सुखप्रदायकं नमामि गोपनायकम्।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकतोषणं
समस्तदासमानसं भजामि कृष्णलालसम् ॥ ६ ॥

समस्तगोपनागरी-निकाम-कामदायकं
दृगन्तचारुशायकं नमामि वेणुनायकम्।
भवोद्भवावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं
यशोमतेः किशोरकं भजामि दुग्धचोरकम् ॥ ७ ॥

१२

विमुग्धमुग्ध - गोपिका - मनोमनोजदायकं
नमामि मञ्जुकानने प्रवृद्धवह्निपायिनम्।
यदा तदा यथा तथा सदैव कृष्णसत्कथा
तनोतु नो मनोमुदं प्रभो कृपा विधीयताम्॥ ८॥

श्रीगोपी-गीत-स्तोत्रम्

श्रीगोपिका ऊचुः।

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित ! दृश्यतां दिक्षु तावकास्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥१॥

शरदुदाशये साधुजातसत्सरसिजोदर-श्रीमुषा दृशा।
सुरतनाथ ! तेऽशुल्कदासिका वरद ! निघ्नतो नेह किं वधः ॥२॥

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद् वर्षमारुताद् वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद् विश्वतो भयाद् ऋषभ ! ते वयं रक्षिता मुहुः ॥३॥

न खलु गोपिकानन्दनो भवानखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये सख ! उदेयिवान् सात्वतां कुले ॥४॥

विरचिताभयं वृष्णिधुर्य ! ते चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्।
करसरोरुहं कान्त ! कामदं शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम् ॥५॥

व्रजजनार्त्तिहन् वीर ! योषितां निजजनस्मयध्वंसनस्मित !
भज सखे ! भवत्किंकरीः स्म नो जलरुहाननं चारु दर्शय ॥६॥

प्रणतदेहिनां पापकर्षणं तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम्।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम् ॥७॥

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण !
विधिकरीरिमा वीर ! मुह्यतीरधरसीधुनाप्याययस्व नः ॥८॥

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीड़ितं कल्मषापहम् ।
श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥९॥

प्रहसितं प्रिय ! प्रेमवीक्षणं विहरणञ्च ते ध्यानमंगलम् ।
रहसि संविदो या हृदिस्पृशः कुहक ! नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥१०॥

चलसि यद्व्रजाच्चारयन् पशून् नलिनसुन्दरं नाथ ! ते पदम् ।
शिलतृणाङ्कुरैः सीदतीति नः कलिलतां मनः कान्त ! गच्छति ॥११॥

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलैर्वनरुहाननं बिभ्रदावृतम् ।
घनरजःस्वलं दर्शयन् मुहुर्मनसि नः स्मरं वीर ! यच्छसि ॥१२॥

प्रणतकामदं पद्मजार्चितं धरणिमण्डनं ध्येयमापदि ।
चरणपंकजं शन्तमञ्च ते रमण ! नः स्तनेष्वर्पयाधिहम् ॥१३॥

सुरतवर्धनं शोकनाशनं स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम् ।
इतररागविस्मारणं नृणां वितर वीर ! नस्तेऽधरामृतम् ॥१४॥

अटति यद्भवानह्नि काननं त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम् ।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुखञ्च ते जड़ उदीक्षतां पक्ष्मकृद्-दृशाम् ॥१५॥

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवानतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः ।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः कितव ! योषितः कस्त्यजेन्निशि ॥१६॥

रहसि सम्विदं हृच्छयोदयं प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम् ।
बृहदुरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः ॥१७॥

व्रजवनौकसां व्यक्तिरंग ! ते वृजिनहन्त्र्यलं विश्वमंगलम् ।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां स्वजनहृद्रुजां यन्निसूदनम् ॥१८॥

यत् ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु
भीताः शनैः प्रिय ! दधीमहि कर्कशेषु ।
तेनाटवीमटसि तद्व्यथते न किंस्वित्
कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥१६॥

इति श्रीमद्भागवते महपुराणे पारमहंस्यां संहितायां वैयासिक्यां दशमस्कन्धे रासक्रीड़ायां गोपिकागीतकथनं नाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीगोविन्दाष्टकम्

सत्यं ज्ञानमनंतं नित्यमनाकाशं परमाकाशं
गोष्ठप्रांगणरिंगणलोलमनायासं परमायासम् ।
मायाकल्पितनानाकारमनाकारं भुवनाकारं
क्ष्मामानाथमनाथं प्रणमत गोविंदं परमानंदम् ॥१॥

मृत्स्नामत्सीहेति — यशोदा-ताड़नशैशवसंत्रासं
व्यादितवक्त्रालोकितलोकालोकचतुर्दशलोकालिम् ।
लोकत्रयपुरमूलस्तम्भं लोकालोकमनालोकं
लोकेशं परमेशं प्रणमत गोविंदं परमानंदम् ॥२॥

त्रैविष्ट-परिपुवीरघ्नं क्षितिभारघ्नं भवरोगघ्नं
कैवल्यं नवनीताहारमनाहारं भुवनाहारम् ।
वैमल्यस्फुटचेतोवृत्ति - विशेषाभासमनाभासं
शैवं केवलशांतं प्रणमत गोविंदं परमानंदम् ॥३॥

गोपालं प्रभुलीलाविग्रहगोपालं कुलगोपालं
गोपीखेलनगोवर्द्धनधृतिलीलालालित-गोपालम् ।

गोभिर्निगदितगोविंदस्फुटमानं बहुनामानं
गोधीगोचरदूरं प्रणमत गोविंदं परमानंदम् ॥४॥

गोपीमण्डलगोष्ठिभेदं भेदावस्थमभेदाभ
शश्वद्गोखुरनिर्धुतोद्गतधूलीधूसरसौभाग्यम् ।
श्रद्धाभक्तिगृहीतानंदमचिन्त्यं चिंतितसद्भावं
चिंतामणिमहिमानं प्रणमत गोविंदं परमानंदम् ॥५॥

स्नानव्याकुलयोषिद्वस्त्रमुपादायागमुपारूढं
व्यादित्संतीरथ दिग्वस्त्रा दातुमुपाकर्षंतं ताः ।
निर्धूतद्वयशोकविमोहं बुद्धं बुद्धेरंतःस्थं
सत्तामात्रशरीरं प्रणमत गोविंदं परमानंदम् ॥६॥

कांतं कारणकारणमादिमनादिं कालघनाभासं
कालिंदीगतकालीयशिरसि सुनृत्यंतं मुहुरत्यंतम् ।
कालं कालकलातीतं कलिताशेषं कलिदोषघ्नं
कालत्रयगतिहेतुं प्रणमत गोविंदं परमानंदम् ॥७॥

वृंदावनभुवि वृंदारकगणवृंदाराधितवंद्येऽहं
कुंदाभामलमंदस्मेरसुधानंदं सुहृदानंदम् ।
वंद्याशेषमहामुनिमानसवंद्यानंदपदद्वंद्वं
वंद्याशेषगुणाब्धिं प्रणमत गोविंदं परमानंदम् ॥८॥

गोविंदाष्टकमेतदधीते गोविंदार्पितचेता यो
गोविंदाच्युत माधव विष्णो गोकुलनायक कृष्णेति ।
गोविंदाङ्घ्रिसरोजध्यानसुधाजलधौतसमस्ताघो
गोविंदं परमानंदामृतमन्तस्थं स तमभ्येति ॥९॥

श्रीमदनमोहनाष्टकम्

जय शङ्ख-गदाधर नीलकलेवर पीतपटाम्बर देहि पदम् ।
जय चंदन-चर्चितकुंडलमंडित कौस्तुभशोभित देहि पदम् ॥१॥

जय पङ्कजलोचन मार-विमोहन पापविखंडन देहि पदम् ।
जय वेणु-निनादक रास-विहारक वंकिम-सुंदर देहि पदम् ॥२॥

जय धीर-धुरंधर अद्भुतसुंदर दैवत-सेवित देहि पदम् ।
जय विश्वविमोहन मानस-मोहन संस्थिति-कारण देहि पदम् ॥३॥

जय भक्तजनाश्रय नित्य-सुखालय अंतिम-बांधव देहि पदम् ।
जय दुर्जय-शासन केलि-परायण कालियमर्दन देहि पदम् ॥४॥

जय नित्यनिरामय दीनदयामय चिन्मय माधव देहि पदम् ।
जय पामर-पावन धर्मपरायण दानव-सूदन देहि पदम् ॥५॥

जय वेदविदांवर गोपवधूप्रिय वृंदावनधन देहि पदम् ।
जय सत्य-सनातन दुर्गति-भञ्जन सज्जनरञ्जन देहि पदम् ॥६॥

जय सेवक-वत्सल करुणा-सागर वाञ्छितपूरक देहि पदम् ।
जय पूत-धरातल देवपरात्पर सत्त्वगुणाकर देहि पदम् ॥७॥

जय गोकुलभूषण कंसनिसूदन शाश्वतजीवन देहि पदम् ।
जय योगपरायण संसृति-वारण ब्रह्म निरञ्जन देहि पदम् ॥८॥

श्रीशिक्षाष्टकम्

चेतोदर्पणमार्ज्जनं भवमहादावाग्निनिर्वापणं,
श्रेयः-कैरव-चंद्रिका-वितरणं विद्यावधू-जीवनम्।
आनंदाम्बुधिवर्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं,
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसंकीर्त्तनम्॥१॥

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति-
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः।
एतादृशी तव कृपा भगवन् ममापि
दुर्दैवमीदृशमिहाजनि नानुरागः॥२॥

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्त्तनीयः सदा हरिः॥३॥

न धनं न जनं न सुंदरीं
कवितां वा जगदीश कामये।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे
भवताद्भक्तिरहैतुकी त्वयि॥४॥

अयि नंदतनूज किंकरं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ।
कृपया तव पादपङ्कज-स्थितधूली-सदृशं विचिंतय॥५॥

नयनं गलदश्रुधारया वदनं गद्गदरुद्धया गिरा।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नामग्रहणे भविष्यति॥६॥

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम्।
शून्यायितं जगत् सर्वं गोविंदविरहेण मे॥७॥

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टुमा-
मदर्शनान्मर्हतां करोतु वा।
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो
मत्प्राणनाथस्तु स एव नापरः ॥८॥

इति श्रीगौरांगमुखोद्गीर्णं श्रीशिक्षाष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीअच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥ १ ॥

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं
माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम्।
इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं
देवकीनन्दनं नंदजं संदधे ॥ २ ॥

विष्णवे जिष्णवे शंखिने चक्रिणे
रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये।
वल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने
कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः ॥ ३ ॥

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण
श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज
द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ॥ ४ ॥

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो
दण्डकारण्यभू - पुण्यता - कारणम्।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितो-
ऽगस्त्यसम्पूजितो राघवः पातु माम्॥ ५॥

धेनुकारिष्टकोऽनिष्टकृद् - द्वेषिणां
केशिहा कंसहा वंशिका-वादकः।
पूतनाकोपनः सुरजाखेलनो
बालगोपालकः पातु मां सर्वदा॥ ६॥

विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं
प्रावृड़म्भोदवत्प्रोल्लसद् - विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोवक्षःस्थलं
लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे॥ ७॥

कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमानाननं
रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयोः।
हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं
किंकिणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे॥ ८॥

अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं
प्रेमतः प्रत्यहं पुरुषः सस्पृहम्।
वृत्ततः सुन्दरं कर्त्तृ - विश्वम्भरं
तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम्॥ ९॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्य्य-विरचितमच्युताष्टकस्तोत्रं समाप्तम्।

प्रणामम्

नीलोत्पलदलश्यामं यशोदानन्दनन्दनम् ।
गोपीकानयनानन्दं गोपालं प्रणमाम्यहम् ॥

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।
प्रणत क्लेशनाश गोविन्दाय नमोनमः ॥

प्रीयतां पुण्डरीकाक्षः सर्वयज्ञेश्वरो हरिः ।
तस्मिन् तुष्टे जगत् तुष्टं प्रीणिते प्रीणितं जगत् ॥

श्रीनारायण-स्तोत्रम्

नारायण नारायण जय गोविन्द हरे ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

करुणापारावार वरुणालयगम्भीर ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

घननीरदसंकाश कृतकलिकल्मषनाश ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

यमुनातीरविहार धृतकौस्तुभमणिहार ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

पीताम्बरपरिधान सुरकल्याणनिधान ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

मञ्जुलगुञ्जाभूष मायामानुषवेश ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

राधाधरमधुरसिक रजनीकरकुलतिलक ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

मुरलीगानविनोद वेदस्तुतभूपाद ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

बर्हिनिवर्हापीड़ नटनाटकफणिकचूड़ ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

वारिजभूषाभरण राधारुक्मिणीरमण ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

जलरुह-दल-निभनेत्र जगदारम्भकसूत्र ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

पातक-रजनी-संहर करुणामय मामुद्धर ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

अघ-बक-क्षय कंसारे केशव कृष्ण मुरारे ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

हाटकनिभ-पीताम्बर अभयं कुरु मे मावर ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

दशरथराजकुमार दानवमदसंहार ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

गोवर्द्धनगिरिरमण गोपीमानसहरण ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

सरयूनीरविहार सज्जनमानसचार।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥

विश्व-मित्र - मखत्र विविधपरासुचरित्र।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥

ध्वजवज्रांकुशपाद धरणीसुतासहमोद।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥

जनकसुता-प्रतिपाल जय जय संस्तृतिलील।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥

दशरथवाग्धृतिभार दण्डकवनसञ्चार।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥

मुष्टिक-चाणूर-हन्ता मुनिजनमानसहंस।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥

बालिविनिग्रहशौर्य्य वरसुग्रीवहितकार्य।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥

मां मुरलीकर धीवर पालय पालय श्रीधर।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥

जलनिधिबन्धनधीर रावणकण्ठविदार।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥

ताटीमद-दलनाढ्य नटगुणविविधधनाढ्य।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥

गौतमपत्नी-पूजन करुणाघनावलोकन।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे॥

सम्भ्रमसीताहार साकेतपुरविहार ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

अचलोद्धृतिचञ्चत्कर भक्तानुग्रहतत्पर ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

नैगमगान-विनोद रक्षःसुत-प्रह्लाद ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

भारतीयतिवरशङ्कर नामामृतमखिलान्तर ।
नारायण नारायण जय गोपाल हरे ॥

इति श्रीमच्छंकराचार्य्य-विरचितं नारायणस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम् ।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम् ।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम् ।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम् ॥

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
हृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्॥

इति श्रीवल्लभाचार्य्यविरचितं मधुराष्टकं समाप्तम्।

श्रीशिवपञ्चाक्षर-स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न'-काराय नमः शिवाय॥१॥

मन्दाकिनीसलिल-चन्दन-चर्च्चिताय
नन्दीश्वर - प्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्प-बहुपुष्प-सुपूजिताय
तस्मै 'म'-काराय नमः शिवाय॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्य्याय दक्षाध्वरनाशकाय।

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि'-काराय नमः शिवाय ॥३॥

वसिष्ठ-कुम्भोद्भवगौतमार्य्य-
मुनीन्द्र - देवार्चित - शेखराय।
चन्द्रार्क - वैश्वानर - लोचनाय
तस्मै 'वा'-काराय नमः शिवाय ॥४॥

यज्ञस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य'-काराय नमः शिवाय ॥५॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्य्य-विरचितं शिवपञ्चाक्षर-स्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्रीशिवाष्टक-स्तोत्रम्

प्रभुमीशमनीशमशेषगुणं
गुणहीनमहीश-गरलाभरणम्।
रण-निर्जित-दुर्जय-दैत्यपुरं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥१॥

गिरिराज-सुतान्वित-वामतनुं
तनु-निन्दित - राजित - कोटिविधुम्।
विधि-विष्णु-शिरोधृत-पादयुगं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ।।२।।

शशलाञ्छित-रञ्जितसन्मुकुटं
कटिलम्बित - सुन्दर - कृत्तिपटम्।
सुरशैवलिनी - कृत - पूतजटं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ।।३।।

नयनत्रय-भूषित-चारुमुखं
मुखपद्म - पराजित - कोटिविधुम्।
विधुखण्ड - विमण्डित - भाल - तटं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ।।४।।

वृषराज - निकेतनमादिगुरुं
गरलाशनमाजिविषाणधरम्।
प्रमथाधिप-सेवक-रञ्जनकं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ।।५।।

मकरध्वज-मत्त-मातंगहरं
करिचर्मग-नाग-विबोधकरम्।
वरमार्गण-शूल-विषाणधरं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ।।६।।

जगदुद्भवपालननाशकरं
त्रिदिवेश - शिरोमणि - घृष्टपदम्।
प्रियमानव - साधुजनैकगतिं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ।।७।।

अनाथं सुदीनं विभो विश्वनाथ
पुनर्जन्मदुःखात् परित्राहि शम्भो।
भजतोखिल-दुःख-समूहहरं
प्रणमामि शिवं शिवकल्पतरुम् ॥८॥

इति श्रीशिवाष्टक-स्तोत्रं सम्पूर्णम्

श्रीहरिहरब्रह्म-स्तोत्रम्

अच्युतोऽस्मि महादेव तव कारुण्यलेशतः।
विज्ञानघन एवास्मि शिवोऽस्मि किमतः परम् ॥ १ ॥

न निजं निजवद्भात्यन्तःकरणजृम्भणात्।
अन्तःकरणनाशेन संविन्मात्रस्थितो हरिः ॥ २ ॥

संविन्मात्रस्थितश्चाहमजोऽस्मि किमतः परम्।
व्यतिरिक्तं जड़ं सर्वं स्वप्नवच्च विनश्यति ॥ ३ ॥

चिज्जड़ानां तु यो द्रष्टा सोऽच्युतो ज्ञानविग्रहः।
स एव हि महादेवः स एव हि महाहरिः ॥ ४ ॥

स एव ज्योतिषां ज्योतिः स एव परमेश्वरः।
स एव हि परं ब्रह्म तद्ब्रह्माहं न संशयः ॥ ५ ॥

जीवः शिवः शिवो जीवः स जीवः केवलः शिवः।
तुषेण बद्धो व्रीहिः स्यात् तुषाभावेन तण्डुलः ॥ ६ ॥

कर्मबद्धस्तथा जीवः कर्मनाशे सदाशिवः।
पापबद्धस्तथा जीवः पापमुक्तः सदाशिवः ॥ ७ ॥

शिवाय विष्णुरूपाय शिवरूपाय विष्णवे।
शिवस्य हृदयं विष्णुर्विष्णोश्च हृदयं शिवः ॥ ८ ॥

यथा शिवमयो विष्णुरेवं विष्णुमयः शिवः।
यथाऽन्तरं न पश्यामि तथा मे स्वस्तिरायुषि।
यथाऽन्तरं न भेदाः स्युः शिवकेशवयोस्तथा ॥ ९ ॥

देहो देवालयः प्रोक्तः स जीवः केवलः शिवः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् ॥१०॥

अभेददर्शनं ज्ञानं ध्यानं निर्विषयं मनः।
स्नानं मनोमलत्यागः शौचमिन्द्रियनिग्रहः ॥११॥

ब्रह्मामृतं पिबेद् भैक्षमाचरेद्देहरक्षणे।
वसेदेकान्तिको भूत्वा चैकान्ते द्वैतवर्जिते।
इत्येवमाचरेद्धीमान् स एव मुक्तिमाप्नुयात् ॥१२॥

श्रीपरमधाम्ने स्वस्ति, चिरायुः स्यान्नम इति ॥
विरिञ्चिनारायणशङ्करात्मकं नृसिंहदेवेश तव प्रसादतः।
अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमव्ययं वेदात्मकं ब्रह्म निजं विजानते ॥१३॥

श्रीशिवनामावल्यष्टकम्

हे चन्द्रचूड़ मदनान्तक शूलपाणे
स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो।
भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ १ ॥

हे पार्वती-हृदयवल्लभ चन्द्रमौले
भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप।
हे वामदेव भव रुद्र पिणाकपाणे
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ २ ॥

हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पञ्चवक्त्र
लोकेश शेषवलय प्रमथेश शर्व !
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ ३ ॥

हे विश्वनाथ शिवशङ्कर देवदेव
गङ्गाधर प्रमथनाथ नन्दिकेश।
वाणेश्वरान्धक-रिपो हर लोकनाथ
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ ४ ॥

वाराणसीपुरपते मणिकर्णिकेश
वीरेश दक्ष-मख-काल विभो गणेश।
सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ ५ ॥

श्रीमन्महेश्वर कृपामय हे दयालो
हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ।
भस्मांगराग नृकपालकलापमाल
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ ६ ॥

कैलासशैलविनिवास वृषाकपे हे
मृत्युञ्जय त्रिनयन त्रिजगन्निवास।
नारायणप्रिय मदापह शक्तिनाथ
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ ७ ॥

विश्वेश विश्वभवनाश्रय विश्वरूप
विश्वात्मक त्रिभुवनैकगुणाधिवास।
हे विश्ववन्द्य करुणामय दीनबन्धो
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥ ८ ॥

श्रीवेदसार-शिव-स्तोत्रम्

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं
गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गांगवारिं
महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम् ॥ १ ॥

महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं
विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम्।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्नित्रिनेत्रं
सदानन्दमीड़े प्रभुं पञ्चवक्त्रम् ॥ २ ॥

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं
गवेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम्।
भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगं
भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम् ॥ ३ ॥

शिवकान्त शम्भो शशाङ्कार्धमौले
महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूपः
प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप ॥ ४ ॥

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं
निरीहं निराकारमोंकारवेद्यम्।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं
तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम्॥ ५॥

न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायु-
र्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेशो
न यस्यास्ति मूर्त्तिस्त्रिमूर्त्तिं तमीड़े॥ ६॥

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां
शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।
तुरीयं तमःपारमाद्यन्तहीनं
प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम्॥ ७॥

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते
नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य
नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य॥ ८॥

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ
महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे
त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः॥ ६॥

शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे
गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्।
काशीपते करुणया जगदेतदेक-
स्त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि॥१०॥

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे
त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड़ विश्वनाथ ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश
लिंगात्मके हर चराचरविश्वरूपिन् ॥११॥

श्रीचन्द्रशेखराष्टकम्

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम् ।
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥ १ ॥

रत्नसानुशरासनं रजताद्रिशृंगनिकेतनं
शिञ्जिनीकृत-पन्नगेश्वरमच्युतानन - सायकम् ।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदिवालयैरभिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ २ ॥

पञ्चपादप-पुष्पगन्ध-पदाम्बुजद्वयशोभितं
भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथविग्रहम् ।
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशनं भवमव्ययं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ३ ॥

मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं
पङ्कजासन-पद्मलोचन-पूजितांघ्रिसरोरुहम् ।
देवसिन्धुतरङ्गसीकरसिक्तशुभ्रजटाधरं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ४ ॥

यक्षराजसखं भगाक्षहरं भुजङ्गविभूषणं
शैलराजसुता - परिष्कृतचारुवामकलेवरम् ।
क्ष्वेड़नीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ५ ॥

कुण्डलीकृतकुण्डलेश्वरकुण्डलं वृषवाहनं
नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम् ।
अन्धकान्धकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ६ ॥

भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं
दक्षयज्ञविनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम् ।
भुक्तिमुक्तिफलप्रदं सकलाघसङ्घनिवर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ७ ॥

भक्तवत्सलमर्चितं निधिमक्षयं हरिदम्बरं
सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनुत्तमम् ।
सोमवारिदभूहुताशनसोमपानिलखाकृतिं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ८ ॥

विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं
संहरन्तमपि प्रपञ्चमशेषलोकनिवासिनम् ।
क्रीड़यन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमन्वितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ ९ ॥

मृत्युभीतमृकण्डुसूनुकृतस्तवं शिवसन्निधौ
यत्र कुत्र च यः पठेन्न हि तस्य मृत्युभयं भवेत् ।
पूर्णमायुररोगितामखिलार्थसम्पदमादरं
चन्द्रशेखर एव तस्य ददाति मुक्तिमयत्नतः ॥१०॥

श्रीविश्वनाथाष्टकम्

गङ्गातरङ्गरमणीयजटाकलापं
गौरीनिरन्तर-विभूषितवामभागम् ।
नारायणप्रियमनङ्गमदापहारं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ १ ॥

वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं
वागीशविष्णु-सुरसेवित-पादपीठम् ।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ २ ॥

भूताधिपं भुजगभूषणभूषिताङ्गं
व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम् ।
पाशांकुशाऽभय-वरप्रद-शूलपाणिं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ ३ ॥

शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं
भालेक्षणानल-विशोषित-पञ्चबाणम् ।
नागाधिपारचित-भासुरकर्णपूरं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ ४ ॥

पञ्चाननं दुरितमत्तमतंगजानां
नागान्तकं दनुजपुंगवपन्नगानाम् ।
दावानलं मरणशोकजराऽटवीनां
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ ५ ॥

तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीयं
आनन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम् ।
नादात्मकं सकलनिष्कलमात्मरूपं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ।। ६ ।।

आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां
पापे रतिञ्च सुनिवार्य मनः समाधौ ।
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ।। ७ ।।

रागादिदोषरहितं स्वजानानुरागं
वैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम् ।
माधुर्य-धैर्यसुभगं गरलाभिरामं
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ।। ८ ।।

वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य
व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः ।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्त्तिं
संप्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ।। ९ ।।

विश्वनाथाष्टकं पुण्यं य पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।। १० ।।

श्रीदारिद्र्यदहन-स्तोत्रम्

विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय
कर्णामृताय शशिशेखरभूषणाय ।
कर्पूरकुन्दधवलाय जटाधराय
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ।।१।।

गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय
कालान्तकाय भुजगाधिपकङ्कणाय ।
गङ्गाधराय गजराजविमर्दनाय
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥२॥

भक्तिप्रियाय भवरोगभयापहाय
उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय ।
ज्योतिर्मयाय पुनरुद्भववारणाय
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥३॥

चर्माम्बराय शवभस्मविलेपनाय
भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय ।
मञ्जीरपादयुगलाय जटाधराय
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥४॥

पञ्चाननाय फणिराजविभूषणाय
हेमांशुकाय भुवनत्रयमण्डिताय ।
आनन्दभूमिवरदाय तमोहराय
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥५॥

भानुप्रियाय दुरितार्णवतारणाय
कालान्तकाय कमलासनपूजिताय ।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षणलक्षिताय
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥६॥

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय
नागप्रियाय नागराजनिकेतनाय ।
पुण्याय पुण्यचरिताय सुरार्चिताय
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥७॥

मुक्तीश्वराय फलप्रदाय गणेश्वराय
गीतप्रियाय वृषभेश्वरवाहनाय।
मातंगचर्मवसनाय महेश्वराय
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥८॥

गौरीविलास - भुवनाय महोदयाय
पञ्चाननाय शरणागतरक्षकाय।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मै
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥९॥

वसिष्ठेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोगनिवारणम्।
सर्वसम्पत्करं पुण्यं पुत्रपौत्रादिवर्धनम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स हि स्वर्गमवाप्नुयात् ॥१०॥

श्रीशिव-स्तोत्रावली

(श्रीउत्पलदेव-विरचित)

ॐ न ध्यायतो न जपतः स्याद्यस्याविधिपूर्वकम्।
एवमेव शिवाभासस्तं नमो भक्तिशालिनम् ॥१॥

आत्मा मम भवद्भक्तिसुधापानयुवाऽपि सन्।
लोकयात्रारजोरागात् पलितैरिव धूसरः ॥२॥

लब्धत्वत्संपदां भक्तिमतां त्वत्पुरवासिनाम्।
सञ्चारो लोकमार्गेऽपि स्यात्तयैव विजृम्भया ॥३॥

साक्षाद्भवन्मये नाथ सर्वस्मिन् भुवनान्तरे।
किं न भक्तिमतां क्षेत्रं मन्त्रः क्वैषां न सिद्ध्यति ॥४॥

जयन्ति भक्तिपीयूषरसासववरोन्मदाः ।
अद्वितीया अपि सदा त्वद्द्वितीया अपि प्रभो ॥५॥

अनन्तानन्दसिन्धोस्ते नाथ तत्त्वं विदन्ति ते ।
तादृशा एव ये सान्द्र-भक्त्याऽऽनन्दरसाप्लुताः ॥६॥

त्वमेवात्मेश सर्वस्य सर्वश्चात्मनि रागवान् ।
इति स्वभावसिद्धां त्वद्भक्तिं जनयेज्जनः ॥७॥

नाथ वेद्यक्षये केन न दृश्योऽस्यैककः स्थितः ।
वेद्य-वेदकसंक्षोभेऽप्यसि भक्तैः सुदर्शनः ॥८॥

अनन्तानन्दसुरसी देवी प्रियतमा यथा ।
अवियुक्तास्ति ते तद्वदेका त्वद्भक्तिरस्तु मे ॥९॥

सर्व एव भवल्लाभहेतुर्भक्तिमतां विभो ।
संविन्मार्गोऽयमाह्लाददुःखमोहैस्त्रिधा स्तितः ॥१०॥

भवद्भक्त्यमृतास्वादाद् बोधस्य स्यात्परापि या ।
दशा सा मां प्रति स्वामिन्नासवस्येव शुक्तता ॥११॥

भवद्भक्तिमहाविद्या येषामभ्यासमागता ।
विद्याऽविद्योभयस्यापि त एते तत्त्ववेदिनः ॥१२॥

आमूलाद्वाग्लता सेयं क्रमविष्फारशालिनी ।
त्वद्भक्तिसुधया सिक्ता तद्रसाढ्यफलाऽस्तु मे ॥१३॥

शिवो भूत्वा यजेतेति भक्तो भूत्वेति कथ्यते ।
त्वमेव हि वपुः सारं भक्तैरद्वयशोधितम् ॥१४॥

भक्तानां भवदद्वैतसिद्धै्य का नोपपत्तयः ।
तदसिद्धै्य निकृष्टानां कानि नावरणानि वा ॥१५॥

कदाचित् क्वापि लभ्योऽसि योगेनेतीश वञ्चना।
अन्यथा सर्वकक्ष्यासु भासि भक्तिमतां कथम् ॥१६॥

प्रत्याहाराद्यसंस्पृष्टो विशेषोऽस्ति महानयम्।
योगिभ्यो भक्तिभाजां यद्व्युत्थानेऽपि समाहिताः ॥१७॥

न योगो न तपो नार्चाक्रमः कोऽपि प्रणीयते।
अमाये शिवमार्गेऽस्मिन् भक्तिरेका प्रशस्यते ॥१८॥

परापूजा-स्तोत्रम्

यदा शिथिलतां याति भारं त्यक्त्वेव भारिकः।
आत्मादरेण कर्त्तव्यं तदैव शिवपूजनम् ॥
यदा यदा शिथिलतां याति चित्तं तदा तदा।
चिन्तनीयो महेशानस्तदैव शिवपूजनम् ॥
सर्वेष्टानिष्ट-भावानामिष्टत्वेनैव भावनात्।
नीरागद्वेषता चित्ते या सैव शिवपूजनम् ॥
पीड़ैव परमा पूजा यथा चरणपीड़नम्।
दुःखमेव परा पूजा रुक्षमुद्वर्तनं यथा ॥
खेद एव परा पूजा खेदे चिन्तिमनोलयः।
भयं हि परमा पूजा भीषाऽस्मादिति च श्रुतेः।
दानं तु परमा पूजा दीयते परमात्मने ॥
अदानं परमा पूजा यदि चित्तं प्रसीदति।
रोग एव परा पूजा रोगैः पापक्षयो यतः ॥

आरोग्यं परमा पूजा नैरोग्यं मुक्तिसाधनम् ।
क्रिया तु परमा पूजा शिवार्थं क्रियतेऽखिलम् ॥
अक्रियैव परा पूजा निश्चला ध्यानरूपिणी ।
सत्संगः परमा पूजा सत्संगो मोक्षसाधनम् ॥
असत्संगः परा पूजा यत्र मोहः परीक्ष्यते ॥
स्तुतिरेव परा पूजा स्तुतौ देवः प्रसीदति ।
निन्दैव परमा पूजा सुहृदां गालयो यथा ॥

तृष्णैव परमा पूजा देवार्थं बहुकांक्षते ।
सन्तोषः परमा पूजा देवः सन्तोषलक्षणः ॥
यात्रा हि परमा पूजा देवस्यैतत् प्रदक्षिणम् ।
आसनं परमा पूजा स्वासनं योग उत्तमः ॥
भोजनं परमा पूजा देवनैवेद्यरूपतः ।
अभोजनं परा पूजा ह्युपवासप्रियो हरिः ॥
स्थितत्वं परमा पूजा तदुपस्थानमात्मनः ।
पतनं परमा पूजा नमस्कारस्वरूपिणी ॥
भाषणं परमा पूजा सर्वं स्तुतिमयं हरेः ।
मौनं तु परमा पूजा मौनं व्याख्यानमस्य तत् ॥
चेष्टैव परमा पूजा चेष्टते तत्प्रकाशतः ।
अचेष्टा हि परा पूजा जोषमास्स्वेति वेदवाक् ॥
जन्मैव परमा पूजा सोऽवतारो हरेः सतः ।
जीवनं परमा पूजा जीवन् कार्यानि साधयेत् ॥
मरणं परमा पूजा निर्माल्यत्यागरूपिणी ।
शोको हि परमा पूजा शोको वैराग्यसाधनम् ॥

अपमानः परा पूजा योगी सिद्धेदमानतः।
धनं हि परमा पूजा धनं धर्म्मस्य साधनम्॥
निर्धनत्व परा पूजा ब्रह्म प्राप्तमकिञ्चनैः।
अप्रमादः परा पूजा ह्यप्रमत्तो हि सिद्ध्यति॥
प्रमादः परमा पूजा कर्त्तव्यं विस्मरेद्यतः।
सुषुप्तिः परमा पूजा समाधिर्योगिनां हि सः॥
कर्मयोगः परा पूजा कर्म ब्रह्मार्पणं हरौ।
भक्तियोगः परा पूजा यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥
ज्ञानयोगः परा पूजा ज्ञानात् कैवल्यमश्नुते।
तुरीयं परमा पूजा साक्षात्कार-स्वरूपिणी।
सद्गुरोः सदृशः कश्चिद्गुरुः कर्णे लगेद्यदि।
सर्वमेव तदा पूजा देवस्य लयरूपिणी॥
लयानामपि सर्वेषां विश्वविस्मृतिहेतुतः।
श्रेष्ठं नादानुसन्धानं नादो हि परमो लयः॥
मकरन्दम्पिवन्भृंगो यथा गन्धं न कांक्षति।
नादासक्तं तथा चित्तं विषयान्नाभिकांक्षति॥

शिवमहिम्नः स्तोत्रम्

पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमति-परिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥१॥

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥२॥

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन्किंवागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन ! बुद्धिर्व्यवसिता ॥३॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन्वरद ! रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जड़धियः ॥४॥

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादानमिति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥५॥

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर ! संशेरत इमे ॥६॥

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां-
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्मफणिनः
कपालञ्चेतीयत्तव वरद ! तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन ! तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्मेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥

तवैश्वर्य्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कंधवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरीश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥१०॥

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनभृतरणकण्डूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणीरचित-चरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर ! विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजबलं
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥१२॥

यदृद्धिं सूत्राम्णो वरद ! परमोच्चैरपि सतीं-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्न कस्या उन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽसीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः ।
स कल्मांषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभंगव्यसनिनः ॥१४॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्त्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताड़िततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥

वियद्व्यापी-तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषत-लघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वपुः ॥१७॥

रथः क्षौणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथांगे चन्द्रार्कौ रथचरण-पाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीड़न्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ॥१८॥

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्र-कमलम् ।
गतो भक्त्युद्रकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः ॥२०॥

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणदसदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुषु फलदानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषु मृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः ॥२३॥

श्मशानेष्वाक्रीड़ाः स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥२४॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमभिधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥२५॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता विभ्रति गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥२६॥

त्रयी तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृतिम् ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमितिपदम् ॥२७॥

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते ॥२८॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमतिशर्वाय च नमः ॥२९॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृड़ाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥३०॥

कृशपरिणतिचेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्य-पुष्पोपहारम् ॥३१॥

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥३२॥

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले-
र्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥३३॥

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुःपुत्रवान् कीर्तिमांश्च ॥३४॥

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मंत्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ॥३५॥

दीक्षादानं तपस्तीर्थं ज्ञानं योगादिकाः क्रियाः ।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोड़शीम् ॥३६॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशधरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥३७॥

सुरनरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥३८॥

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ॥ ६॥

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कज-निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥४०॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयताञ्च सदाशिवः ॥४१॥

श्रीशिव-प्रणामम्

नमः शिवाय शान्ताय कारणत्रय-हेतवे ।
निवेदयामि चात्मानं गतिस्त्वं परमेश्वर ॥

द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथञ्च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम् ॥ १ ॥

परल्यां वैजनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥ २ ॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ।
हिमालये तु केदारं घुसृणेशं शिवालये ॥ ३ ॥

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥ ४ ॥

इति द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि

श्रीभगवती-पुष्पाञ्जलि-स्तोत्रम्

भगवती-भगवत्पदपङ्कजं भ्रमरभूतसुरासुरसेवितम् ।
सुजनमानसहंसपरिस्तुतं कमलयामलया निभृतं भजे ॥ १ ॥

ते उभे अभिवन्देऽहं विघ्नेश-कुलदैवते ।
नरनागाननस्त्वेको नरसिंहो नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

हरिगुरुपदपद्मं शुद्धपद्मेऽनुरागाद्
विगतपरमभागे सन्निधायादरेण ।
तदनुचरिकरोमि प्रीतये भक्तिभाजां
भगवति पादपद्मे पद्मपुष्पाञ्जलिं ते ॥ ३ ॥

केनैते रचिताः कुतो न निहिताः शुम्भादयो दुर्मदाः
केनैते तव पालिता इति हि तत् प्रश्ने किमाचक्ष्महे ।
ब्रह्माद्या अपि शङ्किताः स्वविषये यस्याः प्रसादावधि
प्रीता सा महिषासुरप्रमथिनी छिन्द्यादवद्यानि मे ॥ ४ ॥

पातु श्रीस्तु चतुर्भुजा किमु चतुर्बाहोर्महौजान् भुजान्
धत्तेऽष्टादशधा हि कारणगुणान् कार्य्ये गुणारम्भकाः ।
सत्यं दिक्पतिदन्तिसंख्यभुजभृच्छम्भुः स्वयम्भुः स्वयं
धामैकप्रतिपत्तये किमथवा पातुं दशाष्टौ दिशः ॥ ५ ॥

प्रीत्याष्टादशसंवितेषु युगपद्द्वीपेषु दातुं वरां-
त्रातुं वाभयतो विभर्षि भगवत्यष्टादशैतान् भुजान्।
यद्वाष्टादशधा भुजांस्तु विभृतः काली सरस्वत्युभे
मीलित्वैकमिहानयोः प्रथयितुं सा त्वं रमे रक्ष माम् ॥ ६॥

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनी विश्वविनोदिनि नन्दनुते
गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते ।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुर-मर्द्दिनि रम्यकपर्द्दिनि शैलसुते ॥ ७॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि कल्मषमोषिणि घोषरते ।
दनुजनिरोषिणि दितिसुतनाशिनि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
जय जय हे महिषासुरमर्द्दिनि रम्यकपर्द्दिनि शैलसुते ॥ ८॥

अयि जगदम्ब-मदम्बकदम्बवनप्रियवासिनि हासरते
शिखरिशिरोमणितुङ्गहिमालय-शृङ्ग-निजालय-मध्यगते ।
मधुमधुरे मधुकैटभगञ्जिनि कैटभभञ्जिनि रासरते
जय जय हे महिषासुरमर्द्दिनि रम्यकपर्द्दिनि शैलसुते ॥ ९॥

अयि शतखण्डविखण्डितरुण्डवितुण्डित-शुण्ड-गजाधिपते
रिपुगजगण्डविदारण-चण्ड-पराक्रम-शुण्ड-मृगाधिपते ।
निजभुजदण्ड-निपातितचण्डविपातितमुण्डभटाधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्द्दिनि रम्यकपर्द्दिनि शैलसुते ॥१०॥

अयि रणदुर्मदशत्रुवधोदितदुर्द्धर-निर्जर-शक्तिभृते
चतुरशिवारधुरीणमहाशिवदूत-कृत-प्रमथाधिपते ।
दुरितदुरीहदुराशयदुर्मतिदानव-दूत-कृतान्तमते
जय जय हे महिषासुरमर्द्दिनि रम्यकपर्द्दिनि शैलसुते ॥११॥

अयि शरणागत-वैरिवधूवर-वैरिवराभयदायकरे
त्रिभुवनमस्तक-शूलविरोधिशिरोधिकृतामल-शूलकरे ।
दुमिदुमितामरदुन्दुभिनाद-महोमुखरी-कृततिग्मकरे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१२॥

धनुरनुसङ्गरणक्षणसङ्गपरिस्फुरदङ्गनटत्कटके
कनकपिशङ्गपृषत्-कणिषङ्गरसद्भट-शृङ्गहता-वटुके ।
कृतचतुरङ्गबलक्षितिरङ्गघटद्बहुरङ्गरटद्बटुके
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१३॥

अयि निजहुङ्कृतिमात्रनिराकृतधूम्रविलोचनधूम्रशते
समरविशोषित-शोणितबीजसमुद्भवशोणितबीजलते ।
शिवशिवशुम्भ-निशुम्भमहाहवतर्पित-भूतपिशाचरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१४॥

सुरललनाततथेयितथेयितथाभिनयोत्तरनृत्यरते
धिधिकटधिक्कटधिकटधिमिध्वनिधीरमृदङ्गनिनादरते ।
तुरगमुखोरित-मान-समन्वित-मानस-मोहन-गीतरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१५॥

जय जय जप्यजये जयशब्दपरस्तुतितत्परविश्वनुते
झणझणझिञ्झिमिझिङ्कृतनूपुरशिञ्जितमोहितभूतपते ।
नटितनटार्धनटीनट-नायकनाटित-नाट्यसुगानरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१६॥

अयि सुमनःसुमनःसुमनःसुमनःसुमनोहरकान्तियुते
श्रितरजनीरजनीरजनीरजनीरजनीकरवक्त्रवृते ।
सुनयनविभ्रमरभ्रमरभ्रमरभ्रमरभ्रमराधिपते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१७॥

महितमहाहवमल्लमतल्लिकवल्लितरल्लकमल्लरते
विरचितवल्लिकपल्लिकमल्लिकभिल्लिकभिल्लकवर्गवृते ।
सितकृत-फुल्लसमुल्लसितारुणतल्लजपल्लवसल्ललिते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१८॥

अविरलगण्ड-गलन्मदमेदुरमत्तमतङ्गजराजगते
त्रिभुवनभूषणभूतकलानिधिरूपपयोनिधिराजसुते ।
अयि सुखदे जनलालसमानसमोहनमन्मथ-राजसुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥१९॥

कमलदलामलकोमलकान्तिकलाकलितामल-भाललते
सकलविलासकलानिलयक्रमकेलिचलत्कलहंसकुले ।
अलिकुलसंकुलकुवलयमण्डलमौलिमिलद्बकुलालिकुले
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२०॥

कर-मुरलीरववीजितकूजित-लज्जित-कोकिलमञ्जुमते
मिलितपुलिन्द-मनोहर-गुञ्जितरञ्जितशैलनिकुञ्जगते ।
निजगुणभूतमहाशबरीगण-सद्गणसम्भृतकेलिलते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२१॥

कटितटपीतदुकूलविचित्रमयूखतिरस्कृतचन्द्ररुचे
प्रणतसुरासुरमौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नखचन्द्ररुचे ।
जितकनकाचलमौलि-पदोर्जितनिर्झर-कुञ्जरकुम्भकुचे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२२॥

विजितसहस्रकरैकसहस्रकरैकसहस्रकरैकनुते
कृतसुरतारकसङ्गरतारकसङ्गरतारकसूनुसुते ।
सुरथ-समाधिसमान-समाधिसमाधिसमाधिसुजातरते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२३॥

पदकमलङ्करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे
अयि स कथं कमले कमले कमलानिलयः कमलानिलये ।
तव पदमेव परम्पदमेवमनुशीलयतो मम किं न शिवे
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२४॥

कनकलसत्कलसिन्धुजलैरनुसिञ्चिनु ते गुणरङ्गभुवं
भजति स किं न शचीकुचकुम्भतटीपरिरम्भ-सुखानुभवम् ।
तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणिनिवासि शिवं
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२५॥

तव विमलेन्दुमिवेन्दुकलं वदनेन्दुमलं ननु कूलयते
किं पुरुहूतपुरीन्दुमुखीसुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते ।
मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२६॥

अयि मयि दीनदयालु मयाकृपयैव तथा भवितव्यमुमे
अयि जगतो जननी कृपयासि ययासि तथानु मितासि रते ।
यदुचितमत्र भवत्युररीकुरुतादुरुतापमपाकुरुते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥२७॥

स्तुतिमितस्तिमितः सुसमाधिना नियमतोयमतोऽनुदिनं पठेत् ।
परमया रमयासि निषेव्यते परिजनोऽरिजनोऽपि च तं भजेत् ॥२८॥

रमयति किल कर्षं तेषु चित्तं नराणा-
मवरजवरआख्यद्रामकृष्णः कवीनाम् ।
अकृतसुकृतगम्यं रम्यपद्यैकहर्म्यं
स्तवनमवनहेतुः प्रीतये विश्वमातुः ॥२९॥

इन्दुरम्या मुहुर्विनुरम्या यतः
सानवद्या स्मृता श्रीपतेः सूनुना ।
कारितो योऽधुना विश्वमातुः पदे
दीयते भक्तितः पद्यपुष्पाञ्जलिः ॥३०॥

इति श्रीभगवती-पुष्पाञ्जलि-स्तोत्रं समाप्तम्

श्रीभवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न भ्राता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्त्ता ।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ १ ॥

भवाब्धावपारे महादुःखभीरुः
प्रपन्नः प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः ।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ २ ॥

न जानामि दानं न च ध्यान-योगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम् ।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ३ ॥

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित् ।
न जानामि भक्तिं व्रतं वाऽपि मातः
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ४ ॥

कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः ।
कुदृष्टि-कुवाक्य-प्रबन्धः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ५ ॥

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं
दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित् ।
न जानामि चान्यं सुराणां शरण्ये
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ६ ॥

विपदे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले वाऽनले पर्वते शत्रुमध्ये ।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ७ ॥

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणः दीनः सदा जाड्यवक्त्रः ।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाऽहं
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि ॥ ८ ॥

श्रीदुर्गास्तवराजः

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे
नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे ।
नमस्ते जगद्वन्द्य-पादारविन्दे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुग ॥१॥

नमस्ते जगच्चिन्त्यमानस्वरूपे
नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे ।
नमस्ते सदानन्दनन्दस्वरूपे
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥२॥

अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य
भयार्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारदात्री
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥३॥

अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये-
ऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारहेतुः
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥४॥

अपारे महादुस्तरेऽत्यन्तघोरे
विपत्सागरे मज्जतां देहभाजाम् ।
त्वमेका गतिर्देवि निस्तारनौका
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥५॥

नमश्चण्डिके चण्डदोर्दण्डलीला-
लसत्खण्डिताखण्डलाशेषभीते ।
त्वमेका गतिर्विघ्नसन्दोहहन्त्री
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥६॥

त्वमेकाजिताराधिता सत्यवादि-
न्यमेयाजिताऽक्रोधना क्रोधनिष्ठा ।
इड़ा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाड़ी
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥७॥

नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे
सरस्वत्यरुन्धत्यमोघस्वरूपे ।
विभूतिः शची कालरात्रिः सती त्वं
नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥८॥

शरणमसि सुराणां सिद्धविद्याधराणां
मुनिदनुजनराणां व्याधिभिः पीड़ितानाम् ।
नृपतिगृहगतानां दस्युभिस्त्रासितानां
त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद ॥९॥

श्रीदुर्गा-प्रणामम्

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके !
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि ! नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥

सृष्टि-स्थिति-विनाशानां शक्तिभूते सनातनि !
गुणाश्रये गुणामयि नारायणि ! नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

शरणागत - दीनार्त्त - परित्राण - परायणे !
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि ! नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते !
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥

प्रसीद भगवत्यम्ब प्रसीद भक्तवत्सले !
प्रसादं कुरु मे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥

श्रीगंगा-स्तोत्रम्

देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे
त्रिभुवनतारिणि तरलतरङ्गे ।
शङ्कर-मौलि-निवासिनि विमले
मम मतिरास्तां तव पदकमले ।।१।।

भागीरथि सुखदायिनि मात-
स्तव जलमहिमा निगमे ख्यातः ।
नाहं जाने तव महिमानं
त्राहि कृपामयि मामज्ञानम् ।।२।।

हरि-पाद-पद्म-तरंगिणि गंगे
हिमविधुमुक्ताधवलतरंगे ।
दूरीकुरु मम दुष्कृतिभारं
कुरु कृपया भवसागरपारम् ।।३।।

तव जलममलं येन निपीतं
परमपदं खलु तेन गृहीतम् ।
मातर्गंगे त्वयि यो भक्तः
किल तं द्रष्टुं न यमः शक्तः ।।४।।

पतितोद्धारिणि जाह्नवि गंगे
खण्डित-गिरि-वर-मण्डितभंगे ।
भीष्मजननि खलु मुनिवरकन्ये
पतितनिवारिणि त्रिभुवनधन्ये ।।५।।

कल्पलतामिव फलदां लोके
प्रणमति यस्त्वां न पतति शोके ।
पारावार-विहारिणि गङ्गे
विबुधवधूकृत-तरलापांगे ।।६।।

तव कृपया चेत् स्रोतःस्नातः
पुनरपि जठरे सोऽपि न जातः।
नरक-निवारिणि जाह्नवि गङ्ग
कलुषविनाशिनि महिमोत्तुंगे ॥७॥

परिलसदङ्गे पुण्यतरङ्गे
जय जय जाह्नवि करुणापांगे।
इन्द्रमुकुटमणिराजितचरणे
सुखदे शुभदे सेवकशरणे ॥८॥

रोगं शोकं पापं तापं
हर मे भगवति कुमति-कलापम्।
त्रिभुवनसारे वसुधाहारे
त्वमसि गतिर्मम खलु संसारे ॥९॥

अलकानन्दे परमानन्दे,
कुरु मयि करुणां कातरवन्द्ये।
तव तटनिकटे यस्य हि वासः
खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः ॥१०॥

वरमिह नीरे कमठो मीनः
किंवा तीरे सरटः क्षीणः।
अथ गव्युति श्वपचो दीनो
न च तव दूरे नृपतिकुलीनः ॥११॥

भो भूवनेश्वरि पुण्ये धन्ये
देवि द्रवमयि मुनिवरकन्ये।
गंगास्तवमिदममलं नित्यं
पठति नरो यः स जयति सत्यम् ॥१२॥

येषां हृदये गंगाभक्तिः
तेषां भवति सदा सुखमुक्तिः ।
मधुरमनोहरपज्झटिकाभिः
परमानन्दाकलितललिताभिः ॥१३॥

गंगास्तोत्रमिदं भवसारं
वाञ्छितफलदं विदितमुदारम् ।
शङ्कर-सेवक-शङ्कर-रचितं
पठतु च विषयी तद्गतचित्तम् ॥१४॥

गङ्गास्नान–मन्त्र

विष्णुपादार्घ्यसम्भूते गंगे त्रिपथगामिनि ।
धर्मद्रवीति विख्याते पापं मे हर जाह्नवि ॥
श्रद्धया भक्तिसम्पन्ने श्रीमति देवि जाह्नवि ।
अमृतेनाम्बुना देवि भागीरथि पुनीहि माम् ॥

गङ्गा-प्रणामम्

सद्यःपातकसंहन्त्री सद्योदुःखविनाशिनी ।
सुखदा मोक्षदा गंगा गंगैव परमा गतिः ॥

यमुनाष्टकम्

कृपापारावारां तपनतनयां तापशमनीं
मुरारिप्रेयस्यां तां भवभयदवां भक्तिवरदाम् ।
वियज्जालान्मुक्तां श्रियमपि सुखाप्तेः परिदिनं
सदा धीरो नूनं भजति यमुनां नित्यफलदाम् ॥१॥

मधुवनचारिणि भास्करनन्दिनि जाह्ववी-संगिनि सिंधुसुते
मधुरिपुभूषिणि माधवतोषिणि गोकुलभीतिविनाशरते।
जगदघमोचनि मानसदायिनि केशवकेलिनिदानगते
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥२॥

अयि मधुरे मधुमोदविलासिनि शैलविदारिणि वेगभरे
परिजनपालिनि दुष्टनिसूदनि वाञ्छितकामविलासधरे।
व्रजपुरवासिजनार्जितपातकहारिणि विश्वजनोद्धरणे
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥३॥

अतिविपदम्बुधिमग्नजनं भवतापशताकुलमानसकं
गति-मति-हीनमशेष-भयाकुलमागतपादसरोजयुगम्।
ऋणभयभीतिमनिष्कृति-पातक-कोटिशतायुतपुञ्जतरं
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥४॥

नवजलदद्युतिकोटिलसत्तनुहेममयाभरणाञ्चितके
तड़िदवहेलितकृष्णपदाञ्चलशोभितपीतसुचेलधरे।
मणिमयभूषणचित्रपटाननरञ्जितगञ्जितभानुकरे
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥५॥

शुभिपुलिने मधुमत्तयदूद्भवरासमहोत्सवकेलिभरे
उच्चकुलाचलराजितमौक्तिकहारमयाभररोदसिके।
नवमणिकोटिकभास्वरकञ्चुकशोभिततारकहारयुते
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥६॥

करिवरमौक्तिकनासिकभूषणवातचमत्कृतचञ्चलके
मुखकमलामलसौरभचञ्चलमत्तमधुव्रतलोचनिके।
मणिगणकुण्डललोलपरिस्फुरदाकुलगण्डयुगामलके
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ॥७॥

कलरवनूपुरहेममयाञ्चितपादसरोरुहसारुणिके
धिमिधिमिधिमिततालविनोदित-मानसमञ्जुलपादगते ।
तव पदपंकजमाश्रितमानवचित्तसदाखिलतापहरे
जय यमुने जय भीतिनिवारिणि संकटनाशिनि पावय माम् ।।८।।

भवोत्तापाम्भोधौ निपतितजनो दुर्गतियुतो
यदि स्तौति प्रातः प्रतिदिनमनन्याश्रयतया ।
हयह्रेषैः कामं करकुसुमपुञ्जैः रविसुतां
सदा भुक्त्वा भोगान्मरणसमये याति हरिताम् ।।९।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्य्य-विरचितं यमुनाष्टकस्तोत्रं समाप्तम्

यमुना-प्रणामम्

सदैव नन्दिनन्दकेलिशालिकुञ्जमञ्जुला ।
तटोत्थफुल्लमल्लिकाकदम्बरेणुनूज्ज्वला ।।
जलावगाहिनां नृणां भवाब्धिसिन्धुपारदा ।
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ।।

नर्मदाष्टक-स्तोत्रम्

स बिन्दुसिन्धुसुस्थलत्तरंगभंगरञ्जितं
द्विषत्सु पापजातजातकारिवारिसंयुतम् ।
कृतान्तदूतकालभूतभीतिहारि नर्मदे
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ।। १ ।।

त्वदम्बुलीनदीनमीनदिव्यसम्प्रदायकं
कलौ मलौघभारहारि सर्वतीर्थनायकम्।
सुवत्स्यकच्छनक्रचक्रचक्रवाकशर्मदे
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ २ ॥

महागभीरनीरपूरपापधूतभूतलं
ध्वनत्समस्तपातकारिदारितापदाचलम्।
जगल्लये महाभये मृकण्डुसूनुहर्म्यदे
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ३ ॥

गतं त्वदैव मे भयं त्वदम्बुवीक्षितं यदा
मृकण्डुसूनुशौनकासुरारिसेवि सर्वदा।
पुनर्भवाब्धिजन्मजं भवाब्धिदुःखवर्मदे
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ४ ॥

अलक्षलक्षकिन्नरामरासुरादिपूजितं
सुलक्षनीरतीरधीरपक्षिपक्षकूजितम्।
वसिष्ठशिष्टपिप्पलादकर्दमादिशर्मदे
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ५ ॥

सनत्कुमारनाचिकेतकश्यपात्रिषट्पदै-
र्धृतं स्वकीयमानसेषु नारदादिषट्पदैः।
रवीन्दुरन्तिदेव-देवराजकर्मशर्मदे
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ६ ॥

अलक्षलक्षलक्षपापलक्षसारसायुधं
ततस्तु जीव-जन्तुतन्तुभुक्तिमुक्तिदायकम्।
विरिञ्चि विष्णु-शंकर-स्वकीयधामवर्मदे
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे ॥ ७ ॥

अहोऽमृतं स्वनं श्रुतं महेशकेशजातटे
किरात-सूतवाड़वेषु पण्डिते शठे नटे।
दुरन्तपापतापहारिसर्वजन्तुशर्मदे
त्वदीयपादपंकजं नमामि देवि नर्मदे॥ ८॥

इदन्तु नर्मदाष्टकं त्रिकालमेव ये सदा
पठन्ति ते निरन्तरं न यान्ति दुर्गतिं कदा।
सुलभ्यदेवदुर्लभं महेशधामगौरवं
पुनर्भवा नरा न वै विलोकयन्ति रौरवम्॥ ९॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्य्यविरचितं नर्मदाष्टकस्तोत्रं समाप्तम्।

श्रीसरस्वती-स्तोत्रम्

श्वेतपद्मासना देवि श्वेतपुष्पोपशोभिता।
श्वेताम्बरधरा नित्या श्वेतगन्धानुलेपना॥

श्वेताक्षसूत्रहस्ता च श्वेतचन्दनचर्चिता।
श्वेतवीणाधरा शुभ्रा श्वेतालङ्कारभूषिता॥

वन्दिता सिद्धगन्धर्वैरर्चिता सुरदानवैः।
पूजिता मुनिभिः सर्वैर्ऋषिभिः स्तूयते सदा॥

स्तोत्रेणानेन तां देवीं जगद्धात्रीं सरस्वतीम्।
ये स्मरन्ति त्रिसन्ध्यायां सर्वां विद्यां लभन्ति ते॥

इति श्रीपद्मपुराणे श्रीसरस्वती-स्तोत्रं समाप्तम्।

श्रीसरस्वती-स्तवः

१

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदंडमंडितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

२

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे त्वां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां सारदाम्॥

श्रीसरस्वती-प्रणामम्

ॐ सरस्वति महाभागे विद्ये कमललोचने।
विश्वरूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तु ते॥ १॥
जय जय देवि चराचरसारे, कुचयुगशोभित-मुक्ताहारे।
वीणापुस्तकरंजितहस्ते भगवति भारति देवि नमस्ते॥ २॥

श्रीलक्ष्मी-स्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे।
यथा त्वं सुस्थिरा कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥ १॥

ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया।
पद्मा पद्मालया सम्पद्रमा श्रीः पद्मधारिणी॥ २॥

द्वादशैतानि नामानि लक्ष्मीं संपूज्य यः पठेत्।
स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत् तस्य पुत्रदारादिभिः सह॥ ३॥

इति श्रीलक्ष्मीस्तोत्रं समाप्तम्

श्रीमहालक्ष्म्यष्टक-स्तोत्रम्।

इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥ १॥

नमस्ते गरुड़ारूढ़े कोलासुर-भयंकरि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥ २॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंकरि।
सर्वदुःख-हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥ ३॥

सिद्धि-बुद्धि-प्रदे देवि भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनि।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥ ४॥

आद्यन्तरहिते देवि आद्याशक्ते महेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥ ५॥

स्थूल-सूक्ष्म-महारौद्रे महाशक्तिमहोदये।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥ ६॥

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥ ७॥

श्वेताम्बरधरे देवि नानालंकारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥ ८॥

महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान् नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा॥ ९॥

एककालं पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः॥१०॥

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्या प्रसन्ना वरदा शुभा॥११॥

इति इन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं समाप्तम्।

श्रीलक्ष्मी-प्रणाम

ॐ विश्वरूपस्य भार्य्यासि पद्मे पद्मालये शुभे।
सर्वतः पाहि मां देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

श्रीअन्नपूर्णा-स्तोत्रम्

नमः कल्याणदे देवि नमः शंकरवल्लभे।
नमो भक्तिप्रिये देवि अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते॥ १॥

नमो मायागृहीतांगि नमः शंकरवल्लभे।
महेश्वरि नमोस्तुभ्यमन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते॥ २॥

महामाये शिवे धर्मपत्नीरूपे हरप्रिये।
वाञ्छादात्रि सुरेशानि अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ३ ॥

उद्यद्भानुसहस्राभे नयनत्रयभूषिते।
चन्द्रचूड़े महादेवि अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ४ ॥

विचित्रवसने देवि अन्नदान-रतेऽनघे।
शिवनृत्य-कृतामोदे अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ५ ॥

साधकाभीष्टदे देवि भवदुःखविनाशिनि।
कुचभारनते देवि अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ६॥

षट्कोणपद्ममध्यस्थे षड़ंगयुवतीमये।
ब्रह्माण्यादिस्वरूपे च अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ७ ॥

देवि चन्द्रकृतापीड़े सर्वसाम्राज्य-दायिनि।
सर्वानन्दकरे देवि अन्नपूर्णे नमोऽस्तु ते ॥ ८ ॥

पूजाकाले पठेद्‌यस्तु स्तोत्रमेतत् समाहितः।
तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः ॥ ९ ॥

प्रातःकाले पठेद्‌यस्तु मन्त्रजाप-पुरःसरम्।
तस्य चान्नसमृद्धिः स्याद्‌वर्धमाना दिने दिने ॥१०॥

यस्मै कस्मै न दातव्यं न प्रकाश्यं कदाचन।
प्रकाशात् कार्य्यहानिः स्यात् तस्माद्‌यत्नेन गोपयेत् ॥११॥

इति श्रीअन्नपूर्णा-स्तोत्रं समाप्तम्

दशावतार-स्तोत्रम्

प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदं
विहितवहित्रचरित्रमखेदम्।
केशव धृत-मीनशरीर, जय जगदीश हरे॥ १॥

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे,
धरणि-धरण-किण-चक्रगरिष्ठे।
केशव धृत-कच्छपरूप,—जय जगदीश हरे॥ २॥

वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना,
शशिनि कलंककलेव निमग्ना।
केशव धृत-शूकररूप,—जय जगदीश हरे॥ ३॥

तव कर-कमलवरे नखमद्भुतशृङ्गं,
दलित-हिरण्यकशिपु-तनुभृंगम्।
केशव धृत-नरहरिरूप,—जय जगदीश हरे॥ ४॥

छलयसि विक्रमेण बलिमद्भुतवामन,
पदनखनीर-जनित-जनपावन।
केशव धृत-वामनरूप,—जय जगदीश हरे॥ ५॥

क्षत्रिय-रुधिरमये जगदपगतपापं,
स्नपयसि पयसि शमित-भवतापम्।
केशव धृत-भृगुपतिरूप,—जय जगदीश हरे॥ ६॥

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पति-कमनीयं
दशमुख-मौली-बलिं रमणीयम्।
केशत धृत-रघुपतिरूप,—जय जगदीश हरे॥ ७॥

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं
हलहति-भीति-मिलित-यमुनाभम् ।
केशव धृत-हलधररूप—जय जगदीश हरे ॥ ८ ॥

निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं,
सदय-हृदय-दर्शित-पशुघातम् ।
केशव धृत-बुद्धशरीर,—जय जगदीश हरे ॥ ९ ॥

म्लेच्छ-निवह-निधने कलयसि करवालं,
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ।
केशव धृत-कल्किशरीर,—जय जगदीश हरे ॥१०॥

श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं,
शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ।
केशव धृत-दशविधरूप,—जय जगदीश हरे ॥११॥

वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते, क्षत्रक्षयं कुर्वते ।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान् मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ॥१२॥

इति श्रीजयदेवकृतं श्रीविष्णोर्दशावतारस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीमहाप्रभोः स्तोत्रम्

श्रीकृष्णः कृष्णचैतन्यो विश्वम्भरो जगद्गुरुः ।
जगत्स्वामी जगद्भर्त्ता जगद्बन्धुर्जगन्मयः ॥ १ ॥

जगद्धाता विधाता च कारणं करुणामयः।
करणं करुणा - सिन्धुर्दीनबन्धुर्दयानिधिः ॥ २ ॥

निधेर्निधानं वरदो दाता नाम निधिर्विभुः।
प्रभुः पुरुषः परमः परानन्दपरायणः ॥ ३ ॥

पराप्रेमा पराभक्तिभावक्रियाप्रकाशकः।
अवधौतप्रियः शान्तो नित्यानन्दानुजः कविः ॥ ४ ॥

शचीपुत्रो जगद्ज्ञानी पराभक्तिविदां प्रभुः।
भावभक्तिविनोदी च प्रेमभक्तिरसार्णवः ॥ ५ ॥

पूर्णप्रेमे सदा मग्नः कलिक्लेशविनाशनः।
शुद्धतत्त्वविलासी च प्रपन्नदुःखभंजनः ॥ ६ ॥

अनन्तः शाश्वतो कृष्णो रौद्रो गौरहरिः प्रभुः।
गोविन्द - गोकुलानन्द - गोपाल - प्रतिपालकः ॥ ७ ॥

अखंडः अव्ययः पुंसः सच्चिदानन्दविग्रहः।
परमात्मा हृषीकेशो दयालुर्भक्तबान्धवः ॥ ८ ॥

भक्तिप्रियश्चिदानन्दसन्दोहो भक्तवत्सलः।
भक्तिमन्तो भक्तिगम्यो भक्तिभक्तजन प्रियः ॥ ९ ॥

भक्तिनन्दो भक्तिदाता भक्तसंगः सदा मुदा।
भक्ति - भाव - प्रदाता च भक्तजीवनदुर्लभः ॥१०॥

दुराधर्षो दुर्ज्ञेयश्च दुर्विकारविभञ्जनः।
अनादिरादि-प्रभवो परं ज्योतिः परात्परः ॥११॥

परापरविनोदी च मनोबुद्धेरगोचरः।
निर्मायी च मायाधीशो मायापर अधोक्षजः ॥१२॥

पुंप्रकृतिर्गुणानन्तो विश्वव्यापी सनातनः।
अखिलाधार आत्मा च ज्ञानज्ञेयो गुणार्णवः ॥१३॥

अनन्तगुणसम्पूर्ण ईश्वरः कार्यकारणः।
करणं कारणं कर्मकर्ता अव्यक्त-मूर्तिमान् ॥१४॥

अचिन्त्यो दिग्गतः सूक्ष्मः सूक्ष्मसूक्ष्मो महाविभुः।
महापवित्रो महात्मा महामूर्तिर्महोत्तमः ॥१५॥

महाकार्यो महाकर्त्ता महात्मा च महोदधिः।
महाभावो महाप्रेमा महाकीर्त्तनलालसः ॥१६॥

महाप्रेमी विरक्तश्च महाविभवभावदः।
महाशुद्धो महाबुद्धो महासिद्धः शिरोमणिः ॥१७॥

महासत्त्वश्च शान्तश्च महाचिन्त्यः सदा शुचिः।
महानिधिर्निदानञ्च महामंगलदायकः ॥१८॥

महारसो रसानन्दो रासको रस-उत्सवः।
महामन्त्रमानसश्च महामन्त्ररतः सदा ॥१९॥

महामन्त्रः सदाध्यानं महामन्त्रः प्रकीर्तितः।
महामन्त्रजापकश्च महामन्त्रप्रकाशकः ॥२०॥

महामन्त्रतत्त्वयुक्तो महामन्त्रध्वनिः सदा।
महामन्त्र-प्रदाता च जगदुद्धार-हेतुकः ॥२१॥

प्रपञ्चजनदुःखानां दमनः पापध्वंसकः।
कलिकाल - पर - घोर - महापाप - विनाशकः ॥२२॥

हरिनामकृतालोकस्त्वं कर्त्ता श्रीमहाप्रभुः।
श्रीकृष्णः श्रीशचीपुत्र-चैतन्यः प्रेमसागरः ॥२३॥

सिंहग्रीवो महाभूजस्त्वदीयो वल्लभोदयः।
गौरचन्द्र - शुद्धसत्त्व - निजनाम - प्रकाशकः ॥२४॥

कृष्णः कृपाकरो विष्णुर्वासुदेवः श्रियः पतिः।
श्रीनिधिः श्रीनिकेतश्च श्रीनिवासः सतां गतिः ॥२५॥

श्रीधरः श्रीकरः श्रेष्ठः श्रीसेव्यः श्रीमताम्वरः।
श्रीशः श्रीराधिका-नाथो गोप-गोपी-मनोहरः ॥२६॥

कलौ गौरांगः श्रीकृष्णो राधा च श्रीगदाधरः।
कलौ संकीर्त्तनार्थाय अवतारो भवेद्भुवि ॥२७॥

गदाधर-प्राणनाथः श्रीचैतन्य-महाप्रभुः।
गदाधर - सह - प्रीतिर्गीतवाद्यपरायणः ॥२८॥

गदाधर-नृत्यगीतो महाद्भुत-महाप्रभुः।
भक्तवृन्दसमायुक्तो नृत्यगीत-महोत्सवः ॥२९॥

वैष्णवधर्मस्थापनं वैष्णवधर्मपालनम्।
वैष्णवप्राणनायकं वैष्णवज्ञानदायकम् ॥३०॥

प्रेमभक्तिश्च दुर्लभो दाता च श्रीमहाप्रभुः।
जगन्नाथ - प्रिय - सुतो द्विजगण - द्विजोत्तमः ॥३१॥

आचण्डालप्रियः शुद्धः सर्वप्राणिहिते रतः।
सर्वनामप्रदाता च जगदुद्धाररूपधृक् ॥३२॥

अद्वैतद्वैतरहितः श्रीअद्वैतस्तथापि च।
सीताद्वैतप्रियः प्रभुरद्वैतवचने रतः ॥३३॥

निताइ - प्राणवन्तश्च निताइ - प्रिय-ईश्वरः।
निताइ-अनुजो गौरः षड्भुजो दर्शनप्रियः ॥३४॥

पीयूषवचनप्रियः पावनः सत्यवाक्यदः ।
गौड़देशजनानन्दः सन्दोहामृतरूपधृक् ॥३५॥

गौड़ानन्दो ज्ञानानन्दो ज्ञानानन्द-मनोहरः ।
विष्णुप्रियालक्ष्मीपतिर्गौरचन्द्रः सुधाकरः ॥३६॥

धूलिधूसरगौरांगो राधाभावेन गद्गदः ।
अनन्तगुणसम्पन्नः सर्वतीर्थैकपावनः ॥३७॥

चैतन्यचन्द्र उदितो निशारूपकलौ युगे ।
नमस्ते श्रीशचीपुत्रः कलौ जीवहितप्रदः ॥३८॥

दशावताररूपश्च चैतन्यो भगवान् स्वयम् ।
राधाभाव-प्रदर्शार्थं अवतारो मनोहरः ॥३९॥

इति संक्षिप्तं श्रीचैतन्यसहस्रनाम-स्तोत्रं सम्पूर्णम्

श्रीकृष्णचैतन्याष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्

नमस्कृत्य प्रवक्ष्यामि देवदेवं जगद्गुरुम् ।
नाम्नामष्टोत्तरशतं पुण्यं सर्वाघनाशनम् ॥ १ ॥

विश्वम्भरो जितक्रोधो मायामानुषः कर्मकृत् ।
अमायी मायिनां श्रेष्ठो वरदेशो द्विजोत्तमः ॥ २ ॥

जगन्नाथ - प्रियसुतः पितृभक्तो महामुनिः ।
लक्ष्मीकान्तः शचीपुत्रः प्रेमदो भक्तवत्सलः ॥ ३ ॥

द्विजप्रियो द्विजवरो वैष्णव - प्राणनायकः ।
द्विजाति-पूजकः शान्तः श्रीनिवासप्रियेश्वरः ॥ ४ ॥

तप्तकांचनगौरांगः सिंहग्रीवो महाभुजः ।
पीतवासारक्त-पटः षड्भुजोऽथ चतुर्भुजः ॥ ५ ॥

द्विभुजश्च गदापाणिश्चक्री पद्मधरोऽमलः ।
श्रीवत्सलाञ्छनो भालमणिधृक्कञ्जलोचनः ॥ ६ ॥

पाञ्चजन्य-धरः शार्ङ्गी वेणुपाणिः सुरोत्तमः ।
कमलाचेश्वरः प्रीतो गोपीलीलाधरो युवा ॥ ७ ॥

नीलरत्नधरो रौप्यहारी कौस्तुभभूषणः ।
बलभद्रानुजो रुद्रः लीलाकारी गुरुप्रियः ॥ ८ ॥

स्वनामगुणवक्ता च नामोपदेश-दायकः ।
आचाण्डालप्रियः शुद्धः सर्वप्राणी-हिते रतः ॥ ६ ॥

विश्वरूपानुजः सन्ध्यावतारः शीतलाशयः ।
निःसीमकरुणो गुप्त आत्मभक्तिप्रवर्तकः ॥१०॥

आत्मप्रियः शुचिः शुद्धो भावदो भगवत्प्रियः ।
इन्द्रादि - सर्वदेवेश - वन्दित - श्रीपदाम्बुजः ॥११॥

न्यासि-चूड़ामणिः कृष्णः संन्यासाश्रमपावनः ।
चैतन्यः कृष्णचैतन्यो दण्डधृक् न्यस्तदण्डकः ॥१२॥

अवधूत - प्रियो नित्यानन्द - षड्भुज-दर्शकः ।
मुकुन्द - सिद्धिदो दीनः वासुदेवामृतप्रदः ॥१३॥

गदाधर-प्राणनाथ आर्तिहा शरणप्रदः ।
अकिंचन-प्रिय-प्राणो गुणग्राही जितेन्द्रियः ॥१४॥

महानन्दनटो नृत्यगीतनामप्रियः कविः ।
अदोषदर्शी सुमुखो मधुरः प्रियदर्शनः ॥१५॥

प्रतापरुद्र - संत्राता रामानन्द-प्रियो गुरुः ।
अनन्तगुणसम्पूर्णः सर्वतीर्थैकपावनः ॥१६॥

वैकुण्ठनाथो लोकेशो भक्ताभीष्टस्वरूपधृक् ।
नारायणो महायोगी ज्ञानभक्तिप्रदः प्रभुः ॥१७॥

पीयूषवचनः पृथ्वीपावनः सत्यवाक्-सहः ।
औड्रदेश-जनानन्दः संदेहामृतरूपधृक् ॥१८॥

विश्वम्भराय गौराय चैतन्याय महात्मने ।
शचीपुत्राय मित्राय लक्ष्मीशाय नमो नमः ॥१९॥

महाप्रभु-प्रणाम

आजानुलम्बितभुजौ कनकावदातौ
संकीर्त्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्म्मपालौ
वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ ॥

महापुरुष-स्तोत्रम्

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिवविरिञ्चिनुतं शरण्यम् ।
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल - भवाब्धिपोतं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥ १ ॥

त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सित-राज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ-आर्य-वचसा यदगादरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद्
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥ २॥

इति करभाजनोक्तं महापुरुष-स्तोत्रं समाप्तम्।

महापुरुष-प्रणाम

नमो विज्ञानमात्राय सर्वप्रत्ययहेतवे।
पुरुषेश-प्रधानाय अनन्तशक्तये नमः॥

हनुमत्-स्तवः

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशाणुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि॥ १॥

उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं अनीलं
यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥ २॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ ३ ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं
काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं
भावयामि पवननन्दनम् ॥ ४ ॥

यत्र तत्र रघुनाथकीर्त्तन
तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्
वाष्पवारि-परिपूर्णलोचनं
मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥ ५ ॥

हनुमत्-प्रणाम

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।
रामायण-महामाला-रत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥
अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥

मोहमुद्गरः

मूढ़ जहीहि धनागमतृष्णां
कुरु तनुबुद्धे मनसि वितृष्णाम् ।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तं
वित्तं तेन विनोदय चित्तम् ॥ १ ॥

का तव कान्ता कस्ते पुत्रः
संसारोऽयमतीव विचित्रः।
कस्य त्वं वा कुत आयातः
तत्त्वं चिन्तय तदिदं भ्रातः ॥ २ ॥

मा कुरु धनजनयौवनगर्वं
हरति निमेषात् कालः सर्वम्।
मायामयमिदमखिलं हित्वा
ब्रह्मपदं प्रविशाशु विदित्वा ॥ ३ ॥

नलिनीदलगतजलमतितरलं
तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्।
क्षणमपि सज्जनसंगतिरेका
भवति भवार्णवतरणे नौका ॥ ४ ॥

यावज्जननं तावन्मरणं
तावज्जननीजठरे शयनम्।
इति संसारे स्फुटतरदोषः
कथमिह मानव तव सन्तोषः ॥ ५ ॥

तत्त्वं चिन्तय सततं चित्ते
परिहर चिन्तां नश्वर-वित्ते।
विद्धि व्याधिव्यालग्रस्तं
लोकं शोकहतञ्च समस्तम् ॥ ६ ॥

दिनयामिन्यौ सायम्प्रातः
शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीड़ति गच्छत्यायुः
तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ॥ ७ ॥

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं
दन्तविहीनं जातं तुण्डम् ।
करधृतकम्पितशोभितदण्डं
तदपि न मुञ्चत्याशाभाण्डम् ॥ ८ ॥

सुरवरमन्दिरतरुतलवासः
शय्या भूतलमजिनं वासः ।
सर्वपरिग्रहभोगत्यागः
कस्य सुखं न करोति विरागः ॥ ९ ॥

शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ,
मा कुरु यत्नं विग्रहसन्धौ ।
भव समचित्तः सर्वत्र त्वं
वाञ्छस्यचिराद् यदि विष्णुत्वम् ॥१०॥

अष्टकुलाचलसप्तसमुद्राः
ब्रह्मपुरन्दरदिनकररुद्राः ।
न त्वं नाहं नायं लोकः
तदपि किमर्थं क्रियते शोकः ॥११॥

त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णुः
व्यर्थं कुप्यसि मय्यसहिष्णुः ।
सर्वं पश्यात्मन्यात्मानं
सर्वत्रोत्सृज भेदज्ञानम् ॥१२॥

बालस्तावत्क्रीड़ासक्तः
तरुणस्तावत्तरुणीरक्तः ।
वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः
परमे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ॥१३॥

अर्थमनर्थं भावय नित्यं
नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम् ।
पुत्रादपि धनभाजां भीतिः
सर्वत्रैषा कथिताः नीतिः ॥१४॥

यावद्वित्तोपार्जनशक्तः,
तावन्निजपरिवारो रक्तः ।
तदनु च जरया जर्जरदेहे
वार्त्तां कोऽपि न पृच्छति गेहे ॥१५॥

कामं क्रोधं लोभं मोहं
त्यक्त्वात्मानं भावय कोऽहम् ।
आत्मज्ञानविहीना मूढ़ाः
ते पच्यन्ते नरके निगूढ़ाः ॥१६॥

षोड़शपज्झटिकाभिरशेषः
शिष्यानां कथितोऽभ्युपदेशः ।
येषां नैष करोति विवेकं
तेषां कः कुरुतामतिरेकम् ॥१७॥

चर्पटपञ्जरिका-स्तोत्रम्

ॐ नमः परमात्मने

दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिर-वसन्तौ पुनरायातः ।
कालः क्रीड़ति गच्छत्यायुस्तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ॥ १ ॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढ़मते।
प्राप्ते सन्निहिते मरणे न हि न हि रक्षति डुकृञ्करणे ॥ टेक ॥

अग्रे वह्निः पृष्ठे भानु रात्रौ चिवुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षा तरुतलवासस्तदपि न मुञ्चत्याशापाशः ॥ २ ॥
भज गोविन्द भज गोविन्दं भज गोविन्दं ....

यावद्वित्तोपार्जनशक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः।
पश्चाद्धावति जर्जरदेहे वार्तां पृच्छति कोऽपि न गेहे ॥ ३ ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं... ... ...

जटिलो मुण्डी लुञ्चितकेशः काषायाम्बरबहुकृतवेशः।
पश्यन्नपि न च पश्यति मूढ़ उदरनिमित्तं बहुकृतवेशः ॥ ४ ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं.... ....

भगवद्गीता किञ्चिदधीता गङ्गाजललवकणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारि-समर्चा तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम् ॥ ५ ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं.... ....

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं दशनविहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम् ॥ ६ ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं... ... .

बालस्तावत् क्रीड़ासक्तस्तरुणस्तावत् तरुणीरक्तः।
वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः परमे ब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ॥ ७ ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं.... ....

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननीजठरे शयनम्।
इह संसारे खलु दुस्तारे कृपयाऽपारे पाहि मुरारे ॥ ८ ॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं... ....

पुनरपि रजनी पुनरपि दिवसः पुनरपि पक्षः पुनरपि मासः ।
पुनरप्ययनं पुनरपि वर्षं तदपि न मुञ्चत्याशामर्षम् ॥ ९ ॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं···· ···· ···· ····

वयसि गते कः कामविकारः शुष्के नीरे कः कासारः ।
नष्टे द्रव्ये कः परिवारो ज्ञाते तत्त्वे कः संसारः ॥१०॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं···· ···· ···· ····

नारीस्तनभरणाभिनिवेशं मिथ्यामायामोहावेशम् ।
एतन्मांसवसादिविकारं मनसि विचारय वारंवारम् ॥११॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं···· ···· ···· ····

कस्त्वं कोऽहं कुत आयातः का मे जननी को मे तातः ।
इति परिभावय सर्वमसारं विश्वं त्यक्त्वा स्वप्नविकारम् ॥१२॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं···· ···· ···· ····

गेयं गीतानामसहस्रं ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्रम् ।
नेयं सज्जनसङ्गे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम् ॥१३॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं···· ···· ···· ····

यावज्जीवो निवसति देहे कुशलं तावत् पृच्छति गेहे ।
गतवति वायौ देहापाये भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये ॥१४॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं··· ··· ··· ····

सुखतः क्रियते रामाभोगः पश्चाद्धन्तःशरीरे रोगः ।
यद्यपि लोके मरणं शरणं तदपि न मुञ्चति पापाचरणम् ॥१५॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं ···· ···· ···· ····

रथ्याचर्पटविरचितकन्थः पुण्यापुण्यविवर्जितपन्थः।
नाहं न त्वं नायं लोकः तदपि किमर्थं क्रियते शोकः ॥१६॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं ....

कुरुते गङ्गासागरगमनं, व्रतपरिपालनमथवा दानम्।
ज्ञानविहीने सर्वमनेन मुक्तिर्न भवति जन्मशतेन ॥१७॥
भज गोविन्दं भज गोविन्दं भज गोविन्दं ....

नवग्रह-स्तोत्रम्

जवाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्पुञ्जसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तञ्च लोहिताङ्गं नमाम्यहम्॥

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सर्वगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

देवतानां ऋषीणाञ्च गुरुं कनकसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायाया गर्भसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥

अर्द्धकायं महाघोरं चन्द्रादित्यविमर्दकम् ।
सिंहिकायाः सुतं रौद्रं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥

पलापधूमसङ्काशं ताराग्रहविमर्दकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं क्रूरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ शान्तिस्तस्य न संशयः ॥

ऐश्वर्य्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्द्धनम् ।
नरनारी - नृपाणाञ्च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम् ॥

ग्रहनक्षत्रजाः पीड़ास्तस्कराग्निसमुद्भवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥

इति व्यासविरचितं नवग्रह-स्तोत्रं सम्पूर्णम्

श्रीसूर्य्य-स्तवराजः

वसिष्ठ उवाच

स्तुवंस्तत्र ततः शाम्बः कृशोधमनिसन्ततः ।
राजन् नामसहस्रेण सहस्रांशुं दिवाकरम् ॥ १ ॥

खिद्यमानन्तु तं दृष्ट्वा सूर्य्यः कृष्णात्मजं तदा ।
स्वप्ने तु दर्शनं दत्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥

श्रीसूर्य्य उवाच

शाम्ब शाम्ब महाबाहो शृणु जाम्बवतीसुत ।
अलं नामसहस्रेण पठस्वेमं स्तवं शुभम् ॥ ३ ॥

यानि नामानि गुह्यानि पवित्राणि शुभानि च।
तानि ते कीर्तयिष्यामि श्रुत्वा वत्साऽवधारय ॥ ४ ॥

ॐ नमः श्रीसूर्यस्तवराजस्तोत्रस्य वसिष्ठऋषिरनुष्टुपछन्दः श्रीसूर्यो-देवता सर्वपापक्षय-पूर्वक-सर्वरोगोपशमनार्थे विनियोगः।

ॐ रथस्थं चिन्तयेद्भानुं द्विभुजं रक्तवाससम्।
दाड़िम्बीपुष्पसंकाशं पद्मादिभिरलङ्कृतम् ॥ ५ ॥

ॐ विकर्त्तनो विवस्वांश्च मार्त्तण्डो भास्करो रविः।
लोकप्रकाशकः श्रीमान् लोकचक्षुर्महेश्वरः ॥ ६ ॥

लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्त्ता हर्त्ता तमिस्रहा।
तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः ॥ ७ ॥

गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्वदेव-नमस्कृतः।
एकविंशतिरित्येष स्तव इष्टः सदा मम ॥ ८ ॥

श्रीरारोग्यकरश्चैव धनवृद्धिर्यशस्करः।
स्तवराज इति ख्यातस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ॥ ९ ॥

य एतेन महाबाहो द्वे सन्ध्येऽस्तमनोदये।
स्तौति मां प्रणतो भूत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१०॥

कायिकं वाचिकञ्चैव मानसञ्चैव दुष्कृतम्।
एकजप्येन तत्सर्वं प्रणश्यति ममाग्रतः ॥११॥

एष जप्यश्च होमश्च सन्ध्योपासनमेव च।
बलिमंत्रोऽर्घ्यमंत्रश्च धूपमंत्रस्तथैव च ॥१२॥

अन्नप्रदाने स्नाने च प्रणिपाते प्रदक्षिणे।
पूजितोऽयं महामंत्रः सर्वव्याधिहरः शुभः ॥१३॥

एवमुक्त्वा तु भगवान् भास्करो जगदीश्वरः ।
आमन्त्र्य कृष्णतनयं तत्रैवान्तरधीयत ॥१४॥

शाम्बोऽपि स्तवराजेन स्तुत्वा सप्ताश्ववाहनम् ।
पूतात्मा नीरुजः श्रीमान् तस्माद्रोगाद् विमुक्तवान् ॥१५॥

इति श्रीशाम्बपुराणे रोगापनयने श्रीसूर्य्यवक्त्र-विनिर्गतः
श्रीसूर्य्यस्तवराजः समाप्तः ।

सूर्य्यार्घ्यम्

नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे ।
जगत्सवित्रे सूचये सवित्रे कर्म्मदायिने ॥
इदमर्घ्यं श्रीसूर्य्याय नमः ।

सूर्य्य-प्रणाम

जवाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

निर्वाणषट्कम्

ॐ मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे ।
न च व्योमभूमिर्न तेजो न वायु-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ १ ॥

न च प्राणसंज्ञो न वै पञ्चवायु-
र्न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोषाः।
न वाक्पाणिपादं न चोपस्थपायु-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ २ ॥

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ३ ॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
न मंत्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ४ ॥

न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेदः
पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्य-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ५ ॥

अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो
विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
न चासंगतं नैवमुक्तिर्न मेय-
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ६ ॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्य्य-विरचितं निर्वाणषट्क-स्तोत्रं समाप्तम्।

नामपद

श्रीगणेश

जय गणेश जय गणेश जय गणेश नमोनमः ।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश नमोनमः ॥
जय गणेश जय गणेश जय गणेश गजानन ।
जय गणेश जय गणेश जय गणेश लंबोदर ॥
पार्वतीसुत जय गणेश लंबोदर गजानन ।
सिद्धिदाता जय गणेश जय गणेश नमोनमः ॥
जय गणेश जय गणेश जय गणेश नमोनमः ।
जय गणेश जय गणेश जय गणेशाय नमोनमः ॥

श्रीगुरु

१

जय गुरु जय माँ जय गुरु जय माँ ।
गुरोर्मध्ये स्थिता माता जय गुरु जय माँ ॥
मातृ-मध्ये स्थितो गुरु जय गुरु जय माँ ।
जय माँ जय माँ जय जय माँ, जय माँ जय माँ जय जय माँ ॥
जय माँ जय माँ ... ...

२

नमः श्रीगुरवे नमः श्रीगुरवे नमः श्रीगुरवे नमोनमः ।
नमः श्रीगुरवे नमः श्रीगुरवे नमः श्रीगुरवे नमोनमः ॥

गुरुकृपा हि केवलं गुरुकृपा हि केवलम् ।
शरणागतोऽहं शरणागतोऽहं शरणागतोऽहं शरण्ये ॥
शरणागतोऽहं शरण्ये शरणागतोऽहं शरण्ये ।
शरणागतोऽहं शरणागतोऽहं शरणागतोऽहं शरण्ये ॥

३

जय गुरु जय गुरु जपो मन अविराम ।
तारक ब्रह्म सनातन पूर्ण करो मनस्काम ॥
जय गुरु जय गुरु (बोले) जपो मन अविराम ।
जय गुरु पूर्णकाम नामे दिओ ना दिओ ना विराम ॥
जय गुरु जय गुरु...............

४

न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं
न गुरोरधिकं शाश्वता.............

श्रीराम

१

श्रीराम जय राम जय जय राम ।
श्रीराम जय राम जय जय राम......

२

रघुपति राघव राजाराम पतितपावन सीताराम ।
सीताराम सीताराम जय भज प्यारे तू सीताराम ॥

सीतापति सुन्दर राजाराम भक्तजनाश्रय राघव राम।
रघुपति राघव राजाराम पतितपावन सीताराम॥

सीताराम जय सीताराम सीताराम जय सीताराम।
सीताराम जय सीताराम सीताराम जय सीताराम॥

जयतु शिवाशिव जानकीराम जानकीवल्लभ सीताराम।
जयराम जयराम जयजयराम श्रीराम जयराम जयजयराम॥

३

जय हनुमन्त राम राघवारे असुर-निषूदन रामदुलारे।
जय हनुमन्त रामदुलारे रामदुलारे······

जय बोलो श्रीराम की जय बोलो हनुमान की।
जय भरत लछमन रिपुदमन जय श्रीजानकी॥
जय बोलो श्रीराम की··· ······

श्रीकृष्णगोविन्द

१

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

२

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द
हरे कृष्ण हरे राम श्रीराधे गोविन्द॥

३

कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहि माम् ।
राम राघव राम राघव राम राघव रक्ष माम् ॥
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे ।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे ॥
राम राम राम राम राम राम राम हे ।
राम राम राम राम राम राम राम हे ॥

४

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे
हे नाथ नारायण वासुदेव ।

५

गोविन्द गोविन्द गोविन्द जय
गोविन्द गोविन्द गोविन्द जय ।
गोविन्द गोविन्द गोविन्द जय
गोविन्द गोविन्द गोविन्द जय ......

६

गोपाल जय जय गोविन्द जय जय
राधारमण हरि गोविन्द जय जय ।

७

गोविन्द हरे गोपाल हरे
जय जय प्रभु दीनदयाल हरे ।

८

गोविन्द गोविन्द माधो माधो
राधे राधे बोलो बोलो ।

९

जय गोविन्द जय गोपाल केशव माधव दीनदयाल।
हे मधुसूदन हे नन्दलाल वंशीधर श्याम मदनगोपाल॥
जय गोविन्द ………॥

१०

श्रीकृष्ण गोविन्द श्रीमधुसूदन राम नारायण हरे।
(जय) राम नारायण राम नारायण राम नारायण हरे॥
राम नारायण राम नारायण राम नारायण हरे ……

११

भज रे गोपालं हे मानस।
भज गोपालं भज सुचेलं त्रिजगन्मूलं दितिसुतकालम्॥
भज रे गोपालं हे मानस।
आगमसारं योगविचारं भोगशरीरं भुवनोद्धारम्।
भज रे गोपालं हे मानस।
धृतमन्दारं नन्दकिशोरं हयचतुवरं हंसविचारम्।
भज रे गोपालं हे मानस।
कदनकठोरं कलुषविदूरं मदनकुमारं मधुसंहारम्।
भज रे गोपालं हे मानस।

१२

श्रीकृष्ण केशव राधा माधव
साधनदुर्लभ जीवनवल्लभ।
जय जय जय हरि नारायण जय
जय गोपीजन-वल्लभ जय।
जय जय जय जय जय जय
जय गोपीजन-वल्लभ जय॥

१३

जय श्रीराधे जय नन्दनन्दन
जय जय गोपी-जन-मन-रञ्जन ॥

१४

गोप गोविन्द गोकुलानन्द जय गोविन्द राधे ।
गोप गोविन्द गोकुलानन्द जय गोविन्द राधे······

१५

(जय) शङ्ख-चक्र-पीताम्बर-धारी
करुणा-सागर कृष्ण मुरारी ।
वंशीधारी विपदहारी
दयामय हरि मुकुन्द मुरारी ॥

१६

(बोलो) मुकुन्द माधव जय घनश्याम ।
देवकीनन्दन राधेश्याम ॥
राधेश्याम जय राधेश्याम ।
राधेश्याम जय राधेश्याम··· ·········

१७

राधे गोविन्द भजो, वृन्दावनचन्द्र भजो ।
देवकी-वसुदेव-नन्दन भजो, वृन्दावन-चन्द्र भजो ॥
श्यामसुन्दर मदनमोहन, वृन्दावन-चन्द्र भजो ।

१८

राधे राधे राधे गोविन्द
(जय) वृन्दावन - चन्द्र।
अनाथ-नाथ दीनबन्धु
हरि राधे गोविन्द।
पुण्डरीकाक्ष पुराणपुरुष राधे गोविन्द
पुण्डरीकाक्ष राधे गोविन्द
(जय) वृन्दावन-चन्द्र॥

१९

भजो राम नारायण श्रीकृष्ण हरे
जनार्दन मधुसूदन रे --------

२०

देव देव देव कृष्ण दीनबन्धु पाहि माम्।
नील-मेघ-श्याम कृष्ण नित्यमुक्त रक्ष माम्।
वेणुगान लोलकृष्ण विमलकृष्ण पाहि माम्।
विश्वरूप वासुदेव वीर राम रक्ष माम्।
नन्दनन्द मुकुन्द नाथ राधाकृष्ण पाहि माम्।
इन्दुवदन मन्दहास ईश कृष्ण रक्ष माम्॥

श्री नारायण

१

श्रीमन् नारायण नारायण नारायण।
श्रीमन् नारायण नारायण नारायण॥
लक्ष्मी - नारायण नारायण नारायण।
लक्ष्मी - नारायण नारायण नारायण॥

२

नारायण नारायण ओम् ओम्
नारायण नारायण ओम् ओम्
नारायण नारायण ओम् ओम्
नारायण नारायण ओम् ओम्
श्री नारायण हरि नारायण
श्री नारायण हरि नारायण..........

३

नारायणम् भज नारायणम् सत्यनारायणम् श्रीमन्नारायणम् ।
पङ्कजविलोचन-नारायणम् भक्तसङ्कटविमोचन-नारायणम् ॥
अज्ञाननाशक - नारायणम् भक्त - सुज्ञान-पोषक - नारायणम् ।
करुणापयोनिधि- नारायणम् भव-शरणागत-नित्य-नारायणम् ॥

४

नारायण नारायण नमो नमो नमो नारायण ।
मधुसूदन वामन गरुड़वाहन कंसकेशी-निसूदन ॥
मुकुन्द-मुरारी विपिनचारी गोलोकचारी गोवर्द्धनधारी ।
गोपाल गोविन्द गोकुलचन्द कमला-रमण जनार्दन ॥
शङ्खचक्रधर त्रिभङ्गधाम चाँचर-केश वरण श्याम ।
शिरे शिखिचूड़ा वासपीतधड़ा नूपुर-शिञ्जित श्रीचरण ॥
गले वनमाला कौस्तुभहार पतित-पावन दीनदुःखहर ।
युग-अवतार भूभारहारी असुर-नाशन कारण ॥
श्रीकृष्ण केशव मदनमोहन यादवमाधव श्रीनन्दनन्दन ।
श्रीराधारमण गोपीजनवल्लभ मोहिनीमोहन नारायण ॥

श्रीशिव

१

हर हर हर हर हर महादेव ।

हर हर हर हर हर महादेव ॥

२

हर हर हर हर हराय नमः ओम् ।

शिव शिव शिव शिव शिवाय नमः ओम्........

३

जय गङ्गाधर शिरोपर परिधाने बाघाम्बर ।

देव देव महादेव

देव देव महादेव

महादेव देव देव......

देव देव महादेव......

हे नाथ विश्वनाथ हा नाथ विश्वनाथ ।
हे नाथ विश्वनाथ हा नाथ विश्वनाथ ॥

स्वयम्भू विश्वनाथ स्वयम्भू विश्वनाथ ।

विश्वनाथ विश्वनाथ स्वयम्भू विश्वनाथ ॥

विश्वनाथ विश्वनाथ विश्वनाथ विश्वनाथ ।
काशी विश्वनाथ हे नाथ विश्वनाथ ॥

हे नाथ विश्वनाथ........

४

नमामि शङ्करं प्रियं शिवं विभुं महेश्वरम् ।
नमामि भूतभावनं विभावनं शुभेश्वरम् ।।
नमामि लोक-पावनं त्रिलोक-भारधारणम् ।
नमामि त्र्यम्बकं पतिं पिनाक-चापधारणम् ।।

५

जय शिव शङ्कर बम बम हर हर ।
जय शिव शङ्कर बम बम हर हर ।
हे परमेश्वर दया करो ।

शिव शिव सुन्दर शिव अति सुन्दर ।
हे जगदीश्वर दया करो ।।

भोला महेश्वर शिव अति सुन्दर ।
शिरे गङ्गाधर शिव अति सुन्दर ।
भाले शशिधर शिव अति सुन्दर ।
बम बम हर हर शिव अति सुन्दर ।
हे परमेश्वर दया करो ।।

शिव शिव शिव शिव शिवाय नमः ओम् ।
हर हर हर हर हराय नमः ओम् ।।

श्रीशक्ति

१

जय जगदम्बे सीताराधे गौरि दुर्गे नमोनमः ।
पालनकारिणी सङ्कटहारिणी तारण-तारिणी नमोनमः ॥

२

सर्वमङ्गला सब सुख खानि
जय जय जय जगदम्ब भवानी ॥

३

दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा
दुर्गा दुर्गा दुर्गा दुर्गा...... ।

श्रीगङ्गा

जय गङ्गे जय गङ्गे कलिमलहारिणि जय गङ्गे ।
पतित - पावनी जय गङ्गे पतितोद्धारिणि जय गङ्गे ॥
जगतोद्धारिणि जय गङ्गे अशुभविनाशिनि जय गङ्गे ।
जय गङ्गे ....

श्रीमहाप्रभु

१

जय अद्वैत नित्यानन्द जय श्रीगौराङ्ग।
हरे कृष्ण हरे राम श्रीराधे गोविन्द॥

२

जय गौर हरि जय गौर हरि
जय शचीनन्दन जय गौर हरि
विष्णु - प्रियार प्राणधन नदिया-विहारी।
विष्णु - प्रियार प्राणधन मुकुन्द मुरारी॥

३

जय निताइ गौर राधेश्याम
भजो हरे कृष्ण हरे राम।
भजो निताइ ....

विविध

१

नमः श्रीगुरवे नमः श्रीगुरवे नमः श्रीगुरवे नमोनमः।
नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमोनमः॥
नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमोनमः।
नमो नारायणाय नमो नारायणाय नमो नारायणाय नमोनमः॥

नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमः श्रीकृष्णाय नमोनमः।
नमः श्रीगोविन्दाय नमः श्रीगोविन्दाय नमः श्रीगोविन्दाय नमोनमः॥

२

कमलापति केशव कंसहरे
करुणामय राघव राम हरे।
गोपिकापति माधव कृष्ण हरे
पतिताधम-तारण गौर हरे॥

३

जय गुरु जय शिव जय हनुमान।
जय सीताराम जय जय राधेश्याम॥

४

(जय) शङ्खचक्र - पीताम्बरधारी
पतित - पावन राम मुरारी।

५

हरि हरि बोल हरि हरि बोल।
मुकुन्द माधव गोविन्द बोल।
राम राम बोल रामकृष्ण बोल।
मुकुन्द माधव गोविन्द बोल।
कृष्ण कृष्ण बोल रामकृष्ण बोल।
मुकुन्द माधव गोविन्द बोल।
माँ माँ बोल माँ माँ बोल।
केशव माधव गोविन्द बोल।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल।
हरि हरि बोल हर हर बोल।
हरि बोल हरि बोल······

चार युगों का तारक ब्रह्म नाम

सत्यः—नारायणपरा वेदा नारायण - पराक्षरा।
नारायणपरा मुक्तिः नारायणपरा गतिः॥

त्रेताः—राम नारायणानन्त मुकुन्द मधुसूदन।
कृष्ण केशव कंसारे हरे वैकुण्ठ वामन॥

द्वापरः—हरे मुरारे मधुकैटभारे गोपाल गोविन्द मुकुन्द शौरे।
यज्ञेश नारायण कृष्ण विष्णो निराश्रयं मां जगदीश रक्ष॥

कलिः—हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

नामयज्ञ

वन्दना

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपद-कमलं
श्रीगुरून् वैष्णवांश्च ।
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण-
रघुनाथान्वितं सजीवम् ।
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं
कृष्णचैतन्यदेवम् ।
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगणललितान्
श्रीविशाखान्वितांश्च ॥

१

सिन्धुड़ा-मध्यम दशकुशी

कलि - तिमिराकुल अखिल लोक देखि
वदन चाँद परकाश ।
लोचने प्रेम सुधारस बरखिये
जगजन - ताप - विनाश ।
गौर करुणासिंधु अवतार ।
निजनाम गाँथिया नाम चिन्तामणि
जगते परायल हार ।
भकत - कल्पतरु अन्तरे अन्तरु
रोपये ठामहि ठाम ।

तछु पदतले अवलम्बन पथिक
पूजये निज निज काम ॥
भाव गजेन्द्र चड़ायल अकिञ्चने
ऐछन पहुँक - विलास ।
संसार कालकूट विषे दगधल
एकलि गोविन्द दास ॥

२

जय जय श्रीगुरु प्रेम कल्पतरु,
अद्भुत जाँक प्रकाश ॥
हिय अगेयान तिमिर वरज्ञान
सुचन्द्र किरणे करु नाश ॥
इह लोचन आनन्दधाम ।
अयाचित एहेन पतित हेरि जो पहुँ,
याचि देहल हरिनाम ॥
दुरगति अगति अगति-मति-जो जन,
नाहि सुकृति-लवलेश ॥
श्रीवृन्दावन युगल - भजन धन,
ताहे करत उपदेश ॥
निरमल-गौर-प्रेम-रस-सिञ्चने,
पूरल सब मन - आश ।
सो चरणाम्बुजे रति नाहि होयल,
रोवत वैष्णव दास ॥

मङ्गलाचरण

आजानुलम्बितभुजौ कनकावदातौ,
संकीर्त्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्म्मपालौ,
वन्दे जगत्-प्रियकरौ करुणावतारौ ॥

प्रणाम-मंत्र

नमस्ते श्रीजगन्नाथाय गौराङ्गाय नमो नमः ।
नमस्ते खोल-करतालाय नमः कीर्त्तनमण्डली ॥
मृदङ्ग-ब्रह्मरूपाय लावनं रसमाधुरी ।
सहस्रगुण - सहयुक्त - मृदङ्गाय नमो नमः ॥

श्रीगौरचन्द्रिका

१

(एसो) गौरचन्द्र गौर हरि
एक बार दया कोरे
आसते हबे (गौर)
एक बार आसते हबे
दया कोरे एक बार आसते हबे ।
(तोमाय) भजन-हीन काङ्गाले डाके

(तोमाय) दीन हीन काङ्गाले डाके
आसते हबे हे ।
(ओहे) संकीर्त्तनेर गुरु आमार (तोमाय······)
(एइ) महानाम-संकीर्त्तने आसते हबे हे
(तोमार) साङ्गोपाङ्ग सङ्गे निये आसते हबे हे
भालो साजे ना साजे ना
तोमा नइले कीर्त्तन (भालो) साजे ना साजे ना ।
भालो साजे ना साजे ना ।
मातोआरा गौर बिने नाम
(आमार) प्राण गोराचाँद बिने नाम
(आमार) प्राणाराम गौराङ्ग बिने नाम
एसो हे एसो हे
(तोमार) भाई निताइके सङ्गे निये
प्रिय गदाधरके सङ्गे निये
श्रीवास अङ्गनेर मतो
एसो हे, एसो हे, एसो हे, एसो हे
गौर एसो हे, निताइ एसो हे, आमार गौर एसो हे ।

२

एसो दुटि भाई गौर निताइ (२)
द्विजमणि द्विजराज हे । (२)
पूजिबो चरण एइ आकिञ्चन
राखिबो हृदयमाझे हे (२)
पूजा करिबो
गौर तोमार अभय चरण (आसि) पूजा करिबो ।
अश्रुबिन्दु अर्घ्य दिये पूजा करिबो ।

भक्ति चन्दन तुलसी दिये पूजा करिबो।
पुष्प चन्दन तुलसी दिये पूजा करिबो।
एसो हे गौर, एसो हे गौर,
तोमार कीर्त्तन तुमि करो, एसो हे गौर।

गौर एसो हे

गौर एसो हे······गौर एसो हे······गौर एसो हे,
गौर एसो हे।
गौर एसो हे······गौर एसो हे······गौर एसो हे।
गौर एसो हे, एसो हे।
आमार एइ आसरे (गौर) एसो हे एसो हे।
तुमि आसिले आनन्द हबे, एसो हे एसो हे।
भाई निताइके सङ्गे निये एसो हे एसो हे,
साङ्गोपाङ्ग सङ्गे निये एसो हे एसो हे।
भक्तवृन्द सङ्गे निये एसो हे एसो हे।
दयाल ठाकुर दया कोरे एसो हे एसो हे
एक बार दया कोरे ठाकुर आमार एसो हे एसो हे
एइ संकीर्तनेर माझे (गौर) एसो हे एसो हे।
कीर्त्तन नाटोया गौर एसो हे एसो हे
कीर्त्तनिया-शिरोमणि संकीर्त्तनेर पिता गौर
एसो हे एसो हे।

आसते हबे हे

संकीर्त्तनेर माझे तोमाय आसते हबे हे।
तुमि ना आसिले (गौर) शोभा हय ना हय ना
शोभे ना शोभे ना।
तुमि ना आसिले (गौर) शोभे ना शोभे ना
एसो हे एसो हे।

२४

गदाधरके सङ्गे निये एसो हे एसो हे।
श्रीवास - अङ्गने गौर एसो हे एसो हे।
रूप सनातन सङ्गे गौर एसो हे एसो हे।
गदाधर-प्राण गौर एसो हे एसो हे।
शचीदुलाल गोराचाँद एसो हे एसो हे।
मायेर दुलाल गोराचाँद एसो हे एसो हे।
मायेर दुलाल निताइचाँद एसो हे एसो हे।
विष्णुप्रियार जीवनधन (प्राणधन) एसो हे एसो हे।
रूपसनातन-प्राण गौर एसो हे एसो हे।
नदिया-विहारी गौर एसो हे एसो हे।
प्रेमदाता निताइचाँद एसो हे एसो हे।
प्राण गौर नित्यानन्द एसो हे एसो हे।
एसो हे एसो हे।

हरि बोल ·········· हरि बोल ········ हरि बोल
हरि बोल
हरि बोल ······ हरि बोल
हरि हरि हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल
निताइ गौराङ्ग बोल हरि बोल हरि बोल
राधे गोविन्द बोल
हरि बोल ······ ···· हरि बोल ······ ···· हरि बोल
हरि बोल
हरि बोल ······ ···· हरि बोल ······ ···· हरि बोल
हरि बोल
हरि बोल ······ ···· हरि बोल ······ ···· हरि बोल
हरि बोल

नामयज्ञ

हरि बोल ······ ···· हरि बोल ·········· हरि बोल
हरि बोल
हरि बोल हरि बोल

अधिवास

धनाश्री—बड़ा दशकुशी

१

एक दिन पहुँ हासि, अद्वैत मन्दिरे आसि,
बसिलेन शचीर कुमार।
नित्यनन्दे करि सङ्गे, अद्वैत बसिया रङ्गे,
महोत्सवेर करिला विचार॥
शुनिया आनन्दे हासि सीता ठाकुराणी आसि,
कहिलेन मधुर वचन।
ता शुनि आनन्द मने, महोत्सवेर विधाने,
कहे किछु शचीर नन्दन॥
शुनो ठाकुराणी सीता, वैष्णव आनिये एथा,
आमन्त्रण करिया यतने।
येबा गाय येबा बाय, आमन्त्रण करि ताय,
पृथक पृथक जने जने॥
एतो बलि गोरा राय, आज्ञा दिलो सबाकाय,
वैष्णव करह आमन्त्रण।
खोल करताल लैया, अगुरु चन्दन दिया,
पूर्णघट करह स्थापन॥

आरोपण करि कला, ताहे बाँधि फूल माला,
कीर्त्तन - मण्डली कुतूहले।
माल्य चन्दन गुया, घृत मधु दधि दिया,
खोल - मङ्गल सन्ध्याकाले ॥
शुनिया प्रभुर कथा, प्रीति विधि कैल यथा,
नाना उपहार गन्धवासे।
सबे हरि हरि बोले, खोल-मङ्गल करे,
वृन्दावन दास रस भाषे ॥

२

नाना द्रव्य आयोजन, करि करे निमन्त्रण,
कृपा करि कर आगमन।
तोमरा वैष्णवगण, मोर एइ निवेदन,
दृष्टि करि कर समापन ॥
करि ऐतो निवेदन, आनिल महान्तगण,
कीर्त्तनेर करे अधिवास।
अनेक भाग्येर बले, वैष्णव आसिया मिले,
कालि हवे कीर्त्तन-विलास ॥
श्रीकृष्णेर लीलागान, करिबेन आस्वादन,
पूरिबे सभार अभिलाष।
श्रीकृष्णचैतन्य चन्द्र, सकल भकतवृन्द,
गुण गाय वृन्दावन दास ॥

३

आगे रम्भा आरोपण, पूर्णघट स्थापन,
आम्रपल्लव सारि सारि ॥

द्विज वेदध्वनि करे, नारीगण ज-जकारे,
आर सबे बले हरि हरि ॥
दधि घृत मङ्गल, करि सबे उतरोल,
करये आनन्द परकाश।
आनिया वैष्णवगण, दिया माला चन्दन,
कीर्त्तन - मङ्गल अधिवास।
सभार आनन्द मन, वैष्णवेर आगमन,
कालि हबे चैतन्य - कीर्त्तन।
श्रीकृष्ण चैतन्य नाम, श्रीनित्यानन्द बास,
गुण गाय दास वृन्दावन ॥

४

जय जय नवद्वीप माझ।
गौराङ्ग आज्ञा पाइयाँ ठाकुर अद्वैत जाइयाँ,
करे खोल मङ्गलेर साज ॥
आनिया वैष्णव सब, हरि बोल कलरव,
महोत्सवेर करे अधिवास।
आपनि निताइ धन, देइ माला - चन्दन,
करे प्रिय वैष्णव सम्भाष ॥
गोविन्द मृदङ्ग लैया, ता ता थैया थैया,
करताले अद्वैत चपल।
हरिदास करे गान, श्रीवास धरये तान,
नाचे गोरा कीर्त्तन मङ्गल ॥
चौदिके वैष्णवगण, हरि बोल घने घन,
कालि हबे कीर्त्तन-महोत्सव।

आजि खोल-मङ्गली राखिया आनन्द करि,
वंशी वले, देह जय सब॥

श्रीगौरांग की दुपरिया भोग आरती

भजो पतित उद्धारण श्रीगौर हरि।
श्रीगौर हरि, नवद्वीप विहारी,
जय जय दीन दयामय हितकारी॥ (जय जय)
शुनो शुनो शचीसुत, करो अवधान।
भोग मन्दिरे प्रभु करह पयान॥ (जय जय)
वामेते अद्वैत प्रभु, दक्षिणे निताइ।
मध्य आसने बैसेन चैतन्य गोसाइँ॥ (जय जय)
अद्वैत-घरणी आर शान्तिपुर नारी।
(आनन्देर आर सीमा नाइ रे)
हुलु हुलु देइ सबे गोरामुख हेरि॥ (जय जय)
चौषट्टि मोहान्त आर द्वादश गोपाल,
छय चक्रवर्त्ती आर अष्ट कविराज। (जय जय)
शाक शुकुता आदि नाना उपचार॥
आनन्दे भोजन करेन शचीर कुमार। (जय जय)
दधि दुग्ध घृत छाना आर लुचि पुरी;
आनन्दे भोजन करेन नदीया - विहारी॥ (जय जय)
भोजन करिया प्रभु कैलो आचमन।
सुवर्ण खड़िकाय कैलो दन्तेर शोधन॥ (जय जय)
बसिते आसन दिला रत्न सिंहासने।
कर्पूर ताम्बूल योगाय प्रिय भक्तगणे॥ (जय जय)

फूलेर चौआरी घर फूलेर केयारी।
फूलेर रत्न सिंहासन चाँदोवा मशारी॥ (जय जय)
फूलेर मन्दिरे प्रभु करिला शयन।
गोविन्द दास करे पाद-सम्वाहन॥ (जय जय)
फूलेर पापड़ी प्रभुर उड़े पड़े गाय।
तार माझे महाप्रभु सुखे निद्रा याय॥ (जय जय)
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभुर दासेर अनुदास।
सेवा अभिलाष मागे नरोत्तम दास॥

नगर भ्रमण के बाद

नगर भ्रमण करि गौर एलो घरे।
गौर एलो घरे आमार, निताइ एलो घरे॥
संकीर्त्तन करिये प्रभु नगरे नगरे।
(अमनि) धेये गिये शचीमाता गौर निलो कोले।
नेतेर अञ्चल दिये धूलि झाड़ि दिलो।
लक्ष लक्ष चुम्बन दिलो वदन कमले॥

दधि मङ्गल

महा महा महोत्सव सम्पूर्ण कारण।
दधि-मङ्गल आनाइलेन श्रीशची-नन्दन॥
गौरीदास कीर्त्तनियार करेते धरिया।
कहिछेन महाप्रभु कान्दिया कान्दिया॥

गोलोकेर सम्पद हरिनाम संकीर्त्तन।
कैमने बिदाय दिबो मोहान्तेर गण॥
ऐतो शुनि नित्यानन्द आइला धाइया।
भूमिते फेलिलो भाण्ड आछाड़ मारिया॥
द्वादश गोपाल गैलो आपन भवन।
चौषट्टि मोहान्त गैलो निज निकेतन॥
नित्यानन्द चलि गैलो आपनार वास।
भूमिते पड़िया कान्दे नरोत्तम दास॥

विभिन्न कीर्त्तन

१

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
यादवाय माधवाय केशवाय नमः॥
गोपाल गोविन्दराम श्रीमधुसूदन।
गिरिधारी गोपीनाथ मदनमोहन॥
नमः श्रीचैतन्य नित्यानन्द अद्वैत सीता।
हरि गुरु वैष्णव भागवत गीता॥
जय रूप सनातन भट्ट रघुनाथ।
श्रीजीव गोपाल भट्ट दास रघुनाथ॥
एइ छय गोसाईंयेर करि चरण वन्दन।
याहा हइते विघ्ननाश अभीष्ट पूरण॥
एक छय गोसाईं यार तार मुइ दास।
ता सबार पदरेणु मोर पञ्च ग्रास॥

ताहेर चरण सेवि भक्तसने वास।
जनमे जनमे होक एइ अभिलाष॥
एइ छय गोसाईं यबे व्रजे कैला वास।
श्रीराधाकृष्णेर नित्यलीला करिला प्रकाश॥
(मनेर) आनन्दे बलो हरि, भजो वृन्दावन।
श्रीगुरु वैष्णवपदे मजाइया मन।
श्रीगुरु वैष्णव पादपद्म करि आश।
नाम संकीर्त्तन गाहे नरोत्तम दास॥

२

(जय) राधे गोविन्द राधे गोविन्द राधे गोविन्द राधे। २
(जय) राधे राधे गोविन्द जय।
(जय) गोपाल जय गोविन्द जय॥
राधे राधे राधे गोविन्द जय।
(जय) राधे श्रीराधे जय।
राधे राधे गोविन्द जय।
राधे गोविन्द राधे॥
(जय) राधे राधे गोविन्द जय।
गोपाल जय गोविन्द जय।
राधे राधे राधे गोविन्द जय॥
(जय) राधे गोविन्द राधे गोविन्द राधे गोविन्द राधे। २
राधे राधे गोविन्द जय।
(जय) राधे राधे राधे गोविन्द जय॥

जय राधे जय राधे जय राधे जय राधे।

(जय) राधे राधे गोविन्द जय।

(जय) राधे राधे राधे राधे गोविन्द जय।

(जय) राधे राधे राधे राधे गोविन्द जय॥

३

धरो लओ धरो लओ लओ रे किशोरीर प्रेम
निताइ डाके आय।

निताइ डाके आय आय गौर डाके आय।
(प्रेमे) शान्तिपुर डुबुडुबु नदे भेसे याय॥
धरो लओ धरो लओ..........

(प्रेम) कलसे कलसे ढाले तबु ना फुराय।
(प्रेम) पार भाङ्गिये ढेउ लागिलो गोरा चाँदेर गाय॥
धरो लओ धरो लओ........

(प्रेम) नित्यानन्द गौरचन्द्र आपनि बिलाय।
(प्रेम) ये यतो चाय से ततो पाय तबु ना फुराय॥
धरो लओ धरो लओ.....

४

गौर हरि बोल हरि हरि बोल।

हरि बोल हरि बोल हरि बोल हरि बोल।

हरि हरि बोल।

(आमार) गौर हरि बोल।

गौर हरि बोल।

(आमार) निताइ चाँदेर बोल।

निताइ चाँदेर बोल

(आमार) अद्वैतेर बोल।

अद्वैतेर बोल।

(आमार) गदाधरेर बोल।

गदाधरेर बोल।

(आमार) शचीमातार बोल।

शचीमातार बोल।

(आमार) श्रीनिवासेर बोल।

बोल हरि बोल गौर हरि बोल।

गौर हरि बोल हरि हरि बोल॥

जय-ध्वनि

प्रेम से कहो श्रीराधे कृष्ण,
बलिओ प्रभु निताइ चैतन्य
अद्वैत श्रीराधाराणी की जय !
श्रीराधागोविन्द की जय !
श्रीराधा-मदन-मोहन की जय !
श्रीराधागोपीनाथजी की जय !
श्रीराधाश्यामसुन्दर की जय !
श्रीराधारमण की जय ! श्रीहरिनाम संकीर्त्तन की जय !
दाता-भोक्ता की जय ! श्रोता-वक्ता की जय !
चारि धाम की जय ! गौरमहल की जय !

संगीत

श्रीगणेश संगीत

आड़ाना—दादरा

१

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देव।
माता तोहे पार्वती पिता महादेव॥
मोद मन भेद हरे उमा की गोद भरे।
कार्य सब सफल करे देवाधिपति देव॥
दुःख-हरण, विघ्न-नाशन, मंगल-करण।
आये हम तेरी शरण, देवन् के देव॥

२

मनोहर साही—एकताला

गिरिगणेश आमार शुभकारी।
पूजे गणपति पेलाम हैमवती,
चाँदेर माला यैनो चाँद सारि सारि॥
बिल्ववृक्षमूले पातिया बोधन,
गणेशेर कल्याणे गौरीर आगमन
घरे आनवो चण्डी, कर्णे शुनबो चण्डी
आसबे कतो दण्डी जटाजुटधारी॥
मायेर कोले मेये दुटी रूपसी
लक्ष्मी सरस्वती शरतेर शशी

सुरेश-कुमार गणेश आमार
तादेर ना देखिले झरे नयनेर वारि ॥

३

विघ्न-हरण गौरी-नन्दन
पूर्ण-करण सर्वकाज ।
दयावन्त एकदन्त
चतुर्बाहु सिद्धिराज ॥

श्रीगुरुसङ्गीत

१

जय गुरुदेव दयानिधि भक्तन के हितकारी।
जय जय जय मोह-विनाशक भव-बन्धन-हारी॥
ब्रह्मा-विष्णु-सदाशिव का गुरु मूरती - धारी।
वेद पुरान करत बखान, गुरु की महिमा भारी॥

जप-तप-तीरथ-संयम-दान, गुरु बिना नहीं होवत ज्ञान।
ज्ञान संग से करम काटे गुरु नाम सब पातकहारी॥
तन-मन-धन सब अर्पण कीजे, परमा गति मोक्षपद लीजे।
सबके सार सत् गुरु नाथ अविनाशी अधिकारी॥

२

(आमि) वन्दि तोमारे गुरु ॥ टेक॥
तुमि ये आमार सुधार सिन्धु
आमि ये तृषित मरु॥

हे मोर जीवनेर ध्रुवतारा।
(आमि) आँधारे आँधारे घुरिया घुरिया हयेछि ये दिशेहारा
तुमि ज्ञानेर प्रदीप लइया।
'भय नाइ'—बले पथ देखाइया।
आगे आगे याओ फिरे फिरे चाओ।
बुझिया आमाय भीरु॥

(तुमि) आमार परम बन्धु,
(आमार) शत अनादर लओ समादरे

अपार दयार सिन्धु।
देखिते आमार पाओो नाक दोष
नाहि अभिमान नाहि तव रोष
सदा हासिमुख प्रशान्त सुमुख
हे आमार आश्रय तरु॥

(तुमि) अन्तरेते मम प्राण
(आबार) बाहिरेते तुमि विश्वरूप धरि
रहियाछो दृश्यमान।

तुमि-इ आबार देहधारी हये
करो अभिनय देही मोरे लये
नमि विश्व-प्राण, करो परित्राण
हे आमार कल्पतरु॥

३

(गुरु) तोमार आमि, तोमार आमि, तोमारइ तो आमि।
गुरु आमि रथ, तुमि रथी, आमार सकल काजेइ तुमि साथी।
तोमार बले सबाइ चले, यैमन चालाओ तुमि।
(गुरु) तोमार आमि.................

आमार प्राण तुमि, प्रिय तुमि, भक्ति तुमि, मुक्ति तुमि।
आमार माता पिता बन्धु भ्राता आमार सकलि तुमि।
(गुरु) तोमार आमि.................

वारि बिना मीन यैमन गुरु तुमि छाड़ा आमि तैमन।
प्राणे कतोइ ज्वाला याय कि बला जानो अन्तर्य्यामी।
(गुरु) तोमार आमि.................

तुमि छाड़ा के आर आछे आमार या सब तोमार काछे।
आमार साधन तुमि, भजन तुमि, तुमि हृदय - स्वामी।
(गुरु) तोमारि आमि ···· ···· ····
लता यैमन तरु घिरि, जड़िये अंगे तारि।
गुरु तेमनि मतन हृदय-रतन जड़िये आछि आमि।
(गुरु) तोमारि आमि ···· ···· ····
तोमार धने आमि धनी, तोमार ज्ञाने आमि ज्ञानी।
गुरु आमार आमि तोमाय दिये तोमार हलेम आमि।
(गुरु) तोमारि आमि ···· ···· ····

४

ओगो दिन तोमार आनन्दे यावे जप्ले गुरुर नाम,
जपो जपो गुरु नाम ॥
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु शिवराम,
गुरुर सेवाय मिले, मोक्ष-धर्म-अर्थ-काम ॥
मेघ-वरण मुरली मोहन वंशी - वदन श्याम,
यमुना-पुलिने बसे जपेन सदा गुरु - नाम ;
सार करो सद्गुरुर वाक्य, पूरबे मनस्काम,
(तुइ) आपन घरे आपनि गिये देखबि आत्माराम ॥

पूरबी—कहारावा

५

गाह रे गाह रे सबे गुरु-ब्रह्म नाम हे ॥ (टेक)
ऐ नामे लभिबे भाई, चिदानन्द धाम हे ॥
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरु अपार प्रेम-सिन्धु,
गुरु नारायण शम्भु, गुरु मातापिता हे ॥

एसो प्रभु परात्पर, डाके तोमाय चराचर,
हृदय - कमले बसो, एसो प्रभु एसो हे॥

मालकोष—तुलताल

६

मेरी लागी लटक गुरु चरणन की।
चरण बिना और कछु नहीं ध्यावे
झूठी माया सब स्वपनन की॥
भव-सागर-जल सूख गया है
फिकिर नाहीं मोर तरणन की।
मीरा कहे प्रभु गिरिधर नागर
पुलक भयी मोरे नयनन की॥

बाउल

७

ओ भाई गुरुइ कर्णधार।
ओ भाई काज की रे तोर अपर काजे
ए माया-नदी पार हइते गुरुइ कर्णधार।
पूर्ण विश्वास एले भाई
(देखबि) गुरु बिना ए जगते आर तो किछुइ नाइ,
पारापार थाकबे ना आर
घुचबे रे मनेर विकार।
देखबि रे एइ हृदय - पुरे
(तखन) कालो कृष्ण शिव ये गुरु
गुरुमय ए संसार।
गुरु माझी हये आछेन पारघाटे
ओ ताँर कृपा होले याबि पारे तरबि संकटे।

ओ भाई आसल समय केउ कारो नय
ओ भाई गुरु बिना सब आँधार।
ओ भाई गुरुइ कर्णधार॥

८

मन तुइ शुधु बेये या रे दाँड़।
(यखन) तोर हाले बसे आछेन गुरु
(तखन) यैमन फागुन तैमन आषाढ़॥
माझीर ऐ गानेर ताने
बेये या रे दाँड़ आपन मने
(आर) चास ना रे तुइ आकाश पाने
होक ना फर्सा, होक आँधार॥
काज कि भेबे कोथाय याबि
कोथाय गिये नाव भिड़ाबि (रे)
कखन गाङे लागबे घाटि (रे)
कखन गाङे लागबे जोआर
से सब भावना कैनो आर॥
मने राखिस निरवधि
याँर-इ तरी, ताँर-इ नदी
ये फेलबे तोरे बानेर मुखे
से-इ तो तरीर कर्णधार।

९

परब्रह्म-रूप गुरु करुणा-निधान।
चिर पूज्य हे उज्ज्वल मुक्त महान॥

कीर्तन रस-स्वरूप

दुर्गम पथ अति घन तमसाय,
चलिबो संसार-पथे कौन भरसाय;
आमाय निये चलो साथे साथे
तव परिचित पथे,
कलुष विनाशि प्रभु दाओ हे कल्याण ॥

कुटिल कुयासा घेरा पथ - सीमाना,
आँधारे चलिबो कोथा नाहि ठिकाना;
आमार कैमने घुचिबे आधि,
तुमि ना देखावे यदि
चिर उदार उन्नत चरण - निशान ॥

आँधार संसारे तुमि आलोक-रेखा
पथहारा पथिकेरे दिबे कि देखा
आमाय दाओ पथ-परिचय
हे चिर मंगलमय;
राखो हे गौरव तव ओहे गरीयान ॥

१०

भैरवी-कौवाली

गुरु नाम करो साधना करो साधना।
ये नामेते पाप काटे घुचे भव यन्त्रणा।
गुरु-नाम सार करो श्री गुरु बलो बदने।
गुरु-रूप ध्यान करो शान्ति पाबे जीवने।
भुलेओ भुलो ना यैनो श्रीगुरुर ऐ श्रीचरण।

ये चरणे कोटि चन्द्र जेनेओ कि ता जानो ना।
दुर्लभ जनम पेये की की कार्य करेछो।
जन्म हले मृत्यु आछे भेवे कि ता देखेछो।
दिन थाकिते डाको तारे नइले देखा पावे ना।

११

मनोहरसाही—एकताला

जानो ना रे मन परम कारण श्रीगुरु-चरण भरसा रे।
श्रीगुरु सर्व-सिद्धि-दाता परम देवता दीन जने दीन-तारण रे।
निस्तार करिते एइ संसार-तुफाने, पथ देखाइते प्रेमेर भवने
ज्ञान भक्ति प्रेम सदा लभिबारे श्रीगुरु-चरण करह सर्बस्व रे।
मन तुइ पावि अनायासे चतुर्वर्ग फल भव-मरु माझे छाया सुशीतल
श्रीगुरु-चरण-कमले भक्ति-गंगाजल सयतने करो सिञ्चन रे।

श्रीराम संगीत

१

प्रेम - मुदित मन से कहो राम राम राम
श्रीराम राम राम श्रीराम राम राम।
पाप कटे दुःख मिटे, लेते राम नाम
भवसमुद्र - सुखद - नाव एक राम नाम॥
परम - शान्ति - सुख-निदान नित्य राम नाम
निराधार को आधार, एक राम नाम॥

परम गोप्य परम इष्ट मन्त्र राम नाम
संत हृदय सदा बसत एक राम नाम ॥
महादेव सतत जपत दिव्य राम नाम
कशी - मरत मुक्त - करत कहत राम नाम ।
माता - पिता - बन्धु - सखा सबहि राम नाम
भकत - जन - जीवन - धन एक राम नाम ॥

२

तिलक—कामोद एकताला

रघुकुलपति रामचन्द्र अवध के अधिकारी
सुर-नर-जन पूजे चरण, मुनि-जन-भयहारी ।
झलके अरुण वदनकमल, नील-पद्म नयन युगल
दशरथसुत सीतापति तपोवन - वनचारी ॥
सत्यधर्म पालक प्रभु राज - मुकुट - त्यागी
रत्नाकर - शासक प्रभु अनुजके अनुरागी ॥
शिला-सती-अहल्या-त्राता जगत-पूज्य जगत-पिता
लङ्कापति - मोक्षदाता असुर - निधन - कारी ॥

३

झिँझिट खाम्बाज—एकताला

ठुमकि चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनिया ॥
किलकि किलकि उठत धाय, गिरत भूमि लपटाय
धायी मातु गोद लेत दशरथ की राणीया ॥
अञ्चलरजः अङ्गझारि विविध भाँति सों दुलारि ।
तन-मन-धन बारि बारि कहत मृदु वाणीया ॥

विद्रुम-से अरुण अधर बोलत मुख मधुर-मधुर।
सुभग नासिका में चारु लटकत लटकनिया॥
तुलसीदास अति आनन्द, देखत मुखारविन्द।
रघुवर छवि के समान रघुबर छवि वाणियाँ॥

४

झुमुर—खेमटा

कष्ट हरण तेरा नाम राम राम हो
कमल नयन वाले राम श्रीराम हो।
(अहा) कष्टहरण तेरा नाम (राम हो)
चन्दन चमकत ललाट, कानों में कुण्डल-वहार
बस गई मन अनमन॥ कमलनयन वाले राम॥
नवदूर्वादल-श्याम तनमनहारी
(अहा) देखत वनवासी उमङ्ग भरि
ऐसो मनहरण ठाम॥ कमल नयन वाले राम॥
जय जय दीनदयाल, जय जय राघव कृपाल
मुकुट-शीर्ष चन्द्रमान॥ कमल नयन वाले राम॥

५

सुना रे सुना रे मन अमृत भरा है रामचन्द्र का नाम
(मनुआ) रामचन्द्र का नाम।
जनम जनम भर राम नाम कर
पूरत मन का काम॥

सीताराम, सीताराम, बोल बोल सीताराम।
(मनुआ) बोल बोल सीताराम।
नारायण नर भेष बनावे
श्रीरामचन्द्र इह जग में आवे
अपार लीला जगको दिखावे
भजते रहो राम नाम॥
सीताराम सीताराम बोलो बोलो सीताराम।
—मनुआ बोल बोल सीताराम॥

६

मुझे रामसे कोई मिला दे।
बिन् लाठीका निकला अन्धा,
राम से कोई मिला दे॥
कोई कहे बास अवध में
कोई कहे वृन्दावन में
कोई कहे तीरथ मन्दिर में
देखा साहु मैं उनको मन में।
ऐसे जोत जगा दे॥

७

भैरवी—कहारवा

(मन) नाम जपन क्यों छोड़ दिया?
राम जपन क्यों छोड़ दिया?
क्रोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा
सत्य वचन क्यों छोड़ दिया?

झूठे जग में दिल ललचाकर
असल रतन क्यों छोड़ दिया ?
कौड़ी को तो खूब सम्भाला
लाल रतन क्यों छोड़ दिया ?

जिन्हि सुमिरण से अति सुख पावे
सो सुमिरण क्यों छोड़ दिया ?
खालस एक भगवान भरोसे
तन-मन-धन न क्यों छोड़ दिया ?

८

काफी—त्रिताल

(मनुआ) राम नाम रस पीजे।
त्यज कुसंग सत्संग बैठ नित
हरि - चर्चा सुन लीजे॥

काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह को
चित से बहाय दीजे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर
ताँहि के रङ्ग में भीजे॥

९

माड्

पायोजी मैं तो रामरतन धन पायो।
वस्तुआ मोरिको दी' मेरे सतगुरु
किरपा कर अपनायो॥

जनम - जनम की पूँजी पाइ
जग में सभी खोयाओ,
खरच न कोई, वाको चोर न लूटै
दिन दिन बढ़त सवाओ ॥

सत की नाव खेवटिया सत्‌गुरु
भव - सागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर
हरख हरख जस गायो ॥

१०

जय जय रामसीया, रामसीया, रामसीया राम ॥ टेक ॥
सीयाराम ही आधार, जाने सारा संसार
देखो दिल में विचार ॥
उनकी महिमा अपार, कोई पावे न पार
गुण गावे हजार ॥
हरण धरणी के भार लिये नर के अवतार
भजो दशरथ-कुमार ॥
काने कुण्डल विशाल तिलक शोभे जाके भाल
लटपट पगिया रसाल ॥
श्रीदशरथ के लाल कोशल - पालक कृपाल
राजीव लोचन विशाल ॥

११

जय सीतापति सुन्दरतनु प्रजारञ्जनकारी।
राघव रामचन्द्र जयतु सत्यव्रतधारी ॥

धरणी पूतचरण परशे, पुरवासीगण मगन हरषे।
आकाश हइते नित्य बरषे देवता-कृपावारि॥

१२

जगत् देखो ना चेये याच्छे बेये सोनार तरणी।
तरीर ऊपर श्याम कलेवर राम रघुमणि॥
(यिनि) भवेर जले अवहेले करेन जीवे पार।
आजके ताँरे निच्छि पारे हये कर्णधार॥
(आमि) पारेर कड़ी चेये नेबो (श्री) चरण दुखानि॥

१३

राम राज बैठे त्रैलोका। हरषित भय गये सब शोका॥
बैर न कर काहुँसन कोई। राम प्रताप विषमता मोई॥
सब निर्दम्भ धरमरत पुणी। नर अरु नारी चतुर सब गुणी॥
सब गुणज्ञ पण्डित सब ज्ञानी। सब कृतज्ञ नहीं कपट सैयानी॥

राम राज नभगेश सुनु, सचराचर जगमाहिं।
काल कर्म सुभाव गुण कृत दुख काहुँ हि नाहीं॥

नमामि भकत-वत्सलं, कृपालु-शील-कोमलं—नमामि।
भजामि ते पदाम्बुजं, हियकामिनां-सुधामदं—नमामि।
नवीन - मेघ - सुन्दरं, भवाम्बुनाथ-मन्दरं—नमामि।
प्रफुल्ल - कञ्ज-लोचनं, मदादि-दोष-मोचनं—नमामि॥

१४

बोलो बोलो राम नाम जो है, नाम वही प्रेम
वही राम सुख धाम बोलो बोलो राम
जो देखो सो राम ही राम जो करो उन्हीं का काम।
दीन-दयाल भकत-पाल उन्हीं को करो प्रणाम॥

१५

राम नाम घन श्याम शिव नाम सुमरो दिन रात
हरि नाम सुमरो दिन रात।
जनम सफल तू कर ले अपना मान ले मेरी बात।
धन्य धन्य वह भूमि प्रभु ने लिया जहाँ अवतार।
धन्य है वह स्थान जहाँ प्रभु-प्रेम का ही परचार।
धन्य है तीरथ जिनकी यात्रा मुक्ति की है बात।
काम क्रोध मोह लोभ छोड़कर नाम उसका गा ले।
मानुष तन जो पाया उसका सच्चा लाभ उठा ले।
जीवन है अनमोल तिहारा पल पल बितत जात॥

१६

रघुवर तुमको मेरे लाज
सदा सदा मैं शरण तिहारी।
तुम ही गरीब - निवाज।
पतित-उद्धारण बिरद तुम्हारो
श्रवण न सुनि आवाज।
है तो पतित पुरातन कहिओ, पार उतार जहाज।
अघ-खण्डन दुख-भञ्जन जनके एहि तिहार काज।
तुलसीदास पर कृपा कीजे भकति दान देहुँ आज॥

१७

अब मैं अपने राम रिझाऊँ
गङ्गा जाऊँ ना यमुना जाऊँ ना कोई तीरथ नहाऊँ।
तीरथ है मन के अन्दर वही में मलमल नहाऊँ।

डाली तोड़ूँ न पत्ती तोड़ूँ न कोई जीव सताऊँ।
पात पात में प्रभु बसत हैं वही को शीष नवाऊँ।
योगी बनूँ न जटा बढ़ाऊँ न अङ्ग विभूति रमाऊँ।
जो रंग रंगे आप विधाता वही रंग चढ़ाऊँ।
कहत कबीरा सुनो भाई साधो आवागमन मिटाऊँ॥

श्रीनारायण सङ्गीत

१

भैरवी—कहारवा

ए दुनिया एक भुलानि माया
चुन चुन गाड़ा महल बनवाया लोग कहे घर मेरा।
ना घर मेरा, ना घर तेरा, चिड़िया रहन बसेरा॥
नारायण की भक्ति बिना को उतरे भव पार रे।
एक बार हरिनाम ले पाप होयेंगे छार रे॥

देश—त्रिताल

२

भजो नारायण भजो नारायण भजो नारायण को नाम रे।
नारायण के नाम बिना तेरे कोई नहीं तो काम रे॥
जीवन है सुख-दुख का मेला
दुनियादारी स्वपनो का खेला
जाना तुझको पड़े अकेला
चल ईश्वर को धाम रे।

नारायण की महिमा गा ले
प्रेम की उसमें रोक लगा ले
जीवन अपना सफल बना ले
भजत रहो हरि नाम रे ॥

३

नारायण जपो मन ।
युगे युगे यिनि हन अवतार
मुछाते व्यथार नयनेर धार
यतो गुरु भार तोर वेदनार
बलो ताँरे से पातकी-तारण ।
पद-नखे यार नियत उजल
कोटि रवि शशी करे झलमल
ओरे भोला तोर शुधु सम्बल
अमल कमल से दूटि चरण ।

४

नारायण मैं शरण तुम्हारी
दया करो महाराज हमारे ।
तात-मात-सुत-दार-सहोदर
कोई न आवत काज हमारे ॥
भव-सागर जल दुस्तर भारी
तुम्हारे चरण जहाज हमारे ।
पाप अनेक किये जग माहीं
तुमको है अब लाज हमारे ॥
ब्रह्मानन्द दया तुम्हारी से
सब दुःख जावत भाज हमारे ॥

५

जय जय सुर नायक, जन सुख दायक, प्रणत पालक भगवन्ता।
गो द्विज हितकारी, जय असुरारी, सिन्धु सुता प्रिय कन्ता॥
पालन सुर धरणी, अद्भुत करणी, मर्म न जाने कोई।
जो सहज कृपाला, दीन दयाला, करहु अनुग्रह सोई॥
जय जय अविनाशी, सर्व घटवासी, व्यापक परमानन्द।
अभिगत गोतीता, चरित पुणीता, माया रहित मुकुन्द॥
जोहि लागि विरागी, अति अनुरागी, विगत मोह मुनिवृन्दा।
निशि-वासर ध्यावहि, हरि गुण गावहि जयति सच्चिदानन्दा॥
जोहि सृष्टि उपायि, त्रिविध बनायि, सङ्ग सहाय न दूजा।
जो करहुं आधारि, चिन्ता हमारी, जानिए भक्ति न पूजा॥
जो भवभय भञ्जन, मुनि मनोरञ्जन, गञ्जन विपति वरूथा।
मन वचन क्रमवाणी, छाड़ि सयानि, शरण सकल सुरयूथा॥
शारद श्रुति शेषा, विषय अशेषा, जा कहुं कोई नहीं जाना।
जेहि दीन पियारे, वेद पुकारे, द्रवउ सो श्रीभगवाना॥
भव वारिधि मन्दर, सब विधि सुन्दर, गुण मन्दिर सुखपुञ्ज।
मुनि-सिद्ध-सकल सुर, परम भयातुर, नमत नाथ पदकञ्ज॥

श्रीकृष्ण-संगीत

१

एसो गोपी-वल्लभ, एसो देव दुर्लभ
एसो हरि वनमाली वङ्किम-ठामे।
एसो प्रेममय, एसो दयामय,
एसो तुमि वन्दित वन्दना गाने॥

एसो लक्ष्मी-विमोहन, नित्य निरञ्जन
गोलोक - उज्ज्वलकारी ।
एसो भक्त-प्राणधन, गरुड़-वाहन
शत्रु विमर्दनकारी ॥
एसो विपद-वारण विपद-नाशन
विपद-भञ्जन नामे ।
एसो लहरे लहरे अन्तर-माझारे
स्वच्छ आलोक महिमा ॥
एसो सजीव-सचल वास्तव मूरति
सुरभित प्रवाहित गरिमा ।
एसो झंकारे झंकृत, मूर्च्छना पूरित
अमरा-अमित करुणा ॥

२

राग छाया टोरी—त्रिताल

मेरे घर आवो प्रीतम प्यारा ।
तुम बिना सब जग हारा ।
तन-मन-धन सब भेंट धरूँगी
भजन करूँगी तुम्हारा ।
तुम गुणवन्त सुसाहिब कहिए
मोहे अवगुण सारा ।
मैं निर्गुणी कछु गुण नहीं जानूँ
तुम हो बगसन हारा ।
मीरा कहे प्रभु कबरे मिलोगे
तुम बिन नैन दुखारा ।

३

ओ आमार प्राणेर ठाकुर,
आज तोमारे आसते हबे, बासते हबे भालो।
एसो आमार पराण-प्रिय, हृदय करि आलो।
डाकले तुमि आसबे बले,
सेइ ये हरि गैले चले,
(आर एले ना, एबार एसो, एसो हृषीकेश)
(एबार) सोहाग भरे काने काने एइ एसेछि बलो॥

४

अन्तर - मन्दिरे जागो जागो
माधव कृष्ण गोपाल।
नव अरुण सम जागो हृदये मम
सुन्दर गिरिधारी लाल॥
नयने घनालो व्यथार बादल
जागो जागो तुमि किशोर श्यामल।
लये राधा वामे एसो व्रजधामे
एसो हे व्रजेर राखाल॥
यशोदा-जीवन एसो, एसो ननीचोर
मीरार प्रीतम एसो, एसो हे किशोर।
श्रीराधार प्रियतम एसो अनुपम
एसो हे गोठेर राखाल॥

५

जागो जागो शङ्ख - चक्र - गदा - पद्मधारी!
जागो श्रीकृष्ण कृष्णा तिथिर तिमिर अपसारि!

डाके वसुदेव देवकी डाके
घरे घरे नारायण डाके तोमाके
डाके बलराम, श्रीदाम, सुदाम
डाकिछे यमुना वारि ॥

हरि हे तोमाय सजल नेत्र
डाके पाण्डव कुरुक्षेत्र
दुःशासन-सभाय द्रौपदी डाके
डाकिछे लज्जाहारी ॥

महाभारतेर हे महादेवता
जागो जागो आनो आलोक वारता ;
डाकिछे गीतार श्लोक अनागता
(हरि) डाकिछे विश्वेर नरनारी ॥

६

भजन—कौवाली

पीतम प्यारे वंशीवारे तू आ जा कन्हैया आ जा ।
लेई गोवाल-बाल नन्दलाल मोहन मुरली ध्वनि धुन सुना जा ॥
मैं गोवर्द्धन में जाऊँ श्याम मैं गोवर्द्धन में जाऊँ ।
वनकुञ्जन बाट यमुनाजी के घाटपे आके गौया चराया ॥
टेर कदम के नीच मैं सखा संग नाना खेलन धूम मचाय जा ।
भूख लगे तो माखन-मिश्री मेरे ही हाथ से खा जा ॥
दधि-दूध-मलाई लेत चलूँ तू आ जा हो मेरे राजा ।
दास विश्वरूप तोहें विनति करतु है श्यामल सूरत देखा जा ॥

७

भैरो—त्रिताल

जागो मोहन प्यारे ;
साँवरि सूरत मोरे, मन भावे सुन्दर लाल हमारे।
प्रात समे उठ भानु उदय भयो
गोवाल-बाल सब भूपत ठाड़े
दरशन के सब भूखे-प्यासे उठ उठ नन्द-किशोरे ॥

८

मम मन मन्दिरे रहो निशिदिन
कृष्ण मुरारी, कृष्ण मुरारी।
वन्दना गाने तव बाजुक जीवन वीण ॥
(मम) भक्ति प्रीति माला चन्दन
तुमि निओ हे निओ चित नन्दन
जीवन मरण तव पूजा निवेदन
सुन्दर हे मनोहारी ॥
(एसो) नन्द-कुमार आनन्द-कुमार
हबे प्रेम-प्रदीपे आरती तोमार
(मम) नयन-यमुना बहे अनिवार
तोमारि विरहे गिरिधारी ॥

९

पिलु—कहारवा

आवो सुन्दर श्याम गिरिधारी।
आवो नन्दलाल, आवो व्रजगोपाल
बजाओ मोहन बाँसुरी ॥

प्रीतम कानु आवो व्रजकुमार
तुँही प्रभुजी कंस की संहार
दिखाओ मोहन रूप मीरा के प्रभु
चक्र-सुदर्शन-धारी ॥

गले में दोलावत वन फूल माला
शिर में शिखी नन्द कि लाला
चरण बढ़ाओ प्रभु राखो शरण
गिरिधर नागर मीरा की ॥

१०

झुमुर

नन्द-दुलाल आय रे आय, (ऐ देख) गोठेर बैला जाय।
(आय) चूड़ा बेंधे चाँचर केशे, राखाल-वेशे
नूपुर परे पाय ॥
(आय) वेणु लये हाथे, आय धेनु लये साथे।
(तोर) पथे पथे कृष्णकलि अञ्जलि छड़ाय ॥
(तोरे) राखाल वेशे करबो राजा साबेर वृन्दावने।
बसिये देबो तमाल-तले मयूर सिंहासने।
(आर) कृष्णचूड़ार मुकुट गेंथे पराबो माथाय ॥

११

कौसी कन्हाड़ा—त्रिताल

कोई कहिओ रे प्रभु आवन की !
आवन की, मन भावन की !
अपने आप लिख नहीं भेजे
बान परि ललचावन की !

ए दो नयन कहा नहीं माने
नदीया बहे जैसे सावन की।
क्या करूँ कछु नहीं वश मेरो
पाँख नहीं उड़ जावन की।
मीरा कहे प्रभु कबरे मिलोगे
चेरी भई हूँ तेरे दाँवन की॥

१२

झिंझिट—दादरा

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाँके सिर मौर मुकुट मेरो पति सोई।
शंख-चक्र-गदा-पद्म कण्ठमाला होई॥
तात मात भ्रात बन्धु अपनो न कोई।
अब तो बात फैल गई जाने सब कोई॥
सन्तन संग बैठ बैठ लोक लाज खोई।
छाड़ देइ कुल की कान क्या करेगा कोई॥
अँसुअन जल सींच सींच प्रेम बीज बोई।
मीरा प्रभु लगन लगि, जो होय सो होई॥

१३

कीर्त्तन—खैरा

हे माधव, बहुत मिनति करि तोय।
देइ तुलसी तिल, देह समर्पिलु दया जनु न छोड़बि मोय॥
गणइते दोष, गुणलेश न पाओबि जब तुहुँ करबि विचार।
तुहुँ जगन्नाथ जगते कहायसि, जग बाहिर नहिं मुँई छार॥

किये मानुष पशु पाखी किये जनमिये, अथवा कीट पतङ्ग।
करम-विपाके गतागति पुन पुन, मति रहुँ तुआ परसंग॥
भणये विद्यापति अतिशय कातर, तरइते इह भवसिन्धु।
तुआ पद-पल्लव करि अवलम्बन, तिल एक देह दीनबन्धु॥

१४

हे पार्थ-सारथी बजाओ बजाओ पाञ्चजन्य शंख।
चित्तेर अवसाद, दूर करो, करो दूर
भयभीत जने करो हे निःशङ्क॥
धनुकेर टङ्कार हानो हानो
गीतार मन्त्रे जीवन दानो,
भोलाओ भोलाओ मृत्यु-आतङ्क॥
मृत्यु जीवनेर शेष नहे नहे
अनन्त काल धरि अनन्त प्रवाह जीवने बहे;
दुर्मद-दुरन्त यौवन चञ्चल
छाड़िया आसुक मार स्नेह अञ्चल
वीर सन्तानदल करुक सुशोभित मातृ-अंक॥

१५

भजन—कहारवा

श्याम! मैंने चाकर राखोजी, गिरधरलाल! चाकर राखो जी।
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दरशन पासूँ।
बृन्दावन की कुञ्ज गलिन में तेरी लीला गासूँ॥
चाकरी में दरशन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची।
भाव भगति जागीरी पाऊँ, तिनु बाँता सरसी॥

मौर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल बैजयन्ती माला।
वृन्दावन में धेनु चरावे, मोहन मुरलीवाला॥
हरे हरे नित बाग लगाऊँ बीच बीच राखूँ केआरी।
साँवरिया के दरशन पाऊँ, पहर कुसुममी सारी॥
योगी आया योग करणकुँ, तप करणे संन्यासी।
हरि भजनकुँ साधु आया, वृन्दावन के वासी॥
मीरा के प्रभु गहिर गम्भीरा सदा बहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दरशन दीन्हें प्रेमनदी के तीरा॥

१६

पिलु—कहारवा

हरि आये तेरे मन मन्दिर में,
स्वागत कर ले पूजारी।
फूल बना ले मन को तेरे
पूजन कर गिरिधारी॥
हृदय कमल से पूजन कर ले
देख मूरति जी को भर ले।
चरण चूम ले नूपुर होकर
बन करके गिरिधारी॥
प्रेम के आँसू भेंट चढ़ा ले
भक्ति-प्रेम-अनुराग बढ़ा ले।
तन-मन दे दो उन चरणन पर
आये व्रजमन-हारी॥

१७

श्यामल वंशीवाला, नन्दलाला
मातोवाला रे गोकुल के उजियाला।
(गोकुल के उजियाला प्यारे गोकुल के उजियाला)
'कृष्ण कृष्ण' कहो साँझ सबेरे, कृष्ण नामे सब दुःख हरे
कृष्ण ही भवसागर पारे पार लगानेवाला।
कोई कहत है कृष्ण मुरारी, कोई कहत है रासविहारी
कोई कहत है हरे मुरारी जपे तुलसीके माला॥

१८

कीर्त्तन

देखे एलेम ताँरे सखी देखे एलेम ताँरे।
एकइ अङ्गे ऐतो रूप नयने ना धरे॥
बँधेछे विनोद चूड़ा नवगुञ्जा दिया।
उपरे मयूरेर पाखा वामे हेलाइया॥
कालिया वरणखानि चन्दनेते माखा।
आमा हइते जाति कुल नाहि गैलो राखा॥
मोहन मुरली हाते कदम्ब हिलन।
देखिया श्यामेर रूप हलेम अचेतन॥
गृहकर्म करिते एलाय सब देह।
ज्ञानदास कहे विषम श्यामेर लेह॥

१९

बेहाग—एकताला

किबा घोर निशाय ;—
निखिल जगत झिल्लिरवावृत जीवगण यतो आलसे घुमाय।

ऐमन समय पतित - पावन,
जगत जीवन ब्रह्म सनातन।
त्यजिया साधेर वैकुण्ठ भुवन
अवतीर्ण हते आइलेन धराय ॥
रोहिणी नक्षत्र अष्टमी तिथिते,
देवकी जठर - सागर हइते,
श्रीकृष्ण-चन्द्रमा उदिलो भारते
नाशिते जीवेर भार।
वसुदेव अति कातर अन्तरे,
तिमिरे तिमिर-मणि कोले करे,
वासुकी-माथाय फणी छत्र धरे ;—
हाँटिया यमुना पार हये याय।

२०

भजन—ठुंरी

(आमि) गिरिधारी मन्दिरे नाचिबो।
छन्द पूजाञ्जलि ढालिबो चरणे
नाचिया हरि-प्रेम याचिबो।
प्रेम-प्रीतिरे बाँधिबो नूपुर
रूपेर वसने आमि साजिबो;
कृष्ण नामावली अंगे भूषण धरि
आरतीर नृत्ये मातिबो॥
जीवन मरणे करताल झंकार
बाजिबे मृदङ्ग,—अनाहत ओंकार
पाषाणेर घुम आमि भाँगिबो राणाजी
हरिरे मीरार रंगे राङ्गिबो॥

२१

हरि भजन बिन सुख नाहि रे।
नरक्यो वृथा भटकाइ रे।
काशी गया द्वारका जावे
चार धाम तीरथ फिर आवे।
मन की मैल न जाइ रे॥
छाप तिलक बहु भाँत लगावे
शिर पर जटा विभूति रमाये।
हृदे शांति न आई रे॥
वेद पुराण पढ़े बहु भारि
खण्डन मण्डन उमर गुजारि
वृथा लोक बढ़ाई॥
चार दिवस जग बीच निबासा
ब्रह्मानन्द छोड़ सब आशा
प्रभु चरणन चित लाइ रे॥

२२

तिमिर विदारी अलख विहारी
कृष्ण मुरारी आगत ओई।
टूटिल आगल निखिल पागल
सर्वसिहाय, आजि सर्वजयी॥
बहिछे उजान अश्रु यमुनाय,
हृदि-वृन्दावने आनन्द डाके आय।
वसुधा-यशोदार स्नेहधार उथलाय
कालो राखाल नाचे थै तायै॥

विश्व भरि ओठे स्तव नमोनमः
अरिर पुरी माझे एलो अरिन्दम ॥
घिरिया द्वार वृथा जागे प्रहरीजन
बन्ध काराय एलो बन्ध - विमोचन
धरि अजाना पथ, आसिलो अनागत
जागिया व्यथाहत डाके "मा भैः" ॥

२३

मेरे जनम-मरण के साथी, तुहुँ नहीं विस्मरूँ दिनराती।
तुहाँ देखौं विन पल ना काटत है जानत मेरी छाती ॥
ऊँची चढ़-चढ़ पन्थ नेहारूँ रोय रोय आँखिया राती।
जो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुलरा न्याती ॥
द्वौ कर जोड्या अरज करुछूँ सुन निजो मेरी बाती।
पल पल पिअको रूप नेहारूँ निरखि निरखि सुख पाती।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर हरि-चरण चित राती ॥

२४

बाँशी आमाय डाके गो ;
(नाम धरिया डाके गो)
(राधा राधा राधा बोले डाके गो)
गृह-काजे मन बसे ना आमार मन बसे ना
आमार मन बसे ना
चरण चलिते चाय गो। बारण माने ना गो
बारण माने ना—बारण माने ना।

ओलो ननदी दिसने बाधा येते दिसने बाधा
आमि ये कलङ्किनी राधा।
कलङ्क ना लये शिरे; आमार मन बसे ना॥
बैला ये पड़े एलो, जलके याबार समय होलो
दे ननदी पथ छेड़े दे आज।
लोके यदि शुधाय तोरे, बलिस राधा गैछे फिरे
पथेर धुलाय कुलवधूर लाज॥
सर्वनाशा श्यामेर बाँशी, तवु ये हाय भालोबासि।
तिलेक ध्वनि ना शुनिले, धिरज माने ना॥

२५

आमि कि सुखे लो गृहे रबो।
(आमार) श्याम यदि ओगो योगी होलो सखि,
आमिओ योगिनी हबो।
से आमार ध्यान करितो गो सदा
से ध्यान भाङ्गिलो यदि,
से भोले भुलुक आमि ऐ रूप
ध्यायाइबो निरवधि।
(श्याम) ये तरुर मूले बसिबे लो ध्याने
आँचल बिछाये रबो॥
सखि, धूलाय यदि से माँगे,
आमि आपनि हइबो राङ्गा पदधूलि
बँधुयार-इ अनुरागे।
(वा) हबो भिखार-इ झुलि श्याम लबे तुलि
बाहुते आमारे जड़ाये।

सखि, आमार वेदन—गैरिक रांगा वसन
दिबो ताँरे पराये ॥
(किंवा) आमार प्राणेर गोधुलि बेलार
रंगे रंगे तारे रांगाइबो आमि ;
(अथवा) ताँर गेरुया रांगा वसन हइबो
जड़ाये रहिबो दिवस यामी।
(सखि गो) आमार ए तनु शुखाबे
गभीर अभिमानेर ज्वाला।
(आर) आमि ताइ दिये तार हबो
गलार रुद्राक्षेर माला।
मरे एबार माला हबो ॥

२६

ओरे नील यमुनार जल
बल् रे मोरे बल्
कोथाय घनश्याम, (आमार) कृष्ण घन-श्याम।
आमि बहु आशाय बुक बेंधे ये एलाम,
एलाम व्रजधाम।
तोर कोन् कूले कोन् वनेर माझे
कानुर वेनु बाजे, वेनु बाजे
आमि कोथाय गेले शुनते पाबो
'राधा' 'राधा' नाम।
आमि शुधाइ व्रजेर घरे घरे कृष्ण कोथाय बल?
केनो कोउ कहे ना कथा (हरि) सबार चोखे जल।

बल रे आमार कानु कोथाय
कोन् मथुराय कोन् द्वारकाय (बल यमुना बल)
बाजे वृन्दावनेर कोन् पथे ताँर नूपुर अविराम।

२७

यदि यमुनार जले फूल होये भेसे याइ
ओगो वृन्दावनेर कूले ;
हे लीला किशोर चरणे दिबे कि ठाँइ
अचेना स्रोतेर फूले ?
यदि आमि वेणु बने वेणु हइ निरजने
तुमि राखालिया वेशे रांगा दुटि करे
लबे कि आमारे तुले ?
यदि शिखि हये नाचि रिमिझिम् वरषाय
मुकुटे तोमार बाँधिबे कि चूड़ा मोर पाखाय ?
पीतवास हबो यबे, मोरे कि जड़ाये रबे
यदि वृन्दावनेर धूलि हइ, तबु
रहिबे कि मोरे भूले ?

२८

प्रभु तेरे चरण में आयेके फिर आश किसकी कीजिए।
बैठी गंगा किनारे क्यों कूप का जल पीजिए॥
दीन-निर्धन, नहीं हूँ लायक तुम्हारे दरबार का।
मलिन रजनी माफ कर करुणा की रोशनी दीजिए॥
पतित - पावन कहत सब जन शरण मैं तेरी पड़ा।
सफल कर इस स्वप्न को, अपना मुझे कर लीजिए॥
नाम जिसके बीज सम फूल - धाम उछलत पङ्क में।
श्याम ऐसो छोड़के फिर कौन से हित कीजिए॥

२६

प्रभु तोमार चरणेर भिखारी होये नाथ,
(आर) काहार काछे हात पातिबो ?
गंगातीरे बेंधे कुटीर कौन मुखे
शिशिर-जल सुखे चाहिबो ?
म्लान अकिञ्चन कि गुणे पाबे तव सभाय गौरव आसन ?
निशीथ सम्बल करि कैमने हाय ! अरुण करुणाय साधिबो ?
दीन तारण तुमि आपन महिमाय
ताइ तोमार पाय चाइ हे ठाँई,
सफल करो मम स्वप्न निरुपम
तोमारे प्रियतम जानिबो ।
श्यामल नाम याँर पङ्के बीज बुनि
कुसुम सुरधुनी उछले
शरण अधिकार छाड़िया आजि तार
वरण-माला कार गाँथिबो ?

३०

बाला मैं बैरागन हूँगी
जिन भेषा मेरे साहिब रीझे सोई भेष धरूँगी ॥
शील-सन्तोष धरूँ घट भीतर, समता पकड़ रहूँगी ।
जाको नाम निरञ्जन कहिए, ताँको ध्यान धरूँगी ॥
गुरु के ज्ञान रंगु तन कपड़ा मनमुद्रा पहरूँगी ।
प्रेम-पीपासु हरि गुण गाव चरणन लिपट रहूँगी ॥
ये तन की मैं करूँ किङ्गरी रसना नाम कहूँगी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सदा संग रहूँगी ॥

३१

प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी।
जाकी अंग अंगवास समानी।
प्रभुजी तुम घन वन हम मोरा,
वैसे चितवत चन्द चकोरा।
तुम दीपक हम बाति,
जाकि ज्योति बढ़े दिन राति।
तुम मोती हम धागा,
जैसे सो नहीं मिलत सोहागा।
तुम स्वामी हम दासा,
ऐसे भक्ति करे रइदासा।

३२

तुम्हारे कारण सब सुख छोड़ा
अब मोहे क्यों तरसाओ।
विरह-व्यथा लागि उर अन्तर
सो तुम आय बुझाओ॥
अब छोड़त नहीं बनै प्रभुजी
हँसकर तुरत बुलाओ।
मीरा दासी जनम जनम की
अंग में अंग लगाओ॥

३३

भजो मधुर हरि नाम, हरि नाम निरन्तर
मधुर कृष्ण नाम॥ टेक॥

सरल भाव से हरि भजे जो
पावे सो सुख-धाम ॥
हरि ही सुख है हरि ही शांति
हरि ही प्राणाराम ॥
हरि ही पाप से मुक्त करे
जो भजे अविराम ॥

३४

परब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम परमानन्द,
नन्द-नन्दन आनन्द-कन्द यशोदानन्द श्रीगोविन्द ।
दीन-नाथ दुःख-भञ्जन भक्त-वत्सल यदु-नन्दन,
काटो दुःख-द्वन्द्व-कन्द श्रीगोविन्द श्रीगोविन्द ।
मधुसूदन मदनमोहन मुरलीधर धरा-पोषण,
श्याम मूरत मनोभावन माधोमुकुन्द श्रीगोविन्द ।

३५

हरि हरि हरि हरि गुञ्जन करो,
हरि चरणारविन्द ऊर धरो ।
हरि कीर्त्तन होवे जब जहाँ
गंगा ही चली आवे तहाँ
यमुना सिन्धु सरस्वती आवे
गोदावरी विलम्ब न लावे
सर्व तीर्थ को बासा तहाँ
सुनो हरि - कथा होवे जहाँ ।
हरि हरि हरि हरि गुञ्जन करो
हरि हरि हरि हरि सुमिरण करो ॥

३६

नव घन श्याम मूरति मनोहर हमारे हिया पर जागे।
श्रुतिमूले चञ्चल कुण्डल मणिमय पीतवास दोले पीठ-भागे॥
नील नलिनीदल आँखि दुटि उज्ज्वल बिजुली चमके रूप-रागे।
शतविधु-निन्दित चारुमुख-पंकज शिखि-पाखा शोभे शिर-भागे।
इन्दु-विनिन्दित कुन्द-कुसुम-हास, मण्डित तव पद - युगे।
मिनति चरण परे भकति मिलाओ बँधु निति निति नव अनुरागे।
भृगुपद-चिह्नित विशाल हिया-माझे परिमल फूल-हार राजे॥

३७

संसार - माया छाड़िये कृष्ण नाम भजो मन।
कृष्ण नाम जपो रे, भजो रे, पावे अमूल्य धन॥
विषय-वासना, मायार छलना सकलि घुचिया यावे।
रूपेर पियासा पलके मिटिबे नयने हेरिबे अरूप रतन॥
सुन्दर वरण रूपेर चेतना सुन्दरे दशदिशि मगन।
अपरूप विभवे पराण भरिबे राजीव चरणे परश दान॥

३८

हरे मुरारे हरे मुरारे
पतित पावन जगजन-जीवन अनादि कारण कृपावारे।
तुमि तेजरूपे तपने प्रकाश
ज्योतिरूपे शशधरे जलरूपे जलधरे
तुमि क्षिति तुमि-इ आकाश।
वायुरूपे जीवेर जीवन
तुमि आछो सकलेते सकलि आछे तोमाते
सृष्टि स्थिति प्रलय कारण।

तुमि आदि, तुमि शेष, तुमि हे अनन्त
आकार कि निराकार बुझिते शकति कार ?
तुमि आछो व्याप्त चराचरे।

३६

गिरिधारी गोपाल व्रज-गोप-दुलाल।
अपरूप घनश्याम नव तरुण तमाल॥
विशाखा पटे आँका अति निरुपम।
कान्ता ललिता श्रीराधा प्रीतम।
रुक्मिणीर पति हरि यादव गोपाल॥
यशोदा - स्नेह - डोरे बाँधा मनचोर,
नन्देर नन्दन आनन्द किशोर
श्रीदाम सुदाम सखा गोपेर राखाल॥
कंस - निसूदन कृष्ण मथुरा-पति
गीता - उद्‌गाता पार्थ - सारथी
पूर्ण भगवान विराट विशाल॥

४०

भैरवी—कहारवा

साधन करना चाहिए मनुआ, भजन करना चाहि।
प्रेम लगाना चाहिए मनुआ, प्रीति लगाना चाहि॥
नित नाहन से हरि मिले तो जलजन्तु होई।
फल मूल खाके हरि मिले तो बादुर बाँदराई॥
तुलसी पूजन से हरि मिले तो मैं पूजूँ तुलसी-झाड़।
पत्थर पूजन से हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़॥

तिरण भखन से हरि मिले तो बहुत मृगी अजा।
स्त्री छोड़न से हरि मिले तो बहुत रहे खोजा॥
दूध पिवन से हरि मिले तो बहुत वत्स बाला।
मीरा कहे बिना प्रेम से नहीं मिले नन्दलाला॥

४१

तिलक—त्रिताल

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहि पठायो।
चार पहर वंशीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो॥
मैं बालक बहियन को छोटो छींको केहि विधि पायो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो॥
तू जननी मति की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।
जिय तेरे कछु भेद उपजी है, जानि परायो जायो॥
यह ले अपनी लकुट कमरिया बहुत ही नाच नचायो।
सूरदास तब बिहँसि यशोदा लै उर कण्ठ लगायो॥

४२

आजके हरि खेलबो होलि, एसो तुमि नन्द-दुलाल।
अनुरागेर रंग दिये आज श्यामल तोमाय करबो ये लाल।
पलाश छड़ाय फागेर रेणु, तोमार चलार पथटिते
एसो आमार जीवन मरण पूर्वाचलेर तोरण दिये
तोमार आसार आशाय बलो थाकबो आमि आर कतो काल।

४३

मिश्र साहाना—दादरा

हरि हे तुमि आमार सकल हबे कबे !
आमार मनेर माझे भवेर काजे मालिक होये रबे। कबे ?
(आमार) सकल सुखे सकल दुखे तोमार चरण धरबो बुके
कण्ठ आमार सकल कथाय तोमार कथाइ कबे। कबे ?
किनबो याहा भवेर हाटे आनबो तोमार चरण बाटे
तोमार काछे हे महाजन सबइ बाँधा रबे। कबे ?
स्वार्थ प्राचीर करे खाड़ा गड़बो यबे आपन कारा
वज्र हये तुमि तारे भाँगबे भीषण रबे ! कबे ?
पाये यखन ठेलबे सबाइ तोमार पाये पाइ यैनो ठाँइ
जगतेर सकल आपन हते आपन हबे कबे ? कबे ?
(शेषे) फिरबो यखन सन्ध्याबैला सांग करे भवेर खैला
जननी हये तखन आमाय कोल बाढ़ाये लबे। कबे ?

४४

कीर्त्तन

तातल सैकते वारि-विन्दु-सम सुतमित रमणी-समाजे।
तोहे बिसरी मन ताहे समर्पिनु, अब मझु हबो कोन काजे॥
माधव, मझु परिणाम निराशा।

तुहुँ जग-तारण दीन - दयामय आवे तुम्हारी विश्वासा॥
आध जनम हम नींद गवाँयनु, जरा शिशु कतो दिन गेला।
निधुवने रमणी-रसरंगे मातनु, तोहे भजब कोन बेला॥
कत चतुरानन मरि मरि यावत, न तुया आदि अबसाना।
तोहे जनमि पुनः तोहे समावत, सागर लहरी समाना॥

भनय विद्यापति शेष शमन भय, तुया बिनु गति नाही आरा।
आदि-अनादि नाथ कहायसि, अब तारण भार तुम्हारा॥

४५

बलो माधव बलो, आर कतो दुःख देबे बलो।
दुःख दिये यदि सुख पाओ, तबे आँखि कैनो छल छल?
आमि चाइ तब श्रीचरणे ठाँइ,
तुमि कैनो ठैलो बाहिरे सदाइ,
आमि कि ऐतोइ भार ए जगते, हे पाषाण तुमि अटल॥
क्षुद्र मानुष भोले अपराध, तुमि नाकि भगवान?
तोमार चेयेओ कि अपराध बड़ो, दिले ना पायेते स्थान!
हे नारायण आमि नारायणी सेना
(मोरे) कुरुकुले दिते प्राणे कि बाजे ना?
यदि चार हाते मेरे साध नाहि मेटे, दुचरण दिये दलो॥

४६

भैरवी — त्रिताल

मधुकर श्याम हमारे चोर।
मन हर लियो माधुरी मूरत निरख नयन की कोर॥
पकड़े हुते आन भर अन्तर प्रेम प्रीति के डोर।
गये छुड़ाये तोड़ सब बन्धन दै गये हुँसन अकोर॥
ओचक परो जागत निसि बीते तारे गिनत भई भोर।
सुरदास प्रभु हत मन मेरो सरबस लै गयो नन्दकिशोर॥

४७

(मोरे) श्याम सुनो मेरी बिनती।
मैं बिनती कर कर हारी॥

तुम सुख के छावत शोवत हो,
मैं तरपत हूँ दुखियारी।
तम से ना कहूँ तो कहूँ किससे,
तम से प्रीत लगि जब से,
मैं प्रीत लगाकर जीत गये
तुम प्रीत लगाकर हारी॥
दिन - रात विरह दुःख झेलत हूँ
तुम बिन पलङ्कीन चैन कहाँ ;
बस तकत हूँ बात तुम्हारी
तुम प्रीत लगाकर हारी॥

४८

प्रेमी मोहन का घर मन में
नहीं है काशी मथुरा में
नहीं है वृन्दावन में।
जटा तिलक बहु रूप बनाकर
दीपक चन्दन धूप जलाकर
माला युग-युग फिरा-फिराकर
लाखों यतन करने पर भी वह
मिलता नहीं जीवन में॥
उतने ए दुनिया है रीति
जिसने की घनश्याम से प्रीति
तुम्हें सुनाऊँ अपनी गीती
नयना मोकर मैंने पाया
उसको प्रेम भजन में॥

४९

कीर्त्तन—खैरा

यदि गोकुल - चन्द्र व्रजे ना एलो।
(आमार) ए हेन जीवन परश रतन काँचेर समान भेलो ।।
(आमि) गेरुया वसन अङ्गेते धरिबो शंखेर कुंडल परि।
(आमि) योगिनीर वेशे याबो सेइ देशे येथाय निठुर हरि ।।
(आमि) मथुरा नगरे प्रति घरे-घरे याइबो योगिनी हये।
(तथाय) यदि मिलाय विधि मम गुणनिधि बाँधिब अञ्चल दिये ।।
(आमि) आपन बँधुया आपनि बाँधिबो केबा राखिबारे पारे।
(आर) यदि रोषे केउ त्यजिबो ए जिउ नारी-वध दिबो तारे ।।
(आमि) पुनः भावि मने बाँधिबो कैमने से श्याम बँधुया करे।
(हाय) बाँधिया कैमने धरिबो पराणे ताइ भावितेछि चिते ।।
ज्ञानदासे कय विनय वचने शुनो विनोदिनी राधा।
मथुरा नगरे येते माना करे दारुण कुलर बाधा ।।

५०

कीर्त्तन—खैरा

माधव तुहुँ रहलि मधुपुर ।।
व्रजकुल आकुल दुकुल कलरव कानु कानु बलि झुर।
यशोमती-नन्द अन्धसम बैठत, साहसे चलाइ ना पार ।।
समागम धेनु वेनुरव बिछुरलु, तरुगण मलिन समान।
पिक शुक-सारी मयूरी ना नाचत, कोकिल न करतहि गान ।।
विरहिनी विरह कि कहब माधव दश दिके विरह हुताश।
सोई यमुना जल, कूल अधिक भेलो, कहतहि गोविन्ददास ।।

५१

हरि तोमाय छेड़े जीवन धरे
रइबो कैमन करे ।
तुमि धन दियेछो मान दियेछो
प्राण नियेछो केड़े ॥
आमार कि काज धने तोमा बिने
यखन भावे गले डाकि हा कृष्ण बले
तुमि अमनि एसो हेले दुले
भव - सागरेर तीरे ॥

५२

कीर्त्तन

मरिबो मरिबो सखि निश्चय मरिबो,
कानु हैनो गुणनिधि कारे दिये याबो ।
तोमरा यतेक सखी थेको मझु सङ्ग,
मरण काले कृष्ण नामटि लिखो मझु अङ्गे ।
ललिता प्राणेर सखी मन्त्र दियो काने,
मरा देह पड़े यैनो कृष्ण नाम शोने ।
ना पोड़ायो राधा अङ्ग ना भासायो जले,
मरिले तुलिये रेखो तमालेरि डाले ।
सेइ तो तमाल तरु कृष्ण वरण हय,
अविरत तनु मोर ताहे यैनो रय ।
कबहुँ से पिया यदि आसे वृन्दाबने,
पराण पायब हम पिया दरशने ।

भनये विद्यापति शुनो वरनारी,
धैरज धरय चिते मिलब मुरारी।

५३

आमार कृष्ण कोथाय तोरा बल बल रे।
आमार मन ये माने ना माना, नयने बादल झरे अविरल रे।
आमार कृष्ण बिना एलो कृष्ण राति व्रजेर सुनील आकाशे।
श्याम - चन्द्र आजि मथुरा-पुरे पूर्णिमा चन्द्र हासे।

५४

भजन—कहारवा

मैं हरि चरणन के दासी।
मलिन विषय रस त्यागे जग की
राम नाम रस प्यासी॥
दुख अपमान कष्ट सब सहिया
कुटिल जगत की फाँसी।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर
त्यागो जगत की हाँसी॥
आवो प्रीतम सुन्दर निरुपम,
अन्तर होत उदासी॥
मानस नहीं माने धीरज मोहन
तरपत निशदिन दासी॥
श्यामलिया मोहनिया नागरिया मेरो प्रिया
प्रभु आवो आवो आवो आवो
आवो आवो जी॥

५५

कृष्ण नामेर मन्त्रखानि शिखाये दाओ गो
ये देशे आछेन कृष्ण सेथा निये याओ गो॥
कृष्ण नामे आँखि-वारि दर दर वहिबे।
आमार नयन जले नाम लेखा रहिबे॥
कृष्ण नाम लये आमि याइबो ये वने।
गाहिबो कृष्णेर नाम विहगेर सने॥
कृष्ण नामेर नामावली अङ्गेते धरिबो।
नाम सुधा सिन्धु माझे डुबिया रहिबो॥

५६

कुञ्जन वन छोड़ि है माधो, कहाँ जाओ गुणधाम।
जो मैं होती जल की मछलियाँ
जब प्रभु करते हो स्नान
चरण चूम लेती है माधो
कहाँ जाओ गुणधाम॥
जो मैं होती बाँस की बाँसुरिया
करती मुख पर वास
अधर-रस पीती है माधो
कहाँ जाओ गुणधाम॥
(प्रभु) जो तुम चाहो मिलन हमारो
मीरा के घनश्याम।
दरशन बिन व्याकुल है माधो
कहाँ जाओ गुणधाम॥

५७

मुझे लागि लगन तेरे दरशन की।
जैसे वन में पपिहा मन में
आश करे नित बरसन की।
गल वनमाला मुकुट विशाला
पीत वसन सुन्दर तन की।
मणिकटि ऊपर चरणन नूपुर
कर में गदा सुदर्शन की।
ब्रह्मानन्द प्यास मनमाहिं
चरण-कमल-युग परशन की।

५८

भैरवी—कहारवा

हे माधव हे माधव
हे माधव, तोमारे-इ प्राणेर वेदना कबो।
तोमार-इ शरण लबो।
सुखेर सागरे लहरी समान हिल्लोले ओठे यैनो तव नाम गान
दुःखे शोके काँदे यबे प्राण, यैनो नाम ना भुलि तव।
तोमा छाड़ा विश्वे काहारो काछे, ए प्राण यैनो किछु नाहि याचे
(यैनो) तोमार अधिक प्रिय केहो नाहि हय,
विश्व भुवन यैनो हेरि तोमा-मय,
कलङ्क-लाञ्छना शत बाधा भय तव प्रेमे सकलि सबो॥

५९

आजि सई कुदिन सुदिन भेलो।
माधव मन्दिरे तुरिते आवो कपाल कहिया गैलो॥
चिकुर फुरिछे वसन खसिछे पुलक यौवन भार
वाम अङ्ग आँखि सघने नाचिछे दुलिछे हृदय हार
—(अजु) विधि अनुकूल भेलो॥

६०

संत परम हितकारी, जगत माहिं॥
प्रभुपद प्रगट करावत प्रीति, भरम मिटावत भारी॥
परम कृपालु सकल जीवन पर, हरि सम सब दुखहारी॥
त्रिगुणातीत फिरत तनु त्यागी, रीत जगत में न्यारी।
ब्रह्मानन्द सन्तन को सेवत, मिलत हैं प्रगट मुरारी॥

६१

गजल

पी ले पी ले हरि नाम का प्याला।
इसको पीकर और पिलाकर बन जा तू मतोवाला॥
यह प्याला दुनिया से न्यारा
इस की रंगत न्यारी।
मीठी मीठी सोंदी सोंदी
खुशबू प्यारी प्यारी।
इसके बूँद बूँद में विघ्ने सुख का अमृत ढाला॥

कोई इसको सुखसे पीकर
दुख को दूर भगाये।
कोई इसको दूर दूर से
दुख का जहर बताये।
बिना पिये कोई क्या समझे, इसका भेद निराला॥

६२

वेहाग खम्बाज—कहारवा

विफल प्राण हरि नाम बिना,
हृदय - दीप हरि - ज्योति बिना,
भुवन रूप रवि भाति बिना,
हृदय - राग हरि - गीति बिना॥

चन्द्र निशा बिना, गन्ध कुसुम बिना,
कुसुम भ्रमर बिना, भ्रमर गीत बिना,
गीत राग बिना, राग भजन बिना,
भजन विफल हरि नाम बिना॥

भवन दीप बिना, दीप ज्योति बिना,
ज्योति नयन बिना, नयन भाव बिना,
भाव मरम बिना, मरम प्रेम बिना,
प्रेम विफल हरि नाम बिना॥

जनम भुवन बिना, भुवन भोग बिना,
भोग देह बिना, देह रूप बिना,
रूप प्रेम बिना, प्रेम भकति बिना,
भकति विफल हरि नाम बिना॥

६३

केदारा—त्रिताल

भजो राधाकृष्ण गोविन्द गोपाल गदाधर गिरिधारी।
देवकी-नन्दन गोकुल-चन्द्रमा, जनार्दन जग-वन्दन हे।

परब्रह्म परमेश्वर ईश्वर
अलख निरञ्जन अविनाशी हर
औध विहारी श्री वनोवारी
सीयावर रघुनन्दन हे।

दीनदयाल दामोदर रघुवर
यदुवर जगचिन्तामणि धनुधर
परशुराम श्रीरास - विहारी
नटवर नट यदुनन्दन हे।

नारायण नरसिंह नरोत्तम
पुरुषोत्तम परमानन्द माधव
बालमुकुन्दम् आनन्दकन्दम्
सीयाशरण करवन्दन हे॥

६४

गाहो नाम अविराम कृष्ण नाम कृष्ण नाम,
महाकाल ये नामेर-इ करेन प्राणायाम।
ये नामेर गुणे कंस - कारार खोले द्वार
वसुदेव ये नामे यमुना हलो पार
ये नाम-मायाय हलो तीर्थ व्रज - धाम॥

(ये नामे) देवकीर बुकेर पाषाण गले
ये नाम दोले यशोदार कोले
ये नाम लये काँदे राइ रसमयी
कुरुक्षेत्रे ये नामे हलो पाण्डव जयी
गोलोके नारायण भूलोके राधाश्याम ॥

६५

भूपाली मिश्र—त्रिताल

दोले दोले श्याम मधुर वेणु बाजाय।
हेले दुले खेले राखाल धेनु चराय ॥
वनमाला गले मोती चूड़ाय,
नूपुर बाजे रिनि-झिनि
रिनि झिनि रिनि झिनि पाय ॥
राधा दोलें आजि श्याम सने,
वृन्दावने आनन्द मने।
पिचकारी रंग छोटे झर झर झर झर झिरि झिरि गाय ॥

६६

भैरवी—कहारवा

गिरि-गोवर्द्धन - गोकुलचारी, यमुना - तीर-निकुञ्ज - विहारी।
श्याम-सुठाम-किशोर, त्रिभङ्गिम चित्त विनोदनकारी ॥
पीताम्बर-वनपुष्प-विभूषण चन्दन-चर्चित मुरलीधारी।
जिस रव से मोहित वृन्दावन, उछलत यमुना वारि ॥
नूपुर-शिञ्जित, नृत्य-विमोहन कपट-चपल-चतुराली।
प्रेम निमीलित नयन-विलोभन कदमतले वनमाली ॥

नन्दका नन्दन मायी जाके यशोदा, निखिल-भक्तजन-शरण।
दुर्जन-पीड़न, सज्जन-पालन, सुर-नर-वन्दित-चरण॥
जय नारायण श्रीश जनार्दन, जय परमेश्वर भवभयहारी।
जय केशव जय मधुसूदन, गोविन्द मुकुन्द मुरारी॥

६७

नूतन करे गड़बो ठाकुर कष्टि पाथर दे माँ एने।
(दिबो) हाते बाँशी, मधुर हासि डागर चोखे काजल टेने।
मथुराते आर याबे ना, माँ यशोदाय काँदाबे ना।
रइबे व्रजगोपीर केना, चलबे राधार आदेश मेने।
श्रीचरण तार गड़बो ना माँ, गड़ले चरण पालिये याबे,
नाइबा शुनले नूपुर-ध्वनि, ठाकुरके तो काछे पाबे।
चरण पेले देशे देशे कुरुक्षेत्र बाधावे से,
गन्धमाला दिस ने मागो, भक्त भ्रमर फेलबे जेने।
(तारे) देखले परे करबे चुरि, (अमरा) ऐकला घरे मरबो झुरि॥

६८

रूपानुराग

रूप लागि आँखि झुरे
गुणे मन भोर।
प्रति अङ्ग लागि काँदे
प्रति अंग मोर।
हियार परश लागि
हिया मोर काँदे
पराण पुतलि मोर
शिहर नाहि बाँधे।

गुरु गरवित माझे
थाकि सखी - संगे
पुलके पुरये तनु
श्याम परश अंगे।
घरेर यतेक जन
करे कानाकानि
बुत्तान कहे लाजघरे
भेजाओ आगुनि॥

६९

रूपानुराग—कीर्त्तन

आमि कि रूप हेरिनु मधुर मूरति
पीरिति रसेर सार।
एइ तो आमि देखे एलाम।
यमुनार जल आनते गिये
एइ तो आमि देखे एलाम।
हैनो लय मने ए तीन भुवने
तुलना नाहिको तार।
नाइ तुलना, मोहन रूपेर नाइ तुलना,
तार तुलना तारि काछे……।
बड़ो विनोदिया चूड़ार टालनि
कपाले चन्दन चाँद।
जिनि विधुवर वदन सुन्दर
भुवन मोहन फाँद।

किबा नवजलधर रसे ढलो ढलो
वरण चिकण काला ।
अंगेर भूषण रजत काञ्चन
मणि मुकुतार माला ।
सुन्दर अधरे मधुर मुरली
हासिया कथाटि कय ।
द्विज भीमे कहे श्रीरूप नागरे
देखिले पराण रय ॥

७०

रूपानुराग

मरकत मञ्जुर मुकुर मुख-मण्डल
मुखरित मुरली सु-तान ।
शुनि पशु-पाखी शिखिकुल आकुल
कालिन्दी बहये उजान ।
सुन्दर श्यामल चन्द
कामिनी मनहि मूरतिमय मनसिज
जगजन नयनानन्द ।
तनु अनुलेपन घनसार चन्दन
मृगमद कुमकुम पंके ।
अलिकुल-चुम्बित अवनी विलम्बित
बनिबण मालबीटङ्क ।
अति सुकुमार चरणतल शीतल
जीतल शारदारविन्द ।
रायत वसन्त मधुप अनुसन्धित
निन्दित दास गोविन्द ।

७१

कीर्त्तन

चन्दन हइया शीतल परशे
अंगेरि परश लबो।
तार तनुते तनुते अणुते अणुते
सोहागे जड़ाये रबो।
सुखे जड़ाये रबो।

ये अङ्ग लागि अङ्ग कान्दे से श्याम अङ्गे
सुखे जड़ाये रबो।
शीत चन्दन हये बँधुर अङ्गे परश
सुखे जड़ाये रबो।

आमि फुलेर मतो ताहार पथे
धूलाय लुटाते चाइ।
यैनो ताहारि विरहे झुरिया झुरिया
असनि झरिया याइ॥
यैनो झरे पड़ि गो।
फुलेरि मतन झरे पड़ि गो।

से ये चले येते दले यावे,
फुलेरि मतन झरे पड़ि गो।
ओ तार चरण घाये चूर्ण हते
ताइ तो चलार पथे झरे पड़ि गो।
तार चरण परश पाबार लागि
ओ तार चलार पथे झरे पड़ि गो।

आमार नीलमणि श्याम ताइ सखी मोर
वसन नीलाम्बरी।
बँधु मोर नील, यमुनाओ नील
सहजे डुबिया मरि॥
सब दिनु तारे आमार बलिते
आमार किछुइ नाइ।
आमार या छिलो श्याम अनुरागे
श्यामेरि हयेछि ताइ॥
आर किछु नाइ।
आमार बलते आर किछु नाइ।
आमार आमि तारेइ दिछि
आमार बलते आर किछु नाइ।
श्यामेर हयेछि ताइ॥

७२

(राई) अति कातरा राधिका देखिया अधीरा
विशाखा आसिया कय।
(ओ गो राई) किसे ऐतो धनी व्याकुल हइलि
नाहिक सरम भय॥
छि छि धनी (लाज नाइ राई)
प्रेमेर दाये मान खोयालि,
छि छि धनी (लाज नाइ राई)।
याइबि पश्चिमे बलिबि दक्षिणे
दाँड़ाबि पूरब मुखे।
गोपन पीरिति गोपने राखिबि
तबे तो रहिबि सुखे॥

धरा दिलि ना राई।
साधले धरा आशार आशे राखवि बटे,
धरा दिलि ना राई।
से जन चतुर सोमेर शिखर
सूताय गाँथिते पारे।
कहे चण्डीदास पाइले से रस
तवे से मिलाय तारे॥
बुजलि ना राई।
चतुराली बुझलि ना राई।
चतुरेर सने चातुरी करिलि
बुझलि ना राई।
सापेर मुखेते भेकेरे नाचावि
तवे तो रसिक - राज।
अन्तरे प्राण सँपे दिवे सुखे
कोनो कथा बलवि ना राई।
चतुरेर साथे चातुरी करिते
अधिक चतुरा चाइ॥

७३

हरि बलो नौका खोलो साधेर जोआर याय
समय वये याय।
माझी लोकेर एमनि रीति एक समाने बैठा बाय।
शोनो माझी भाई तोरे बलि
जल चिनिया बाइ ओगो तरि
पइर ना खोलाय।
माझी लोकेर एमनि रीति एक समाने बैठा बाय।

पिछेर नौकार माझीरा भालो
तारा बेये आगे ये गैलो
फिरे फिरे चाय।
घाट चिनिया नाव लागाइओ मौला
नाव लागाइओ प्रेम तलाय।

७४

हरि नाम लिखे ने रे प्राणे
लिखे ने रे प्राणे।
नामेर आलोय घुचबे कालो
(ओ) तोर हृदयेर माझखाने।
लिखे ने रे प्राणे।
जगत - कोलाहलेर माझे थाकबि यखन नाना काजे।
प्राणे प्राणे नामेर माला जपिस रे सावधाने।
लिखे ने रे प्राणे।
संसारेर एइ काजेर फाँके सकल भूले रे।
हरिनामे डुब दे रे भाई पराण खुले रे।
देखबि रे भाई नामे नामे भगवान तोर आसबे नेमे
येइ भगवान सेइ ये रे नाम जेने राखिस मने।
लिखे ने रे प्राणे।

७५

ए माया प्रपञ्चमय भवरंग मंच माझे
भवेर नट नटवर हरि, यारे या साजान से ताइ साजे।
रंग-क्षेत्रे जीवमात्रे मायासूत्रे सबे गाँथा,
केह पुत्र केह मित्र केह भार्या केह भ्राता।

केउ सेजे एसेछेन पिता,
केउ वा स्नेहमयी माता,
कतो रंगेर अभिनेता,
आसेन सेजे कतोइ साजे।
करिते ए नटेर खेला एबार सेजे एसेछि तनय,
का कस्य परिवेदना आर तखन से कारो नय।
ए नाटकेर एइ अङ्के,
पेयेछि स्थान तोरइ अङ्के,
हय तो याबो पर - अङ्के,
पर अङ्केर पुत्र सेजे।
ना हइले कर्मशेष कतो याइबो कतो आसिबो,
संसारे संसारी सेजे कतो हासिबो कतो काँदिबो।
अहिभूषण बले कबे याबो,
ए ज्वाला कबे नाशिबो,
महायोगे कबे बसिबो,
मिशिबो हरिर पद - रजे॥

७६

ए सेइ अभय चरण देख रे नयन भरे
हरिर ये चरण अनन्त शरण भय-वारण
ये चरणे बालक वृद्ध गयाय पिण्डदान करे॥
ए सेइ अभय चरण देख रे नयन भरे॥
ये चरणे शरण लागि महादेव हलेन योगी,
ब्रह्मा हलेन दम्भत्यागी नारद वैरागी,
ए सेइ अभय चरण देख रे नयन भरे॥

ये चरण वामन अवतारे दिलेन हरि बलिर शिरे,
ये चरणे अभय पेये त्रिलोकेर नाथ निस्तारे,
एं सेइ अभय चरण दैख रे नयन भरे ॥
ये चरण परशमणि मा वृथा ऐतो गैलो जाना
कष्टे तोर हलो सोना आछे गो शोना,
ए सेइ अभय चरण दैख रे नयन भरे ॥
अहल्या पाषाणी छिलो परशे मा नवीन हलो
रत्नाकर बाल्मीकि हलो ये चरणे ध्यान करे ॥
ए सेइ अभय चरण दैख रे नयन भरे ॥

७७

तुमि मधु तुमि मधु तुमि मधु मधु मधु ।
तुमि मधुर निर्झर मधुर सायर आमार पराण बँधु ।
(आमार सकलि तुमि) (बँधु हे आमार सकलि तुमि)
(आमार धर्म अर्थ काम मोक्ष, बँधु हे आमार सकलि तुमि)
(आमार साधन तुमि भजन तुमि बँधु हे आमार सकलि तुमि)
(आमार तन्त्र तुमि मन्त्र तुमि बँधु हे आमार सकलि तुमि)
आमार जनम मरण धरम करम बँधु हे आमार सकलि तुमि)
(आमार बलिते याहा किछु आछे बँधु हे आमार सकलि तुमि)

किबा मधुर गीति मधुर कीरति
मधुर मधुर भाष ।
किबा मधुर चलनी मधुर चाहनी
मधुर मधुर हास ।
(रूपेर कि माधुरी) (मरि मरि रूपेर कि माधुरी)
(रूपेर बालाइ निये मरे याइ रे)

किबा मधुर रूपेर मधुर काहिनी
मधुर कण्ठे गाय।
ऐ नाम शुनिते शुनिते गलिते गलिते
प्राण मधु हये जाय।

(विश्व हय मधुमय) (तखन निखिल विश्व हय मधुमय)
(सकलि मधुर) (तखन या शुनि ताइ सकलि मधुर)

(तखन या बलि ताइ सकलि मधुर)
(तखन या देखि ताइ सकलि मधुर)
(तखन तुमिओ मधुर आमिओ मधुर
या देखि ताइ सकलि मधुर)

(तखन) अनले अनिले जले, मधु प्रवाहिणी चले
मेदिनी हय मधुमय, हय गो।

मधु वाता ऋतायते, मेदिनी हय मधुमय, हय गो।
मधु वायु ये बहे गो, मेदिनी हय मधुमय, हय गो।
मधु क्षरन्ति सिन्धवः, मेदिनी हय मधुमय, हय गो।
मधु सिन्धु उथले ये, मेदिनी हय मधुमय, हय गो।
तखन मधुमत्पार्थिवं रजः, मेदिनी हय मधुमय, हय गो।
तखन मधुकणा धूलिरेणु मेदिनी हय मधुमय, हय गो।
(तखन) प्रकृति मोहिनी साजे, हृदये मृदङ्ग बाजे,
मधुर मधुर ध्वनि हय, हय गो।

बले मधुरं मधुरं, मधुर मधुर ध्वनि हय, हय गो।
बले मङ्गलं मङ्गलं, मधुर मधुर ध्वनि हय, हय गो।
बले सत्यं शिवं सुन्दरं, मधुर मधुर ध्वनि हय, हय गो।

(तखन) ये कथा पशे गो काने, ये रूप भाते येखाने,
स्तुति निन्दा सकलि मधुर, हय गो।
तखन गालीओ ये मधु ढाले, स्तुति निन्दा सकलि मधुर
तखन कटु कथाओ मिठे लागे स्तुति निन्दा सकलि मधुर।
तखन वज्रध्वनि कुहुध्वनि, गुरु सोम राहु शनि,
मधु-रसे सकलइ भरपूर, हय गो।
(विश्व मधुमय हये याय) तोमार ऐ रूपे नयन दिले
(विश्व मधुमय हये याय) (मधु-रसे सकलइ भरपूर)।
(मधुरं मधुरं मधुरं मधुरं—मधुरं मधुरं मधुरं मधुरं)

७८

(आमार) हृदि-कुञ्ज-दुआर खुले ऐ देख्ना सई ओ एलो के ?
चिर आँधार कुञ्जे गो मोर ऐमन प्रदीप ज्वाललो के ?
ऐमन प्रदीप ज्वाललो के गो ऐमन आलो करलो के ?
(आमि) ऐके काङालिनी ताय नयनहीना
आमारे तो केउ चेने ना।
(आज) कार चरणेर परश पेये (आमार) प्राणटि नेचे उठेछे।
(आमार) घरटी भरा आवर्जना,
(ताय) नाइको कोनो सेज - बिछाना।
(आर) किबा दिबि सई बसते आसन
(आमार एइ) मरमखाना बिछाये दे।
बसबार छले राङा चरण परश हबे
(आमार एइ) मरमखाना बिछाये दे।
आर कोथाय पाबि तुइ स्वर्ण झारि,
कोथाय वा याबि तुइ आनते वारि,

(आमार) विराम-विहीन नयनधाराय
(ओ रांगा) चरण दुटि धुये दे
चरण दुटि धुये निये (आमार) एइ रुक्ष केशे मुछे ने ।
(आज) यार शुभ आगमने,
फुटलो फूल आमार शुष्क वने,
(आमि) जेनेछि सई प्राणे प्राणे
(आमार) श्याम नागर एसेछे ॥

७९

कीर्त्तन

ओरे आय आय आय रे गोपाल, काँदे वृन्दावन,
काँदे कुल-कलङ्किनी याचि दरशन ।
सुर हाराये काँदे बेनु, राखाल विहीन काँदे धेनु
पुष्प-हारा काँदे बीथी, काँदे गोपीगण ।
तोर विरहे काँदे तमाल, काँदे कदम शाखा,
(आर) कृष्ण-चूड़ा पड़लो झरे, झरलो मयूर पाखा,
पड़लो झरे, कृष्ण-चूड़ा पड़लो झरे, कृष्ण-हारा वृन्दावने
कृष्ण-चूड़ा पड़लो झरे, झरलो मयूर पाखा ।
प्रेम-यमुना काँदे आजि, काँदे खेयार पराण माझी,
काँदे माता नन्दराणी हाते लये खीर ननी ।
(बले, 'आय रे गोपाल ननी खेये या' ।)
बले,—'देख रे कतो बैला हलो, गगने आर नाइ रे बैला,
ननी खेये या, आय रे गोपाल, आय रे यादुधन ।

८०

भजो गोविन्द चरणारविन्द
श्याम सुन्दर गोकुलानन्द ॥

चन्दन तिलक सुन्दर भाले
वन - फूलहार कण्ठे दोले।
श्रवणे शोभे मणिमय कुण्डल
जागे प्रेम मधुमय छन्द ॥
मकर बाँशरी श्रीकरे राजे
मयूर - पाखा शिरे विराजे।
पीतवास सुन्दर कटितट माझे
त्रिभङ्ग वङ्किम नयनानन्द ॥

८१

बलो हरिबोल, बलो हरिबोल
भावना बलो आर कि ?
हरे कृष्ण बलो कृष्ण कृष्ण बलो
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, हरे राम, राम बलो
हरे कृष्ण नाम बिने आर सम्बल आछे कि ?
हरि नाम मधुमय, हरि प्रेम मधुमय
नामे प्रेमे योग हइले मधुर मधुर हय
हरि नाम निले प्राणे आपनि हय प्रेम-माखामाखि।

८२

हरि नामेर की तुलना आछे बलो हरि वदने
ये नामे हय शमन दमन से हरि नाम निसना कैने।
हरिर नामे प्रह्लाद भक्त अग्नि-कुण्डे हलो मुक्त।
शुधु भक्तिर जोरे।
से ये दयाल हरि दया करे रे रक्षा करेन घोर विपदे,
बलो हरि वदने

भेवे कैलासचन्द्र बले मन रे तुइ रइलि भूले
मिछे मायार तरे
तारे डाकार मतो डाकले परे रे देखते पावि नयन भरे,
बलो हरि वदने।

८३

मङ्गलमयेर नाम स्मरो, भवे करो सार
बिने से जीवन बन्धु, के आछे बन्धु तोमार
(अकूल भव-सिन्धु पारे येते, बिने से जीवन बन्धु
के आछे बन्धु तोमार)
पथिके पथिके यैमन, पथे हय किछु काल मिलन,
शेषे ये यार पथे करे गमन
भाई-बन्धु दारा-सुत जन, केह तोमार नय रे आपन।
(यारे तुमि भावो आपन) (पथिके पथिके यैमन)
डाको दिन थाकिते दीनबन्धु बले
(एक बार डाको रे तारे) (कि जानि भाई कखन कि हय)
(डाको रे डाको रे)
तोमार मानव जनम वृथाय गैलो
तोमार ऐमन जनम वृथाय गैलो,
तोमार ऐमन जनम आर हबे ना।
तुमि जनम पेयेछो भालो
हरे कृष्ण हरि बलो।
नामे मत्त करो चित्त
मन रे भजो हरि-प्रेमानन्दे
भावो रे माधव मोहन मूरति
(सदा) भजो पद-मकरन्दे। (एकबार डाको रे ताँरे)

एकबार डाकार मतो डाको रे ताँरे
ओरे डाकले दया हतेओ पारे
(एक बार प्रह्लादेर मतो डाको रे ताँरे)
(एक बार ध्रुवेर मतो डाको रे ताँरे)
डाकले कि आर रइते पारे से ये भक्तेर डाके रइते नारे
से ये भगवान, भक्तेर डाके रइते नारे
नामे मत्त करो चित्त, भजो सत्य-शरण हरि
(से ये) तारण-कारण विपद्-वारण जीव-भव-भय-हारी।
एक बार डाको रे भव-भञ्जने
तोमार मोह-पाश नाश हबे नाम कीर्त्तने।
(भाबो रे ताँरे) (भावनार मूरतिखानि एकबार डाको रे ताँरे)
भाबले भावेर उदय हबे, भावो रे ताँरे।
एक बार डाको रे भय-भञ्जने
तोमार मोह-पाश नाश हबे नाम कीर्त्तने।

८४

मन रे मजिये विभवे, भुलिये केशवे थेको ना घुमेर घोरे
(आर थेको ना घुमेर घोरे)
तोमार गोना दिन फुरिये एलो,
जागो रे ओ भाई नगरवासी थेको ना घुमेर घोरे।
मति राखो हरि-पदे विपदे सम्पदे, मजो रे मजो रे मजो हरिगुणगाने
हृदि चिन्तय भव-भञ्जनं।
भजो नित्यं सत्यं शान्तं नरकान्तं
भजो बुद्धं परिशुद्धं त्रिभुवन-तारणं
हृदि चिन्तय भव-भञ्जनं।

प्रतिदिन मति चञ्चल गति, गच्छति परमायु
स्थास्यति नहे जीवन मन, यास्यति प्राणवायु
प्राण आर रबे ना, रबे ना, अद्य किम्वा दुदिन परे
देह छेड़े याबे।
(प्राण आर रबे ना, रबे ना।)
आर कबे वा लवि शरण
हेलाय हेलाय बैला गैलो।
निकटे आसिलो विकट शमन।
देह थाकिते स्ववश, नामामृत रस पिवो रे जीव-तारणम्।
हृदि चिन्तय भव-भञ्जनम्।
ध्यायसि सदा मानस-धन बान्धव-जन-कुलं
चिन्तयसि पावन मधुसूदन-पदमूलम्।
(तुइ भुले ये गेलि रे) (ओ तुइ भुले ये रलि रे)
(ओ तुइ कि करिते कि करिलि) (ओ तुइ कैनोइ वा भवे एलि)
जननी-जठरे यातना पाइये बलेछिलि करजोड़े
कोथा रले कृपासिन्धु, हरि दीनबन्धु, मुक्त करो कृपा करो
(आमि आर यातना सइते नारि) (कृपा करो मुक्त करो)
आमि भूमिष्ठ हइये भजिबो तोमारे गाबो हरिगुण गाथा
एइ कथा तखन बलेछिलि बड़ो यातना पेये।
ऐखन भूमिष्ठ हइये भूतले आसिये भुलिलि से सब कथा।
(ओ तुइ भुले ये गेलि रे)
(ओ तुइ कि बलेछिलि, आर कि करिलि, भुले ये गेलि रे)
भजन साधनेर कथा भुले ये गेलि रे (मोह-मुग्ध हये)
(ऐखनो डाकार समय आछे ताँरे डाको रे)
डाको समय थाकिते ताँरे

बलो हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे
(समय थाकिते ताँरे)
श्रवण मनन करो मूढ़ मन स्मर रे व्रज-रञ्जनं
हृदि चिन्तय भव - भञ्जनम् ।

८५

श्रीराधारमण रमणी - मनमोहन वृन्दावन वनदेवा ।
अभिनववास रसिक-वर नागर-नागरी-गण-कृत सेवा ॥
व्रजपति दम्पति हृदय आनन्द नन्दन नवघन श्याम ।
श्रीदाम सुदाम सुबल सखा सुन्दर रामानुज गुणधाम ॥
नन्दीश्वर पुर-पुरट पटाम्बर चन्द्रक चारु अवतंस ।
गोवर्द्धन-धर धरणी-सुधाकर मुखरित मोहन वंश ॥
कालीय-दमन गमन जित-कुञ्जर कुञ्ज-रञ्जित रतिरङ्ग ।
गोविन्ददास हृदि मणि-मन्दिरे अविचल मूरति त्रिभङ्ग ॥

८६

किषण जिनका नाम है,
गोकुल जिनका धाम है ।
ऐसे श्रीभगवान को वारम्वार प्रणाम है ।
यशोदा जिनकी मैया है नन्दजी बपइया है ।
ऐसे श्रीगोपाल को वारम्वार प्रणाम है ।
लूट-लूट दधि-माखन खावे गोवाल बाल सङ्ग धेनु चरावे ।
ऐसे श्रीघनश्यमको वारम्वार प्रणाम है ।
राधा जी जिनकी जैया है कृष्ण जी कन्हैया है ।
ऐसे लीलानाथ को वारम्वार प्रणाम है ।

गज और ग्राह का फन्द छुटावे
द्रौपदी की लाज बचावे।
ऐसे दीनबन्धु को बारम्बार प्रणाम है॥

८७

तुझ से हमने दिल को लगाया
जो कुछ है सब तू ही है।
एक तुझ को अपना पाया
जो कुछ है सब तू ही है।
दिल का सखा सबकी सखी तू
कौनसा दिल है जिस में नहीं तू
हरि एक दिल में तूने समाया
जो कुछ है सब तू ही है।
तुझ से हमने दिल को लगाया।

क्या मुलायाक क्या इनसान
क्या हिन्दू क्या मुसलमान
जैसा चाहा तूने बनाया
जो कुछ है सब तूही है।
सोचा समझा देखा भाला तू
जैसा ना कोई चूड़ निकाला
और यह समझ में जफर की आया
जो कुछ है सब तू ही है।

८८

हरि तोमाय डाकि बालक एकाकी
आँधार अरण्ये धाइ हे।

गहन तिमिरे, नयनेर नीरे
पथ खुँजे नाहि पाइ हे ॥
सदा मने हय कि करि कि करि
कखन पोहाबे काल विभावरी ;—
एइ भये मरि, डाकि हरि हरि
हरि बिने केह नाइ हे ॥
नयनेर जल हबे ना विफल
लोके बले तोमाय भकत-वत्सल ।
एइ आशा मने करेछि सम्बल
बेंचे आछि आमि ताइ हे ॥
ए हृदये जागे तोमार आँखि तारा
तोमार भक्त कभु ना हय पथहारा,
ध्रुव तोमाय चाहे तुमि ध्रुव तारा
आर कार पाने चाइ हे ॥

८९

प्रसादी, लुम—भिँभिट—एकताला

हरि हे आमार एइ वासना ।
आमार हृदय माझे दाँड़ाओ एसे,
वंशीवदन केले सोना ।
मनचोरा राखाल वेशे
ब्रजेर बालक खैलो एसे
आमार हृदय हउक कदमतला
अश्रुवारि हउक यमुना ।

श्याम - कलङ्क अलङ्कारे
चाहि आमि साजिबारे
धरम करम छेड़े चाइ
करिते तोमार साधना।

९०

बाउल—एकताला

हरि दिन तो गैलो सन्ध्या हलो पार करो आमारे।
तुमि पारेर कर्त्ता, जेने वार्ता, ताइ डाकि तोमारे।
आमि आगे एसे, घाटे रइलेम बसे
यारा पाछे एलो, आगे गैलो, आमि रइलेम पड़े।
शुनि कड़ो नाइ यार, तुमि तारे करो पार
आमि दीन भिखारी नाइको कड़ी दैखो ना झुलि झेड़े।

९१

सब मिल करो हरि गुणगान।
जा से होय परम कल्याण।
प्रेम से भजो कृष्ण शुभ नाम
जा से होय आनन्द महान॥
ओत प्रोत प्रेमे होय कहाँ से कौन तेरो आछाम।
कौन काहाँ से आयो जगत् में
कबहुँ करो सोइ ध्यान।
परब्रह्म परमेश्वर, जिनकी माया अमित महान।
जिनसे प्रकट भया ए सब जगत्
जानत कोई सुजान।

सब लोक स्थिर रहे, जगत् में रक्षक रहे भगवान।
अन्त होते ही बल मिल जावे
ज्यों सूरज में घाम।
जा से होय परम कल्याण।

६२

"ॐ हरि ओम् तत्सत्"

तुमि हे देवेश परम पुरुष
त्रिगुणे व्याप्त आछो त्रिजगत्।
सन्ध्या पूजा वन्दना, सकलि तोमारि उपासना।
ए महान् विश्व, सुन्दर दृश्य तुमि तो करेछो रचना॥
गंगा भागीरथी सप्त समुद्र ब्रह्मा पुरन्दर तुमि हे रुद्र
तोमाते सङ्कल्प तुमि आदि कल्प
तोमाते सकलि हय प्रभु लिप्त।
विन्ध्य, नीलगिरि, सुमेरु धवल
मन्दार गिरिराज, तुमि हिमाचल
ऊर्ध्व गगने तारका तपने
चन्द्र - किरणे आछो ज्योतिर्वत्।

तन्त्रे मन्त्रे गीता भागवते
वायु रूपे आछो तुमि जीवन देहेते
तुमि विश्वव्यापी, तुमि बहुरूपी
तोमाके करि प्रभु दण्डवत्।
ॐ हरि ॐ सत्सत्।

९३

इसी तन में रमा जाना, इसी मन में बसा करना,
इसी में रहा करना, वैकुण्ठ तो यही है।
मैं मोर बनके मोहन नाचा करूँगी वन में,
तुम श्याम घटा बनकर उस वन में रहा करना।
बन करके हम पपीहा पी पी रटा करूँगी वन में,
तुम स्वाती बूँद बनकर, पियासी पर दया करना।
हम राधे श्याम वन में तुम्हीं को निहारूँगी,
तुम दिव्य ज्योति बनकर नैन नयन में रहा करना।

९४

हो श्याम तुमि, घनश्याम तुम्हीं हो नाथ यशोदा-नन्दन हो
हर श्वास चामर झुलावतवे, गोविन्द हरे गोविन्द हरे।
मिली जावत तुम्हारी नजरों में
जब दिल में मेरे, सिंहासन हो।
(हो नाथ यशोदा-नन्दन हो।)
आदि देव परमेश्वर हो
तुम्हीं अन्तःकरण में भयङ्कर हो
तारा में तू, पुष्प में तू
तेरी प्रतिमा मन-मन्दिर में
तेरी स्तुति नित घर में हो।
(हो नाथ यशोदा-नन्दन हो)।

९५

तेरे पूजन को भगवान्
बना मन-मन्दिर आलीशान।

किसने जानी तेरी माया
किसने भेद तुम्हारा पाया, ऋषि-मुनि करें ध्यान।
बना मन-मन्दिर आलीशान।

जल में तू ही स्थल में तू ही
मन में तू ही, वन में तू ही, तुम्हारे दिल में मूरतिमान।
बना मन-मन्दिर आलीशान।

तू हर गुल में, तू हर बुलबुल में
तू हर डालमें तू हर पात में, तू हर दिल में मूरतिमान।
बना मन-मन्दिर आलीशान।

तू ने राजा रंक से बैठाया
तू ने भिक्षु को राजा बनाया, तेरी लीला इस महान।
बना मन-मन्दिर आलीशान।

झूठे जग की झूठी माया
मूरख इसमें क्या समाया, कर कुछ जीवन का कल्याण
बना मन-मन्दिर आलीशान॥

९६

एहि मुदं देहि श्रीकृष्ण कृष्ण, मां पाहि गोपालबाल कृष्ण, कृष्ण॥ टेक
नन्दगोपनन्दन श्रीकृष्ण, कृष्ण, यदुनन्दन भक्तचन्दन कृष्ण कृष्ण।
धाव धाव माधव श्रीकृष्ण कृष्ण, नव्यनवनीतमाहर श्रीकृष्ण कृष्ण।
कलभगतिं दर्शय श्रीकृष्ण कृष्ण, तव कर्णौ चालय श्रीकृष्ण कृष्ण।
नारदादि-मुनिगेय कृष्ण कृष्ण, शिवनारायण तीर्थवरद श्रीकृष्ण कृष्ण।

९७

भैरवी—कहारवा

मत् कर मोह तू, हरि-भजन को मान रे।
नयन दिये दरशन करने को, श्रवण दिये सुन ज्ञान रे॥

वदन दिया हरि-गुण-गाने को, हाथ दिये कर दान रे।
कहत कबीरा सुनो भाई साधो काञ्चन निपजत खान रे॥

६८

तोमार कर्मे दाओ हे शक्ति, आमार कर्म लओ हे।
तोमार सेवाय लओ हे।
यैनो कामना ना रहे करमेर फले तोमार सेवाय रय हे।
तोमार आदेश तरे मम मन सदाइ मग्न रय हे।
निशिदिन यैनो तोमार मूरति मरमेते आँका रय हे।
या दिबे प्रसाद लइबो सादरे रहिबो येथाय राखो हे।
आमि तोमाय लइया घुरिबो फिरिबो नेहारिबो तोमामय हे।
अर्जुन-रथे सारथी तुमि देह-रथे रथी हओ हे।
तोमाय लइया घुरिबो फिरिबो नेहारिबो तोमामय हे॥

६६

चरण-रजः-महिमा मैं जानी।
यही चरण से गंगा प्रगटी भगीरथ-कुल-तरणी।
यही चरण से विप्र सुदामा हरि काञ्चन धामदिनी।
यही चरण से अहल्या उद्धारी गौतम की पटरानी।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल लिपटानी।

१००

नन्द-नन्दन नवनीत-चोर वृन्दावन मुरारे।
श्याम-सुन्दर मदन-मोहन वृन्दावन मुरारे।
करुणा-सागर कमल-नयन वृन्दावन मुरारे।
चन्द्रवदन सौम्यरूप वृन्दावन मुरारे।
पद्मनाभ पाण्डुरंग वृन्दावन मुरारे।

१०१

हे भवरञ्जन नित्य निरञ्जन संकट-तारण श्रीहरि नमः
अन्तरे विराजिछो नित्य प्रभु
क्षणेक भ्रान्ति-वशे डाकि हे तबु
हे मनो मोहन दाओ मोरे दरशन
आश्वासे जय करो पराण मम।
तुमि विश्व-विमोहन श्याम
तुमि नयन अभिराम राम
तुमि श्याम प्रभु, तुमि राम प्रभु
सकल-पाप-हर नाम प्रभु ॥

१०२

एक बेर एक बेर एक बेर बोल योगी
पाँव पडूँ मैं तेरा।
रे तू करुणाकर कमल-वदन खोल योगी ॥
कानन कुण्डल गल बीच माला
माथे मुकुट अनमोल मोल मोल योगी ॥
नयनन नेह रस अधर सुधा रस
मुरली करत किलोल हो किलोल योगी ॥
जनम जनम की मैं तेरी दासी
कहूँ बजाकर ढोल ढोल ढोल योगी ॥
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर
मैं चेरी बिन मोल मोल मोल योगी ॥

१०३

भैरवी मिश्र—कहारवा

प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम प्राणाराम।
कि यैनो लुकानो नामे (ताइ) मिष्ट ऐतो तव नाम।
नाम-रसे डुबे थाकि ब्रह्माण्ड सुन्दर देखि
विश्वे बहे प्रेम-नदी सुधाधारा अविराम।
(तुमि) नामे भुलायेछो यारे से कि येते पारे दूरे
नाम-रसे ये मजेछे से बुझेछे कि आराम।
आमारे भुलाये राखो, हृदि आलो करे थाको,
जीवने मरणे मम तुमि चिर सुखधाम॥

१०४

वसन्त-वहार—एकताला

वृन्दावन कुञ्ज भवन नाचत गिरधारी।
धर धर धर मुरली अधर भर भर स्वर मधुर मधुर।
कर कर नटवर स्वरूप सुन्दर सुखकारी॥
घन घन घन बाजत ताल ठुम ठुम ठुम चलत चाल।
चरणन छन छन छन छन नूपुर धुन प्यारी।
घिर घिर घिर करत गान फिर फिर फिर देत ताल॥
मिल मिल मिल रचत रास संग गोप नारी।
वद वद वद वदन चंद हस हस हस हसन मन्द।
ब्रह्मानन्द नन्द नन्द नन्दन बलिहारी॥

१०५

जैसे राखहु ऐसे ही रहूँ।
जानत हो सुख दुख सब जनके मुख से काह कहो॥

कबहुक भोजन लहो कृपानिधि कबहुक भूख सहो।
कबहुक चढ़ तुरङ्ग महागज कबहुक भार बहो॥
कमल नयन घन श्याम मनोहर अनुचर भार बहो।
सुरदास प्रभु भकत कृपानिधि तुम्हारि चरण गहो॥

१०६

कैसे पार लगाऊँ मेरे जीवन-नैया को भगवान।
नदीया गहरी बोझ कठिन है, तूफान उठा अति भारी,
डगमग डोले नैया मेरी तीर न पाऊँ निहारी।
छा रही घनघोर घटा, तूफान उठा अति भारी,
है अनाड़ी केवट हारा नाव परा मझधारी।
हे अनाथ नाथ आओ, अपनि करुणा हाथ बढ़ाओ,
नैया मेरी पार लगा दो केवल आश तुम्हारी।

१०७

झूलत नन्द-किशोर, प्रेम रंग में घोरी तरंग में
होवत प्रेम विभोर।
श्याम झूलत झूलत श्यामचारी
गीति गावत मिलके द्विज - नारी
झूलत झूलत झूलत झूलत निशि भरि भोर।
चन्द्र देखत देखत तारे राधा सङ्ग में प्रीत दुल्हरे
श्याम गले रहे लिपटी राधा
राधा गले रहे लिपटे माधव
दुहुँ देखत दुहुँ ओर।

१०८

अकूल भव-सागर-वारि पार हबि के आय रे आय।
भव-तारण अभावे पार नाहि हबे
समय फुराबे अवहेलाय।
दशजन इन्द्रिय दशजन द्वारी कर्मगुण दोषे जोरे चलाय।
आमि उच्च आशाय पाल तुले दियेछि
हरि कृपा पवने वेगे धाय।
अन्ध आतुर अनाथ निराश्रय पापी-तापी आछे के कोथाय
काण्डारी श्रीहरि बिने
आमार भग्न तरी भेसे याय।

१०९

यदि एसे थाको हरि निये नामेर तरी
आमारे निओ पार करिया।
नाइ कोनो सम्बल नाइ कोनो भक्तिबल
पड़ेछि दुर्बल हइया॥
यदि ना नेओ तरीते तुलिया
आमि दाँड़ धरि याबो भासिया
यखन दिबे गो तरी छाड़िया।

११०

नन्द घरे आनन्द भयो
डगर डगर दीप ज्वले चलो गोकुल (सजनी चलो ....)
जगत - पालक जन्म लियो रूप रङ्ग महाभाग
गोवाल - बाल सङ्ग लाल नाचे गोप देते ताल।
यमुना तीर अति अधीर तास हेत सजनी - तीर
वसुदेव डरत काँपत कान्हा जाने प्रेम गीर।

मोतियन से चौक सजे खोल-शाँख-मृदङ्ग बजे।
ठुमक चलत नन्दराणी सखी गा रे मधुर गीत॥

१११

श्याम सुन्दर मदन-मोहन जागो मेरे लाला।
प्रातः भानु प्रगट भयो गोवाल बाल मिलन आयो
तुहारी दरश दुआर ठारे मोहन वंशीवाला॥

११२

श्याम हे घनश्याम ओ तुम तो प्रेम के अवतार हो।
सङ्कट में फँस रही हूँ तुम ही के अपहार हो।
चल रही आँधि भयानक, जवार में नैया पड़ी।
थामल पतवार गिरवरधर जो बेड़ा पार हो।
नगन् पद गाज के रोदन पर दरणेवाले प्रभु।
देखना निष्फल ना मेरी असोर की धार वह।
आपको दरशन बूझे इन छबि से वारम्वार हो।
हाथ में मुरली मुकुट शिर पर, गले में हार हो।

श्रीशिव संगीत

१

प्रभाती—एकताला

निशा अवसाने प्रेमेर आसने के तुमि देवता बसिया।
(तोमार) वदन कमले अपरूप ज्योतिः
उठियाछे उद्भासिया ॥
ध्यान-स्तिमित अर्धनिमीलित नयन युगल राजिछे,
(यैनो) आपना हाराये आपनारे पेये
आपनारे लये मजेछे ॥
विराजिछे एक आपन महिमा
अन्तर निज हारायेछे सीमा ॥
गम्भीर धीर नीरव प्रेम वदने रयेछे हासिया ॥
किबा ओ तनुर शुभ्र सुषमा
शेखरेते ऐ शोभे चन्द्रमा।
गहन जटार आड़ाल भेदिया
गंगा नेमेछे आसिया ॥
कि तव दीप्ति कि तव शान्ति
कल्याणमय दिव्य कान्ति,
विगलित तव करुणा विश्वे तुच्छता याय भासिया ॥

२

इमन कल्याण—त्रिताल

सदा शिव भजो मन निशिदिन।
ऋषि-निधि-दायक विनत-सहायक
काहे ना सुमिरत फिरत अनवरत सदाशिव ॥
शङ्कर भोला पार्वतीरमण
सित तनु पन्नग-भूषण अनुपम ॥

३

वसन्त—तेवरा

डमरू हर करे वाजे बाजे।
त्रिशूल-धर अंग-भस्म-भूषण व्याल-माला गले विराजे।
पञ्च वदन पिनाकधर शिव, वृषभ वाहन भूतनाथ,
रुण्ड मुण्ड गले विराजित अजर अमर दिगम्बर हे।

४

ताथैया ताथैया नाचे भोला बम बम बाजे गाल।
डिमि डिमि डिमि डमरू बाजे, दुलिछे कपाल-माल ॥
गरजे गंगा जटामाझे, उगरि अनल त्रिशूल राजे।
धक् धक् धक् मौलिबन्ध ज्वले शशाङ्क भाल ॥

५

कि आर बलिबो बलो हे मोर प्रिय
शुधु तुमि ये शिव ताहा बुझिते दिओ।
बलिबो ना रेखो सुखे, चाहो यदि रेखो दुखे
तुमि याहा भालो बोझो ताइ करियो।

ये पथे चालावे निजे चलिबो चाबो ना पीछे
आमार भावना प्रिय तुमि भावियो।
सकले आनिलो थाला भकति चन्दन माला
आमार ए शून्य थाला तुमि भरियो॥

६

दरबारी कानाड़ा—झाँपताल

गौरांग अरधांग गंगा तरंगे
योगी महायोग का रूप राजे।
बाघछाल मुण्डमाल शशीभाल करताल
ता डेक डिमि डिमिक डिमि डमरू बाजे।
अम्बर बाघाम्बर दिगम्बर जटाजूट फणिधर
भुजंगेश अंग विभूति साजे।
वाणी विलास तुया धाता विधाता
याता सकल दुख सदाशिव विराजे॥

७

मिश्र—एकताला

प्रलय नाचन नाचले यखन आपन भूले,
हे नटराज, जटार बाँधन पड़लो खुले।
जाह्नवी ताइ मुक्त धाराय, उन्मादिनी दिशे हाराय
संगीते तार तरंगदल उठ्लो दुले।
रविर आलो साड़ा दिलो आकाश पारे,
शुनिये दिलो अभय वाणी घर-छाड़ारे।
आपन स्रोते आपनि माते, साथी हलो आपन साथे
सब-हारा ये सब पेलो तार कूले कूले।

८

भैरवी—दादरा

नाचे पागला भोला बाजे बम बम बम।
सिंगा बाजिछे भों भों भम भम भम॥
शिरे करिछे गंगा कल कल कल,
चरण चापेते धरा टल टल टल,
मृदङ्ग धरे ताल ताथम ताथम॥
डिमि डिमि डिमि डमरू बाजे
फन फन फन फणी गरजे
नाद उठिछे सोऽहम् सोऽहम्॥

९

नेचेछो प्रलय - नाचे हे नटराज, नेचेछो।
ताथै ताथै बाजे गाल बबम बबम
हाते बाजे डमरू ऐ।
अतीतेर हाड़माला विराटेर गले दोले
नाचनेर ताले जटार से जटिल बाँध खोले;
आजि एइ मुक्ति - हारार नयनेर भीति भेंगेछो।
नयनेर वह्नि-शिखा असहाय सृष्टि नाशि,
ललाटे आशार आलो ऐ शिशु शशीर हासि,
प्रलय लीलार माझे डाके मा भैः मा भैः।

१०

केदारा—कौवाली

जय शिव शङ्कर हर त्रिपुरारि, पाशी पशुपति पिनाकधारी।
शिरे जटाजूट कण्ठे कालकूट साधक-जनगण-मानस-विहारी॥

त्रिलोक पालक त्रिलोक नाशक, परात्पर प्रभु मोक्ष विधायक।
करुणा नयने हेरो भकत जने लयेछि शरण चरणे तोमारि॥

११

बेलपाता नैय माथा पेते, गाल बाजाले हय खुशी।
मान अपमान समान तो तार, तार काछे नय केउ दोषी।
ऐतो तो भूले थाके नेचे आसे ये ताय डाके
'बम भोला' बोल बले कैनो लओ ना येचे या खुशी।
या फेले दैय नैय से वेछे भाल मन्द नाइ हुँश-इ॥

१२

झिझिट—एकताला

भांग खेये विभोर भोलानाथ भूतगण सङ्गे नाचिछे।
सदा काली काली काली बले मधुर डमरू बाजिछे।
शिरेते शोभिछे जटाजूट फणि
ललाटे शोभिछे देवी मन्दाकिनी
चरण लाविया भूधर धरणी कुलु कुलु ध्वनि करिछे।
बामेते शोभिछे भुवन माता
कि कबो रूप कि कबो कथा
चारिपाशे हेम - लता जड़ित जड़ित रयेछे।
कर्णेते शोभिछे धुतुरार फूल
धुतुरार पाने आँखि ढुलु ढुल
काली ध्याने व्याघ्र-चर्म खसिया खसिया पड़िछे।

१३

आजु मम भवन योगी आवे
करे लिये वीणा हरिगुण गावे
अङ्गे विभूति कान में कुण्डल
शीष जटापर फणिगण शोभे।

१४

देह ज्ञान दिव्य ज्ञान देह प्रीति शुद्धा प्रीति
तुमि मङ्गल आलय तुमि मङ्गलमय
धैर्य देहो वीर्य देहो तितिक्षा सन्तोष देहो
विवेक वैराग्य देहो देहो ओ पदे आश्रय।

१५

शिव शिव बलो जीव घुचिबे अशिव सब
शिव नाम भरसा करि विश्व पालेन केशव
विरिञ्चि करेन सृष्टि शिव पदे राखि दृष्टि
काल चक्र ग्रह रिष्टि शिवनामे पराभव।
शिव ए विश्वेर सार ज्ञान गुरु विश्वाधार
शिव बिना नाहि आर निस्तार कारण।
अतएव शिव नाम गान करो अविराम
पाइबे परम धाम नामेर गुण कि कबो।

१६

शिवमय ए संसार ओरे जीव ता कि जानो ना।
प्रकृति प्रभावे शिवे करिछो जीव-कल्पना।

येइ जीव सेइ शिव   येइ शिव सेइ जीव
शिव भिन्न नहे जीव   यथा जले बिम्बफेना।
शिव हते एइ जीव   एइ जीव हय शिव
शिव पद पाय जीव   शिव भाबिये
अतएव ओरे जीव   सदा भाबो सदाशिव
आज जीव हबे शिव   कि आर बलो भावना।

१७

नाचत शिव सुन्दर त्रिलोचन जटाधारी।
पिनाकपाणि बाघाम्बर गंगाधर श्मशानचारी।
योगीश्वर महाकाल अर्द्धचन्द्र-शोभित भाल।
नाचत डमरू-कर नटेश्वर त्रिपुरारि॥

१८

शंकर शिव पिनाकी गंगाधर वृकधर
वामदेव ईश्वर डमरू-कर।
भस्म अंग शोभित भुजंग भाले चन्द्र
शिङ्गि कूकत है भोला दिगम्बर॥
तिलक ललाट गले रुण्डमाला
त्रिनयन वरदाता गौरी संग त्रिशूल धरे।
पशुपति विश्वनाथ मृत्युञ्जय
महादेव नाम हर हर॥

श्रीशक्ति संगीत

प्रभाती—झपताल

जागो रे जागो रे मन घुमाये थेको ना रे।
दैखो आजि के एसेछे कोले निते तोमारे।।
एसेछे बासिया भालो घुचाते मनेर कालो।
ज्वालिते बुकेते आलो, लइते आपन घरे।।
याँर साड़ा प्राणे प्राणे, याँर प्रेम गाने गाने।
आजि ए कि हलो देखि से एसेछे ए दुआरे।।
धराते से धरा दिलो हये बड़ो आपनार।
सहिबारे कतो भूल बहिबारे कतो भार।।
एसेछे आनन्दमयी, मधुमयी, प्रेममयी।
ए घोर भाङ्गिया मायेर मुख पाने चाहो रे।।

श्री गौर निताई सङ्गीत

१

निताइ काण्डारी करुणा वितरि,
हरि नामेर तरी नियाछे एबार।
यदि चाओ तरिते, ओठो से तरीते
त्वरिते हइबे भव-सिन्धु पार।।
दयार माझी नाय, के याबि रे आय,
उत्तम अधम किछु करे ना विचार।

ये जन हरि बले, तारेइ नैय रे तुले
विनामूल्ये पार करे अनिवार ॥

२

आमि देखेछि रे ताय ।
गौर-वरण संन्यासी एक एसेछे हेथाय ।
(ताँर) हरि बलते नयन झरे,
आपनि केंदे काँदाय परे,
रूपे भुवन पागल करे,
आपन मने गाय ॥
(बले, "कोथाय श्याम-राय ।")
हेरिया गगने घेरा नव जलधर,
मेघेरे डाकिये बले,—"हे मुरलीधर,
दैखा यदि नाहि दिबे, कैनो गो बाजाले बाँशी ?
तुमि कि जानो ना नाथ, आमि चरणेर दासी ।"
बलिते बलिते काँदे, धूलाते मूरछा जाय ॥

३

एसो हे गौरांग हरि आमार हृदय माझारे ।
आमि शक्ति-शून्य भक्ति-शून्य किसे पाबो तोमारे ।
आमि साधन-शून्य भजन-शून्य किसे पाबो तोमारे ॥

४

कीर्तन—एकताला

ओ के गान गेये गेये चले जाय (दैखो) पथे पथे ऐ नदीयाय ।
ओ के नेचे नेचे चले, मुखे हरि बले,
ढले ढले पागलेरइ प्राय ॥

ओ के जाय नेचे नेचे आपनाय बेचे पथे पथे शुधु प्रेम येचे येचे।
ओ के देवता-भिखारी मानव-दुआरे,
देखे जा रे तोरा देखे जा ॥
ओ से बले "कै तो केउ पर नाइ" ओ से बले
"सबाइ ये निज भाई" ॥
ओ से बले "शुधु हेसे शुधु भालोबेसे
(आमि) भ्रमि देशे देशे एइ चाइ ॥
ओ के प्रेमे मातोयारा, चोखे बहे धारा,
केंदे केंदे सारा कैनो भाई,
सब द्वेष हिंसा छुटि, आसि पड़े लुटि
(तार) धूलि माखा दुटि राँगा पाय।
बले छेड़े दाओ मोदेर, मोरा चले जाइ,
नइले प्रभु तोमार प्रेमे गले जाइ।
ए ये नूतन मधुर प्रणयेर पुर,
हेथा आमादेर कोथा ठाँइ ? (प्रभु)
ऐ नरनारी सब पीछे धाय, (ओइ) जयध्वनि ओठे नीलिमाय।
तोरा आय सबे चले, मुखे हरि बले,
तोदेर छेंड़ा पुँथि फेले चले आय ॥

५

बाउल—कहारवा

देखे एलाम तरुण उदासी
केंदे केंदे पथे चले जाय।
कोटि चाँदेर सुधा निङ्गारिया गो
बलो के गड़ेछे ताय।

काङ्गाल तारे के करेछे बलो ?—
धरणी आर मा बुझि तार धरणी भासाय।
नयन तार कालार मतन बाँका
धनुर मतन भुरुर नाचन, यैनो तुलिर आँका।
आमि तारे देखे केंदे मरि गो
आमार एकि हलो दाय।
कोन पथे से गैलो चलि
बले दे आमाय।
आमार जीवन यौवन धरम करम गो
आमि सँपेछि तार पाय॥

६

आमार जाय ज़ावे प्राण, जाक् ना कैनो
यदि गौर पाइ।
आमाय बले बलुक लोके मन्द
ताते क्षति नाइ।
(आमि) निशीथे घुमाये थाकि
गौर रूप स्वपने देखि,
जागिया देखिलाम गौर नाइ॥
अङ्गे गौर, सङ्गे गौर, गौर जगत्मय
दिवा निशि गौर बले काँदिया बैड़ाइ।
जल आनिते गांगेर घाटे
ज़लेर छायाय देखिलाम ताके
आमार मन प्राण नियाछे हरे
कैमने घरे जाइ॥

७

बले दे नदे-वासी के देखेछिस् तारे
प्राण कानाई भाई आमार एइ नदीया पुरे।
यमुनार विमल तटे
गो-पाल लये जेतो गोठे
बाजिये बाँशी मधुर हासि पागल करा सुरे।
प्रेम ऋणे ऋणी हये
कालोवरण ताइ लुकाये
नयन जले शुधबे बले एलो सुरधुनी तीरे॥

८

आमार गौरांग-सुन्दर नाचे नाचे रे।
ता ता थैया थैया बाजे बाजे रे॥
नाचे नाचे विश्वम्भर, नाचे सबार ईश्वर।
सुरधुनीर तीरे तीरे फिरे रे॥
महा-हरिध्वनि चारिदिके शुनि।
माझे शोभे द्विजराज रे॥
सोनार कमल करे टलमल
प्रेम सरोवर माझे रे॥
हासिया हासिया श्रीभुज तुलिया
मुखे 'हरि हरि' बले रे॥

९

चम्पक शोन, कुसुम कनकाचल
जितल गौरतनु लावणी रे।

उन्नत ग्रीव सीम नाहिं अनुभव
जग - मन - मोहन भाङ्गनी रे ।।
जय शची-नन्दन त्रिभुवन वन्दन
कलियुग-काल-भुजग-भय-मण्डन रे ।।
विपुल पुलक फूल, आकुल कलेवर
गर गर अन्तर प्रेमभरे ।
लहु लहु हासनी गद गद भाषणी
कतो मन्दाकिनी नयने झरे ।।
निज रसे नाचत नयन ढुलावत
गावत कतो कतो भकतहिं मेलि ।
जो रसे भासि अवश महीमण्डल
गोविन्ददास तँहि परश ना भेलि ।।

१०

नीरद नयाने नव घन सिञ्चने
पूरल मुकुल अविलम्ब ।
स्वेद मकरन्द बिन्दु-बिन्दु चयत
विकसित भाव कदम्ब ।।
कि पेखनु नटवर गौरकिशोर ।
अभिनव हेम कल्पतरु सञ्चरु
सुरधुनी - तीरे उजोर ।।
चञ्चल चरण कमलतले झङ्करु
भकत भ्रमरगण भोर ।
परिमल लुब्ध सुरासुर धावइ
अहर्निशि रहत अगोर ।।

अविरत प्रेम रतन फल वितरणे
अखिल मनोरथ पुर।
तार चरणे दीन-हीन वञ्चित
गोविन्ददास बहु दूर॥

११

शचीर कुमार गौरांग सुन्दर
देखिलाम आँखिर कोणे।
पलकेते चित हरिया लइलो
अरुण नयन - बाणे॥
सई शोन गो कहि लो तोरे।
घरेते जाइते प्राण नाहि सरे
आकुल करिलो मोरे॥
हासिया हासिया नाचिया नाचिया
'हरि हरि' बले जाय।
घुरिया घुरिया मातिछे भ्रमर
देखे आलो, सखी आय॥
कि कहिबो आर कि क्षणे देखिनु
धैर्य बाँधे ना मोरे।
निरवधि हाय चित्त व्याकुल
नयन सदाइ झरे॥

१२

कि लागि गौर मोर।
निज रसे हलो भोर।

अवनत करि मुख।
भाविछे पूर्वेर दुख।
विधि निष्करुण हलो
अर्द्ध निशि बये गैलो
ज्ञानदास कहे गोरा
निज रसे हलो भोरा॥

१३

अपरूप गोराचाँदे।
विभोर हइया राधार प्रेमे
तार गुण कहि काँदे॥
नयने गलये प्रेमेर धारा,
पुलके पुरलो अंग।
खने गरजये खने से काँपये
उथले भाव-तरङ्ग॥
पारिषदगणे कहये यतने
राधार प्रेमेर कथा।
ज्ञानदास कहे गौरांग नागर
ये लागि आइला हेथा॥

१४

श्रीकृष्ण-चैतन्य बलराम-नित्यानन्द
पारिषद संगे अवतार।
गोलोकेर प्रेमधन सबारे याचिया दिलो
ना लइनु मुइ दुराचार॥

आरे पामर मन बड़ो शेल रहिलो मरमे।
एहेन कीर्त्तन रसे त्रिभुवन माताल
वञ्चित मो हेन अधमे॥

१५

हरि बले बाहु तुले नेचे आय।
पतित पावन गौरहरि, राखबे तोरे रांगा पाय।
गौर नाचे निताई नाचे, श्रीवास आँगिनार माझे
जगमाधा दु'भाई नाचे नेचे नेचे प्रेम बिलाय॥
प्रेमे मत्त हये गोरा, मुखे बले रा, रा, रा, रा,
दुनयने वहे धारा, धाराय अङ्ग भेसे जाय॥
आनन्दे दुइ बाहु तुले, जय राधा श्रीराधा बले,
क्षणे हासे क्षणे काँदे धूले गाड़ागड़ि जाय॥
मनमोहन कय नामेर काछे, ए जगते कि धन आछे,
नामे रुचि यार हइयाछे, दूरे गेछे शमन दाय॥

१६

तोरा के के जाबि आय, नदियाय भाई,
भव पारे निये जेते, डाके रे दयाल निताई।
निताई हरि बले, डाके दुइ बाहु तुले
वक्ष भासे चक्षेर जले, प्रेमानन्दे नाचे गाय।
निताई परम दयाल, पापी तापीर लेगेछे कपाल,
मार खेये प्रेम याचे निताई डाकछे बले आय रे आय।
महा पापीर परित्राणे, निताई हरि गुणगाने,
यारे यारे धरे टाने, कोल दिये कय हरि बल भाई।

नामे प्रेम उथले मने, दयाल निताई नामेर गुणे,
तराइल जगजने, साक्षी रहल जगाइ माधाइ।

१७

धवल पाटेर जोड़ परेछे, रांगा रांगा पाड़ दियाछे
चरण ऊपर दुलि जाइछे कोंचा।
झल-मल सोनार नूपुर, बाजाइछे मधुर मधुर
रूप देखिते भुवन मूरछा॥
दीघल दीघल चाँचर चुल, ताय दियाछे चाँपार फूल
कुन्द मालतीर माला - वेड़ा झोंटा।
चन्दन माखा गोरा गाय, बाहु दोलाइया चले जाय
ललाट ऊपर भुवन-मोहन फोंटा॥
मधुर मधुर कय कथा, श्रवण मनेर घुचाय व्यथा
चाँद यैनो उगारये सुधा।
बाहुर हेलन दोलन देखि, करीर स्वन्त किसे लिखि
नयान बयान यैनो कुँदे कोंदा॥
ऐमन केउ व्यथित थाके, कथार छले खानिक राखे,
नयन भरे देखि रूपखानि।
लोचनदास बले "कैने नयन दिलि गौर पाने,
कुल मजालि आपना आपनि॥"

१८

भजन—कौवाली

सुन्दर लाला शची - दुलाला नाचत श्रीहरि कीर्त्तन में।
भाले चन्दन - तिलक मनोहर अलका शोभे कपोलन में॥

शिरे चूड़ा दरश निराले वनफूलमाला हिया पर दोले।
पहिरण पीत पटाम्बर बोले रुनुझुनु नूपुर चरण में॥
कोई गावत पञ्चम तान, कृष्ण मुरारी हरि के नाम।
मङ्गल ताल मृदङ्ग रसाल बजावत कोई रङ्गन में॥
राधाकृष्ण एकतनु होये, निधुवन में जो रङ्ग मचाये।
विश्वरूप के प्रभुजी सोई अवतो प्रगट है नदीया में॥

१९

भजो गौराङ्ग जपो गौराङ्ग लहो गौराङ्गेर नाम रे।
ये जना गौराङ्ग भजे से जाय गोलोकधाम रे।
से जाय गोलोकधाम रे, से हय आमार प्राण रे।
अक्रोध परमानन्द नित्यानन्द राई रे।
अभिमान-शून्य निताई नगरे बैड़ाय रे।
यारे पाय तारे कहे दन्ते तृण धरि।
आमारे किनिया लहो बलो गौर हरि॥
प्रकट-अप्रकट लीला दुइ तो विधान रे।
प्रकट लीलाय करेन प्रभु निजेर इष्ट नाम रे॥

२०

एसो दुटि भाई गौर निताई
एसो दुटि भाई गौर निताई
द्विजमणि द्विजराज हे।
पूजिबो चरण एइ आकिञ्चन
राखिया हृदय माझे।
पूजिबो चरण—
चन्दन तुलसी दिया पूजिबो चरण—।

एसो द्विजमणि द्विजराज हे
द्विजमणि द्विजराज।
गौर एसो हे गौर एसो हे
(गौर एसो हे ···· ···· ···· ····)
एसो हे एसो हे
(एसो हे ······ ······ ····)
गदाधरके संगे निये एसो हे एसो हे।
तोमार सांगोपांग संगे निये एसो हे एसो हे।
गदाधरके संगे निये आसते हबे हे
(ए आसरे ठाकुर आमार आसते हबे हे)
आसते हबे हे।
दयालेर शिरोमणि आसते हबे हे
करुणार सागर गौर आसते हबे हे
दयाल ठाकुर गौर आमार आसते हबे हे
आसते हबे हे।
तुमि ना आसिले कीर्त्तन शोभे ना शोभे ना।
एसो हे एसो हे।
कीर्त्तनेर शिरोमणि एसो हे एसो हे।
कीर्त्तनेर नाचोआ ठाकुर एसो हे एसो हे।
कीर्त्तनेर नाटोआ ठाकुर एसो हे एसो हे।
प्राण गौर नित्यानन्द एसो हे एसो हे।
प्राण गौर नित्यानन्द एसो हे एसो हे
(प्राण गौर नित्यानन्द················)
गौर हरि बोल गौर हरि बोल
हरि हरि बोल

गौर हरि बोल।
हरि बोल हरि बोल
गौर हरिबोल गौर हरिबोल
हरि हरिबोल हरिबोल हरिबोल
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल
हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल।

२१

सुरधुनीर तीरे ओ के हरि बले नेचे जाय।
जाय रे काँचा काँचा सोनार वरण चाँदेर किरण माखा गाय।
शिरे चूड़ा शिखि-पाखा राधा नाम सर्व अंगे लेखा
तार नयन बाँका, भङ्गि बाँका बाँका नूपुर रांगा पाय।
से तो नय देखछि यारे विमल यमुनार तीरे
(से तो) एमनि करे बाँशी धरे मजाइत गोपिकाय।
विश्वरूप कहे फुकारि चिनि चिनि मने करि
(ओ तार) वरण देखे चिनते नारि स्वभावे पाइ परिचय।

२२

गौरा आर किछु बले ना रे
शुधु हरिबोल हरिबोल हरिबोल।
देखे एलाम शांतिपुरे श्रीअद्वैतेर घरे
ता था तै ता था तै बाजिछे खोल
नव नव नव बालक सङ्गे
गौर नाचिछे प्रेम तरङ्गे
शचीसुत गोरा प्रेमे मातोयारा
यारे देखे तारे दितेछे रे कोल।

चन्दने चर्चित श्रीअङ्ग लेपितो
गलाय मालती माला रे
गोराचाँद दरशने राङ्गर मनेते लेगेछे रे गोल।

२३

करुणा सागर ठाकुर मोर नित्यानन्द राय रे
अदोष-दरशी ठाकुर आमार नित्यानन्द राय रे।
निताई देवेर दुर्लभ श्रीहरिनाम,
यतो पातकी देखिया बाछिया बाछिया याचिया याचिया दैय रे।
(पतित पावन निताई आमार)
निताई, हरिनामेर तरी करि
बले—के जाबि रे पारे, आय त्वरा करे
कर्णधार आमि आछि रे।
(भव पारे जेते कर्णधार आमि आछि रे)
निताई यारे दैखे तारे-इ बले, एबार बिना मूल्ये पार करिबो।
बल भाई हरे कृष्ण हरे हरे
तोदेर यतो भार सकलि आमार
दायभागी रहिलाम आमि रे।
(तोदेर जन्म जन्मान्तरेर कर्माकर्मेर दायभागी)
निताई जीवेर लागिया काँदिया काँदिया ऐ बुझि ऐ जाय रे।
(आमार दयाल निताई ऐ बुझि ऐ जाय रे)
प्रेमेर ठाकुर हरिबोल बले ऐ बुझि ऐ जाय रे
(नयन जले भेसे जाय रे) (जीवे हरिनाम लय ना बले)
दुटि करुण आँखि अरुण हयेछे जीवेर दुःखे कैंदे कैंदे।

सेइ अरुण नयन कोणे तार पाने चाय
कृष्ण - प्रेमानन्द - रसे ताहारे भासाय
सेइ भेसे जाय जार पाने चाय।

२४

रूपे भुवन आलो करेछे गो,
(कतो) चाँद खसे तार पदे शरण नियेछे
प्रति पदनखे कतो चाँद झलके गो,
आछे कालाचाँद तार भितरे।
गा ढाक्‌ले कि आर स्वभाव चापा जाय
आँका-बाँका चलन चालन आर बाँका नयने चाय
भाव - भङ्गीते आर इङ्गिते गो
देखो परिचय सब मिल करे।
यन्त्रे राधा नामटि कभु गाय
(आबार) एक पद दिये हेलिये दाँड़ाय
(तोरे) बलबो कि से एमनि हेसे गो
कभु बाँशी धरे अधरे।
यदि देखलि पुनः देख ना जेने ने ना
दास विश्वरूप ओरूप देखते कच्छे कि माना,
जा रूप देखे आगे प्राण सँपे आय
(तार) गुणेर खबर निस् परे।

२५

कलि - तिमिराकुल अखिल लोक देखि
वदन चाँद परकाश।

लोचने प्रेम सुधारस बरिखये
जगजन-ताप-विनाश।
गौर करुणा-सिन्धु अवतार।
निज नाम गाँथिया नाम चिन्तामणि
जगते परायल हार॥
भकत-कल्पतरु अन्तरे अन्तरु
रोपाये ठामहि ठाम।
तव पदतले अवलम्बन पथिक
पूजये निज निज काम।
भाव गजेन्द्र चड़ायल अकिञ्चने
ऐछन पँहुक विलास।
संसार कालकूट विषे दगधल
ए कलि गोविन्ददास॥

२६

यादेर हरि बलते नयन झरे
ताराइ दु'भाई एसेछे रे,
यारा मा यशोदार नयनतारा
ताराइ दु'भाई एसेछे रे,
ओरे, यारा व्रजेर कानाई बलाई
ताराइ दु'भाई एसेछे रे।
कलि-जीवेर दशा मलिन हेरे
तारा पातकी तराबे बले,
यारा मार खेये प्रेम याचे
ताराइ दु'भाई एसेछे रे।

२७

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु दया करो मोरे हे।
दया करो मोरे प्रभु, कृपा करो मोरे हे।
(भजन जानि ना हे)
(आमि) जनमे जनमे तोमाय ना पासरि हे।
(प्रभु आमार इहाइ करो हे)
पतित पावन हेतु तव अवतार।
मो सम पातकी प्रभु पाइवे ना आर॥
हा हा प्रभु नित्यानन्द प्रेमानन्द सुखी।
कृपा अवलोकन करो आमि बड़ो दुखी॥
दया करो सीतापति श्रीअद्वैत गोसाईं।
तव कृपा बले पाइ श्रीचैतन्य निताई॥
आहा स्वरूप सनातन रूप रघुनाथ।
भट्टयुग श्रीजीव प्रभु लोकनाथ॥
दया करो श्रीआचार्य प्रभु श्रीनिवास।
रामचन्द्र संग माँगे नरोत्तम दास॥

२८

आय रे जगाई, माधाई आय।
हरि संकीर्त्तने नाचबि यदि आय॥
मेरेछिस् ताय भय कि आछे, आय।
(ओरे मेरेछिस् कलसीर काना)
(माधाई, ताते किछु क्षति नाइ रे)
(माधाई, ता बले कि प्रेम दिबो ना ?)
(ओरे जगाई माधाई)

एकबार मार खेयेछि, ना हय आबार खाबो
ओ भाई, तबु हरिनाम निबो।
ओरे, आमरा दु'भाई गौर निताई।
तोमरा दु'भाई जगाई माधाई।
ओरे ओरे माधाई।
आज दु'भाईके तराबो दु'भाई।
आय रे माधाई काछे आय—
हरि-नामेर बातास लागुक गाय।
(ओरे) माधाई तोदेर स्नान कराबो गंगाजले
हरि-नामेर माला दिबो गले॥

२६

गौरांग बलिते हबे पुलक शरीर।
हरि हरि बलिते नयने बहिबे नीर॥
(से दिन कबे वा हबे हे)
(केंदे केंदे बेड़ाइबो—)
आर कबे निताईचाँद करुणा करिबे।
(आमाय कांगाल देखे हे)
संसार - वासना मोर कबे तुच्छ हबे॥
(आमार से दिन हबे कि हबे ?)
(एइ कु—)
विषय छाड़िया कबे शुद्ध हबे मन।
कबे हाम हेरबो श्रीवृन्दावन॥
(श्रीराधाकृष्णेर विलास-भूमि)

रूप रघुनाथ बलि हइबो आकुति।
(यारा युगल-पीरिति-तत्त्व बुझेछे रे)
कबे हाम बुझबो से युगल पीरिति॥
(हैनो भाग्य कबेइ वा हबे हे—)
रूप रघुनाथ पदे रहुँ मोर आश।
(आर किछु चाइ ना, चाइ ना)
प्रार्थना करये सदा नरोत्तम दास॥

विविध संगीत

१

हे जगत्त्राता, विश्वविधाता, हे सुख-शान्ति-निकेतन हे,
प्रेम के सिन्धो, दीन के बन्धो, दुःख-दारिद्र्य-विनाशन हे।
नित्य, अखण्ड, अनन्त, अनादि, पूरण ब्रह्म सनातन हे।
जग-आश्रय, जगपति, जगवन्दन, अनुपम-अलख-निरञ्जन हे।
प्राणसखा, त्रिभुवन - प्रतिपालक, जीवन के अवलम्बन हे॥

२

राग-हाहिर—ताल रूपक

नहिं ऐसो जनम वारंवार।
क्या जानूँ कछु पुण्य प्रकटे मानुसा अवतार।
बढ़त पल पल घटत छिन छिन चलत न लगे बार।
बिरछ के ज्यों पात टूटे, लगे नहिं पुनि डार॥
भवसागर अति जोर कहिए, विषय ओखी धार।
सुरत का नर बाँधे, बेड़ा बेगि उतरे पार॥
साधु सन्ता ते महन्ता, चलत करत पुकार।
दासी मीराँ लाल गिरिधर, जीबना दिन चार॥

३

भीमपल श्री—यत्

ठाकुर मेरे, प्रीतम मेरे,
तुम जो करो सो ठीक है, ठाकुर मेरे।
मेरे लिए क्या भला है मैं क्या जानूँ।
तुमने जो मञ्जूर किया सो ही ठीक मानूँ।

सुख दिया या दुख दिया, जो किया सो ठीक किया।
ठुकराया या प्यार किया, जो किया सो ठीक किया।
इतना तो मैं माँग लूँ, तुमको प्यारे न भूलूँ।
फिर तो कोई चिन्ता नहीं, जो करो सो ठीक है॥

४

गजल

राम बिना कौन दुख हरे,
माता बिना धरम कौन धरे।
लक्ष्मी बिना आदर कौन करे,
जगदीश हरे, जगदीश हरे॥
आकाश हिमालय सागर में
पृथिवी पाताल चराचर में
ये मधुर बोल गुञ्जार रहे
जगदीश हरे, जगदीश हरे॥
जब कृपा दृष्टि हो जाती है
सुखी खेति हरियाती है
इस आश में जन उच्चार हरे
जगदीश हरे, जगदीश हरे॥

५

बाग सुहा—त्रिताल

चलो मन गङ्गा-यमुना तीर।
गङ्गा यमुना निर्मल पानि,
शीतल होत शरीर।
बंशी बजावत गावत कान्हो
सङ्ग लिये बलवीर।

मोर मुकुट पीताम्बर शोभे
कुण्डल झलकत हीर।
मीराँ के प्रभु गिरिधर नागर
चरण कमल पर शिर।

६

भैरवी—गजल—दादरा

किस देवताने आज मेरा दिल चुरा लिया।
दुनिया की खबर न रही तनको भुला दिया॥
रहता था पास में सदा लेकिन छिपा हुआ,
करके दया दयाल ने परदा उठा लिया।
सूरज न था, न चाँद था, बिजली न थी वहाँ,
एकदम वह अजब शान का जलवा दिखा दिया॥
फिर के जो आँख खोलकर ढूँढ़न लगा उसे,
गायब था जो नजर से सोइ भीत पास पालिया।
करके कसूर माफ मेरे जन्म जन्म के
ब्रह्मानन्द अपने चरण में मुझको लगा लिया॥

७

भगवान, मेरी नैया उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना।
दलबल के साथ माया, घेरे जो मुझे आकर,
तो देखते ही रहना, झट आके बचा देना।
सम्भव है झंझट में, मैं तुमको भूल जाऊँ,
पर नाथ कहीं, तुम भी मुझको न भुला देना।
भगवान, मेरी नैया उस पार लगा देना।

८

ए दिन कैसे कटे हैं जतन बताये जैयो
एहि पार गङ्गा, वही पार यमुना
बीच में मड़ैया हमारी छवाये जैयो।
अन्तर चीर कागज बनवायो
अपनि सुरतिया हियरे लिखाये जैयो।
कहत कबीरा सुनो भाई साधो
बहिया पकड़ मोहे रहिया दिखाये जैयो।

९

दो दिन का जग में खेला
सब चलाचलि का मेला।
कोई चला गया है कोई जावे
कोई खड़ा है गँठरी बाँधे
कोई खड़ा तैयार अकेला॥
पाप का पेट के माया जोरी
धन लाख करोड़ कमाया
संग चले ना एक अधेला॥
माता-पिता सुनो-सुनो मेरे भैओ
अन्त का कोई साथी नहीं है
क्यों भर लिया पाप का थैला॥

श्री हरि - संकीर्तन

प्रार्थना

१

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम्।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्॥
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं, गिरा ज्ञानगोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकालकालं कृपालुं, गुणागारसंसारपारं नतोऽहम्॥
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गभीरं, मनोभूतकोटिप्रभा - श्रीशरीरम्।
स्फुरन्मौलि-कल्लोलिनी चारु-गंगा, लसद्भाल-बालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा॥
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालुम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयः शूलनिर्मूलनं शूलपाणिं, भजेऽहं भवानीपति भावगम्यम्॥
कालातीत-कल्याण-कल्पान्तकारी, सदा सच्चिदानन्द-दाता पुरारी।
चिदानन्दसंदोह - मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारि॥
न यावत् उमानाथपादारविन्दं, भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्तिः सन्तापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां, नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्।
जरा-जन्म-दुःखौघ-तातप्यमानं, प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो॥

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति॥

२

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्॥

सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली।
गोपस्त्री-परिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः॥
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं वर्हावतंशप्रियम्।
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्॥
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतम्।
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे॥

३

राधाकृष्णावहं वन्दे रसरूपौ रसायनौ।
वृन्दावननिकुंजेषु नित्यलीलासमाश्रितौ॥
ब्रह्मादिजयसंरूढ़दर्पकंदर्पदर्पहा,
जयति श्रीपतिर्गोपीरासमण्डलमण्डनः॥

४

न नाम - सदृशं ज्ञानं, न नाम - संदृशं वृतम्।
न नाम - सदृशं ध्यानं, न नाम - सदृशं फलम्॥
न नाम - सदृशस्त्यागो, न नाम - सदृशः शमः।
न नाम - सदृशं पुण्यं, न नाम - सदृशी गतिः॥
नारायणो महायोगी ज्ञानभक्ति-प्रदः प्रभुः।
पीयूषवचनः पृथ्वीपावनः सत्यवाक् सहः॥
औढ़्देशजनानन्दसन्दोहामृतरूपधृक्।
विश्वम्भराय गौराय चैतन्याय महात्मने॥
शचीपुत्राय मित्राय लक्ष्मीशाय नमोनमः॥

हनुमान चालीसा

दो०—श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।
वर्णउँ रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार॥
बुद्धि हीन तनु जानिके, सुमिरहुँ पवनकुमार।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार॥

चौ०—जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीश तिहुँ लोक उजागर॥
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनि पुत्र पवनसुत नामा॥
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥
कंचन वरन विराज सुवेशा। कानन कुण्डल कुंचित केशा॥
हाथ वज्र और ध्वजा विराजे। काँधे मूंज जनेऊ साजे॥
शंकर सुअन केशरी नन्दन। तेज प्रताप महा जगवन्दन॥
विद्यावान गुणी अति चातुर। रामकाज करिवे कहँ आतुर॥
प्रभु चरित्र सुनिवे कहँ रसिया। राम लषन सीता मन बसिया॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा॥
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे॥
लाय संजीवन लखन जियाए। श्री रघुवीर हर्षि उर लाए॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरत सम भाई॥
सहस बदन तुम्हरो यश गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा। नारद शारद सहित अहीशा॥
यम कुवेर दिगपाल जहाँते। कवि कोविद कहि सके कहाँते॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना॥
युग सहस्र योजन जो भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गए अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहैं तुम्हारी सरना। तुम रक्षक काहु को डर ना॥
आपन तेज सँभारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवै। महावीर जब नाम सुनावै॥
नाशहिं रोग हरहिं सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत वीरा॥
संकट ते हनुमान छुड़ावैं। मन क्रम वचन ध्यान जो लावैं॥
सब पर राम तपस्वी राजा। तिनके काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोई लावै। तासु अमित जीवन फल पावै॥
चारौ युग परताप तुम्हारा। है प्रसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकन्दन रामदुलारे॥
अष्टसिद्धि नवनिधि के दाता। अस वर दीन्ह जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सादर तुम रघुपति के दासा॥
तुम्हरे भजन राम को भावै। जन्म जन्म के दुख विसरावै॥
अन्त काल रघुपति-पुर जाई। तहाँ जन्म हरि भक्त कहाई॥
और देवता चित्त न धरहीं। हनुमत सेइ सर्व सुख करहीं॥
संकट कटैं हटैं सब पीरा। जो सुमिरे हनुमत बल बीरा॥
जै जै जै हनुमान गुसाईं। कृपा करो गुरुदेव की नाईं॥
यह शतबार पाठ कर जोई। छूटैं बन्ध महासुख होई॥
जो यह पढ़ै हनुमान-चालीसा। होइ सिद्ध साखी गौरीसा॥
'तुलसीदास' सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय में डेरा॥

दो०—पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लषन सीता सहित, हृदय बसो सुर भूप॥

आरती

आरति कीजै हनुमान लला की, दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जाके बल ते गिरिवर काँपै, रोग दोष जाके निकट न झाँकै॥
अँजनि पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई।
दै बीरा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सीया सुधि लाए॥
लंका ऐसो कोट समुद्र ऐसी खाई, जात पवन सुत वार न लाई।
लंका जाइ असुर सँहारे, सीता-रामजी के काज सँभारे॥
लाइ संजीवन लषन जिआए, श्री रघुवीर हर्षि उर लाए।
पैठि पताल तोरि यम का दर, अहिरावन की भुजा उखारे॥
बाईं भुजा सब असुर संहारे, दाईं 'भुजा सब सन्त उबारे॥
सुर-नर-मुनि सब आरती उतारैं, जय जय जय हनुमान उचारैं।
कंचन थार कपूर की बाती, आरति करत अँजनि माई॥
लंक विध्वंस कियो रघुराई, 'तुलसीदास' प्रभु कीरति गाई।
जो हनुमानजी की आरति गावै, बसि वैकुण्ठ अभय पद पावै॥
॥ आरति कीजै० ॥

प्रार्थना

१

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां,
ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षज,
आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी॥

२

जय जनकनन्दिनि जगत-वन्दिनि जन-अनन्दिनि जानकी।
रघुवीर-नयन-चकोर-चन्दिनि बल्लभाप्रिय प्रान की॥
नव कंज-पद-मकरन्द साधित योगिजन-मन-अलि किये।
करि पान गिनत न आन रस निर्वान सुख आनँद हिये॥
सुख-खानि मंगलदानि यह जिय जानि शरण जो जात हैं।
तव नाथ सब सुख साथ करि तेहि हाथ रीझि बिकात हैं॥
ब्रह्मादि शिव सनकादि सुरपति आदि निज सुख भाषहीं।
तव कृपा-नयन-कटाक्ष-चितवनि दिवस-निशि अभिलाषहीं॥
यह आस रघुवरदास की सुखराशि पूरण कीजिये।
निज चरण कमल सनेह जनक विदेहजा वर दीजिये॥

३

श्रीरामचन्द्रकृपालु भज मन हरण भव भय दारुणम्।
नवकंजलोचन कंजमुख करकंज पदकंजारुणम्॥
कन्दर्प अगनित अमित छवि नवनीलनीरज सुन्दरम्।
पट पीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरम्॥
शिर मुकुट कुण्डल श्रवन चारु उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर चाप धरि संग्राम जित खरदूषणम्॥
भज दीनबन्धु दिनेश दानवदलन दुष्टनिकन्दनम्।
रघुनन्द आनँदकंद कौशलचन्द दशरथनन्दनम्॥
इमि वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय-कंज निवास करु कामादि खल-दल-गंजनम्॥

४

जय जय राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे गोविन्द ॥
केशवजी कल्याण गिरिधरन छबीले लाल ।
मदनमोहन श्रीवृन्दाबन चन्द ॥ १ ॥ जय०
देवकी को छैया बलभद्रजी को भैया लाल ।
जाको मुख देखेते कटत जम-फन्द ॥ २ ॥ जय०
चतुर्भुज चक्रपाणि देवकीनन्दन देव ।
नन्द को नंदन स्वामी असुर निकन्द ॥ ३ ॥ जय०
व्रजपति व्रजराज सुरनके सारे काज ।
मुरलि धरण नैना देखते आनन्द ॥ ४ ॥ जय०
यदुपति यदुराय सन्तन सदा सहाय ।
ये ही ध्वनि गावै स्वामी परमानन्द ॥ ५ ॥ जय०

५

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्रीराधे ।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण ॥
श्यामा गोरी नित्य किशोरी प्रीतम जोरी श्रीराधे ।
रसिक रसीलो छैल छबीलो गुण गर्वीलो श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥
रास-विहारिनि रस-विस्तारिनि पिय-उरधारिनि श्रराधे ।
नव नव रंगी नवल त्रिभंगी श्याम सुअंगी श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥
प्राणपियारी रूप-उजारी अति सुकुमारी श्रीराधे ।
नैन मनोहर महा मोदकर सुन्दर वरतर श्रीकृष्ण ॥
जय राधे० । जय कृष्ण० ॥

शोभा श्रेणी सोभामौनी कोकिल-वैनी श्रीराधे।
कीरतिवंता कामिनिकन्ता श्री भगवन्ता श्रीकृष्ण॥
जय राधे०। जय कृष्ण०॥

चंदावदनी कुन्दारदनी शोभासदनी श्रीराधे॥
परम उदारा प्रभा अपारा अति सुकुमारा श्रीकृष्ण॥
जय राधे०। जय कृष्ण०॥

हँसागमनी राजत रमनी क्रीड़ा कमनी श्रीराधे।
रूप-रसाला नैन-विसाला परम कृपाला श्रीकृष्ण।
जय राधे०। जय कृष्ण॥

कंचनवेली रति रस रेली अति अलवेली श्रीराधे।
सब सुख सागर सब गुन आगर रूप उजागर श्रीकृष्ण॥
जय राधे०। जय कृष्ण०॥

रमनीरम्या तरुतरतम्या गुन आगम्या श्रीराधे।
धाम-निवासी प्रभा प्रकाशी सहज सुहासी श्रीकृष्ण॥
जय राधे०। जय कृष्ण०॥

शक्त्याह्लादिनि अति प्रियवादिनि उरउन्मादिनि श्रीराधे।
अंग-अंग टोना सरस सलोना सुभग सुठोना श्रीकृष्ण॥
जय राधे०। जय कृष्ण०॥

धानामिनि गुनअभिरामिनि हरिप्रियस्वामिनि श्रीराधे।
हरे हरे हरि हरे हरे हरि हरे हरे हरि श्रीकृष्ण॥
जय राधे०। जय कृष्ण०॥

रामार्चा के माहात्म्य के पश्चात्

१

जनक सुता जग जननि जानकी। अतिशय प्रिय करुणानिधान की॥
ताके जुग पद कमल मनाऊँ। जासु कृपा निरमल मति पाऊँ॥
गई बहोर गरीब-निवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू॥
अस स्वभाव कहुँ सुनहुँ न देखौं। केहि खगेश रघुपति सम लेखौं॥
मोर सुधारहिं सो सब भाँती। जासु कृपा नहिं कृपा अघाती॥

२

पाई न केहि गति पतित-पावन राम भज सुन सठमना।
गनिका अजामिल व्याधि-गीध गजादि खल तारे घना॥
आभीर यवन किरात खस श्वपचादि अति अघरूप जे।
कहि नाम वारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते॥
सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो।
सो एक राम अकाम हित निर्वानप्रद सम आन को॥
जाकी कृपा लवलेशते मति मन्द तुलसीदास हूँ।
पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूँ॥

दो०—मो सम दीन न दीनहित, तुम समान रघुवीर।
अस विचारि रघुवंश मनि, हरहु विषम भवभीर॥
कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहि राम॥
प्रनतपाल रघुवंशमणि, करुणासिन्धु खरारि।
गये शरण प्रभु राखि हैं, सब अपराध विसारि॥

श्रवण सुयश सुनि आयहुँ, प्रभु भंजन भवभीर।
त्राहि-त्राहि आरत हरण, शरण सुखद रघुवीर॥
अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान।
जन्म जन्म रति राम पद, यह वरदान न आन॥
बार बार वर माँगऊँ, हर्षि देउ श्री रंग।
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग॥
नहिं विद्या नहिं बाहु-बल, नहिं खरचन को दाम।
मोसे पतित अपंग की, तुम पत राखहु राम॥

३

नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्त्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः॥

❀ ❀ ❀

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते॥
वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते॥

❀ ❀ ❀

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

❀ ❀ ❀

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतस्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
वेंदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो-
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः॥

❀ ❀ ❀

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं,
तीर्थास्पदं शिवविरिंचिनुतं शरण्यम्।
भृत्यार्त्तिहं प्रणतपालभवाब्धिपोतं,
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।

त्यक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं,
धर्मिष्ठ आर्यवचसा यदगादरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावत्,
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

❀ ❀ ❀

यः पृथिवीभरवारणाय दिविजैः संप्रार्थितश्चिन्मयः
संजातः पृथिवीतले रघुकुले मायामनुष्योऽव्ययः।
निश्चक्रंहतराक्षसः पुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिरां-
कीर्तिं पापहरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे॥

❀ ❀ ❀

नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं, सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महाशायकचारुचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम्॥
नमामि रामं रघुवंशनाथं नमामि रामं श्रुतिगीतगाथम्।
ब्रह्मस्वरूपं खलु रामचन्द्रं नमामि नौमि प्रभुरामचन्द्रम्॥

❀ ❀ ❀

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम।
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम।
श्रीराम राम शरणं भव राम राम।

❀ ❀ ❀

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥

❀ ❀ ❀

लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

❀ ❀ ❀

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां राम रामेति गर्जनम् ॥

❀ ❀ ❀

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

❀ ❀ ❀

मूकं करोति वाचालं पंगूल्लंघयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द-माधवम् ॥

❀ ❀ ❀

अपराधसहस्रभाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे ।
अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात्कुरु ॥
सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नुयात् ॥

सहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीमहागणपति-सहस्रनामस्तोत्रम्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ ध्यानम्

पञ्चवक्त्रो दशभुजो भालचन्द्रः शशिप्रभः ।
मुण्डमालः सर्पभूषो मुकुटाङ्गदभूषणः ।
अग्न्यर्कशशिनो भाभिस्तिरस्कुर्वन्दशायुधः ॥

अथ स्तोत्रम्

ॐ गणेश्वरो गणक्रीड़ो गणनाथो गणाधिपः ।
एकदंष्ट्रो वक्रतुण्डो गजवक्त्रो महोदरः ॥ १ ॥

लम्बोदरो धूम्रवर्णो विकटो विघ्ननायकः ।
सुमुखो दुर्मुखो बुद्धो विघ्नराजो गजाननः ॥ २ ॥

भीमः प्रमोद आमोदः सुरानन्दो मदोत्कटः ।
हेरम्बः शम्बरः शम्भुर्लम्बकर्णो महाबलः ॥ ३ ॥

नन्दनोऽलम्पटोऽभीरुर्मेघनादो गणञ्जयः ।
विनायको विरूपाक्षो धीरशूरो वरप्रदः ॥ ४ ॥

महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः ।
रुद्रप्रियो गणाध्यक्ष उमापुत्रोऽघनाशनः ॥ ५ ॥

कुमारगुरुरीशानपुत्रो मूषकवाहनः ।
सिद्धिप्रियः सिद्धिपतिः सिद्धः सिद्धिविनायकः ॥ ६ ॥

अविघ्नस्तुम्बुरुः सिंहवाहनो मोहिनीप्रियः ।
कटङ्कटो राजपुत्रः शालकः सम्मितोऽमितः ॥ ७ ॥

कूष्माण्डसामसम्भूतिर्दुर्जयो धूर्जयो जयः ।
भूपतिर्भुवनपतिर्भूतानां पतिरव्ययः ॥ ८ ॥

विश्वकर्ता विश्वमुखो विश्वरूपो निधिर्घृणिः ।
कविः कवीनामृषभो ब्रह्मण्यो ब्रह्मणस्पतिः ॥ ९ ॥

ज्येष्ठराजो निधिपतिर्निधिप्रियः पतिप्रियः ।
हिरण्मयपुरान्तस्थः सूर्यमण्डलमध्यगः ॥ १० ॥

कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलः पूषदन्तभित् ।
उमाङ्केलिकुतुकी मुक्तिदः कुलपालनः ॥ ११ ॥

किरीटी कुण्डली हारी वनमाली मनोमयः ।
वैमुख्यहतदैत्यश्रीः पादाहतिजितक्षितिः ॥ १२ ॥

सद्योजातस्वर्णमुञ्जमेखली दुर्निमित्तहृत् ।
दुःस्वप्नहृत्प्रसहनो गुणी नादप्रतिष्ठितः ॥ १३ ॥

सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः ।
पीताम्बरः खण्डरदः खण्डेन्दुकृतशेखरः ॥ १४ ॥

चित्राङ्कश्यामदशनो भालचन्द्रश्चतुर्भुजः ।
योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः ॥ १५ ॥

गणाधिराजो विजयस्थिरो गजपतिध्वजी ।
देवदेवः स्मरप्राणदीपको वायुकीलकः ॥ १६ ॥

विपश्चिद्वरदो नादोन्नादभिन्नबलाहकः ।
वराहरदनो मृत्युञ्जयो व्याघ्राजिनाम्बरः ॥ १७ ॥

इच्छाशक्तिधरो देवत्राता दैत्यविमर्दनः ।
शम्भुवक्त्रोद्भवः शम्भुकोपहा शम्भुहास्यभूः ॥ १८ ॥

शम्भुतेजाः शिवाशोकहारी गौरीसुखावहः ।
उमाङ्गमलजो गौरीतेजोभूः स्वर्धुनीभवः ॥ १९ ॥

यज्ञकायो महानादो गिरिवर्ष्मा शुभाननः ।
सर्वात्मा सर्वदेवात्मा ब्रह्ममूर्धा ककुप्श्रुतिः ॥ २० ॥

ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्व्योमभालः सत्यशिरोरुहः ।
जगज्जन्मलयोन्मेषनिमेषोऽग्न्यर्कसोमदृक् ॥ २१ ॥

गिरीन्द्रैकरदो धर्माधर्मोष्ठः सामबृंहितः ।
ग्रहर्क्षदशनो वाणीजिह्वो वासवनासिकः ॥ २२ ॥

कुलाचलांसः सोमार्कघण्टो रुद्रशिरोधरः ।
नदीनदभुजः सर्पाङ्गुलीकः तारकानखः ॥ २३ ॥

भ्रूमध्यसंस्थितकरो ब्रह्मविद्यामदोत्कटः ।
व्योमनाभिः श्रीहृदयो मेरुपृष्ठोऽर्णवोदरः ॥ २४ ॥

कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षःकिन्नरमानुषः ।
पृथ्वीकटिः सृष्टिलिङ्गः शैलोरुर्दस्रजानुकः ॥ २५ ॥

पातालजङ्घो मुनिपात्कालाङ्गुष्ठस्त्रयीतनुः ।
ज्योतिर्मण्डललाङ्गूलो हृदयालाननिश्चलः ॥ २६ ॥

हृत्पद्मकर्णिकाशालिवियत्केलिसरोवरः ।
सद्भक्तध्याननिगडः पूजावारीनिवारितः ॥ २७ ॥

प्रतापी कश्यपसुतो गणपो विष्टपी बली ।
यशस्वी धार्मिकः स्वोजाः प्रथमः प्रथमेश्वरः ॥ २८ ॥

चिन्तामणिद्वीपपतिः कल्पद्रुमवनालयः ।
रत्नमण्डपमध्यस्थो रत्नसिंहासनाश्रयः ॥ २९ ॥

तीव्राशिरोधृतपदो ज्वालिनीमौलिलालितः ।
नन्दानन्दितपीठश्रीर्भोगदाभूषितासनः ॥ ३० ॥

सकामदायिनीपीठः स्फुरदुग्रासनाश्रयः ।
तेजोवतीशिरोरत्नं सत्यानित्यावतंसितः ॥ ३१ ॥

सविघ्ननाशिनीपीठः सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयः ।
लिपिपद्मासनाधारो वह्निधामत्रयाश्रयः ॥ ३२ ॥

उन्नतप्रपदो गूढगुल्फः संवृतपार्ष्णिकः ।
पीनजङ्घः श्लिष्टजानुः स्थूलोरुः प्रोन्नमत्कटिः ॥ ३३ ॥
निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवृक्षा बृहद्भुजः ।
पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः ॥ ३४ ॥

भग्नवामरदस्तुङ्गसव्यदन्तो महाहनुः ।
ह्रस्वनेत्रत्रयः शूर्पकर्णो निबिडमस्तकः ॥ ३५ ॥

स्तबकाकारकुम्भाग्रो रत्नमौलिर्निरङ्कुशः ।
सर्पहारकटीसूत्रः सर्पयज्ञोपवीतवान् ॥ ३६ ॥

सर्पकोटीरकटकः सर्पग्रैवेयकाङ्गदः ।
सर्पकक्ष्योदराबन्धः सर्पराजोत्तरीयकः ॥ ३७ ॥

रक्तो रक्ताम्बरधरो रक्तमाल्यविभूषणः ।
रक्तेक्षणो रक्तकरो रक्तताल्वोष्ठपल्लवः ॥ ३८ ॥
श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेतमाल्यविभूषणः ।
श्वेतातपत्ररुचिरः श्वेतचामरवीजितः ॥ ३९ ॥

सर्वावयवसम्पूर्णः सर्वलक्षणलक्षितः ।
सर्वाभरणशोभाढ्यः सर्वशोभासमन्वितः ॥ ४० ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यः सर्वकारणकारणम् ।
सर्वदैककरः शार्ङ्गी बीजापूरी गदाधरः ॥ ४१ ॥

इक्षुचापधरः शूली चक्रपाणिः सरोजभृत् ।
पाशी धृतोत्पलः शालीमञ्जरीभृत्स्वदन्तभृत् ॥ ४२ ॥

कल्पवल्लीधरो विश्वाभयदैककरो वशी ।
अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान्मुद्गरायुधः ॥ ४३ ॥

पूर्णपात्री कम्बुधरो विधृतालिसमुद्गकः ।
मातुलिङ्गधरश्चूतकलिकाभृत्कुठारवान् ॥ ४४ ॥

पुष्करस्थस्वर्णघटी पूर्णरत्नाभिवर्षकः ।
भारती सुन्दरीनाथो विनायकरतिप्रियः ॥ ४५ ॥

महालक्ष्मीप्रियतमः सिद्धलक्ष्मीमनोरमः ।
रमारमेशपूर्वाङ्गो दक्षिणोमामहेश्वरः ॥ ४६ ॥

महीवराहवामाङ्गो रतिकन्दर्पपश्चिमः ।
आमोदमोदजननः सम्प्रमोदप्रमोदनः ॥ ४७ ॥

समेधितसमृद्धिश्रीर्ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकः ।
दत्तसौमुख्यसुमुखः कान्तिकन्दलिताश्रयः ॥ ४८ ॥

मदनावत्याश्रिताङ्घ्रिः कृत्तदौर्मुख्यदुर्मुखः ।
विघ्नसम्पल्लवोपघ्नः सेवोन्निद्रमदद्रवः ॥ ४९ ॥

विघ्नकृन्निघ्नचरणो द्राविणीशक्तिसत्कृतः ।
तीव्राप्रसन्ननयनो ज्वालिनीपालितैकदृक् ॥ ५० ॥

मोहिनीमोहनो भोगदायिनीकान्तिमण्डितः ।
कामिनीकान्तवक्त्रश्रीरधिष्ठितवसुन्धरः ॥ ५१ ॥

वसुन्धरामदोन्नद्धमहाशङ्खनिधिप्रभुः ।
नमद्वसुमतीमौलिमहापद्मनिधिप्रभुः ॥ ५२ ॥

सर्वसद्गुरुसंसेव्यः शोचिष्केशहृदाश्रयः ।
ईशानमूर्धा देवेन्द्रशिखा पवननन्दनः ॥ ५३ ॥

अग्रप्रत्यग्रनयनो दिव्यास्त्राणां प्रयोगवित् ।
ऐरावतादिसर्वाशावारणावरणप्रियः ॥ ५४ ॥

वज्राद्यस्त्रापरीवारो गणचण्डसमाश्रयः ।
जयाजयपरीवारो विजयाविजयावहः ॥ ५५ ॥

अजितार्चितपादाब्जो नित्यानित्यावतंसितः ।
विलासिनीकृतोल्लासः शौण्डीसौन्दर्यमण्डितः ॥ ५६ ॥

अनन्तानन्तसुखदः सुमङ्गलसुमङ्गलः ।
इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिनिषेवितः ॥ ५७ ॥

सुभगासंश्रितपदो ललिताललिताश्रयः ।
कामिनीकामनः काममालिनीकेलिलालितः ॥ ५८ ॥

सरस्वत्याश्रयो गौरीनन्दनः श्रीनिकेतनः ।
गुरुगुप्तपदो वाचासिद्धो वागीश्वरीपतिः ॥ ५९ ॥

नलिनीकामुको वामारामो ज्येष्ठामनोरमः ।
रौद्रिमुद्रितपादाब्जो हुम्बीजस्तुङ्गशक्तिकः ॥ ६० ॥

विश्वादिजननत्राणः स्वाहाशक्तिः सकीलकः ।
अमृताब्धिकृतावासो मदघूर्णितलोचनः ॥ ६१ ॥

उच्छिष्टगण उच्छिष्टगणेशो गणनायकः ।
सार्वकालिकसंसिद्धिर्नित्यशैवो दिगम्बरः ॥ ६२ ॥

अनपायोऽनन्तदृष्टिरप्रमेयोऽजरामरः ।
अनाविलोऽप्रतिरथोऽह्यच्युतोऽमृतमक्षरम् ॥ ६३ ॥

अप्रतर्क्योऽक्षयोऽजय्यो नाधारोऽनामयोऽमलः ।
अमोघसिद्धिरद्वैतमघोरोऽप्रमिताननः ॥ ६४ ॥

अनाकारोऽब्धिभूम्यग्निबलघ्नोऽव्यक्तलक्षणः ।
आधारपीठ आधार आधाराधेयवर्जितः ॥ ६५ ॥

आखुकेतन आशापूरक आखुमहारथः ।
इक्षुसागरमध्यस्थ इक्षुभक्षणलालसः ॥ ६६ ॥

इक्षुचापातिरेकश्रीरिक्षुचापनिषेवितः ।
इन्द्रगोपसमानश्रीरिन्द्रनीलसमद्युतिः ॥ ६७ ॥
इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलनिर्मलः ।
इध्मप्रिय इडाभाग इराधामेन्दिराप्रियः ॥ ६८ ॥
इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसी इतिकर्तव्यतेप्सितः ।
ईशानमौलिरीशान ईशानसुत ईतिहा ॥ ६९ ॥
ईषणात्रयकल्पान्त ईहामात्रविवर्जितः ।
उपेन्द्र उडुभृन्मौलिरुण्डेरकबलिप्रियः ॥ ७० ॥
उन्नतानन उत्तुङ्ग उदारत्रिदशाग्रणीः ।
ऊर्जस्वानूष्मलमद ऊहापोहदुरासदः ॥ ७१ ॥
ऋग्यजुःसामसम्भूतिर्ऋद्धिसिद्धिप्रदायकः ।
ऋजुचित्तैकसुलभः ऋणत्रयविमोचकः ॥ ७२ ॥
लुप्तविघ्नः स्वभक्तानां लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम् ।
लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां लूताविस्फोटनाशनः ॥ ७३ ॥
एकारपीठमध्यस्थ एकपादकृतासनः ।
एजिताखिलदैत्यश्रीरेधिताखिलसंश्रयः ॥ ७४ ॥
ऐश्वर्यनिधिरैश्वर्यमैहिकामुष्मिकप्रदः ।
ऐरम्मदसमोन्मेष ऐरावतनिभाननः ॥ ७५ ॥
ओङ्कारवाच्य ओङ्कार ओजस्वानोषधीपतिः ।
औदार्यनिधिरौद्धत्यधुर्य औन्नत्यनिस्वनः ॥ ७६ ॥
अङ्कुशः सुरनागानामङ्कुशः सुरविद्विषाम् ।
अःसमस्तत्रिसर्गान्तपदेषु परिकीर्तितः ॥ ७७ ॥
कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कलभाननः ।
कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रदः ॥ ७८ ॥

कदम्बगोलकाकारः कूष्माण्डगणनायकः ।
कारुण्यदेहः कपिलः कथकः कटिसूत्रभृत् ॥ ७९ ॥

खर्वः खड्गप्रियः खड्गखान्तान्तस्थः खनिर्मलः ।
खल्वाटश‍ृङ्गनिलयः खट्वाङ्गी खदुरासदः ॥ ८० ॥

गुणाढ्यो गहनो गस्थो गद्यपद्यसुधार्णवः ।
गद्यगानप्रियो गर्जो गीतगीर्वाणपूर्वजः ॥ ८१ ॥

गुह्याचाररतो गुह्यो गुह्यागमनिरूपितः ।
गुहाशयो गुहाब्धिस्थो गुरुगम्यो गुरोर्गुरुः ॥ ८२ ॥

घण्टाघर्घरिकामाली घटकुम्भो घटोदरः ।
चण्डश्चण्डेश्वरसुहृच्चण्डीशश्चण्डविक्रमः ॥ ८३ ॥

चराचरपतिश्चिन्तामणिचर्वणलालसः ।
छन्दश्छन्दोवपुश्छन्दो दुर्लक्ष्यश्छन्दविग्रहः ॥ ८४ ॥

जगद्योनिर्जगत्साक्षी जगदीशो जगन्मयः ।
जपो जपपरो जप्यो जिह्वासिंहासनप्रभुः ॥ ८५ ॥

झलझझलोल्लसद्दानझङ्कारिभ्रमराकुलः ।
टङ्कारस्फारसंरावष्टङ्कारिमणिनूपुरः ॥ ८६ ॥

ठद्वयीपल्लवान्तस्थसर्वमन्त्रैकसिद्धिदः ।
डिण्डिमुण्डो डाकिनीशो डामरो डिण्डिमप्रियः ॥ ८७ ॥

ढक्कानिनादमुदितो ढौको ढुण्ढिविनायकः ।
तत्त्वानां परमं तत्त्वं तत्त्वंपदनिरूपितः ॥ ८८ ॥

तारकान्तरसंस्थानस्तारकस्तारकान्तकः ।
स्थाणुः स्थाणुप्रियः स्थाता स्थावरं जङ्गमं जगत् ॥ ८९ ॥

दक्षयज्ञप्रमथनो दाता दानवमोहनः ।
दयावान्दिव्यविभवो दण्डभृद्दण्डनायकः ॥ ९० ॥

दन्तप्रभिन्नाभ्रमालो दैत्यवारणदारणः ।
दंष्ट्रालग्नद्विपघटो देवार्थनृगजाकृतिः ॥ ६१ ॥
धनधान्यपतिर्धन्यो धनदो धरणीधरः ।
ध्यानैकप्रकटो ध्येयो ध्यानं ध्यानपरायणः ॥ ६२ ॥
नन्द्यो नन्दिप्रियो नादो नादमध्यप्रतिष्ठितः ।
निष्कलो निर्मलो नित्यो नित्यानित्यो निरामयः ॥ ६३ ॥
परं व्योम परं धाम परमात्मा परं पदम् ।
परात्परः पशुपतिः पशुपाशविमोचकः ॥ ६४ ॥
पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणपुरुषोत्तमः ।
पद्मप्रसन्ननयनः प्रणताज्ञानमोचनः ॥ ६५ ॥
प्रमाणप्रत्ययातीतः प्रणतार्तिनिवारणः ।
फलहस्तः फणिपतिः फेत्कारः फाणितप्रियः ॥ ९६ ॥
बाणार्चिताङ्घ्रियुगलो बालकेलिकुतूहली ।
ब्रह्म ब्रह्मार्चितपदो ब्रह्मचारी बृहस्पतिः ॥ ६७ ॥
बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः ।
बृहन्नादाग्र्यचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः ॥ ६८ ॥
भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीको भर्गो भद्रो भयापहः ।
भगवान् भक्तिसुलभो भूतिदो भूतिभूषणः ॥ ६६ ॥
भव्यो भूतालयो भोगदाता भ्रूमध्यगोचरः ।
मन्त्रो मन्त्रपतिर्मन्त्री मदमत्तमनोरमः ॥ १०० ॥
मेखलावान्मन्दगतिर्मतिमत्कमलेक्षणः ।
महाबलो महावीर्यो महाप्राणो महामनाः ॥ १०१ ॥
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञगोप्ता यज्ञफलप्रदः ।
यशस्करो योगगम्यो याज्ञिको याजकप्रियः ॥ १०२ ॥

रसो रसप्रियो रस्यो रञ्जको रावणार्चितः ।
रक्षो रक्षाकरो रत्नगर्भो राज्यसुखप्रदः ॥ १०३ ॥

लक्ष्यं लक्ष्यप्रदो लक्ष्यो लयस्थो लड्डुकप्रियः ।
लानप्रियो लास्यपरो लाभकृल्लोकविश्रुतः ॥ १०४ ॥

वरेण्यो वह्निवदनो वन्द्यो वेदान्तगोचरः ।
विकर्ता विश्वतश्चक्षुर्विधाता विश्वतोमुखः ॥ १०५ ॥

वामदेवो विश्वनेता वज्रिवज्रनिवारणः ।
विश्वबन्धनविष्कम्भाधारो विश्वेश्वरप्रभुः ॥ १०६ ॥

शब्दब्रह्म शमप्राप्यः शम्भुशक्तिगणेश्वरः ।
शास्ता शिखाग्रनिलयः शरण्यः शिखरीश्वरः ॥ १०७ ॥

षड्ऋतुकुसुमस्रग्वी षडाधारः षडक्षरः ।
संसारवैद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषजभेषजम् ॥ १०८ ॥

सृष्टिस्थितिलयक्रीडः सुरकुञ्जरभेदनः ।
सिन्दूरितमहाकुम्भः सदसद्व्यक्तिदायकः ॥ १०९ ॥

साक्षी समुद्रमथनः स्वसंवेद्यः स्वदक्षिणः ।
स्वतन्त्रः सत्यसङ्कल्पः सामगानरतः सुखी ॥ ११० ॥

हंसो हस्तिपिशाचीशो हवनं हव्यकव्यभुक् ।
हव्यो हुतप्रियो हर्षो हृल्लेखामन्त्रमध्यगः ॥ १११ ॥

क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता क्षमापरपरायणः ।
क्षिप्रक्षेमकरः क्षेमानन्दः क्षोणीसुरद्रुमः ॥ ११२ ॥

धर्मप्रदोऽर्थदः कामदाता सौभाग्यवर्धनः ।
विद्याप्रदो विभवदो भुक्तिमुक्तिफलप्रदः ॥ ११३ ॥

आभिरूप्यकरो वीरश्रीप्रदो विजयप्रदः ।
सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः ॥ ११४ ॥

मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः ।
प्रतिवादिमुखस्तम्भो रुष्टचित्तप्रसादनः ॥ ११५ ॥
पराभिचारशमनो दुःखभञ्जनकारकः ।
लवस्त्रुटिः कला काष्ठा निमेषस्तत्परः क्षणः ॥ ११६ ॥
घटी मुहूर्तं प्रहरो दिवा नक्तमहर्निशम् ।
पक्षो मासोऽयनं वर्षं युगं कल्पो महालयः ॥ ११७ ॥
राशिस्तारा तिथिर्योगो वारः करणमंशकम् ।
लग्नं होरा कालचक्रं मेरुः सप्तर्षयो ध्रुवः ॥ ११८ ॥
राहुर्मन्दः कविर्जीवो बुधो भौमः शशी रविः ।
कालः सृष्टिः स्थितिर्विश्वं स्थावरं जङ्गमं च यत् ॥ ११९ ॥
भूरापोऽग्निर्मरुद्व्योमाहंकृतिः प्रकृतिः पुमान् ।
ब्रह्मा विष्णुः शिवो रुद्र ईशः शक्तिः सदाशिवः ॥१२०॥
त्रिदशाः पितरः सिद्धा यक्षा रक्षांसि किन्नराः ।
साद्धया विद्याधरा भूता मनुष्याः पशवः खगाः ॥१२१॥
समुद्राः सरितः शैला भूतं भव्यं भवोद्भवः ।
साङ्ख्यं पातञ्जलं योगः पुराणानि श्रुतिः स्मृतिः ॥ १२२ ।
वेदाङ्गानि सदाचारो मीमांसा न्यायविस्तरः ।
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वं काव्यनाटकम् ॥ १२३ ॥
वैखानसं भागवतं सात्वतं पाञ्चरात्रकम् ।
शैवं पाशुपतं कालामुखं भैरवशासनम् ॥ १२४ ॥
शाक्तं वैनायकं सौरं जैनमार्हतसंहिता ।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं सचेतनमचेतनम् ॥ १२५ ॥
बन्धो मोक्षः सुखं भोगोऽयोगः सत्यमणुर्महान् ।
स्वस्ति हुंफट् स्वधा स्वाहा श्रौषड्वौषड्वषण्णमः ॥ १२६ ॥

ज्ञानं विज्ञानमानन्दो बोधः संविच्छमो यमः ।
एक एकाक्षराधार एकाक्षरपरायणः ॥ १२७ ॥

एकाग्रधीरेकवीर एकाऽनेकस्वरूपधृक् ।
द्विरूपो द्विभुजो द्व्यक्षो द्विरदो द्विपरक्षकः ॥ १२८ ॥

द्वैमातुरो द्विवदनो द्वन्द्वातीतो द्वयातिगः ।
त्रिधामा त्रिकरस्त्रेता त्रिवर्गफलदायकः ॥ १२९ ॥

त्रिगुणात्मा त्रिलोकादिस्त्रिशक्तीशस्त्रिलोचनः ।
चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुरात्मा चतुर्मुखः ॥ १३० ॥

चतुर्विधोपायमयश्चतुर्वर्णाश्रमाश्रयः ।
चतुर्विधवचोवृत्तिपरिवृत्तिप्रवर्तकः ॥ १३१ ॥

चतुर्थीपूजनप्रीतश्चतुर्थीतिथिसम्भवः ।
पञ्चाक्षरात्मा पञ्चात्मा पञ्चास्यः पञ्चकृत्यकृत् ॥ १३२ ॥

पञ्चाधारः पञ्चवर्णः पञ्चाक्षरपरायणः ।
पञ्चतालः पञ्चकरः पञ्चप्रणवभावितः ॥ १३३ ॥

पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तिः पञ्चावरणवारितः ।
पञ्चभक्ष्यप्रियः पञ्चबाणः पञ्चशिवात्मकः ॥ १३४ ॥

षट्कोणपीठः षट्चक्रधामा षड्ग्रन्थिभेदकः ।
षडध्वध्वान्तविध्वंसी षडङ्गुलमहाह्रदः ॥ १३५ ॥

षण्मुखः षण्मुखभ्राता षट्शक्तिपरिवारितः ।
षड्वैरिवर्गविध्वंसी षडूर्मिभयभञ्जनः ॥ १३६ ॥

षडर्कदूरः षट्कर्मनिरतः षड्रसाश्रयः ।
सप्तपातालचरणः सप्तद्वीपोरुमण्डलः ॥ १३७ ॥

सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तसप्तिवरप्रदः ।
सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तर्षिगणमण्डितः ॥ १३८ ॥

सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तहोता सप्तस्वराश्रयः ।
सप्ताब्धिकेलिकासारः सप्तमातृनिषेवितः ॥ १३९ ॥
सप्तच्छन्दोमोदमदः सप्तच्छन्दोमखप्रभुः ।
अष्टमूर्तिर्ध्येयमूर्तिरष्टप्रकृतिकारणम् ॥ १४० ॥
अष्टाङ्गयोगफलभूरष्टपत्राम्बुजासनः ।
अष्टशक्तिसमृद्धश्रीरष्टैश्वर्यप्रदायकः ॥ १४१ ॥
अष्टपीठोपपीठश्रीरष्टमातृसमावृतः ।
अष्टभैरवसेव्योऽष्टवसुवन्द्योऽष्टमूर्तिभृत् ॥ १४२ ॥
अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तिरष्टद्रव्यहविःप्रियः ।
नवनागासनाध्यासी नवनिध्यनुशासिता ॥ १४३ ॥
नवद्वारपुराधारो नवाधारनिकेतनः ।
नवनारायणस्तुत्यो नवदुर्गानिषेवितः ॥ १४४ ॥
नवनाथमहानाथो नवनागविभूषणः ।
नवरत्नविचित्राङ्गो नवशक्तिशिरोद्धृतः ॥ १४५ ॥
दशात्मको दशभुजो दशदिक्पतिवन्दितः ।
दशाध्यायो दशप्राणो दशेन्द्रियनियामकः ॥ १४६ ॥
दशाक्षरमहामन्त्रो दशाशाव्यापिविग्रहः ।
एकादशादिभी रुद्रैः स्तुत एकादशाक्षरः ॥ १४७ ॥
द्वादशोद्दण्डदोर्दण्डो द्वादशान्तनिकेतनः ।
त्रयोदशभिदाभिन्नविश्वेदेवाधिदैवतम् ॥ १४८ ॥
चतुर्दशेन्द्रवरदश्चतुर्दशमनुप्रभुः ।
चतुर्दशादिविद्याढ्यश्चतुर्दशजगत्प्रभुः ॥ १४९ ॥
सामपञ्चदशः पञ्चदशीशीतांशुनिर्मलः ।
षोडशाधारनिलयः षोडशस्वरमातृकः ॥ १५० ॥

षोडशान्तपदावासः षोडशेन्दुकलात्मकः ।
कलासप्तदशी सप्तदशः सप्तदशाक्षरः ॥ १५१ ॥
अष्टादशद्वीपपतिरष्टादशपुराणकृत् ।
अष्टादशौषधीसृष्टिरष्टादशविधिस्मृतः ॥ १५२ ॥
अष्टादशलिपिव्यष्टिसमष्टिज्ञानकोविदः ।
एकविंशः पुमानेकविंशत्यङ्गुलिपल्लवः ॥ १५३ ॥
चतुर्विंशतितत्त्वात्मा पञ्चविंशाख्यपूरुषः ।
सप्तविंशतितारेशः सप्तविंशतियोगकृत् ॥ १५४ ॥
द्वात्रिंशद्भैरवाधीशश्चतुस्त्रिंशन्महाह्रदः ।
षट्त्रिंशत्तत्त्वसंभूतिरष्टात्रिंशत्कलातनुः ॥ १५५ ॥
नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्वर्गनिरर्गलः ।
पञ्चाशदक्षरश्रेणी पञ्चाशद्रुद्रविग्रहः ॥ १५६ ॥
पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशः पञ्चाशन्मातृकालयः ।
द्विपञ्चाशद्वपुःश्रेणी त्रिषष्ट्यक्षरसंश्रयः ॥ १५७ ॥
चतुःषष्ट्यर्णनिर्णेता चतुःषष्टिकलानिधिः ।
चतुःषष्टिमहासिद्धयोगिनीवृन्दवन्दितः ॥ १५८ ॥
अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्रभैरवभावनः ।
चतुर्नवतिमन्त्रात्मा षण्णवत्यधिकप्रभुः ॥ १५९ ॥
शतानन्दः शतधृतिः शतपत्रायतेक्षणः ।
शतानीकः शतमखः शतधारावरायुधः ॥ १६० ॥
सहस्रपत्रनिलयः सहस्रफणभूषणः ।
सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ १६१ ॥
सहस्रनामसंस्तुत्यः सहस्राक्षबलापहः ।
दशसाहस्रफणभृत्फणिराजकृतासनः ॥ १६२ ॥

अष्टाशीतिसहस्राद्यमहर्षिस्तोत्रयान्त्रतः ।
लक्षाधीशप्रियाधारो लक्षाधारमनोमयः ॥ १६३ ॥
चतुर्लक्षजपप्रीतश्चतुर्लक्षप्रकाशितः ।
चतुरशीतिलक्षाणां जीवानां देहसंस्थितः ॥ १६४ ॥
कोटिसूर्यप्रतीकाशः कोटिचन्द्रांशुनिर्मलः ।
शिवाभवाध्युष्टकोटिविनायकधुरन्धरः ॥ १६५ ॥
सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रितावयवद्युतिः ।
त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणीप्रणतपादुकः ॥ १६६ ॥
अनन्तनामानन्तश्रीरनन्ताऽनन्तसौख्यदः । ॐ ॥ १६७ ॥

इति वैनायकं नाम्नां सहस्रमिदमीरितम् ।
इदं ब्राह्मे मुहूर्ते यः पठति प्रत्यहं नरः ॥ १ ॥
करस्थं तस्य सकलमैहिकामुष्मिकं सुखम् ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं धैर्यं शौर्यं बलं यशः ॥ २ ॥
मेधा प्रज्ञा धृतिः कान्तिः सौभाग्यमतिरूपता ।
सत्यं दया क्षमा शान्तिर्दाक्षिण्यं धर्मशालिता ॥ ३ ॥
जगत्संयमनं विश्वसंवादो वादपाटवम् ।
सभापाण्डित्यमौदार्यं गाम्भीर्यं ब्रह्मवर्चसम् ॥ ४ ॥
औन्नत्यं च कुलं शीलं प्रतापो वीर्यमार्यता ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं स्थैर्यं विश्वातिशायिता ॥ ५ ॥
धनधान्याभिवृद्धिश्च सकृदस्य जपाद् भवेत् ।
वश्यं चतुर्विधं नृणां जपादस्य प्रजायते ॥ ६ ॥
राज्ञो राजकलत्रस्य राजपुत्रस्य मन्त्रिणः ।
जप्यते यस्य वश्यार्थं सदासस्तस्य जायते ॥ ७ ॥
धर्मार्थकाममोक्षाणामनायासेन साधनम् ।
शाकिनीडाकिनीरक्षोयक्षोरगभयापहम् ॥ ८ ॥

साम्राज्यसुखदं चैव समस्तरिपुमर्दनम् ।
समस्तकलहध्वंसिदग्धबीजप्ररोहणम् ॥ ९ ॥
दुःस्वप्ननाशनं क्रुद्धस्वामिचित्तप्रसादनम् ।
षट्कर्माष्टमहासिद्धित्रिकालज्ञानसाधनम् ॥ १० ॥
परकृत्याप्रशमनं परचक्रविमर्दनम् ।
सङ्ग्रामरङ्गे सर्वेषामिदमेकं जयावहम् ॥ ११ ॥
सर्ववन्ध्यात्वदोषघ्नं गर्भरक्षैककारणम् ।
पठ्यते प्रत्यहं यत्र स्तोत्रं गणपतेरिदम् ॥ १२ ॥
देशे तत्र न दुर्भिक्षमीतयो दुरितानि च ।
न तद्गृहं जहाति श्रीर्यत्रायं पठ्यते स्तवः ॥ १३ ॥
क्षयकुष्ठप्रमेहार्शभगन्दरविषूचिकाः ।
गुल्मं प्लीहानमश्मानमतिसारं महोदरम् ॥ १४ ॥
कासं श्वासमुदावर्तं शूलं शोकादिसंभवम् ।
शिरोरोगं वमिं हिक्कां गण्डमालामरोचकम् ॥ १५ ॥
वातपित्तकफद्वन्द्वत्रिदोषजनितज्वरम् ।
आगन्तुविषमं शीतमुष्णं चैकाहिकादिकम् ॥१६॥
इत्याद्युक्तमनुक्तं वा रोगं दोषादिसम्भवम् ।
सर्वं प्रशमयत्याशु स्तोत्रस्यास्य सकृज्जपः ॥१७॥
सकृत्पाठेन संसिद्धः स्त्रीशूद्रपतितैरपि ।
सहस्रनाममन्त्रोयं जपितव्यः शुभाप्तये ॥१८॥
महागणपतेः स्तोत्रं सकामः प्रजपन्निदं ।
इच्छया सकलान्भोगानुभूयेह पार्थिवान् ॥१९॥
मनोरथफलैर्दिव्यैर्व्योमयानैर्मनोरमैः ।
चन्द्रेन्द्रभास्करोपेन्द्रब्रह्मशर्वादिसद्मसु ॥२०॥

कामरूपः कामगतिः कामतो विचरन्निह ।
भुक्त्वा यथेप्सितान्भोगानभीष्टान्सहबन्धुभिः ॥२१॥

गणेशानुचरो भूत्वा महागणपतेः प्रियः ।
नन्दीश्वरादिसानन्दी नन्दितः सकलैर्गणैः ॥२२॥

शिवाभ्यां कृपया पुत्रनिर्विशेषं च लालितः ।
शिवभक्तः पूर्णकामो गणेश्वरवरात्पुनः ॥२३॥

जातिस्मरो धर्मपरः सार्वभौमोऽभिजायते ।
निष्कामस्तु जपन्नित्यं भक्त्या विघ्नेशतत्परः ॥२४॥

योगसिद्धिं परां प्राप्य ज्ञानवैराग्यसंस्थितः ।
निरन्तरोदितानन्दे परमानन्दसंविदि ॥२५॥

विश्वोत्तीर्णे परेपारे पुनरावृत्तिवर्जिते ।
लीनो वैनायके धाम्नि रमते नित्यनिर्वृतः ॥२६॥

यो नामभिर्हुनेदेतैरर्चयेत्पूजयेन्नरः ।
राजानो वश्यतां यान्ति रिपवो यान्ति दासताम् ॥२७॥

मन्त्राः सिध्यन्ति सर्वेपि सुलभास्तस्य सिद्धयः ।
मूलमन्त्रादपि स्तोत्रमिदं प्रियतरं मम ॥ २८ ॥

नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि ।
दूर्वाभिर्नामभिः पूजां तर्पणं विधिवच्चरेत् ॥२९॥

अष्टद्रव्यैर्विशेषेण जुहुयाद्भक्तिसंयुतः ।
तस्येप्सितानि सर्वाणि सिध्यन्त्यत्र न संशयः ॥३०॥

इदं प्रजप्तं पठितं पाठितं श्रावितं श्रुतम् ॥३१॥

व्याकृतं चर्चितं ध्यातं विमृष्टमभिनन्दितम् ।
इहामुत्र च सर्वेषां विश्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥३२॥

स्वच्छन्दचारिणाप्येष येनायन्धार्यते स्तवः ।
स रक्ष्यते शिवोद्भूतैर्गणैरध्युष्टकोटिभिः ॥३३॥

पुस्तके लिखितं यत्र गृहे स्तोत्रं प्रपूजयेत् ।
तत्र सर्वोत्तमा लक्ष्मीः सन्निधत्ते निरन्तरम् ॥३४॥

दानैरशेषैरखिलैर्व्रतैश्च तीर्थैरशेषैरखिलैर्मखैश्च ।
न तत्फलं विन्दति यद्गणेशसहस्रनाम्नां स्मरणेन सद्यः ॥३५॥

एतन्नाम्नां सहस्रं पठति दिनमणौ प्रत्यहं प्रोज्जिहाने
सायं मध्यंदिने वा त्रिषवणमथवा सन्ततं वा जनो यः ।
स स्यादैश्वर्यधुर्यः प्रभवति च सतां कीर्तिमुच्चैस्तनोति
प्रत्यूहं हन्ति विश्वं वशयति सुचिरं वर्धते पुत्रपौत्रैः ॥३६॥

अकिञ्चनोपि मत्प्राप्तिचिन्तको नियताशनः ।
जपेत्तु चतुरो मासान् गणेशार्चनतत्परः ॥३७॥

दरिद्रतां समुन्मूल्य सप्तजन्मानुगामपि ।
लभते महतीं लक्ष्मीमित्याज्ञा पारमेश्वरी ॥३८।

आयुष्यं वीतरोगं कुलमतिविमलं संपदश्चार्तदानाः
कीर्तिर्नित्यावदाता भणितिरभिनवा कान्तिरव्याधिभव्या ।
पुत्राः सन्तः कलत्रं गुणवदभिमतं यद्यदेतच्च सत्यम्
नित्यं यः स्तोत्रमेतत्पठतिगणपतेस्तस्य हस्ते समस्तम् ॥३९॥

गणञ्जयो गणपतिर्हेरम्बो धरणीधरः ।
महागणपतिर्लक्षप्रदः क्षिप्रप्रसादनः ॥४०॥

अमोघसिद्धिरमृतो मन्त्रश्चिन्तामणिर्निधिः ।
सुमङ्गलो बीजमाशापूरको वरदः शिवः ॥४१॥

काश्यपो नन्दनो वाचासिद्धो ढुण्ढिविनायकः।
मोदकैरेभिरत्रैकविंशत्या नामभिः पुमान् ॥४२॥

यः स्तौति मद्गतमना मदाराधनतत्परः।
स्तुतो नाम्नां सहस्रेण तेनाहं नात्र संशयः ॥४३॥

नमोनमः सुरवरपूजिताङ्घ्रये नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने।
नमो नमो विपुलपदैकसिद्धये नमो नमः करिकलभाननाय ते ॥४४॥

इति श्रीगणेशपुराणे उपासनाखण्डे महागणपतिप्रोक्तं
गणेशसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीविष्णु-सहस्रनामस्तोत्रम्

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥१॥
नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ ॥

वैशम्पायन उवाच—

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥३॥

युधिष्ठिर उवाच—

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥४॥
को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किं जपन्मुच्यते जंतुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥५॥

भीष्म उवाच—

जगत्प्रभुं देवदेवमनंतं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नाम सहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥६॥
तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायंस्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥७॥
अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥८॥
ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥९॥

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः ।
यद्भक्त्या पुंडरीकाक्षं स्तवैरर्चयेन्नरः सदा ॥१०॥

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यः महत् ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥११॥

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥१२॥

यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥१३॥

तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम् ॥१४॥

यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥१५॥

ऋषिर्नाम्ना सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः ।
छंदोऽनुष्टुप्तथा देवो भगवान् देवकीसुतः ॥१६॥

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम् ।
अनेकरूपं दैत्यांतं नमामि पुरुषोत्तमम् ॥१७॥

अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमहामहामंत्रस्य श्रीभगवान्वेदव्यास ऋषिः । अनुष्टुप्छंदः । श्रीकृष्णः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता । अमृतोद्भवोभानुरिति बीजम् ॥ देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः त्रिसामासामगस्सामेति हृदयम् ॥ शंखभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम् । शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम् । रथांगपाणिरक्षोभ्य इति कवचम् ॥ उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मंत्रः, श्रीकृष्ण प्रीत्यर्थं सहस्रनामस्तोत्रजपे विनियोगः ॥

अथ करन्यासः । ॐ उद्भवाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ क्षोभणाय तर्जनीभ्यां नमः । ॐ देवाय मध्यमाभ्यां नमः । ॐ उद्भवाय अनामिकाभ्यां

नमः। ॐ क्षोभणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ देवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ इति करन्यासः।

अथ हृदयादिषडङ्गन्यासः। सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः ज्ञानाय हृदयाय नमः। सहस्रमूर्धा विश्वात्मा ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा। सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः शक्तये शिखायै वषट्। त्रिसामा सामगः सामबलाय कवचाय हुम्। रथांगपाणिरक्षोभ्यः तेजसे नेत्राभ्यां वौषट्। शार्ङ्गधन्वा गदाधरः वीर्याय अस्त्राय फट्। ऋतुः सुदर्शनः कालः भूर्भुवस्वरोम् दिग्बन्धः॥ इति हृदयादिन्यासः॥

अथ ध्यानम्

ॐ क्षीरदोऽन्वितदेशे शुचिमणि विलसत्सैकतैर्मौक्तिकानां
मालाक्लृप्ताऽसनस्थः स्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डितांगः।
शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैरुपरिविरचितमुक्तपीयूषवर्षै-
रानन्दीनः पूनीयादरिनलिनगदाशंखपाणिर्मुकुन्दः॥१॥

अथवा

भूः पादौ यस्य नाभिर्वियदसुरानिलश्चन्द्रसूर्यौ च नेत्रौ
कर्णावाशाशिरोद्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वास्तेयमब्धिः।
अन्तःसंस्थस्य विश्वं सुरनरखगगोभोगिगन्धर्वदैत्यै-
श्चित्रं रंरम्यते तंत्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नमामि॥२॥

अथवा

शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वंदे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥३॥

अथवा

मेघश्यामं पीतकौशेयवासं श्रीवत्सांकं कौस्तुभोद्भासितांगम्।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षं विष्णुं वंदे सर्वलोकैकनाथम्॥४॥

अथवा

सशंखचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्॥
सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥५॥

ओं विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥२॥
योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥३॥
सर्वः शर्वशिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
संभवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥४॥
स्वयंभूः शंभुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥५॥
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥६॥
अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मंगलं परम् ॥७॥
ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥८॥
ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥९॥
सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेता प्रजाभवः ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥१०॥
अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥११॥
वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा संमितः समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥१२॥

रुद्रो बहुशिराबभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवा ।
अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥१३॥
सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यंगो वेदांगो वेदवित् कविः ॥१४॥
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः ॥
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥१५॥
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥१६॥
उपेंद्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ।
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥१७॥
वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥१८॥
महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥१९॥
महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥२०॥
मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥२१॥
अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः ।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥२२॥
गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥२३॥
अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः ।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥२४॥

आवर्त्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः ।
अहः संवर्त्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥२५॥
सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥२६॥
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥२७॥
वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥२८॥
सुभुजा दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः ।
नैकरूपा बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥२९॥
ओजस्तेजो द्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चंद्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥३०॥
अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिंदुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥३१॥
भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥३२॥
युगादिकृद्युगावर्तो नैकामयो महाशनः ।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्त्रजिदनन्तजित् ॥३३॥
इष्टो विशिष्ट शिष्टेष्टः शिखंडी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥३४॥
अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपांनिधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥३५॥
स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥३६॥

अशोकस्तारणस्तारः सूरः शौरिर्जनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥३७॥
पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् ।
महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥३८॥

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिंजयः ॥३९॥
विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥४०॥

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्त्ता विकर्त्ता गहनो गुहः ॥४१॥
व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमः स्पष्टस्तुष्टः पुष्टशुभेक्षणः ॥४२॥
रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥४३॥

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोऽक्षजः ॥४४॥
ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥४५॥
विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥४६॥
अनिर्विण्णः स्थविष्ठो भूर्धर्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥४७॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥४८॥

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥४९॥
स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥५०॥
धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत् क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥५१॥
गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥५२॥
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीरत्भृद्भूभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥५३॥
सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुषोत्तमः ।
विनयोज्यः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्वतां पतिः ॥५४॥
जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः ।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥५५॥
अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥५६॥
महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृंगः कृतान्तकृत् ॥५७॥
महावराहो गोविन्दः।सुषेणः कनकांगदी ।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥५८॥
वेधाः स्वांगोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः ।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥५९॥
भगवान्भगहानन्दी वनमाली हलायुधः ।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥६०॥

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।
दिवस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥६१॥

त्रिसामा सामगः सामो निर्वाणभेषजं भिषक् ।
संन्यासकृच्छलः शान्तो निष्ठाशान्तिपरायणः ॥६२॥

शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहिता गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥६३॥

अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः ॥६४॥

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥६५॥

स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ।
जितात्मा विविधयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥६६॥

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतः स्थिरः ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥६७॥

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥६८॥

कालनेमिनिहा वीरः शौरि सूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥६९॥

कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनंजयः ॥७०॥

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्मब्रह्मविवर्धनः ।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥७१॥

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥७२॥

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥७३॥
मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥७४॥
सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥७५॥
भूतवासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽतले ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तः दुर्धरोऽथापराजितः ॥७६॥
विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तिमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥७७॥
एकोऽनेकः सर्वाः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥७८॥
सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश्चन्दनांगदी ।
वीरहां विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥७९॥
अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् ।
सुमेधा मेधजा धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥८०॥
तेजोवृषा द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृंगो गदाग्रजः ॥८१॥
चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥८२॥
समावर्तो निवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासा दुरारिहा ॥८३॥
शुभांगो लोकसारंगः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥८४॥

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः शृंगी जयन्तस्सर्वविज्जयी ॥८५॥

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महारुद्रो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥८६॥

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
अमृतांशोऽमृतवपुः शुभ्रांगः सर्वतोमुखः ॥८७॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधो दुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥८८॥

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥८९॥

अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
अघृतः स्वघृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥९०॥

भारतभृत् स्थितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुवर्णो वायुवाहनः ॥९१॥

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियन्ता नियमो यमः ॥९२॥

सत्त्ववान्सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
अभिप्रियः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः ॥९३॥

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥९४॥

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥९५॥

सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः ।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत् स्वस्ति स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः ॥९६॥

अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वराकरः ॥९७॥

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥९८॥

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः शान्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥९९॥

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरस्रोगभीरात्मा विदिशा व्यादिशो दिशः ॥१००॥

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिरागदः ।
जननोजन जन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥१०१॥

आधारनिलयो धाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥१०२॥

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः ।
तत्त्वतत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥१०३॥

भूर्भुवः स्वस्तरुस्तारः स पिता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥१०४॥

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥१०५॥

आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥१०६॥

शंखभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥१०७॥
सर्वप्रहरणायुधः ॐ नम इति ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥१०८॥
य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयार्त्किचित् सोऽमुत्रेह च मानवः ॥१०९॥
वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥११०॥
धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाः ॥१११॥
भक्तिमान्यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ॥११२॥
यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च ।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥११३॥
न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः ॥११४॥
रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदाः ॥११५॥
दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥११६॥
वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥११७॥
न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥११८॥
इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
युज्यतात्मसुखक्षान्ति श्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ॥११९॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥१२०॥

द्यौ सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥१२१॥

ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशे वर्ततेऽदः कृष्णस्य सचराचरम् ॥१२२॥

इन्द्रियाणि मनोबुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रक्षेत्रज्ञ एव हि ॥१२३॥

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥१२४॥

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः ।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥१२५॥

योगांगानि तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादिकर्म च ।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् ॥१२६॥

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रीन् लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुंक्ते विश्वभुगव्ययः ॥१२७॥

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥१२८॥

विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् ।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥१२९॥

अर्जुन उवाच

पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तम ।
भक्तानामनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन ॥१३०॥

श्रीभगवानुवाच

यो मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव ।
सोऽहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः ॥१३१॥

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ॥१३२॥

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने ।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥१३३।

वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम् ।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥१३४॥

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥१३५॥

आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् ।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति ॥१३६॥

एष निष्कण्टकः पन्था यत्र संपूज्यते हरिः ।
कुपथं तं विजानीयाद् गोविन्दरहितागमम् ॥१३७॥

सर्ववेदेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु यत्फलम् ।
तत्फलं समवाप्नोति स्तुत्वा देवं जनार्दनम् ॥१३८॥

यो नरः पठते नित्यं त्रिकालं केशवालये ।
द्विकालमेककालं वा क्रूरं सर्वं व्यपोहति ॥१३९॥

दह्यन्ते रिपवस्तस्य सौम्याः सर्वे सदा ग्रहाः ।
विलीयन्ते च पापानि स्तवे ह्यस्मिन्प्रकीर्तिते ॥१४०॥

येन ध्यातः श्रुतो येन येनायं पठितः स्तवः ।
दत्तानि सर्वदानानि सुरा सर्वे समर्चिताः ॥१४१॥

इह लोके परे वापि न भयं विद्यते क्वचित् ।
नाम्नां सहस्रं योऽधीते द्वादश्यां मम सन्निधौ ॥१४२॥
स निर्दहति पापानि कल्पकोटिशतानि च ।
अश्वत्थसन्निधौ पार्थ कृत्वा मनसि केशवम् ॥१४३॥
पठेन्नामसहस्रं तु गवां कोटिफलं लभेत् ।
शिवालये पठन्नित्यं तुलसीवनसंस्थितः ॥१४४॥
नरो मुक्तिमवाप्नोति चक्रपाणेर्वचो यथा ।
ब्रह्महत्यादिकं पापं सर्वं सद्यो विनश्यति ॥१४५॥

इति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्यसंहितायां वैयासिक्यामानुशासनिके पर्वणि दानधर्मे भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे श्रीविष्णोर्दिव्य-सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीशिव-सहस्रनामस्तोत्रम्

सूत उवाच

श्रूयतामृषयः श्रेष्ठाः कथयामि यथा श्रुतम्
विष्णुना प्रार्थितो येन संतुष्टः परमेश्वरः ।
तदहं कथयाम्यद्य पुण्यं नामसहस्रकम् ॥ १ ॥

श्रीविष्णुरुवाच

शिवो हरो मृडो रुद्रः पुष्करः पुष्पलोचनः ।
अर्थिगम्यः सदाचारः शर्वः शंभुर्महेश्वरः ॥ २ ॥
चंद्रापीडश्चन्द्रमौलिर्विश्वं विश्वामरेश्वरः ।
वेदांतसारसंदोहः कपाली नीललोहितः ॥ ३ ॥
ध्यानाधारोऽपरिच्छेद्यो गौरीभर्त्ता गणेश्वरः ।
अष्टमूर्तिर्विश्वमूर्तिस्त्रिवर्गस्वर्गसाधनः ॥ ४ ॥
ज्ञानगम्यो दृढप्रज्ञो देवदेवस्त्रिलोचनः ।
वामदेवो महादेवः पटुः परिवृढो दृढः ॥ ५ ॥
विश्वरूपो विरूपाक्षो वागीशः शुचिसत्तमः ।
सर्वप्रमाणसंवादी वृषाङ्को वृषवाहनः ॥ ६ ॥
ईशः पिनाकी खट्वांगी चित्रवेषश्चिरंतनः ।
तमोहरो महायोगी गोप्ता ब्रह्मा च धूर्जटिः ॥ ७ ॥
कालकालः कृत्तिवासाः सुभगः प्रणवात्मकः ।
उन्नध्रः पुरुषो जुष्यो दुर्वासाः पुरशासनः ॥ ८ ॥
दिव्यायुधः स्कंदगुरुः परमेष्ठी परात्परः ।
अनादिमध्यनिधनो गिरीशो गिरिजाधवः ॥ ९ ॥

कुबेरबंधुः श्रीकंठो लोकवर्णोत्तमो मृदुः ।
समाधिवेद्यः कोदंडी नीलकंठः परश्वधी ॥ १० ॥
विशालाक्षो मृगव्याधः सुरेशः सूर्यतापनः ।
धर्मधामक्षमाक्षेत्रं भगवान्भगनेत्रभित् ॥ ११ ॥
उग्रः पशुपतिस्तार्क्ष्यः प्रियभक्तः परंतपः ।
दाता दयाकरो दक्षः कर्मंदी कामशासनः ॥ १२ ॥
श्मशाननिलयः सूक्ष्मः श्मशानस्थो महेश्वरः ।
लोककर्त्ता मृगपतिर्महाकर्त्ता महौषधिः ॥ १३ ॥
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
नीतिः सुनीतिः शुद्धात्मा सोमः सोमरतः सुखी ॥ १४ ॥
सोमपोऽमृतपः सौम्यो महातेजा महाद्युतिः ।
तजोमयोऽमृतमयोऽन्नमयश्च सुधापतिः ॥ १५ ॥
अजातशत्रुरालोकः संभाव्यो हव्यवाहनः ।
लोककरो वेदकरः सूत्रकारः सनातनः ॥ १६ ॥
महर्षिकपिलाचार्यो विश्वदीप्तिस्त्रिलोचनः ।
पिनाकपाणिर्भूदेवः स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्सुधीः ॥ १७ ॥
धातृधामा धामकरः सर्वगः सर्वगोचरः ।
ब्रह्मसृग्विश्वसृक्सर्गः कर्णिकारः प्रियः कविः ॥ १८ ॥
शाखो विशाखो गोशाखः शिवो भिषगनुत्तमः ।
गंगाप्लवोदको भव्यः पुष्कलः स्थपतिः स्थिरः ॥ १९ ॥
विजितात्मा विषयात्मा भूतवाहनसारथिः ।
सगणो गणकायश्च सुकीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥ २० ॥
कामदेवः कामपालो भस्मोद्धूलितविग्रहः ।
भस्मप्रियो भस्मशायी कामी कांतः कृतागमः ॥ २१ ॥

समावर्तो निवृत्तात्मा धर्मपुंजः सदाशिवः ।
अकल्मषश्चतुर्बाहुदुरावासो दुरासदः ॥ २२ ॥
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गः सर्वायुधविशारदः ।
अध्यात्मयोगनिलयः सुतंतुस्तंतुवर्धनः ॥ २३ ॥
शुभांगो लोकसारंगो जगदीशो जनार्दनः ।
भस्मशुद्धिकरो मेरुरोजस्वी शुद्धविग्रहः ॥ २४ ॥
असाध्यः साधुसाध्यश्च भृत्यमर्कटरूपधृक् ।
हिरण्यरेताः पौराणो रिपुजीवहरो बलः ॥ २५ ॥
महाह्रदो महागर्त्तः सिद्धवृंदारवंदित ।
व्याघ्रचर्मांबरो व्याली महाभूतो महानिधिः ॥ २६ ॥
अमृताशोऽमृतवपुः पांचजन्यः प्रभंजनः ।
पंचविंशतितत्त्वस्थः पारिजातः परावरः ॥ २७ ॥
सुलभः सुव्रतः शूरो ब्रह्मवेदनिधिर्निधिः ।
वर्णाश्रमगुरुर्वर्णी शत्रुजिच्छत्रुतापनः ॥ २८ ॥
आश्रमः क्षपणः क्षामो ज्ञानवानचलेश्वरः ।
प्रमाणभूतो दुर्ज्ञेयः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ २९ ॥
धनुर्धरो धनुर्वेदो गुणराशिर्गुणाकरः ।
सत्यः सत्यपरो दीनो धर्मांगो धर्मसाधनः ॥ ३० ॥
अनंतदृष्टिरानंदो दंडो दमयिता दमः ।
अभिवाद्यो महामायो विश्वकर्मा विशारदः ॥ ३१ ॥
वीतरागो विनीतात्मा तपस्वी भूतभावनः ।
उन्मत्तवेषः प्रच्छन्नो जितकामोऽजितप्रियः ॥ ३२ ॥
कल्याणप्रकृतिः कल्पः सर्वलोकप्रजापतिः ।
तरस्वी तारको धीमान्प्रधानप्रभुरव्ययः ॥ ३३ ॥

लोकपालोऽतर्हितात्मा कल्पादिः कमलेक्षणः ।
वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञोऽनियमो नियताश्रयः ॥ ३४ ॥
चंद्रः सूर्यः शनिः केतुर्वरांगो विद्रुमच्छविः ।
भक्तिवश्यः परब्रह्म मृगवाणार्पणोऽनघः ॥ ३५ ॥
अद्रिरद्यालयः कांतः परमात्मा जगद्गुरुः ।
सर्वकर्मालयस्तुष्टो मंगल्यो मङ्गलावृतः ॥ ३६ ॥
महातपा दीर्घतपाः स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ।
अहः संवत्सरो व्याप्तिः प्रमाणं परमं तपः ॥ ३७ ॥
संवत्सरकरो मंत्रप्रत्ययः सर्वदर्शनः ।
अजः सर्वेश्वरः सिद्धो महारेता महाबलः ॥ ३८ ॥
योगीयोग्यो महातेजाः सिद्धिः सर्वादिरग्रहः ।
वसुर्वसुमनाः सत्यः सर्वपापहरो हरः ॥ ३९ ॥
सुकीर्तिः शोभनः श्रीमानवाङ्मनसगोचरः ।
अमृतः शाश्वतः शांतो बाणहस्तः प्रतापवान् ॥ ४० ॥
कमंडलुधरो धन्वी वेदांगो वेदविन्मुनिः ।
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता लोकनाथो दुराधरः ॥ ४१ ॥
अतींद्रियो महामायः सर्ववासश्चतुष्पथः ।
कालयोगी महानादो महोत्साहो महाबलः ॥ ४२ ॥
महाबुद्धिर्महावीर्यो भूतचारी पुरंदरः ।
निशाचरः प्रेतचारी महाशक्तिर्महाद्युतिः ॥ ४३ ॥
अनिर्देश्यवपुः श्रीमान्सर्वाचार्यमनोगतिः ।
बहुश्रुतो महामायो नियतात्मा ध्रुवोऽध्रुवः ॥ ४४ ॥
ओजस्तेजो द्युतिधरो नर्तकः सर्वशासकः ।
नृत्यप्रियो नृत्यनित्यः प्रकाशात्मा प्रकाशकः ॥ ४५ ॥

स्पष्टाक्षरो बुधो मंत्रः समानः सारसंप्लवः ।
युगादिकृद्युगावर्तो गंभीरो वृषवाहनः ॥ ४६ ॥
इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः शलभः शरभो धनुः ।
तीर्थरूपस्तीर्थनामा तीर्थदृश्यः स्तुतोऽर्थदः ॥ ४७ ॥
अपांनिधिरधिष्ठानं विजयो जयकालवित् ।
प्रतिष्ठितः प्रमाणज्ञो हिरण्यकवचो हरिः ॥ ४८ ॥
विमोचनः सुरगणो विद्येशो बिंदुसंश्रयः ।
बालरूपो बलोन्मत्तो विकर्ता गहनो गुहः ॥ ४९ ॥
करणं कारणं कर्ता सर्वबंधविमोचनः ।
व्यवसायो व्यवस्थानः स्थानदो जगदादिजः ॥ ५० ॥
गुरुदो ललितोऽभेदो भावात्मात्मनि संस्थितः ।
वीरेश्वरो वीरभद्रो वीरासनविधिर्विराट् ॥ ५१ ॥
वीरचूडामणिर्वेत्ता तीव्रानंदो नदीधरः ।
आज्ञाधारस्त्रिशूली च शिपिविष्टः शिवालयः ॥ ५२ ॥
बालखिल्यो महाचापस्तिग्मांशुर्बधिरः खगः ।
अभिरामः सुशरणः सुब्रह्मण्यः सुधापतिः ॥ ५३ ॥
मघवान्कौशिको गोमान्विरामः सर्वसाधनः ।
ललाटाक्षो विश्वदेहः सारः संसारचक्रभृत् ॥ ५४ ॥
अमोघदंडो मध्यस्थो हिरण्यो ब्रह्मवर्चसी ।
परमार्थः परो मायी शंबरो व्याघ्रलोचनः ॥ ५५ ॥
रुचिर्विरंचिः स्वर्बंधुर्वाचस्पतिरहर्पतिः ।
रविर्विरोचनः स्कंदः शास्ता वैवस्वतो यमः ॥ ५६ ॥
युक्तिरुन्नतकीर्तिश्च सानुरागः परंजयः ।
कैलासाधिपतिः कांतः सविता रविलोचनः ॥ ५७ ॥

विद्धत्तमो वीतभयो विश्वभर्त्ताऽनिवारितः ।
नित्यो नियतकल्याणः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ ५८ ॥
दूरश्रवा विश्वसहो ध्येयो दुःस्वप्ननाशनः ।
उत्तारणो दुष्कृतिहा विज्ञेयो दुःसहोऽभवः ॥ ५९ ॥
अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः किरीटी त्रिदशाधिपः ।
विश्वगोप्ता विश्वकर्त्ता सुवीरो रुचिरांगदः ॥ ६० ॥
जननो जनजन्मादिः प्रीतिमान्नीतिमान्धवः ।
वसिष्ठः कश्यपो भानुर्भीमो भीमपराक्रमः ॥ ६१ ॥
प्रणवः सत्पथाचारो महाकोशो महाधनः ।
जन्माधिपो महादेवः सकलागमपारगः ॥ ६२ ॥
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा विभुर्विश्वविभूषणः ।
ऋषिर्ब्राह्मण ऐश्वर्यजन्ममृत्युजरातिगः ॥ ६३ ॥
पंचयज्ञसमुत्पत्तिर्विश्वेशो विमलोदयः ।
आत्मयोनिरनाद्यंतो वत्सलो भक्तलोकधृक् ॥ ६४ ॥
गायत्रीवल्लभः प्रांशुर्विश्वावासः प्रभाकरः ।
शिशुर्गिरिरतः सम्राट् सुषेणः सुरशत्रुहा ॥ ६५ ॥
अमोघोऽरिष्टनेमिश्च कुमुदो विगतज्वरः ।
स्वयंज्योतिस्तनुज्योतिरात्मज्योतिरचंचलः ॥ ६६ ॥
पिंगलः कपिलश्मश्रुर्भालनेत्रस्त्रयीतनुः ।
ज्ञानस्कंदो महानीतिर्विश्वोत्पत्तिरुपप्लवः ॥ ६७ ॥
भगो विवस्वानादित्यो योगपारो दिवस्पतिः ।
कल्याणगुणनामा च पापहापुण्यदर्शनः ॥ ६८ ॥
उदारकीर्तिरुद्योगी सद्योगी सदसन्मयः ।
नक्षत्रमाली नाकेशः स्वाधिष्ठानपदाश्रयः ॥ ६९ ॥

पवित्रः पापहारी च मणिपूरो नभोगतिः ।
हृत्पुंडरीकमासीनः शक्रः शांतोवृषाकपिः ॥ ७० ॥
उष्णो गृहपतिः कृष्णः समर्थोऽनर्थनाशनः ।
अधर्मशत्रुरज्ञेयः पुरुहूतः पुरुश्रुतः ॥ ७१ ॥
ब्रह्मगर्भो बृहद्गर्भो धर्मधेनुर्धनागमः ।
जगद्धितैषी सुगतः कुमारः कुशलागमः ॥ ७२ ॥
हिरण्यवर्णो ज्योतिष्मान्नानाभूतरतो ध्वनिः ।
अरागो नयनाध्यक्षो विश्वमित्रो धनेश्वरः ॥ ७३ ॥
ब्रह्मज्योतिर्वसुधामा महाज्योतिरनुत्तमः ।
मातामहो मातरिश्वा नभस्वान्नागहारधृक् ॥ ७४ ॥
पुलस्त्यः पुलहोऽगस्त्यो जातूकर्ण्यः पराशरः ।
निरावरणनिर्वारो वैरंच्यो विष्टरश्रवाः ॥ ७५ ॥
आत्मभूरनिरुद्धोऽत्रिर्ज्ञानमूर्तिर्महायशाः ।
लोकवीराग्रणीर्वीरश्चण्डः सत्यपराक्रमः ॥ ७६ ॥
व्यालाकल्पो महाकल्पः कल्पवृक्षः कलाधरः ।
अलंकरिष्णुरचलो रोचिष्णुर्विक्रमोन्नतः ॥ ७७ ॥
आयुःशब्दपतिर्वेगी प्लवनः शिखिसारथिः ।
असंसृष्टोऽतिथिः शक्रप्रमाथी पादपासनः ॥ ७८ ॥
वसुश्रवा हव्यवाहः प्रतप्ता विश्वभोजनः ।
जप्यो जरादिशमनो लोहितात्मा तनूनपात् ॥ ७९ ॥
बृहदश्वो नभोयोनिः सुप्रतीकस्तमिस्रहा ।
निदाघस्तपनो मेघः स्वक्षः परपुरंजयः ॥ ८० ॥
सुखानिलः सुनिष्पन्नः सुरभिः शिशिरात्मकः ।
वसंतो माधवो ग्रीष्मो नभस्यो बीजवाहनः ॥ ८१ ॥

अंगिरागुरुरात्रेयो विमलो विश्वपावनः ।
पावनः सुमतिर्विद्वांस्त्रैविद्यो नरवाहनः ॥ ८२ ॥
मनोबुद्धिरहंकारः क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः ।
जमदग्निर्बलनिधिर्विगालो विश्वगालवः ॥ ८३ ॥
अघोरोऽनुत्तरो यज्ञः श्रेयो निःश्रेयसांपथः ।
शैलो गगनकुन्दाभो दानवारिररिंदमः ॥ ८४ ॥
रजनीजनकश्चारुविशल्यो लोककल्पधृक् ।
चतुर्वेदश्चतुर्भावश्चतुरश्चतुरप्रियः ॥ ८५ ॥
आम्नायोऽथ समाम्नायस्तीर्थदेवशिवालयः ।
बहुरूपो महारूपः सर्वरूपश्चराचरः ॥ ८६ ॥
न्यायनिर्मायको न्यायी न्यायगम्यो निरन्तरः ।
सहस्रमूर्धा देवेन्द्रः सर्वशस्त्रप्रभञ्जनः ॥ ८७ ॥
मुंडो विरूपो विक्रांतो दण्डी दान्तो गुणोत्तमः ।
पिंगलाक्षो जनाध्यक्षो नीलग्रीवो निरामयः ॥ ८८ ॥
सहस्रबाहुः सर्वेशः शरण्यः सर्वलोकधृक् ।
पद्मासनः परंज्योति परंपारः परंफलम् ॥ ८९ ॥
पद्मगर्भो महागर्भो विश्वगर्भो विचक्षणः ।
चराचरज्ञो वरदो वरेशस्तु महाबलः ॥ ९० ॥
देवासुरगुरुर्देवो देवासुरमहाश्रयः ।
देवादिदेवो देवाग्निर्देवाग्निसुखदः प्रभुः ॥ ९१ ॥
देवासुरेश्वरो दिव्यो देवासुरमहेश्वरः ।
देवदेवमयोऽचिंत्यो देवदेवात्मसम्भवः ॥ ९२ ॥
सद्योनिरसुरव्याघ्रो देवसिंहो दिवाकरः ।
विबुधाग्रवरश्रेष्ठः सर्वदेवोत्तमोत्तमः ॥ ९३ ॥

शिवज्ञानरतः श्रीमाञ्छिखिश्रीपर्वतप्रियः ।
वज्रहस्तः सिद्धिखड्गी नरसिंहनिपातनः ॥ ९४ ॥
ब्रह्मचारी लोकचारी धर्मचारी धनाधिपः ।
नंदी नंदीश्वरोऽनंतो नग्नव्रतधरः शुचिः ॥ ९५ ॥
लिंगाध्यक्षः सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युगावहः ।
स्वधर्मा स्वर्गतः स्वर्गस्वरः स्वरमयस्वनः ॥ ९६ ॥
बाणाध्यक्षो बीजकर्ता धर्मकृद्धर्मसम्भवः ।
दंभोऽलोभोऽर्थविच्छंभुः सर्वभूतमहेश्वरः ॥ ९७ ॥
श्मशाननिलयस्त्र्यक्षः सेतुरप्रतिमाकृतिः ।
लोकोत्तरस्फुटालोकस्त्र्यंबको नागभूषणः ॥ ९८ ॥
अंधकारिर्मखद्वेषी विष्णुकंधरपातनः ।
हीनदोषोऽक्षयगुणो दक्षारिः पूषदंतभित् ॥ ९९ ॥
धूर्जटिः खंडपरशुः सकलो निष्कलोऽनघः ।
अकालः सकलाधारः पांडुराभो मृडो नटः ॥ १०० ॥
पूर्णः पूरयिता पुण्यः सुकुमारः सुलोचनः ।
सामगेयप्रियोऽक्रूरः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ १०१ ॥
मनोजवस्तीर्थकरो जटिलो जीवितेश्वरः ।
जीवितांतकरो नित्यो वसुरेता वसुप्रदः ॥ १०२ ॥
सद्गतिः सत्कृतिः सिद्धिः सज्जातिः कालकंटकः ।
कलाधरो महाकालो भूतसत्यपरायणः ॥ १०३ ॥
लोकलावण्यकर्ता च लोकोत्तरसुखालयः ।
चंद्रसंजीवनः शास्ता लोकगूढो महाधिपः ॥ १०४ ॥
लोकबन्धुर्लोकनाथः कृतज्ञः कीर्तिभूषणः ।
अनपायोऽक्षरः कांतः सर्वशस्त्रभृतांवरः ॥ १०५ ॥

तेजोमयो द्युतिधरो लोकानामग्रणीरणुः ।
शुचिस्मितः प्रसन्नात्मा दुर्जेयो दुरतिक्रमः ॥ १०६ ॥
ज्यतिर्मयो जगन्नाथो निराकारो जलेश्वरः ।
तुंबवीणो महाकोपो विशोकः शोकनाशनः ॥ १०७ ॥
त्रिलोकपस्त्रिलोकेशः सर्वशुद्धिरधोक्षजः ।
अव्यक्तलक्षणो देवो व्यक्ताव्यक्तो विशांपतिः ॥ १०८ ॥
वरशीलो वरगुणः सारो मानधनो मयः ।
ब्रह्मा विष्णुः प्रजापालो हंसो हंसगतिर्वयः ॥ १०९ ॥
वेधा विधाता धाता च स्रष्टा हर्त्ता चतुर्मुखः ।
कैलासशिखरावासी सर्वावासी सदागतिः ॥ ११० ॥
हिरण्यगर्भो द्रुहिणो भूतपालोऽथ भूपतिः ।
सद्योगी योगविद्योगी वरदो ब्राह्मणप्रियः ॥ १११ ॥
देवप्रियो देवनाथो देवज्ञो देवचिन्तकः ।
विषमाक्षो विशालाक्षो वृषदो वृषवर्धनः ॥ ११२ ॥
निर्ममो निरहंकारो निर्मोहो निरुपद्रवः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तः सर्वर्तुपरिवर्त्तकः ॥ ११३ ॥
सहस्रजित्सहस्रार्चिः स्निग्धप्रकृतिदक्षिणः ।
भूतभव्यभवन्नाथः प्रभवो भूतिनाशनः ॥ ११४ ॥
अर्थोऽनर्थो महाकोशः वरकार्यैकपंडितः ।
निष्कंटकः कृतानन्दो निर्व्याजो व्याजमर्दनः ॥११५॥
सत्त्ववान्सात्त्विकः सत्यकीर्तिः स्नेहकृतागमः ।
अकंपितो गुणग्राही नैकात्मा नैककर्मकृत् ॥ ११६ ॥
सुप्रीतः सुमुखः सूक्ष्मः सुकरो दक्षिणानिलः ।
नन्दिस्कंधधरो धुर्यः प्रकटः प्रीतिवर्धनः ॥ ११७ ॥

सर्वसत्त्वोऽपराजितः गोविंदः सत्त्ववाहनः ।
अधृतः स्वधृतः सिद्धः पूतमूर्तिर्यशोधनः ॥ ११८ ॥
वाराहश्रृंगधृक्छृङ्गी बलवानेकनायकः ।
श्रुतिप्रकाशः श्रुतिमानेकबन्धुरनेककृत् ॥ ११९ ॥
श्रीवत्सलशिवारम्भः शांतभद्रः समोयशः ।
भूशयो भूषणो भूतिर्भूतकृद्भूतभावनः ॥ १२० ॥
अकम्पो भक्तिकायस्तु कालहा नीललोहितः ।
सत्यव्रतमहात्यागी नित्यशांतिपरायणः ॥ १२१ ॥
परार्थवृत्तिर्वरदो विविक्तुस्तु विशारदः ।
शुभदः शुभकर्ता च शुभनामा शुभः स्वयम् ॥ १२२ ॥
अनर्थितोऽगुणः साक्षी ह्यकर्ता कनकप्रभः ।
स्वभावभद्रो मध्यस्थः शीघ्रगः शीघ्रनाशनः ॥ १२३ ॥
शिखण्डी कवची शूली जटी मुण्डी च कुण्डली ।
अमृत्युः सर्वदृक्सिंहस्तेजोराशिर्महामणिः ॥ १२४ ॥
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा वीर्यवान्वीर्यकोविदः ।
वेद्यश्चैव वियोगात्मा परावरमुनीश्वरः ॥ १२५ ॥
अनुत्तमो दुराधर्षो मधुरप्रियदर्शनः ।
सुरेशः शरणं सर्वः शब्दब्रह्म सतांगतिः ॥ १२६ ॥
कालपक्षः कालकारी कंकणीकृतवासुकिः ।
महेष्वासो महीभर्ता निष्कलंको विश्रृंखलः ॥ १२७ ॥
द्युमणिस्तरणिर्धन्यः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ।
विश्वतःसंवृतः स्तुत्यो व्यूढोरस्को महाभुजः ॥ १२८ ॥
सर्वयोनिर्निरातंको नरनारायणप्रियः ।
निर्लेपो निष्प्रपञ्चात्मा निर्व्यङ्गो व्यङ्गनाशनः ॥ १२९ ॥

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोता व्यासमूर्तिनिरङ्कुशः ।
निरवद्यमयोपायो विद्याराशी रसप्रियः ॥ १३० ॥
प्रशान्तबुद्धिरक्षुण्णः संग्रही नित्यसुन्दरः ।
वैयाघ्रधुर्यो धात्रीशः शाकल्यः शर्वरीपतिः ॥ १३१ ॥
परमार्थगुरुर्दृष्टिः शरीराश्रितवत्सलः ।
सोमो रसज्ञो रसदः सर्वसत्त्वावलम्बनः ॥ १३२ ॥
एवं नाम्नां सहस्रेण तुष्टाव वृषभध्वजम् ।
प्रार्थयामास शम्भुं च पूजयामास पङ्कजैः ॥ १३३ ॥
परीक्षार्थं हरेस्त्वीशः कमलेषु महेश्वरः ।
गोपयामास कमलं तदैकं भुवनेश्वरः ॥ १३४ ॥
हृदि विचारितं तेन कुतो वै कमलं गतम् ।
यातु यातु सुखेनैव नेत्रं किं कमलं न हि ॥ १३५ ॥
ज्ञात्वा तु नेत्रमुद्धृत्य सर्वसत्त्वावलम्बनम् ।
पूजयामास भावेन स्तवेनाऽनेन सर्वथा ॥ १३६ ॥
मामेति व्याहरन्नेव प्रादुरासीज्जगद्गुरुः ।
ततस्तु तमथो दृष्ट्वा तथाभूतं हरो हरिम् ॥ १३७ ॥
तस्मादवतताराशु मण्डलात्पार्थिवस्य सः ।
यथोक्तरूपिणं शंभुं तेजोराशिं समुत्थितम् ॥ १३८ ॥
नमस्कृत्य पुरः स्थित्वा स्तुतिं कृत्वा विशेषतः ।
पूजयामास देवेशः पार्वत्या सहितं शिवम् ॥ १३९ ॥
प्रसन्नवदनो भूत्वा शम्भोश्च सम्मुखे स्थितः ।
इत्थंभूतं हरो दृष्ट्वा कोटिभास्करभूषितः ॥ १४० ॥
प्राणिनामीश्वरः शम्भुर्देवदेवो जनार्दनम् ।
तदा प्राह महादेवः प्रहसन्निव शंकरः ।
संप्रेक्षमाणं तं विष्णुं कृताञ्जलिपुटं स्थितम् ॥ १४१ ॥

शङ्कर उवाच

ज्ञातं मयेदं सकलं देवकार्यं जनार्दन।
सुदर्शनाख्यं चक्रं च ददामि तव शोभनम् ॥ १४२ ॥
यद्रूपं भवता दृष्टं सर्वलोकसुखावहम्।
हिताय तव देवेश कृतं भावय सुव्रत ॥ १४३ ॥
रणाजिरेपि संस्मृत्य देवानां दुःखनाशनम्।
इदं चक्रमिदं रूपमिदं नामसहस्रकम् ॥ १४४ ॥
ये शृण्वति सदा भक्त्या सिद्धिः स्यादनपायिनी।
एवमुक्त्वा ददौ चक्रं सूर्यायुतसमप्रभम् ॥ १४५ ॥
विष्णुरपि च संस्नात्वा जग्राहोदङ्मुखस्तदा।
नमस्कृत्य तदा देवः पुनर्वचनमब्रवीत् ॥ १४६ ॥
शृणु देव मया ध्येयं पठनीयं च मे प्रभो।
दुःखानां नाशनार्थं हि वद त्वं लोकशङ्कर ॥ १४७ ॥
इति पृष्टस्तदा तेन संतुष्टस्तु शिवोऽब्रवीत्।
रूपं ध्येयं मदीयं वै सर्वानर्थप्रशांतये ॥ १४८ ॥
अनेकदुःखनाशार्थं पाठ्यं नामसहस्रकम्।
धार्यं चक्रं सदा मेऽद्य सर्वानर्थप्रशान्तये ॥ १४९ ॥
अन्ये च ये पठिष्यन्ति पाठयिष्यन्ति नित्यशः।
तेषां दुःखं न स्वप्नेऽपि जायते नात्र संशयः ॥ १५० ॥
राज्ञां च संकटे प्राप्ते शतावर्तं चरेद्यदा।
सांगं च विधियुक्तो हि कल्याणं लभते नरः ॥ १५१ ॥
रोगनाशकरं ह्येतद्विद्यादायकमुत्तमम्।
समुद्दिश्य फलं श्रेष्ठं पठन्ति फलमुत्तमम् ॥ १५२ ॥
लभन्ते नाऽत्र संदेहः सत्यमेतद्व्रतं मम।
प्रातः समुत्थाय सदा पूजां कृत्वा मदीयिकाम् ॥ १५३ ॥

पठतो मत्समक्षं वै नित्यं सिद्धिर्न दूरतः ।
ऐहिकीं सिद्धिमासाद्य परलोकसमुद्भवाम् ॥ १५४ ॥
प्राप्नोति पाठको नित्यमष्टमासान् सुरेश्वर ।
सायुज्यमुक्तिमायाति नाऽत्र कार्या विचारणा ॥ १५५ ॥
एवमुक्त्वा तदा विष्णुं शंकरः प्रीतमानसः ।
उपस्पृश्य कराभ्यां च उवाच शंकरः पुनः ॥ १५६ ॥
वरदोऽस्मि सुरश्रेष्ठ वरान्वर यथेप्सितान् ।
भक्त्या वशीकृतो नूनं स्तवेनानेन वै पुनः ॥ १५७ ॥
इत्युक्तो देवदेवेन देवदेवं प्रणम्य तम् ।
यथेदानीं कृपा देव क्रियते चाऽप्यतःपरम् ॥ १५८ ॥
कार्या चैव विशेषेण कृपालुत्वात्त्वया प्रभो ।
त्वयि भक्तिं महादेव प्रयच्छ वरमुत्तमम् ॥ १५९ ॥
नाऽन्यमिच्छामि भगवन्पूर्णोऽहं ते प्रसादतः ।
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य दयावान्सुतरां भवः ॥ १६० ॥
प्राह त्वेनं महादेवः परमात्मानमच्युतम् ।
मयि भक्तिश्च वन्द्यस्त्वं पूज्यश्चैव सुरैरपि ॥ १६१ ॥
विश्वंभरस्त्वदीयं वै नाम पापहरं परम् ।
भविष्यति न सन्देहो मत्प्रसादात्सुरोत्तम ॥ १६२ ॥
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे रुद्रो भगवान्नीललोहितः ।
जनार्दनोऽपि भगवान्वचनाच्छंकरस्य च ॥ १६३ ॥
प्राप्य चक्रं शुभं ध्यानं स्तोत्रमेतन्निरन्तरम् ।
पपाठाऽध्यापयामास भक्तेभ्यस्तदुपादिशत् ॥ १६४ ॥
अन्येऽपि ये पठिष्यंति ते विन्दन्तु तथा फलम् ।
इति पृष्टं समाख्यातं शृण्वतां पापहारकम् ॥ १६५ ॥
अतः परं च किं श्रेष्ठाः प्रष्टुमिच्छथ वै पुनः ॥ १६६ ॥

इति श्रीशिवमहापुराणे ज्ञानसंहितायां शिवसहस्र-
नामकथनं नामैकसप्ततितमोऽध्यायः ॥

श्रीगोपाल-सहस्रनामस्तोत्रम्

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुं करे कंकणम् ।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावलि-
र्गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूड़ामणिः ॥ १ ॥
फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे ॥ २ ॥

ॐ क्लींदेवः कामदेवः कामबीजशिरोमणिः ।
श्रीगोपालो महीपालो वेदवेदान्तपारगः ॥ १ ॥
कृष्णः कमलपत्राक्षः पुण्डरीकः सनातनः ।
गोपतिर्भूपतिः शास्ता प्रहर्ता विश्वतोमुखः ॥ २ ॥
आदिकर्ता महाकर्ता महाकालः प्रतापवान् ।
जगज्जीवो जगद्धाता जगद्भर्ता जगद्वसुः ॥ ३ ॥
मत्स्यो भीमः कुहूभर्ता हर्ता वाराहमूर्तिमान् ।
नारायणो हृषीकेशो गोविन्दो गरुडध्वजः ॥ ४ ॥
गोकुलेन्द्रो महीचन्द्रः शर्वरीप्रियकारकः ।
कमला मुखलोलाक्षः पुण्डरीकः शुभावहः ॥ ५ ॥
दुर्वासः कपिलो भौमः सिन्धुसागरसङ्गमः ।
गोविन्दो गोपतिर्गोत्रः कालिन्दीप्रेमपूरकः ॥ ६ ॥
गोपस्वामी गोकुलेन्द्रो गोवर्धनवरप्रदः ।
नन्दादिगोकुलत्राता दाता दारिद्र्यभञ्जनः ॥ ७ ॥

सर्वमङ्गलदाता च सर्वकामप्रदायकः ।
आदिकर्ता महीभर्ता सर्वसागरसिन्धुजः ॥ ८ ॥
गजगामी गजोद्धारी कामी कामकलानिधिः ।
कलङ्करहितश्चन्द्रो बिम्बास्यो बिम्बसत्तमः ॥ ९ ॥
मालाकारः कृपाकारः कोकिलास्वरभूषणः ।
रामो नीलाम्बरो देवो हली दुर्दममर्दनः ॥ १० ॥
सहस्राक्षपुरीभेत्ता महामारीविनाशनः ।
शिवः शिवतमो भेत्ता बलारातिप्रपूजकः ॥ ११ ॥
कुमारीवरदायी च वरेण्यो मीनकेतनः ।
नरो नारायणो धीरो राधापतिरुदारधीः ॥ १२ ॥
श्रीपतिः श्रीनिधिः श्रीमान्मापतिः प्रतिराजहा ।
वृन्दपतिः कुलग्रामी धामी ब्रह्म सनातनः ॥ १३ ॥
रेवतीरमणो रामः प्रियश्चञ्चललोचनः ।
रामायण शरीरोऽयं रामी रामः श्रियः पतिः ॥ १४ ॥
शर्वरः शर्वरी शर्वः सर्वत्र शुभदायकः ।
राधाराधयिताऽऽराधी राधाचित्तप्रमोदकः ॥ १५ ॥
राधारतिसुखोपेतो राधामोहनतत्परः ।
राधावशीकरो राधाहृदयाम्भोजषट्पदः ॥ १६ ॥
राधालिंगनसम्मोहो राधानर्तनकौतुकः ।
राधासंजातसंप्रीतो राधाकाम्यफलप्रदः ॥ १७ ॥
वृन्दापतिः कोशनिधिः कोकशोकविनाशकः ।
चन्द्रापतिश्चन्द्रपतिश्चण्डको दण्डभञ्जनः ॥ १८ ॥
रामो दाशरथी रामो भृगुवंशसमुद्भवः ।
आत्मारामो जितक्रोधो मोहो मोहान्धभञ्जनः ॥ १९ ॥

वृषभानुर्भवो भावः काश्यपिः करुणानिधिः ।
कोलाहलो हलीहाली हेली हलधरप्रियः ॥ २० ॥
राधामुखाब्ज मार्तण्डो भास्करो रविजो विधुः ।
विधिर्विधाता वरुणो वारुणो वारुणीप्रियः ॥ २१ ॥
रोहिणीहृदयानन्दो वसुदेवात्मजो बली ।
नीलाम्बरो रौहिणेयो जरासन्धवधोऽमलः ॥ २२ ॥
नागो नवाम्भो विरदो विरहा वरदो बली ।
गोपथो विजयी विद्वान् शिपिविष्टः सनातनः ॥ २३ ॥
परशुरामवचोग्राही वरग्राही शृगालहा ।
दमघोषोपदेष्टा च रथग्राही सुदर्शनः ॥ २४ ॥
वीरपत्नीयशस्त्राता जराव्याधिविघातकः ।
द्वारकावासतत्त्वज्ञो हुताशनवरप्रदः ॥ २५ ॥
यमुनावेगसंहारी नीलाम्बरधरः प्रभुः ।
विभुः शरासनो धन्वी गणेशो गणनायकः ॥ २६ ॥
लक्ष्मणो लक्षणो लक्ष्यो रक्षोवंशविनाशनः ।
वामनो वामनीभूतो वामनो वामनारुहः ॥ २७ ॥
यशोदानन्दनः कर्ता यमलार्जुनमुक्तिदः ।
उलूखली महामानी दामबद्धाह्वयी शमी ॥ २८ ॥
भक्तानुकारी भगवान् केशवो बलधारकः ।
केशिहा मधुहा मोही वृषासुरविघातकः ॥ २९ ॥
अघासुरविनाशी च पूतनामोक्षदायकः ।
कुब्जाविनोदी भगवान् कंशमृत्युर्महामखी ॥ ३० ॥
अश्वमेधो वाजपेयो गोमेधो नरमेधवान् ।
कन्दर्पकोटिलावण्यश्चन्द्रकोटिसुशीतलः ॥ ३१ ॥

रविकोटिप्रतीकाशो वायुकोटिमहाबलः ।
ब्रह्मा ब्रह्माण्डकर्ता च कमलावाञ्छितप्रदः ॥ ३२ ॥
कमलाकमलाक्षश्च कमलामुखलोलुपः ।
कमलाव्रतधारी च कमलाभः पुरन्दरः ॥ ३३ ॥
सौभाग्याधिकचित्तोऽयं महामायी महोत्कटः ।
तारकारिः सुरत्राता मारीचक्षोभकारकः ॥ ३४ ॥
विश्वामित्र-प्रियो दान्तो रामो राजीवलोचनः ।
लङ्काधिपकुलध्वंसी विभीषणवरप्रदः ॥ ३५ ॥
सीतानन्दकरो रामो वीरो वारिधिबन्धनः ।
खरदूषणसंहारी साकेतपुरवासवान् ॥ ३६ ॥
चन्द्रावलीपतिः कूलः केशिकंसवधोऽमलः ।
माधवो मधुहा माध्वी माध्वीको माधवीविभुः ॥ ३७ ॥
मुञ्जाटवीगाहमानो धेनुकारिर्धरात्मजः ।
वंशीवटविहारी च गोवर्धनवनाश्रयः ॥ ३८ ॥
तथा तालवनोद्देशी भाण्डीरवनशंखहा ।
तृणावर्तकृपाकारी वृषभानुसुतापतिः ॥ ३९ ॥
राधाप्राणसमो राधावदनाब्जमधुव्रतः ।
गोपीरञ्जनदैवज्ञो लीलाकमलपूजितः ॥ ४० ॥
क्रीड़ाकमलसन्दोहो गोपिकाप्रीतिरञ्जनः ।
रञ्जको रञ्जनो रंगो रंगी रंगमहीरुहः ॥ ४१ ॥
कामः कामारिभक्तोऽयं पुराणपुरुषः कविः ।
नारदो देवलो भीमो बालो बालमुखाम्बुजः ॥ ४२ ॥
अम्बुजो ब्रह्मसाक्षी च योगी दत्तवरो मुनिः ।
ऋषभः पर्वतो ग्रामो नदीपवनवल्लभः ॥ ४३ ॥

पद्मनाभः सुरज्येष्ठो ब्रह्मारुद्रोऽहिभूषितः ।
गणानां त्राणकर्ता च गणेशो ग्रहिलो ग्रही ॥ ४४ ॥
गणाश्रयो गणाध्यक्षः क्रोड़ीकृतजगत्त्रयः ।
यादवेन्द्रो द्वारकेन्द्रो मथुरावल्लभो धुरी ॥ ४५ ॥
भ्रमरः कुन्तली कुन्तीसुतरक्षी महामखी ।
यमुनावरदाता च कश्यपस्य वरप्रदः ॥ ४६ ॥
शङ्खचूड़वधोद्दाम-गोपीरक्षणतत्परः ।
पाञ्चजन्यकरो रामी त्रिरामी वनजो जयः ॥ ४७ ॥
फाल्गुनः फाल्गुनसखो विराधवधकारकः ।
रुक्मिणीप्राणनाथश्च सत्यभामाप्रियङ्करः ॥ ४८ ॥
कल्पवृक्षो महावृक्षो दानवृक्षो महाफलः ।
अङ्कुशो भूसुरो भावो भ्रामको भामको हरिः ॥ ४९ ॥
सरलः शाश्वतो वीरो यदुवंशी शिवात्मकः ।
प्रद्युम्नो बलकर्ता च प्रहर्ता दैत्यहा प्रभुः ॥ ५० ॥
महाधनो महावीरो वनमालाविभूषणः ।
तुलसीदामशोभाढ्यो जालन्धरविनाशनः ॥ ५१ ॥
शूरः सूर्यो मृताण्डश्च भास्करो विश्वपूजितः ।
रविस्तमोहा वह्निश्च वाड़वो वड़वानलः ॥ ५२ ॥
दैत्यदर्पविनाशी च गरुड़ो गरुड़ाग्रजः ।
गोपीनाथो महीनाथो वृन्दानाथो विरोधकः ॥ ५३ ॥
प्रपञ्चो पञ्चरूपश्च लतागुल्मश्च गोपितः ।
गङ्गा च यमुनारूपो गोदा वेत्रवती तथा ॥ ५४ ॥
कावेरी नर्मदा ताप्ती गण्डकी सरयूस्तथा ।
राजसस्तामसः सत्त्वी सर्वाङ्गी सर्वलोचनः ॥ ५५ ॥

सुधामयोऽ मृतमयो योगिनीवल्लभः शिवः ।
बुद्धो बुद्धिमतां श्रेष्ठो विष्णुजिष्णुः शचीपतिः ॥ ५६ ॥
वंशी वंशधरो लोको विलोको मोहनाशनः ।
रवरावो रवो रावो बलो बालो बलाहकः ॥ ५७ ॥
शिवो रुद्रो नलो नीलो लांगली लांगलाश्रयः ।
पारदः पावनो हंसो हंसारूढ़ो जगत्पतिः ॥ ५८ ॥
मोहिनीमोहनी माया महामाया महासुखी ।
वृषावृषाकपिः कालः कालीदमनकारकः ॥ ५६ ॥
कुब्जाभाग्यप्रदो वीरो रजकक्षयकारकः ।
कोमलो वारुणो राजा जलजो जलधारकः ॥ ६० ॥
हारकः सर्वपापघ्नः परमेष्ठी पितामहः ।
खड्धारी कृपाकारी राधारमणसुन्दरः ॥ ६१ ॥
द्वादशारण्यसम्भोगी शेषनागफणालयः ।
कामः श्यामः सुखश्रीदः श्रीदः श्रीदपतिः कृती ॥ ६२ ॥
हरिर्नारायणो नारो नरोत्तम इषुप्रियः ।
गोपालीचित्तहर्ता च कर्ता संसारतारकः ॥ ६३ ॥
आदिदेवो महादेवो गौरीगुरुरनाश्रयः ।
साधुर्मधुर्विधुर्धाता भ्राताऽक्रूरपरायणः ॥ ६४ ॥
रोलम्बी च हयग्रीवो वानरारिर्वनाश्रयः ।
वनं वनी वनाध्यक्षो महावन्द्यो महामुनिः ॥ ६५ ॥
स्यामन्तकमणिप्राज्ञो विज्ञो विघ्नविघातकः ।
गोवर्धनो वर्धनीयो वर्धनी वर्धनप्रियः ॥ ६६ ॥
वर्धन्यो वर्धनो वर्धी वर्धिष्णुः सुमुखः प्रियः ।
वर्धितो वृद्धको वृद्धो वृन्दारकजनप्रियः ॥ ६७ ॥

गोपालरमणीभर्ता साम्बकुष्ठविनाशकः ।
रुक्मिणीहरणःप्रेम प्रेमी चन्द्रावलीपतिः ॥ ६८ ॥
श्रीकर्ता विश्वभर्ता च नरो नारायणो बली ।
गणो गणपतिश्चैव दत्तात्रेयो महामुनिः ॥ ६९ ॥
व्यासो नारायणो दिव्यो भव्यो भावुकधारकः ।
श्वः श्रेयसं शिवं भद्रं भावुकं भाविकं शुभम् ॥ ७० ॥
शुभात्मकः शुभः शास्ता प्रशस्तो मेघनादहा ।
ब्रह्मण्यदेवो दीनानामुद्धारकरणक्षमः ॥ ७१ ॥
कृष्णः कमलपत्राक्षः कृष्णः कमललोचनः ।
कृष्णः कामी सदा कृष्णः समस्तप्रियकारकः ॥ ७२ ॥
नन्दो नन्दी महानादी मादी मादनकः किली ।
मिली हिली गिली गाली गोली गोलालयो गुली ॥ ७३ ॥
गुग्गुली मारकी शाखी वटः पिप्पलकः कृती ।
म्लेच्छहा कालकर्ता च यशोदायश एव च ॥ ७४ ॥
अच्युतः केशवो विष्णुर्हरिः सत्यो जनार्दनः ।
हंसो नारायणः नीलो लीलो भक्तिपरायणः ॥ ७५ ॥
जानकीवल्लभो रामो विरामो विघ्ननाशनः ।
सहभानुर्महाभानुर्वीरबाहुर्महोदधिः ॥ ७६ ॥
समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।
गोकुलानन्दकारी च प्रतिज्ञापरिपालकः ॥ ७७ ॥
सदारामः कृपारामो महारामो धनुर्धरः ।
पर्वतः पर्वताकारो गयो गेयो द्विजप्रियः ॥ ७८ ॥
कमलाश्वतरो रामो रामायणप्रवर्तकः ।
द्यौर्दिवो दिवसो दिव्यो भव्यो भावीभयापहः ॥ ७९ ॥

पार्वतीभाग्यसहितो भर्ता लक्ष्मीविलासवान् ।
विलासी साहसी सर्वी गर्वी गर्वितलोचनः ॥ ८० ॥
मुरारिर्लोकधर्मज्ञो जीवनो जीवनान्तकः ।
यमो यमादियमनो यामी यामविघातकः ॥ ८१ ॥
वंसुली पांसुली पांसुः पाण्डुरर्जुनवल्लभः ।
ललिता-चन्द्रिका-माली माली मालाम्बुजाश्रयः ॥ ८२ ॥
अम्बुजाक्षो महायक्षो दक्षश्चिन्तामणिः प्रभुः ।
मणिर्दिनमणिश्चैव केदारो बदरी श्रयः ॥ ८३ ॥
बदरीवनसंप्रीतो व्यासः सत्यवतीसुतः ।
अमरारिनिहन्ता च सुधासिन्धुविधूदयः ॥ ८४ ॥
चन्द्रो रविः शिवः शूली चक्री चैव गदाधरः ।
श्रीकर्त्ता श्रीपतिः श्रीदः श्रीदेवो देवकीसुतः ॥ ८५ ॥
पुण्डरीकाक्षः पद्मश्च पद्मनाभो जगत्पतिः ।
वासुदेवो प्रमेयात्मा केशवो गरुड़ध्वजः ॥ ८६ ॥
नारायणः परंधाम देवदेवो महेश्वरः ।
चक्रपाणिः कलापूर्णो वेदवेद्यो दयानिधिः ॥ ८७ ॥
भगवान् सर्वभूतेशो गोपालः सर्वपालकः ।
अनन्तो निर्गुणो नित्यो निर्विकल्पो निरञ्जनः ॥ ८८ ॥
निराधारो निराकारो निराभासो निराश्रयः ।
पुरुषः प्रणवातीतो मुकुन्दः परमेश्वरः ॥ ८९ ॥
क्षणावनिः सार्वभौमो वैकुण्ठो भक्तवत्सलः ।
विष्णुर्दामोदरः कृष्णो माधवो मथुरापतिः ॥ ९० ॥
देवकीगर्भसंभूतो यशोदावत्सलो हरिः ।
शिवः संकर्षणः शंभुर्भूतनाथो दिवस्पतिः ॥ ९१ ॥

अव्ययः सर्वधर्मज्ञो निर्मलो निरुपद्रवः ।
निर्वाणनायको नित्यो नीलजीमूतसन्निभः ॥ ९२ ॥
कलाक्षयश्च सर्वज्ञः कमलारूपतत्परः ।
हृषीकेशः पीतवासा वसुदेवप्रियात्मजः ॥ ९३ ॥
नन्दगोपकुमारार्थो नवनीताशनो विभुः ।
पुराणपुरुषः श्रेष्ठः शङ्खपाणिः सुविक्रमः ॥ ९४ ॥
अनिरुद्धश्चक्ररथः शार्ङ्गपाणिश्चतुर्भुजः ।
गदाधरः सुरार्तिघ्नो गोविदो नन्दकायुधः ॥ ९५ ॥
वृन्दवनचरः शौरिर्वेणुवाद्यविशारदः ।
तृणावर्तान्तको भीमसाहसो बहुविक्रमः ॥ ९६ ॥
शकटासुरसंहारी बकासुरविनाशनः ।
धेनुकासुरसंहारी पूतनारिर्नृकेशरी ॥ ९७ ॥
पितामहो गुरुः साक्षो प्रत्यगात्मा सदाशिवः ।
अप्रमेयः प्रभुः प्राज्ञोऽप्रतर्क्यः स्वप्नवर्द्धनः ॥ ९८ ॥
धन्यो मान्यो भवो भावो धीरः शान्तो जगद्गुरुः ।
अन्तर्यामीश्वरो दिव्यो दैवज्ञो देवसंस्तुतः ॥ ९९ ॥
क्षीराब्धिशयनो धाता लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणाग्रजः ।
धात्रीपतिरमेयात्मा चन्द्रशेखरपूजितः ॥ १०० ॥
लोकसाक्षी जगच्चक्षुः पुण्यचारित्रकीर्तनः ।
कोटिमन्मथसौन्दर्यो जगन्मोहनविग्रहः ॥ १०१ ॥
मन्दस्मिताननो गोपो गोपिकापरिवेष्टितः ।
फुल्लारविन्दनयनश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥ १०२ ॥
इन्दीवरदलश्यामो बर्हिबर्हावतंसकः ।
मुरलीनिनदाह्लादो दिव्यमाल्याम्बरावृतः ॥ १०३ ॥

सुकपोलयुगः सुभ्रूयुगलः सुललाटकः ।
कम्बुग्रीवो विशालाक्षो लक्ष्मीवांश्शुभलक्षणः ॥ १०४ ॥
पीनवक्षाश्चतुर्बाहुश्चतुर्मूर्तिस्त्रिविक्रमः ।
कलङ्करहितः शुद्धो दुष्टशत्रुनिबर्हणः ॥ १०५ ॥
किरीटकुण्डलधरः कटकांगदमण्डितः ।
मुद्रिकाभरणोपेतः कटिसूत्रविराजितः ॥ १०६ ॥
मंजीररंजितपदः सर्वाभरणभूषितः ।
विन्यस्तपादयुगलो दिव्यमंगलविग्रहः ॥ १०७ ॥
गोपिकानयनानन्दः पूर्णचन्द्रनिभाननः ।
समस्तजगदानन्दः सुन्दरो लोकनन्दनः ॥ १०८ ॥
यमुनातीरसञ्चारी राधामन्मथवैभवः ।
गोपनारीप्रियो दान्तो गोपीवस्त्रापहारकः ॥ १०९ ॥
शृंगारमूर्तिः श्रीधामा तारको मूलकारणम् ।
सृष्टिसंरक्षणोपायः क्रूरासुरविभञ्जनः ॥ ११० ॥
नरकासुरसंहारी मुरारिर्वैरिमर्दनः ।
आदितेयप्रियो दैत्यभीकरो यदुशेखरः ॥ १११ ॥
जरासन्धकुलध्वंसी कंसारातिः सुविक्रमः ।
पुण्यश्लोकः कीर्तनीयो यादवेन्द्रो जगन्नुतः ॥ ११२ ॥
रुक्मिणीरमणो रामः भामाजाम्बवतीप्रियः ।
मित्रविन्दानाग्नजितो लक्ष्मणसमुपासितः ॥ ११३ ॥
सुधाकरकुले जातो नन्तप्रबलविक्रमः ।
सर्व सौभाग्यसम्पन्नो द्वारकापत्तने स्थितः ॥ ११४ ॥
भद्रासूर्यसुतानाथो लीलामानुषविग्रहः ।
सहस्रषोडशस्त्रीशो भोगमोक्षैकदायकः ।
वेदान्तवेद्यः संवेद्यो वैद्यो ब्रह्माण्डनायकः ॥ ११५ ॥

गोवर्धनधरो नाथः सर्वजीवदयापरः ।
मूर्तिमान् सर्वभूतात्मा आर्तत्राणपरायणः ॥ ११६ ॥
सर्वज्ञः सर्वसुलभः सर्वशास्त्रविशारदः ।
षड्गुणैश्वर्यसम्पन्नः पूर्णकामो धुरन्धरः ॥ ११७ ॥
महानुभावः कैवल्यदायको लोकनायकः ।
आदिमध्यान्तरहितः शुद्धसात्त्विकविग्रहः ॥ ११८ ॥
असमानः समस्तात्मा शरणागतवत्सलः ।
उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणं सर्वकारकणम् ॥ ११९ ॥
गम्भीरः सर्वभावज्ञः सच्चिदानन्दविग्रहः ।
विष्वक्सेनः सत्यसन्धः सत्यवाक् सत्यविक्रमः ॥ १२० ॥
सत्यव्रतः सत्यरतः सत्यधर्मपरायणः ।
आपन्नार्तिप्रशमनो द्रौपदीमानरक्षकः ॥ १२१ ॥
कन्दर्पजनकः प्राज्ञो जगन्नाटकवैभवः ।
भक्तिवश्यो गुणातीतः सर्वैश्वैर्यप्रदायकः ॥ १२२ ॥
दमघोषसुतद्वेषी बाणबाहुविखण्डनः ।
भीष्मभक्तिप्रदो दिव्यः कौरवान्वयनाशनः ॥ १२३ ॥
कौन्तेयप्रियबन्धुश्च पार्थस्यन्दनसारथिः ।
नरसिंहो महावीरः स्तम्भजातो महाबलः ॥ १२४ ॥
प्रह्लादवरदः सत्यो देवपूज्यो भयंकरः ।
उपेन्द्रइन्द्रावरजो वामनो बालबन्धनः ॥ १२५ ॥
गजेन्द्रवरदः स्वामी सर्वदेवनमस्कृतः ।
शेषपर्यङ्कशयनो वैनतेयरथो जयी ॥ १२६ ॥
अव्याहतबलैश्वर्यसम्पन्नः पूर्णमानसः ।
योगेश्वरेश्वरः साक्षी क्षेत्रज्ञो ज्ञानदायकः ॥ १२७ ॥

योगिहृत्पङ्कजावासो योगमायासमन्वितः।
नादबिन्दुकलातीतश्चतुर्वर्गफलप्रदः ॥ १२८ ॥
सुषुम्नामार्गसञ्चारी देहस्यान्तरसंस्थितः।
देहेन्द्रियमनःप्राणसाक्षी चेतः प्रसादकः ॥ १२९ ॥
सूक्ष्मः सर्वगतो देही ज्ञानदर्पणगोचरः।
तत्त्वत्रयात्मको व्यक्तः कुण्डलीसमुपाश्रितः ॥ १३० ॥
ब्रह्मण्यः सर्वधर्मज्ञः शान्तो दान्तो गतक्लमः।
श्रीनिवासः सदानन्दो विश्वमूर्तिर्महाप्रभुः ॥ १३१ ॥
सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
समस्तभुवनाधारः समस्तप्राणरक्षकः ॥ १३२ ॥
समस्तसर्वभावज्ञो गोपिकाप्राणवल्लभः।
नित्योत्सेवो नित्यसौख्यो नित्यश्रीर्नित्यमंगलः ॥ १३३ ॥
व्यूहार्चितो जगन्नाथः श्रीवैकुण्ठपुराधिपः।
पूर्णानन्दघनीभूतो गोपवेषधरो हरिः ॥ १३४ ॥
कलापकुसुमश्यामः कोमलः शान्तिविग्रहः!
गोपाङ्गनावृतोऽनन्तो वृन्दावनसमाश्रयः ॥ १३५ ॥
वेणुवादरतः श्रेष्ठो देवानां हितकारकः।
बालक्रीडासमासक्तो नवनीतस्य तस्करः ॥ १३६ ॥
गोपालकामिनीजारश्चौरराजशिखामणिः।
परंज्योतिः पराकाशः परावासः परिस्फुटः ॥ १३७ ॥
अष्टादशाक्षरो मन्त्रो व्यापको लोकपावनः।
सप्तकोटिमहामन्त्रशेखरो देवशेखरः ॥ १३८ ॥
विज्ञानं ज्ञानसन्धानस्तेजोराशिर्जगत्पतिः।
भक्तलोकप्रसन्नात्मा भक्तमन्दारविग्रहः ॥ १३९ ॥

भक्तदारिद्र्यदमनो भक्तानां प्रीतिदायकः ।
भक्ताधीनमनाः पूज्यो भक्तलोकशिवंकरः ॥ १४० ॥
भक्ताभीष्टप्रदः सर्वभक्ताघौघनिकृन्तनः ।
अपारकरुणासिन्धुर्भगवान् भक्ततत्परः ॥ १४२ ॥

❀ अथ फलश्रुतिः ❀

इति श्रीराधिकानाथसहस्रं नामकीर्तनम् ।
स्मरणात्पापराशीनां खण्डनं मृत्युनाशनम् ॥ १ ॥
वैष्णवानां प्रियकरं महारोगनिवारणम् ।
ब्रह्महत्यासुरापानं परस्त्रीगमनं तथा ॥ २ ॥
परद्रव्यापहरणं परद्वेषसमन्वितम् ।
मानसं वाचिकं कायं यत्पापं पापसम्भवम् ॥ ३ ॥
सहस्रनामपठनात्सर्वं नश्यति तत्क्षणात् ।
महादारिद्र्ययुक्तो यो वैष्णवो विष्णुभक्तिमान् ॥ ४ ॥
कार्तिक्यां सम्पठेद्रात्रौ शतमष्टोत्तरं क्रमात् ।
पीताम्बरधरो धीमान् सुगन्धैः पुष्पचन्दनैः ॥ ५ ॥
पुस्तकं पूजयित्वा तु नैवेद्यादिभिरेव च ।
राधाध्यानांकितो धीरो वनमालाविभूषितः ॥ ६ ॥
शतमष्टोत्तरं देवि पठेन्नामसहस्रकम् ।
चैत्रशुक्ले च कृष्णे च कुहूसंक्रान्तिवासरे ॥ ७ ॥
पठितव्यं प्रयत्नेन त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात् ।
तुलसीमालया युक्तो वैष्णवो भक्तितत्परः ॥ ८ ॥
रविवारे च शुक्रे च द्वादश्यां श्राद्धवासरे ।
ब्राह्मणं पूजयित्वा च भोजयित्वा विधानतः ॥ ९ ॥

पठेन्नामसहस्रं च ततः सिद्धिः प्रजायते ।
महानिशायां सततं वैष्णवो यः पठेत्सदा ॥ १० ॥
देशान्तरगता लक्ष्मीः समायाति न संशयः ।
त्रैलोक्ये च महादेवि सुन्दर्यः काममोहिताः ॥ ११ ॥
मुग्धाः स्वयं समायान्ति वैष्णवं च भजन्ति ताः ।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥ १२ ॥
गर्भिणी जनयेत्पुत्रं कन्या विन्दति सत्पतिम् ।
राजानो वश्यतां यान्ति किं पुनः क्षुद्रमानवाः ॥ १३ ॥
सहस्रनामश्रवणात्पठनात्पूजनात्प्रिये ।
धारणात्सर्वमाप्नोति वैष्णवो नात्र संशयः ॥ १४ ॥
वंशीवटे चान्यवटे तथा पिप्पलकेऽथवा ।
कदम्बपादपतले गोपालमूर्तिसन्निधौ ॥ १५ ॥
यः पठेद्वैष्णवो नित्यं स याति हरिमन्दिरम् ।
कृष्णेनोक्तं राधिकायै मया प्रोक्तं तथा शिवे ॥ १६ ॥
नारदाय पुरा प्रोक्तं नारदेन प्रकाशितम् ।
मया तुभ्यं वरारोहे प्रोक्तमेतत्सुदुर्लभम् ॥ १७ ॥
गोपनीयं प्रयत्नेन न प्रकाश्यं कथञ्चन ।
शठाय पापिने चैव लम्पटाय विशेषतः ॥ १८ ॥
न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन ।
देयं शिष्याय शान्ताय विष्णुभक्तिरताय च ॥ १९ ॥
गोदानब्रह्मयज्ञादेर्वाजपेयशतस्य च ।
अश्वमेधसहस्रस्य फलं पाठे भवेद् ध्रुवम् ॥ २० ॥
मोहनं स्तंभनं चैव मारणोच्चाटनादिकम् ।
यद्यद्वांछति चित्तेन तत्तत्प्राप्नोति वैष्णवः ॥ २१ ॥

एकादश्यां नरः स्नात्वा सुगन्धिद्रव्यतैलकैः ।
आहारं ब्रह्मणे दत्त्वा दक्षिणां स्वर्णभूषणम् ॥ २२ ॥
तत आरम्भकर्त्तास्य सर्वं प्राप्नोति मानवः ।
शतावृत्तं सहस्रं च यः पठेद्वैष्णवो जनः ॥ २३ ॥
श्रीवृन्दावनचन्द्रस्य प्रसादात्सर्वमाप्नुयात् ।
यद्गृहे पुस्तकं देवि पूजितं चैव तिष्ठति ॥ २४ ॥
न मारी न च दुर्भिक्षं नोपसर्गभयं क्वचित् ।
सर्पाद्या भूत-यक्षाद्या नश्यन्ते नात्र संशयः ॥ २५ ॥
श्रीगोपालो महादेवि वसेत्तस्य गृहे सदा ।
गृहे यत्र सहस्रं च नाम्नां तिष्ठति पूजितम् ॥ २६ ॥

ॐतत्सदिति श्रीसम्मोहनतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे
श्रीगोपाल-सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीसूर्य-सहस्रनामस्तोत्रम्

सुमन्तुरुवाच

माघे मासि सिते पक्षे सप्तम्यां कुरुनन्दन ।
निराहारो रविं भक्त्या पूजयेद् विधिना नृप ॥ १ ॥
पूर्वोक्तेन जपेज्जप्यं देवस्य पुरतः स्थितः ।
शुद्धैकाग्रमना राजन् जितक्रोधो जितेन्द्रियः ॥ २ ॥

शतानिक उवाच

केन मन्त्रेण जप्तेन दर्शनं भगवान् व्रजेत् ।
स्तोत्रेण वापि सविता तन्मे कथय सुव्रत ॥ ३ ॥

सुमन्तुरुवाच

स्तुतो नामसहस्रेण यदा भक्तिमता मया ।
तदा मे दर्शनं यातः साक्षाद्देवो दिवाकरः ॥ ४ ॥

शतानीक उवाच

नाम्नां सहस्रं सवितुः श्रोतुमिच्छामि हे द्विज ।
येन ते दर्शनं यातः साक्षाद्देवो दिवाकरः ॥ ५ ॥

सुमन्तुरुवाच

सर्वमंगलमागल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
स्तोत्रमेतन्महापुण्यं सर्वोपद्रवनाशनम् ॥ ६ ॥
न तदस्ति भयं किंचित् यदनेन न नश्यति ।
ज्वराद्यैर्मुच्यते राजन् स्तोत्रेऽस्मिन् पठिते नरः ॥ ७ ॥

अन्ये च रोगाः शाम्यन्ति पठतः शृण्वतस्तथा ।
सम्पद्यन्ते यथाकामाः सर्व एव यथेप्सिताः ॥ ८ ॥
य एतदादितः श्रुत्वा संग्रामं प्रविशेन्नरः ।
स जित्वा समरे शत्रूनभ्येति गृहमक्षतः ॥ ९ ॥
वन्ध्यानां पुत्रजननं भीतानां भयनाशनम् ।
भूतिकारि दरिद्राणां कुष्ठिनां परमौषधम् ॥ १० ॥
बालानां चैव सर्वेषां ग्रहरक्षोनिवारणम् ।
पठेदेतद्धि यो राजन् स श्रेयः परमाप्नुयात् ॥ ११ ॥
स सिद्धः सर्वसंकल्पः सुखमत्यन्तमश्नुते ।
धर्मार्थिभिर्धर्मलुब्धैः सुखाय च सुखार्थिभिः ॥ १२ ॥
राज्याय राज्यकामैश्च पठितव्यमिदं नरैः ।
विद्यावहन्तु विप्राणां क्षत्रियाणां जयावहम् ॥ १३ ॥
पश्वावहन्तु वैश्यानां शूद्राणां धर्मवर्धनम् ।
पठतां शृण्वतामेतद् भवतीति न संशयः ॥ १४ ॥
तच्छृणुष्व नृपश्रेष्ठ प्रयतात्मा ब्रवीमि ते ।
नाम्नां सहस्रं विख्यातं देवदेवस्य भास्वतः ॥ १५ ॥

अस्य श्रीसूर्यसहस्रनामस्तोत्रस्य वेदव्यासऋषिरनुष्टुपूछन्दः सविता देवता अभीष्टसिद्ध्यर्थजपे विनियोगः ।

ओं विश्वविद् विश्वजित् कर्ता विश्वात्मा विश्वतोमुखः ।
विश्वेश्वरो विश्वयोनिः नियतात्मा जितेन्द्रियः ॥ १६ ॥
कालाश्रयः कालकर्ता कालहा कालनाशनः ।
महायोगी महाबुद्धिर्महात्मा सुमहाबलः ॥ १७ ॥
प्रभुर्विभुर्भूतनाथो भूतात्मा भुवनेश्वरः ।
भूतभव्यो भवितात्मा भूतान्तःकरणः शिवः ॥ १८ ॥

शरण्यः कमलानन्दो नन्दनो नन्दिवर्धनः ।
वरण्यो वरदो योगी सुसंयुक्तः प्रकाशनः ॥ १९ ॥
प्राप्तयानः परप्राणः पूतात्मा प्रयतः प्रियः ।
नयः सहस्रपात्साधुर्दिव्यकुण्डलमण्डितः ॥ २० ॥
अव्यंगधारी धीरात्मा सविता वायुवाहनः ।
समाहितमतिर्दाता विधाता कृतमंगल ॥ २१ ॥
कपर्दी कल्पपाद्रुमः सुमना धर्मवत्सलः ।
समायुक्तो विमुक्तात्मा कृतात्मा कृतिनां वरः ॥ २२ ॥
अविचिन्त्यवपुः श्रेष्ठो महायोगी महेश्वरः ।
कान्तः कामारिरादित्यः नियतात्मा निराकुलः ॥ २३ ॥
कामः कारुणिकः कर्ता कमलाकरबोधनः ।
सप्तसप्तिरचिन्त्यात्मा महाकारुणिकोत्तमः ॥ २४ ॥
संजीवनो जीवनाथो जयो जीवो जगत्पतिः ।
अयुक्तो विश्वनिलयः संविभागी वृषध्वजः ॥ २५ ॥
वृषाकपिः कल्पकर्ता कल्पान्तकरणो रविः ।
एकचक्ररथो मौनी सुरथो रथिनां वरः ॥ २६ ॥
संक्रोधनो रश्मिमाली तेजोराशिर्विभावसुः ।
दीवाकृद् दिनकृद् देवो देवदेवो दिवस्पतिः ॥ २७ ॥
दीननाथो हरो होता दिवाबाहुर्दिवाकरः ।
यज्ञो यज्ञपतिः पूषा स्वर्णरेताः परावरः ॥ २८ ॥
परापरज्ञस्तरुणरंशुमाली मनोहरः ।
प्राज्ञः प्राज्ञपतिः सूर्यः सविता विष्णुरंशुमान् ॥ २९ ॥
सदागतिर्गन्धवहो विहितो विधिराशुगः ।
पतंगः पतगः स्थाणुर्विहंगो विहागो वरः ॥ ३० ॥

हर्यश्वो हरिताश्वश्च हरिदश्वो जगत्प्रियः।
त्र्यम्बकः सर्वदमनो भावितात्मा भिषग्वरः॥ ३१॥

आलोकस्त्रैलोक्यनाथो लोकालोकनमस्कृतः।
कालः कल्पान्तको वह्निस्तपनः संप्रतापनः॥ ३२॥

विलोचनो विरूपाक्षः सहस्राक्षः पुरन्दरः।
सहस्ररश्मिर्मिहिरो विविधाम्बरभूषणः॥ ३३॥

खगः प्रतर्दनो धन्यो हयगो वाग्विशारदः।
श्रीमांश्च शिशिरो वाग्मी श्रीपतिः श्रीनिकेतनः॥ ३४॥

श्रीकण्ठः श्रीधरः श्रीमान् श्रीनिवासो वसुप्रदः।
कामचारी महामायो महोग्रा विदितामयः॥ ३५॥

तीर्थक्रियावान् सुनयो विभक्तो भक्तवत्सलः।
कीर्तिः कीर्तिकरो नित्यः कुण्डली कवची रथी॥ ३६॥

हिरण्यरेताः सप्ताश्वः प्रयतात्मा परन्तपः।
बुद्धिमानमरश्रेष्ठो रोचिष्णुः पाकशासनः॥ ३७॥

समुद्रो धनदो धाता मान्धाता कश्मलापहः।
तमोघ्नो ध्वान्तहा वह्निर्होतान्तःकरणो गुहः॥ ३८॥

पशुमान् प्रयतानान्दो भूतेशः श्रीमतां वरः।
नित्योदितो नित्यरथः सुरेशः सुरपूजितः॥ ३९॥

अजितो विजयो जेता जंगमः स्थावरात्मकः।
जीवानन्दो नित्यगामी विजेता विजयप्रदः॥ ४०॥

पर्जन्योऽग्निस्थितिः श्रेयान् स्थविरोऽथ निरंजनः।
प्रद्योतनो रथारूढः सर्वलोकप्रकाशकः॥ ४१॥

ध्रुवो मेधी महावीर्यो हंसः संसारतारकः।
सृष्टिकर्ता क्रियाहेतुर्मार्तण्डो मरुतां पतिः॥ ४२॥

मरुत्वान् दहनस्त्वष्टा भागो भाग्योऽर्यमा कपिः ।
वरुणेशो जगन्नाथः कृतकृत्यः सुलोचनः ।। ४३ ।।
विवस्वान् भानुमान् कार्यः कारणस्तेजसां निधिः ।
असंगगामी तिग्मांशुर्घर्मांशुर्दीप्तदीधितिः ।। ४४ ।।
सहस्रदीधितिर्ब्रध्नः सहस्रांशुर्दिवाकरः ।
गभस्तिमान् दीधितिमान् स्रग्वी मणिकुलद्युतिः ।। ४५ ।।
भास्करः सुरकार्यज्ञः सर्वज्ञस्तीक्ष्णदीधिति ।
सुरज्येष्ठः सुरपतिर्बहुज्ञो वचसाम्पतिः ।। ४६ ।।
तेजोनिधिर्बृहत्तेजा बृहत्कीर्तिर्बृहस्पतिः ।
अहिमानूर्जितो धीमानामुक्तः कीर्तिवर्धनः ।। ४७ ।।
महावैद्यो गणपतिर्धनेशो गणनायकः ।
तीव्रप्रतापनस्तापी तापनो विश्वतापनः ।। ४८ ।।
कार्तस्वरो हृषीकेशः पद्मानन्दोऽतिनन्दितः ।
पद्मनाभोऽमृताहारः स्थितिमान् केतुमान् नभः ।। ४९ ।।
अनाद्यन्तोऽच्युतो विश्वो विश्वामित्रो घृणिर्विराट् ।
आमुक्तः कवचो वाग्मी कञ्चुकी विश्वभावनः ।। ५० ।।
अनिमित्तगतिः श्रेष्ठः शरण्यः सर्वतोमुखः ।
विगाही वेणुवसहः समायुक्तः समाक्रतुः ।। ५१ ।।
धर्मकेतुः धर्मरतिः संहर्ता संयमो यमः ।
प्रणतार्तिहरो मायुः सिद्धकार्यो जनेश्वरः ।। ५२ ।।
नभो विगाहनः सत्यः सवितात्मा मनोहरः ।
हारी हरिर्हरो वायुर्ऋतुकालीनसंद्युतिः ।। ५३ ।।
सुखसेव्यो महातेजा जगतामन्यकारणम् ।
महेन्द्रो विष्टुतः स्तोत्रं स्तुतिहेतुः प्रभाकरः ।। ५४ ।।

सहस्रकरः आयुष्मान् रोगदः सुखदः सुखी ।
व्याधिहा सुखदः सौख्यं कल्याणः कल्यतां वरः ॥ ५५ ॥
आरोग्यकारणं सिद्धिरृद्धिर्वृद्धिर्बृहस्पतिः ।
हिरण्यरेता आरोग्यो विद्वान् ब्रध्नो बुधो महान् ॥ ५६ ॥
प्राणवान् धृतिमान् घर्मो घर्मकर्ता रुचिप्रदः ।
सर्वप्रियः सर्वसहः सर्वशत्रुविनाशनः ॥ ५७ ॥
प्रांशुर्विद्योतनो द्योतः सहस्रकिरणः कृतिः ।
केयूरी भूषणोद्भासी भासितो भामितोऽनलः ॥ ५८ ॥
शरण्यार्तिहरो होता खद्योतः खगसत्तमः ।
सर्वद्योतो भवद्योतः सर्वद्युतिकरो मतः ॥ ५९ ॥
कल्याणः कल्याणकरः कल्पः कल्पकरः कविः ।
कल्याणकृत् कल्पवपुः सर्वकल्याणभाजनः ॥ ६० ॥
शान्तिप्रियः प्रसन्नात्मा प्रशान्तः प्रशमः प्रियः ।
उदारकर्मा सुनयः सुवर्चो वर्चसोऽनलः ॥ ६१ ॥
वर्चसी वर्चसामीशस्त्रैलोक्येशो वशानुगः ।
तेजस्वी सुयशा वर्मी वर्णाध्यक्षो बलिप्रियः ॥ ६२ ॥
यशस्वी तेजोनिलयस्तेजस्वी प्रकृतिस्थितः ।
आकाशगः शीघ्रगतिराशुगो गतिमान् खगः ॥ ६३ ॥
गोपतिर्ग्रहदक्षेशो गोमानेकः प्रभंजनः ।
जनिता प्रजनं जीवो दीपः सर्वप्रकाशकः ॥ ६४ ॥
सर्वसाक्षी योगनित्यो नभस्वानसुरान्तकः ।
रक्षघ्नो विघ्नशमनः किरीटी प्रशमः प्रियः ॥ ६५ ॥
मरीचिमाली सुमतिः कृताभिख्याविशेषकः ।
शिष्टाचारः शुभाचारः साचाराचारतत्परः ॥ ६६ ॥

मन्दारो माठरो वेणुः क्षुधापः क्षापितो गुरुः ।
सुविशिष्टो विशिष्टात्मा विधेयो ज्ञानशोभनः ॥ ६७ ॥
महाश्वेतः प्रियो ज्ञेयः सामगो मोक्षदायकः ।
सर्ववेदप्रगीतात्मा सर्ववेदालयो लयः ॥ ६८ ॥
वेदमूर्तिश्चतुर्वेदो वेदभृद् वेदपारगः ।
क्रियावानसितो जिष्णुर्वरीयांशुर्वरप्रदः ॥ ६९ ॥
व्रतचारी व्रतधरो लोकबन्धुरलंकृतः ।
अलंकारोऽक्षरो वैद्यो विद्यावान् विदिताशयः ॥ ७० ॥
आकारो भूषणो भूष्यो विष्णुर्भुवनपूजितः ।
चक्रपाणिर्ध्वजधरः सुरेशो लोकवत्सलः ॥ ७१ ॥
वग्मिपतिर्महाबाहुः प्रकृतिर्विकृतिर्गुणः ।
अन्धकारापहः श्रेष्ठो युगावर्तो युगादिकृत् ॥ ७२ ॥
अप्रमेयः सदायोगी निरहंकार ईश्वरः ।
शुभप्रदः शुभः शोभा शुभकर्मा शुभप्रदः ॥ ७३ ॥
सत्यवान् श्रुतिमानुच्चैर्नकारो वृद्धिदोऽनलः ।
बलभृद् बलदो बन्धुर्मतिमान् बलिनां वरः ॥ ७४ ॥
अनंगो नागराजेन्द्रः पद्मयोनिर्गणेश्वरः ।
सम्वत्सर ऋतुर्नेता कालचक्रप्रवर्तकः ॥ ७५ ॥
पद्मेक्षणः पद्मयोनिः प्रभावानमरः प्रभुः ।
सुमूर्तिः सुमतिः सोमो गोविन्दो जगदादिजः ॥ ७६ ॥
पीतवासाः कृष्णवासा दिग्वासातीन्द्रियो हरिः ।
अतीन्द्रियोऽनेकरूपः स्कन्दः पुरपुरन्दरः ॥ ७७ ॥
शक्तिमान् जलधृग् भास्वान् मोक्षहेतुरजोनिजः ।
सर्वदर्शी जितादर्शो दुःस्वप्नाशुभनाशनः ॥ ७८ ॥

मांगल्यकर्ता तरुणिर्वेगवान् कश्मलापहः ।
स्पष्टाक्षरो महामन्त्रो विशाखो यजनप्रियः ॥ ७९ ॥
विश्वकर्मा महाशक्तिर्ज्योतिरीशो विहङ्गमः ।
विचक्षणो दक्ष इन्द्रः प्रत्यूषः प्रियदर्शनः ॥ ८० ॥
अखिन्नो वेदनिलयो वेदविद् विदिताश्रयः ।
प्रभाकरो जितरिपुः सुजनोऽरुणसारथिः ॥ ८१ ॥
कुनरः सुरतः स्कन्दो मोहितोऽभिमतो गुरुः ।
ग्रहराजो ग्रहपतिर्ग्रहनक्षत्रमण्डलः ॥ ८२ ॥
भास्करस्तपनः स्यन्दो नन्दनो नरवाहनः ।
माङ्गल्योऽथ मङ्गलवान् मङ्गल्यो मङ्गलापहः ॥ ८३ ॥
माङ्गल्ये चारुचरितं शीर्णः सर्वव्रतो व्रती ।
चतुर्मुखः पद्ममाली पूतात्मा प्रणतार्तिहा ॥ ८४ ॥
अकिञ्चनः सत्यसन्ध्यो निर्गुणो गुणवान् शुचिः ।
सम्पूर्णः पुण्डरीकाक्षो विधेयो योगतत्परः ॥ ८५ ॥
सहस्रांशुः क्रतुपतिः सर्वज्ञः सुमतिः सुवाक् ।
सुवाहनो माल्यदामा कृताहारो हरिप्रियः ॥ ८६ ॥
ब्रह्मा प्रचेताः प्रथितः प्रयतात्मा स्थिरात्मकः ।
शतबिन्दुः शतमुखो गरीयाननलप्रभः ॥ ८७ ॥
धीरो महत्तरो विप्रः पुराणपुरुषोत्तमः ।
विद्याराजाधिराजो हि विद्यावान् भूतिदः स्थितः ॥ ८८ ॥
अनिर्देश्यवपुः श्रीमान् विपाप्मा बहुमङ्गलः ।
स्वस्तिदः सुरथः स्वर्णो मोक्षदो बलिकेतनः ॥ ८९ ॥
निर्द्वन्द्वो द्वन्द्वहा स्वर्गः सर्वगः संप्रकाशकः ।
दयालुः सूक्ष्मधीः क्षान्तिः क्षेमाक्षेमस्थितिप्रियः ॥ ९० ॥

भूधरो भूपतिर्वक्ता पवित्रात्मा त्रिलोचनः ।
महावराहः प्रियकृद्दाता भोक्ताऽभयप्रदः ।। ९१ ।।

चक्रवर्ती धृतिकरः सम्पूर्णोऽथ महेश्वरः ।
चतुर्वेदधरोऽचिन्त्यो विनिद्रो विविधाशनः ।। ९२ ।।

विचित्ररथ एकाकी सप्तशक्तिः परावरः ।
सर्वोदधिस्थितिकरः स्थितिस्थेयः स्थितिप्रियः ।। ९३ ।।

निष्कलः पुष्कलविभुर्वसुमान् वासवप्रियः ।
वसुमान् वासवस्वामी वसुधाता वसुप्रदः ।। ९४ ।।

बलवान् ज्ञानवांस्तत्त्वमोङ्कारस्त्रिषु संस्थितः ।
सङ्कल्पयोनिर्दिनकृद् भगवान् कारणात्परः ।। ९५ ।।

नीलकण्ठो धनाध्यक्षश्चतुर्वेदप्रियम्वदः ।
वषट्कारोद्गतो होता स्वाहाकारो हुताहुतिः ।। ९६ ।।

जनार्दनो जनानन्दो नरो नारायणोऽम्बुदः ।
सन्देहक्षपणो वायुः सदा सुरनमस्कृतः ।। ९७ ।।

विग्रही विमलो विन्दुर्विशोको विमलद्युतिः ।
द्युतितो द्योतनो विद्युत् विद्यावान् विदितो बलिः ।। ९८ ।।

घर्मदो हिमदो हासः कृष्णवर्त्मा सुभाजितः ।
सावित्रीभावितो राजा विश्वामित्रो घृणिर्विराट् ।। ९९ ।।

सप्तार्चिः सप्ततुरगः सप्तलोकनमस्कृतः ।
सम्पन्नोऽथ जगन्नाथः सुमनः शोभनः प्रियः ।। १०० ।।

सर्वात्मा सर्वकृत्सृष्टिः शक्तिमान् सप्तमीप्रियः ।
सुमेधा मेधिका मेध्यो मेधावी मधुसूदनः ।। १०१ ।।

अङ्गिरा गतिकालज्ञो धूमकेतुः सुकेतनः ।
सुखी सुखप्रदः सौख्यं कान्तिः कान्तिप्रदो मुनिः ।। १०२ ।।

सन्तापनः सन्तपन आतपस्तपसां पतिः ।
उमापतिः सहस्रांशुः प्रियकारी प्रियङ्करः ॥ १०३ ॥
प्रीतिर्विमन्युरम्भोत्थः खंजनं जगतां पतिः ।
जगत्पिता प्रीतमनाः सर्वः खर्वो गुहोऽचलः ॥ १०४ ॥
सर्वगो जगदानन्दो जगन्नेता सुरारिहा ।
श्रेयः श्रेयस्करो ज्यायान्महानुत्तम उद्भवः ॥ १०५ ॥
उत्तमो मेरुमेयोऽथ धारणो धरणीधरः ।
धाराधरो धर्मराजो धर्माधर्मप्रवर्तकः ॥ १०६ ॥
रथाध्यक्षो रथपतिस्तरुणस्तनितोऽनलः ।
उत्तरोऽनुत्तरस्तापी अवाक्पतिरपां पतिः ॥ १०७ ॥
पुण्यसंकीर्तनः पुण्यो हेतुर्लोकत्रयाश्रयः ।
स्वर्भानुर्विगतारिष्टो विशिष्टोत्कृष्टकर्मकृत् ॥ १०८ ॥
व्याधिप्रणाशनः क्षेमः सुरः सर्वजितां वरः ।
एकनाथो रथाधीशः शनैश्चरपिता रविः ॥ १०९ ॥
वैवस्वतः गुरुर्मृत्युः धर्मनित्यो महाव्रतः ।
प्रलम्भहारसंचारी प्रद्योतो द्योतितानलः ॥ ११० ॥
सन्तापहृत्परो मंत्रो मंत्रमूर्तिर्महाबलः ।
श्रेष्ठात्मा सुप्रियः शम्भुर्मरुतामीश्वरेश्वरः ॥ १११ ॥
संसारगतिविच्छेत्ता संसारार्णवतारकः ।
सप्तजिह्वः सहस्रार्ची रत्नगर्भोऽपराजितः ॥ ११२ ॥
धर्मकेतुरमेयात्मा धर्माधर्मवरप्रदः ।
लोकसाक्षी लोकगुरुर्लोकेशश्छन्दवाहनः ॥ ११३ ॥
धर्मयूपो यूपवृक्षो धनुष्पाणिर्धनुर्धरः ।
पिनाकधृङ्महोत्साहो नैकमायो महाशनः ॥ ११४ ॥

वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठः सर्वशस्त्रभृताम्वरः।
ज्ञानगम्यो दुराराध्यो लोहितांगो विवर्धनः॥ ११५॥
खगोऽन्धो धर्मदो नित्यो धर्मकृत् चित्रविक्रमः।
भगवान् स्वात्मको मन्त्रस्त्र्यक्षरो नीललोहितः॥ ११६॥
एकोऽनेकस्त्रयीकालः सविता समितिञ्जयः।
शार्ङ्गधन्वा नलो भीमः सर्वप्रहरणायुधः॥ ११७॥
अकृन्तः परमेष्ठी च नाकपाली दिवि स्थितः।
वदान्यो वासुकी वैद्य आत्रेयोऽथ पराक्रमः॥ ११८॥
द्वापरः परमोदार परङ्कः ब्रह्मचर्यवान्।
उदीच्यवेशो मुकुटी पद्महस्तो हिमांशुभृत्॥ ११९॥
स्मितः प्रसन्नवदनः पद्मोदर-निभाननः।
सायं दिवा दिव्यवपुरनिर्देश्यो महालयः॥ १२०॥
महारथो महानीशः शेषः सत्त्वरजस्तमः।
धृतातपत्रप्रतिमो विमर्षी निर्णयः स्थितः॥ १२१॥
अहिंसकः शुद्धमतिरद्वितीयो विवर्धनः।
सर्वदो धनदो मोक्षो विहारी बहुदायकः॥ १२२॥
चारुरार्त्तिहरो नाथो भगवान् सर्वगोऽव्ययः।
मनोहरवपुः शुभ्रः शोभनः सुप्रभावनः॥ १२३॥
सुप्रभावः सुप्रतापः सुनेत्रो दिग्विदिक्पतिः।
राज्ञी-प्रियः शब्दकरो ग्रहेशस्तिमिरापहः॥ १२४॥
सैंहिकेयरिपुर्देवो वरदो वरनायकः।
चतुर्भुजो महायोगी योगीश्वरपतिस्तथा॥ १२५॥
एवत्ते सर्वमाख्यातं यन्मां त्वं परिपृच्छसि।
नाम्नां सहस्रं सवितुः पाराशर्यो यदाह मे॥ १२६॥

धन्यं यशस्यमायुष्यं दुःखदुःस्वप्ननाशनम् ।
बन्धमोक्षकरञ्चैव भानोर्नामानुकीर्तनम् ॥ १२७ ॥
यस्त्विदं शृणुयान्नित्यं पठेद्वा प्रयतो नरः ।
अक्षयं स्वर्गमन्वाद्यं भवेत्तस्योपसाधितम् ॥ १२८ ॥
नृपाग्नि-तस्करभयं व्याधितो न भयं भवेत् ।
विजयी च भवेन्नित्यमाश्रयं परमाप्नुयात् ॥ १२९ ॥
कीर्तिमान् सुभगो विद्वान् स सुखी प्रियदर्शनः ।
जीवेद्वर्षशतायुश्च सर्वव्याधिविवर्जितः ॥ १३० ॥

नाम्नां सहस्रमिदमंशुमतः पठेद् यः
प्रातः शुचिर्नियमवान् सुसमृद्धियुक्तः
दूरेण तं परिहरन्ति सदैव रोगा
भूताः सुपर्णमिव सर्वमहोरगेन्द्राः ॥ १३१ ॥

इति भविष्योत्तरपुराणे सप्तमीकल्पे श्रीभगवत्सूर्यस्य
सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

श्रीकाली-सहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीशिव उवाच

कथितोऽयं महामन्त्रः सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमः ।
यमासाद्य मया प्राप्तमैश्वर्यपदमुत्तमम् ॥ १ ॥
संयुक्तः परया भक्त्या यथोक्तविधिना भवान् ।
कुरुतामर्चनं देव्यास्त्रैलोक्यविजिगीषया ॥ २ ॥

श्रीपरशुराम उवाच

प्रसन्नो यदि मे देव पुरारे भक्तवत्सल ।
रहस्यं परया देव्याः कृपया कथय प्रभो ॥ ३ ॥
विनार्चनं विना होमं विना न्यासं विना बलिम् ।
विना गन्धं विना पुष्पं विना नित्योदितां क्रियाम् ॥ ४ ॥
प्राणायामं विना ध्यानं विना भूतविशोधनम् ।
विना जपं विना दानं येन काली प्रसीदति ॥ ५ ॥

श्रीशिव उवाच

पृष्टं त्वयोत्तमं प्राज्ञ भृगुवंशसमुद्भव ।
भक्तानामपि भक्तोऽसि त्वमेव साधयिष्यसि ॥ ६ ॥
देवीं दानवकोटिघ्नीं लीलया रुधिरप्रियाम् ।
सदा स्तोत्रप्रियां उग्रां कामकौतुकलालसाम् ॥ ७ ॥
सर्वदानन्दहृदयामासवासक्तमानसाम् ।
माध्वीकमत्स्यमांसानुरागिणीं रुधिरप्रियाम् ॥ ८ ॥
श्मशानवासिनीं प्रेतगणनृत्यमहोत्सवाम् ।
योगप्रभां योगिनीशां योगीन्द्रहृदयस्थिताम् ॥ ९ ॥

तामुग्रकालिकां राम प्रसादयितुमर्हसि ।
तस्याः स्तोत्रं महापुण्यं स्वयं काल्या प्रकाशितम् ॥ १० ॥
तव तत्कथयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय ।
गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं परात्परम् ॥ ११ ॥
यस्यैककालपठनात्सर्वविघ्नाः समाकुलाः ।
नश्यन्ति दहने दीप्ते पतंगा इव सर्वतः ॥ १२ ॥
गद्यपद्यमयी वाणी तस्य गंगाप्रवाहवत् ।
तस्य दर्शनमात्रेण वादिनो निष्प्रभा मताः ॥ १३ ॥
राजानोऽपि च दासत्वं भजन्ते किं परे जनाः ।
तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्वसिद्धिर्न संशयः ॥ १४ ॥
निशीथे मुक्तकेशस्तु नग्नः शक्तिसमन्वितः ।
मनसा चिन्तयेत्कालीं महाकालेन लालिताम् ॥ १५ ॥
पठेत्सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं मोक्षस्य साधनम् ।
प्रसन्ना कालिका तस्य पुत्रत्वेनानुकम्पते ॥ १६ ॥
यथा ब्रह्मामृतैर्ब्रह्मकुसुमैः पूजिता परा ।
प्रसीदति तथानेन सदा काली प्रसीदति ॥ १७ ॥
अथोच्यते महाकाल्याः स्तवः सर्वार्थसिद्धिदः ।
पूजाफलं तथा न्यासः स्तवमात्रेण सिद्ध्यति ॥ १८ ॥
महाकालेन यत्प्रोक्तं स्तवं तच्छृणु भार्गव ।
ओं अस्य श्रीदक्षिणकालिकासहस्रनामस्तोत्रस्य भैरव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्मशानकालिकादेवतासकलाभीष्टार्थे विनियोगः ॥ १९ ॥
ओं श्मशानकालिका काली भद्रकाली कपालिनी ।
गुह्यकाली महाकाली कुरुकुल्लाविरोधिनी ॥ २० ॥

कालिका कालरात्रिश्च महाकालनितम्बिनी ।
कालभैरवभार्य्या च कुलवर्त्मप्रकाशिनी ॥ २१ ॥
कामदा कामिनी काम्या कमनीयस्वभाविनी ।
कस्तूरीरसलिप्तांगी कुञ्जरेश्वरगामिनी ॥ २२ ॥
ककारवर्णसर्वांगी कामिनी कामसुन्दरी ।
कामार्त्ता कामरूपा च कामधेनुः कलावती ॥ २३ ॥
कान्ता कामस्वरूपा च कामाख्या कुलपालिनी ।
कुलीना कुलवत्यम्बा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ॥ २४ ॥
कौमारी कुलजा कृष्णा कृष्णदेहा कृशोदरी ।
कृशाङ्गी कुलिशांगी च क्रींकारी कमला कला ॥ २५ ॥
करालास्या कराली च कुलकान्तापराजिता ।
उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता विप्रचित्ता महानना ॥ २६ ॥
नीलाघना वलाका च मात्रा मुद्रामिताऽसिता ।
ब्राह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भक्तवत्सला ॥ २७ ॥
माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहिका ।
वज्रांगी वज्रकङ्काली नृमुण्डस्रग्विणी शिवा ॥ २८ ॥
मालिनी नरमुण्डाली गलद्रुधिरभूषणा ।
रक्तचन्दनसिक्तांगी सिन्दूरारुणमस्तका ॥ २९ ॥
घोररूपा घोरदंष्ट्रा घोराघोरतरा शुभा ।
महादंष्ट्रा महामाया सुदती युगदन्तुरा ॥ ३० ॥
सुलोचना विरूपाक्षी विशालाक्षी त्रिलोचना ।
शारदेन्दुप्रसन्नास्या स्फुरत्स्मेराम्बुजेक्षणा ॥ ३१ ॥
अट्टहासप्रसन्नास्या स्मेरवक्त्रा सुभाषिणी ।
प्रसन्नपद्मवदना स्मितास्या प्रियभाषिणी ॥ ३२ ॥

कोटराक्षी कुलश्रेष्ठा महती बहुभाषिणी ।
सुमतिः कुमतिश्चण्डा चण्डमण्डातिवेगिनी ॥ ३३ ॥
प्रचण्डचण्डिका चण्डी चण्डिका चण्डवेगिनी ।
सुकेशी मुक्तकेशी च दीर्घकेशी महत्कचा ॥ ३४ ॥
प्रेतदेहकर्णपूरा प्रेतपाणिसुमेखला ।
प्रेतासना प्रियप्रेता प्रेतभूमिकृतालया ॥ ३५ ॥
श्मशानवासिनी पुण्या पुण्यदा कुलपण्डिता ।
पुण्यालया पुण्यदेहा पुण्यश्लोका च पाविनी ॥ ३६ ॥
पूता पवित्रा परमा पुरापुण्यविभूषणा ।
पुण्यनाम्नी भीतिहरा वरदा खड्गपालिनी ॥ ३७ ॥
नृमुण्डहस्तशस्ता च छिन्नमस्ता सुनासिका ।
दक्षिणा श्यामला श्यामा शान्ता पीनोन्नतस्तनी ॥ ३८ ॥
दिगम्बरा घोररावा सृक्कान्ता रक्तवाहिनी ।
घोररावा शिवासंगी विसंगी मदनातुरा ॥ ३९ ॥
मत्ता प्रमत्ता प्रमदा सुधासिन्धुनिवासिनी ।
अतिमत्ता महामत्ता सर्वाकर्षणकारिणी ॥ ४० ॥
गीतप्रिया वाद्यरता प्रेतनृत्यपरायणा ।
चतुर्भुजा दशभुजा अष्टादशभुजा तथा ॥ ४१ ॥
कात्यायनी जगन्माता जगतां परमेश्वरी ।
जगद्बन्धुर्जगद्धात्री जगदानन्दकारिणी ॥ ४२ ॥
जगज्जीवमयी हैमवती माया महामही ।
नागयज्ञोपवीतांगी नागिनी नागशायिनी ॥ ४३ ॥
नागकन्या देवकन्या गान्धर्वी किन्नरेश्वरी ।
मोहरात्रिर्महारात्रिर्दारुणा भास्वरासुरी ॥ ४४ ॥

विद्याधरी वसुमती यक्षिणी योगिनी जरा ।
राक्षसी डाकिनी वेदमयी वेदविभूषणा ॥ ४५ ॥
श्रुतिः स्मृतिर्महाविद्या गुह्यविद्या पुरातनी ।
चिन्त्याऽचिन्त्या स्वधा स्वाहा निद्रा तन्द्रा च पार्वती ॥४६॥

अपर्णा निश्चला लोला सर्वविद्या तपस्विनी ।
गंगा काशी शची सीता सती सत्यपरायणा ॥ ४७ ॥
नीतिः सुनीतिः सुरुचिस्तुष्टिः पुष्टिर्धृतिः क्षमा ।
वाणी बुद्धिर्महालक्ष्मीर्लक्ष्मीर्नीलसरस्वती ॥ ४८ ॥

स्रोतस्वती सरस्वती मातंगी विजया जया ।
नदीसिन्धुः सर्वमयी तारा शून्यनिवासिनी ॥ ४९ ॥
शुद्धा तरंगिणी मेधा लाकिनी बहुरूपिणी ।
स्थूला सूक्ष्मा सूक्ष्मतरा भगवत्यनुरागिणी ॥ ५० ॥
परमानन्दरूपा च चिदानन्दस्वरूपिणी ।
सर्वानन्दमयी नित्या सर्वानन्दस्वरूपिणी ॥ ५१ ॥

शुभदा नन्दिनी स्तुत्या स्तवनीयस्वभाविनी ।
रंकिनी भंकिनी चित्रा विचित्रा चित्ररूपिणी ॥ ५२ ॥

पद्मा पद्मालया पद्ममुखी पद्मविभूषणा ।
हाकिनी शाकिनी शान्ता राकिनी रुधिरप्रिया ॥ ५३ ॥
भ्रान्तिर्भवानी रुद्राणी मृडानी शत्रुमर्दिनी ।
उपेन्द्राणी महेन्द्राणी ज्योत्स्ना चन्द्रस्वरूपिणी ॥ ५४ ॥

सूर्य्यात्मिका रुद्रपत्नी रौद्री स्त्रीप्रकृतिः पुमान् ।
शक्तिः सूक्तिर्मतिर्माता भुक्तिर्मुक्तिः पतिव्रता ॥ ५५ ॥
सर्वेश्वरी सर्वमाता शर्वाणी हरवल्लभा ।
सर्वज्ञा सिद्धिदा सिद्धा भव्या भाव्या भयापहा ॥ ५६ ॥

कर्त्री हर्त्री पालयित्री शर्वरी तामसी दया।
तमिस्रा तामसी स्थाणुः स्थिरा धीरा तपस्विनी ॥ ५७ ॥
चार्वंगी चञ्चला लोलजिह्वा चारुचरित्रिणी।
त्रपा त्रपावती लज्जा विलज्जा ह्री रजोवती ॥ ५८ ॥
सरस्वती धर्मनिष्ठा श्रेष्ठा निष्ठुरनादिनी।
गरिष्ठा दुष्टसंहर्त्री विशिष्टा श्रेयसी घृणा ॥ ५९ ॥
भीमा भयानका भीमनादिनी भीः प्रभावती।
वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञकत्री यजुःप्रिया ॥ ६० ॥
ऋक्सामाथर्वनिलया रागिणी शोभनस्वरा।
कलकण्ठी कम्बुकण्ठी वेणुवीणापरायणा ॥ ६१ ॥
वंशिनी वैष्णवी स्वच्छा धरित्री जगदीश्वरी।
मधुमती कुण्डलिनी ऋद्धिः सिद्धिः शुचिस्मिता ॥ ६२ ॥
रम्भोर्वशीरतीरामा रोहिणी रेवती मघा।
शंखिनी चक्रिणी कृष्णा गदिनी पद्मिनी तथा ॥ ६३ ॥
शूलिनी परिघास्त्रा च पाशिनी शार्ङ्गपालिनी।
पिनाकधारिणी धूम्रा शरभी वनमालिनी ॥ ६४ ॥
रथिनी समरप्रीता वेगिनी रणपण्डिता।
जटिनी वज्रिणी लीला लावण्याम्बुधिचन्द्रिका ॥ ६५ ॥
बलिप्रिया सदापूज्या पूर्णा दैत्येन्द्रमाथिनी।
महीषासुरसंहर्त्री कामिनी रक्तदन्तिका ॥ ६६ ॥
रक्तपा रुधिराक्तांगी रक्तखर्परहस्तिनी।
रक्तप्रिया मांसरुचिरासवासक्तमानसा ॥ ६७ ॥
गलच्छोणितमुण्डाली कण्ठमालाविभूषणा।
शवासना चितान्तःस्था माहेशी वृषवाहिनी ॥ ६८ ॥

व्याघ्रत्वगम्बरा चीनचेलिनी सिंहवाहिनी ।
वामदेवी महादेवी गौरी सर्वज्ञभामिनी ॥ ६९ ॥
बालिका तरुणी वृद्धा वृद्धमाता जरातुरा ।
सुभ्रूर्विलासिनी ब्रह्मवादिनी ब्राह्मणी मही ॥ ७० ॥
स्वप्नावती चित्रलेखा लोपामुद्रा सुरेश्वरी ।
अमोघारुन्धती तीक्ष्णाभोगवत्यनुरागिणी ॥ ७१ ॥
मन्दाकिनी मन्दहासा ज्वालामुख्यसुरान्तका ।
मानदा मानिनी मान्या माननीया मदातुरा ॥ ७२ ॥
मदिरामेदुरोन्मादा मेध्या साध्या प्रसादिनी ।
सुमध्यानन्तगुणिनी सर्वलोकोत्तमोत्तमा ॥ ७३ ॥
जयदा जित्वरा जैत्री जयश्रीर्जयशालिनी ।
शुभदा सुखदा सत्या सभासंक्षोभकारिणी ॥ ७४ ॥
शिवदूती भूतिमती विभूत भीषणानना ।
कौमारी कुलजा कुन्ती कुलस्त्री कुलपालिका ॥ ७५ ॥
कीर्त्तिर्यशस्विनी भूषा भूष्या भूतपतिप्रिया ।
सगुणा निर्गुणी तृष्णा निष्ठा काष्ठा प्रतिष्ठिता ॥ ७६ ॥
धनिष्ठा धनदा धान्या वसुधा सुप्रकाशिनी ।
उर्वी गुर्वी गुरुश्रेष्ठा सद्गुणा त्रिगुणात्मिका ॥ ७७ ॥
राज्ञामाज्ञा महाप्राज्ञा सगुणा निर्गुणात्मिका ।
महाकुलीना निष्कामा सकामा कामजीवनी ॥ ७८ ॥
कामदेवकला रामाभिरामा शिवनर्त्तकी ।
चिन्तामणिः कल्पलता जाग्रती दीनवत्सला ॥ ७९ ॥
कार्त्तिकी कृत्तिका कृत्या अयोध्याविषमासमा ।
सुमन्त्रा मन्त्रिणी पूर्णा ह्लादिनी क्लेशनाशिनी ॥ ८० ॥

त्रैलोक्यजननी ज्येष्ठा मीमांसामन्त्ररूपिणी ।
तड़ागनिम्नजठरा शुष्कमांसास्थिमालिनी ॥ ८१ ॥

अवन्तीमथुराहृद्या त्रैलोक्यपावनक्षमा ।
व्यक्ताव्यक्तात्मिकामूर्त्तिः शरभीभीमनादिनी ॥ ८२ ॥
क्षेमंकरी शंकरी च सर्वसम्मोहकारिणी ।
ऊर्ध्वतेजस्विनी क्लिन्ना महातेजस्विनी तथा ॥ ८३ ॥
अद्वैतभोगिनी पूज्या युवती सर्वमंगला ।
सर्वप्रियंकरी भोग्या धरणी पिशिताशना ॥ ८४ ॥
भयंकरी पापहरा निष्कलंका वशंकरी ।
आशा तृष्णा चन्द्रकला इन्द्राणी वायुवेगिनी ॥ ८५ ॥
सहस्रसूर्य्यसंकाशा चन्द्रकोटिसमप्रभा ।
निशुम्भशुम्भसंहन्त्री रक्तबीजविनाशिनी ॥ ८६ ॥
मधुकैटभहन्त्री च महिषासुर-घातिनी ।
वह्निमण्डलमध्यस्था सर्वसत्त्वप्रतिष्ठिता ॥ ८७ ॥
सर्वाचारवती सर्वदेवकन्याधिदेवता ।
दक्षकन्या दक्षयज्ञनाशिनी दुर्गतारिणी ॥ ८८ ॥

इज्या पूज्या विभीर्भूतिः सत्कीर्तिर्ब्रह्मरूपिणी ।
रम्भोरुश्चतुराकारा जयन्ती करुणा कुहूः ॥ ८९ ॥
मनस्विनी देवमाता यशस्या ब्रह्मचारिणी ।
सिद्धिदा वृद्धिदा वृद्धिः सर्वाद्या सर्वदायिनी ॥ ९० ॥
अगाधरूपिणी ध्येया मूलाधारनिवासिनी ।
आज्ञा प्रज्ञा पूर्णमनाश्चन्द्रमुख्यनुकूलिनी ॥ ९१ ॥
वावदूका निम्ननाभिः सत्यसन्धा दृढव्रता ।
आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्त्रयी त्रिदिवसुन्दरी ॥ ९२ ॥

ज्वलिनी ज्वालिनी शैलतनया विन्ध्यवासिनी ।
प्रत्यया खेचरी धैर्या तुरीया विमलातुरा ॥ ९३ ॥
प्रगल्भा वारुणीच्छाया शशिनी विस्फुलिंगिनी ।
भक्तिः सिद्धिः सदा प्रीतिः प्राकाम्या महिमाणिमा ॥ ९४ ॥
इच्छासिद्धिर्वशित्वा च ईशित्वोर्ध्वनिवासिनी ।
लघिमा चैव गायत्री सावित्री भुवनेश्वरी ॥ ९५ ॥
मनोहरा चिता दिव्या देव्युदारा मनोरमा ।
पिंगला कपिला जिह्वारसज्ञा रसिका रमा ॥ ९६ ॥
सुषुम्नेड़ायोगवती गान्धारी नरकान्तका ।
पाञ्चाली रुक्मिणी राधा राध्या भामा च राधिका ॥ ९७ ॥
अमृता तुलसी वृन्दा कैटभी कपटेश्वरी ।
उग्रचण्डेश्वरी वीरजननी वीरसुन्दरी ॥ ९८ ॥
उग्रतारा यशोदाख्या देवकी देवमानिता ।
निरञ्जनाचिता देवी क्रोधिनी कुलदीपिका ॥ ९९ ॥
कुलवागीश्वरी ज्वाला मातृका द्राविणी द्रवा ।
योगेश्वरी महामारी भ्रामरी विन्दुरूपिणी ॥ १०० ॥
दूती प्राणेश्वरी गुप्ता बहुला डामरी प्रभा ।
कुब्जिका ज्ञानिनी ज्येष्ठा भुशुण्डी प्रकटाकृतिः ॥ १०१ ॥
द्राविणी गोपिनी माया कामबीजेश्वरी प्रिया ।
शाकम्भरी कोकनदा सुशीला च तिलोत्तमा ॥ १०२ ॥
अमेयविक्रमाक्रूरा सम्पच्छीलातिविक्रमा ।
स्वस्तिहव्यवहा प्रीतिरुष्मा धूम्रार्चिरङ्गदा ॥ १०३ ॥
तपिनी तापिनी विश्वा भोगदा भोगधारिणी ।
त्रिखण्डा बोधिनी वश्या सकला विश्वरूपिणी ॥ १०४ ॥

बीजरूपा महामुद्रा वशिनी योगरूपिणी ।
अनंगकुसुमानंगमेखलानंगरूपिणी ॥ १०५ ॥
अनंगमदनानंगरेखानंगांकुशेश्वरी ।
अनंगमालिनी कामेश्वरी सर्वार्थसाधिका ॥ १०६ ॥
सर्वतन्त्रमयी मोदिन्यरुणानंगरूपिणी ।
वज्रेश्वरी च जननी सर्वदुःखक्षयंकरी ॥ १०७ ॥
षड़ङ्गयुवती योगयुक्ता ज्वालांशुमालिनी ।
दुराशया दुराधर्षा दुर्ज्ञेया दुर्गरूपिणी ॥ १०८ ॥
दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा ।
हंसेश्वरी त्रिकोणस्था शाकम्भर्यनुकम्पिनी ॥ १०९ ॥
त्रिकोणनिलया नित्या परमामृतरञ्जिता ।
महाविद्येश्वरी श्वेता भेरुण्डा कुलसुन्दरी ॥ ११० ॥
त्वरिता भक्तिसंयुक्ता भक्तिवश्या सनातनी ।
भक्तानन्दमयी भक्तभाविता भक्तशंकरी ॥ १११ ॥
सर्वसौन्दर्यनिलया सर्वसौभाग्यशालिनी ।
सर्वसम्भोगभवनी सर्वसौख्यानुरूपिणी ॥ ११२ ॥
कुमारीपूजनरता कुमारीव्रतचारिणी ।
कुमारी भक्तिसुखिनी कुमारीरूपधारिणी ॥ ११३ ॥
कुमारीपूजकप्रीता कुमारीप्रीतिदप्रिया ।
कुमारीसेवकासंगा कुमारीसेवकालया ॥ ११४ ॥
आनन्दभैरवी बालभैरवी बटुभैरवी ।
श्मशानभैरवी कालभैरवी पुरभैरवी ॥ ११५ ॥
महाभैरवपत्नी च परमानन्दभैरवी ।
सुरानन्दभैरवी च उन्मत्तानन्दभैरवी ॥ ११६ ॥

मुक्त्यानन्दभैरवी च तथा तरुणभैरवी ।
ज्ञानानन्दभैरवी च अमृतानन्दभैरवी ॥ ११७ ॥
महाभयंकरी तीव्रा तीव्रवेगा तरस्विनी ।
त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुरसुन्दरी ॥ ११८ ॥
त्रिपुरेशी पञ्चदशी पञ्चमी पुरवासिनी ।
महासप्तदशी चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी ॥ ११९ ॥
महांकुशस्वरूपा च महाचक्रेश्वरी तथा ।
नवचक्रेश्वरी चक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी ॥ १२० ॥
राजचक्रेश्वरी वीरा महात्रिपुरसुन्दरी ।
सिन्दूरपूररुचिरा श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ॥ १२१ ॥
सर्वांगसुन्दरी रक्ता रक्तवस्त्रोत्तरीयका ।
यवा यावकसिन्दूररक्तचन्दनधारिणी ॥ १२२ ॥
यवायावकसिन्दूररक्तचन्दनरूपधृक् ।
चमरी वाचकुटिलनिर्मलश्यामकेशिनी ॥ १२३ ॥
वज्रमौक्तिकरत्नाढ्यकिरीटमुकुटोज्ज्वला ।
रत्नकुण्डलसंयुक्तस्फुरद्गण्डमनोरमा ॥ १२४ ॥
कुञ्जरेश्वरकुम्भोत्थमुक्तारञ्जितनासिका ।
मुक्ताविद्रुममाणिक्यहाराढ्यस्तनमण्डला ॥ १२५ ॥
सूर्यकान्तेन्दुकान्ताढ्यस्पर्शाश्मकण्ठभूषणा ।
वीजपूरस्फुरद्वीजदन्तपंक्तिरनुत्तमा ॥ १२६ ॥
कामकोदण्डकाभुग्नभ्रयुगाक्षिप्रवर्त्तिनी ।
मातंगकुम्भवक्षोजा लसत्कोकनदेक्षणा ॥ १२७ ॥
मनोज्ञशष्कुलीकर्णा हंसीगतिविडम्बिनी ।
पद्मरागांगदद्योतदोश्चतुष्कप्रकाशिनी ॥ १२८ ॥

नानामणिपरिस्फूर्यच्छुद्धकाञ्चनकंकणा ।
नागेन्द्रदन्तनिर्माणवलयाञ्चितपाणिका ॥ १२६ ॥
अंगुरीयकचित्रांगी विचित्रक्षुद्रघण्टिका ।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जिनी ॥ १३० ॥
कर्पूरागुरुकस्तूरीकुंकुमद्रवलेपिता ।
विचित्ररत्नपृथिवीकल्पशाखातलस्थिता ॥ १३१ ॥
रत्नद्वीपस्फुरद्रत्नसिंहासननिवासिनी ।
षट्चक्रभेदनकरी परमानन्दरूपिणी ॥ १३२ ॥
सहस्रदलपद्मान्तश्चन्द्रमण्डलवर्त्तिनी ।
ब्रह्मरूपशिवक्रोड़नानासुखविलासिनी ॥ १३३ ॥
हरविष्णुविरिञ्चीन्द्रग्रहनायकसेविता ।
आत्मयोनिर्ब्रह्मयोनिर्जगद्योनिरयोनिजा ॥ १३४ ॥
भगरूपा भगस्थात्री भगिनीभगधारिणी ।
भगात्मिका भगाधाररूपिणी भगशालिनी ॥ १३५ ॥
लिंगाभिधायिनी लिंगप्रियालिंगनिवासिनी ।
लिंगस्था लिंगिनी लिंगरूपिणी लिंगसुन्दरी ॥ १३६ ॥
लिंगगीतिमहाप्रीतिर्भगगीतिमहासुखा ।
लिंगनामसदानन्दा भगनामसदारतिः ॥ १३७ ॥
भगनामसदानन्दा लिंगनामसदारतिः ।
लिंगमालाकण्ठभूषा भगमालाविभूषणा ॥ १३८ ॥
भगलिंगामृतप्रीता भगलिंगामृतात्मिका ।
भगलिंगार्चनप्रीता भगलिंगस्वरूपिणी ॥ १३९ ॥
भगलिंगस्वरूपा च भगलिंगसुखावहा ।
स्वयम्भूकुसुमप्रीता स्वयम्भूकुसुमार्चिता ॥ १४० ॥

स्वयम्भूकुसुमप्राणा स्वयम्भूकुसुमोत्थिता ।
स्वयम्भूकुसुमस्नाता स्वयम्भूपुष्पतर्पिता ॥ १४१ ॥

स्वयम्भूपुष्पघटिता स्वयम्भूपुष्पधारिणी ।
स्वयम्भूपुष्पतिलका स्वयम्भूपुष्पचर्चिता ॥ १४२ ॥

स्वयम्भूपुष्पनिरता स्वयम्भूकुसुमग्रहा ।
स्वयम्भूपुष्पयज्ञांगा स्वयम्भूकुसुमात्मिका ॥ १४३ ॥

स्वयम्भूपुष्परचिता स्वयम्भूकुसुमप्रिया ।
स्वयम्भूकुसुमादानलालसोन्मत्तमानसा ॥ १४४ ॥

स्वयम्भूकुसुमानन्दलहरीस्निग्धदेहिनी ।
स्वयम्भूकुसुमाधारा स्वयम्भूकुसुमाकुला ॥ १४५ ॥

स्वयम्भूपुष्पनिलया स्वम्भूपुष्वासिनी ।
स्वयम्भूकुसुमस्निग्धा स्वयम्भूकुसुमोत्सुका ॥ १४६ ॥

स्वयम्भूपुष्पकरिणी स्वयम्भूपुष्पपालिका ।
स्वयम्भूकुसुमध्याना स्वयम्भूकुसुमप्रभा ॥ १४७ ॥

स्वयम्भूकुसुमज्ञाना स्वयम्भूपुष्पभोगिनी ।
स्वयम्भूकुसुमानन्दा स्वयम्भूपुष्पवर्षिणी ॥ १४८ ॥

स्वयम्भूकुसुमोत्साहा स्वयम्भूपुष्पपुष्पिणी ।
स्वयम्भूकुसुमोत्संगा स्वयम्भूपुष्परूपिणी ॥ १४९ ॥

स्वयम्भूकुसुमोन्मादा स्वयम्भूपुष्पसुन्दरी ।
स्वयम्भूकुसुमाराध्या स्वयम्भूकुसुमोद्भवा ॥ १५० ॥

स्वयम्भूकुसुमव्यग्रा स्वयम्भूपुष्पवर्णिता ।
स्वयम्भूपूजकप्रज्ञा स्वयम्भूहोतृमातृका ॥ १५१ ॥

स्वयम्भूदातृरक्षित्री स्वयम्भूभक्तभाविका ।
स्वयश्भूकुमुमप्रज्ञा स्वयम्भूपूजकप्रिया ॥ १५२ ॥

स्वयम्भूवन्दकाधारा स्वयम्भूनिन्दकान्तका ।
स्वयम्भूप्रदसर्वस्वा स्वयम्भूप्रदरूपिणी ॥ १५३ ॥
स्वयम्भूप्रदसस्मेरा स्वयम्वर्द्धशरीरिणी ।
सर्वकालोद्भवप्रीता सर्वकालोद्भवात्मिका ॥ १५४ ॥
सर्वकालोद्भवोद्भावा सर्वकालोद्भवोद्भवा ।
कुण्डपुष्पसदाप्रीतिर्गोलपुष्पसदारतिः ॥ १५५ ॥
कुण्डगोलोद्भवप्रीता कुण्डगोलोद्भवात्मिका ।
शुक्राधारा शुक्ररूपा शुक्रसिन्धुनिवासिनी ॥ १५६ ॥
शुक्रालया शुक्रभोगा शुक्रपूजासदारतिः ।
रक्ताशया रक्तभोगा रक्तपूजासदारतिः ॥ १५७ ॥
रक्तपूजारक्तहोमा रक्तस्था रक्तवत्सला ।
रक्तवर्णा रक्तदेहा रक्तपूजकपुत्रिणी ॥ १५८ ॥
रक्तद्युती रक्तस्पृहा देवी च रक्तसुन्दरी ।
रक्ताभिधेया रक्तार्हा रक्तकन्दरवन्दिता ॥ १५९ ॥
महारक्ता रक्तभवा रक्तसृष्टिविधायिनी ।
रक्तस्नाता रक्तसिक्ता रक्तसेव्यातिरक्तिनी ॥ १६० ॥
रक्तानन्दकरी रक्तसदानन्दविधायिनी ।
रक्ताशया रक्तपूर्णा रक्तसेव्या मनोरमा ॥ १६१ ॥
रक्तपूजकसर्वस्वा रक्तनिन्दकनाशिनी ।
रक्तात्मिका रक्तरूपा रक्ताकर्षणकारिणी ॥ १६२ ॥
रक्तोत्साहा च रक्ताढ्या रक्तपानपरायणा ।
शोणितानन्दजननी कल्लोकस्निग्धरूपिणी ॥ १६३ ॥
साधकान्तर्गता देवी पाविनी पापनाशिनी ।
साधकानां सुखकरी साधकारिविनाशिनी ॥ १६४ ॥

साधकानां हृदिस्थात्री साधकानन्दकारिणी ।
साधकानाञ्च जननी साधकप्रियकारिणी ॥ १६५ ॥
साधकप्रचुरानन्दसम्पत्तिसुखदायिनी ।
शुक्रपूज्या शुक्रहोमसन्तुष्टा शुक्रवत्सला ॥ १६६ ॥
शुक्रमूर्तिः शुक्रदेहा शुक्रपूजकपुत्रिणी ।
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रसंस्पृहा शुक्रसुन्दरी ॥ १६७ ॥
शुक्रस्नाता शुक्रकरी शुक्रसेव्यातिशुक्रिणी ।
महाशुक्रा शुक्रभवा शुक्रवृष्टिविधायिनी ॥ १६८ ॥
शुक्राभिधेया शुक्रार्हाशुक्रवन्दकवन्दिता ।
शुक्रानन्दकरी शुक्रसदानन्दविधायिनी ॥ १६९ ॥
शुक्रोत्सवा सदाशुक्रपूर्णा शुक्रमनोरमा ।
शुक्रपूजकसर्वस्वा शुक्रनिन्दकनाशिनी ॥ १७० ॥
शुक्रात्मिका शुक्रसम्पच्छुक्राकर्षणकारिणी ।
सारदा साधकप्राणा साधकासक्तमानसा ॥ १७१ ॥
साधकोत्तमसर्वस्वसाधिका भक्तवत्सला ।
साधकानन्दसन्तोषा साधकाधिविनाशिनी ॥ १७२ ॥
आत्मविद्या ब्रह्मविद्या परब्रह्मस्वरूपिणी ।
त्रिकूटस्था पञ्चकूटा सर्वकूटशरीरिणी ।
सर्ववर्णमयी वर्णजपमालाविधायिनी ॥ १७३ ॥

श्रीशंकर उवाच

इति श्रीकालिकानाम्नां सहस्रं शक्तिभाषितम् ।
गुह्याद्गुह्यतरं साक्षान्महापातकनाशनम् ॥ १७४ ॥
पूजाकाले निशीथे च सन्ध्ययोरुभयोरपि ।
लभते गाणपत्यं स यः पठेत्साधकोत्तमः ॥ १७५ ॥

यः पठेत्पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयदपि ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः स याति कालिकालयम् ॥ १७६ ॥
श्रद्धयाश्रद्धया वापि यः कश्चिन्मानवः पठेत् ।
दुर्गाद्दुर्गतरं तीर्त्वा स याति परमां गतिम् ॥ १७७ ॥
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च यांगना ।
श्रुत्वा स्तोत्रमिदं पुत्राँल्लभते चिरजीविनः ॥ १७८ ॥
यं यं कामयते कामं पठेत्स्तोत्रमनुत्तमम् ।
देवीवरप्रसादेन तं तं प्राप्नोति नित्यशः ॥ १७९ ॥
स्वयम्भूकुसुमैः शुक्रैः सुगन्धिकुसुमान्वितैः ।
यवायावकसिन्दूररक्तचन्दनसंयुतैः ॥ १८० ॥
मत्स्यमांसादिभिर्वीर मधुभिः साज्यपायसैः ।
भक्त्योपनीतैर्मन्त्रेण साधितैः शक्तिभिः सह ॥ १८१ ॥
पञ्चोपचारैर्नैवेद्यैर्बलिभिर्बहुशोणितैः ।
धूपदीपैर्महादेवीं पूजयित्वा मनोहरैः ॥ १८२ ॥
जप्त्वा महामनुं स्तोत्रं पठेद्भक्तिसमन्वितः ।
अनन्यचेता स्थिरधीर्मुक्तकेशो दिगम्बरः ॥ १८३ ॥
शवारूढश्चितास्थो वा श्मशानालयमागतः ।
शून्यालये गतो वापि शय्यास्थो वापि साधकः ॥ १८४ ॥
स भवेत्कालिकापुत्र इति ख्यातिमुपागतः ।
सर्वविद्यावतां श्रेष्ठो धनेन च धनाधिपः ॥ १८५ ॥
वायुतुल्यबली लोके दुर्जयः शत्रुमर्दनः ।
सर्वसंकटमुत्तीर्णः सर्वसिद्धिसमन्वितः ॥ १८६ ॥
मधुमत्या स्वयं देव्या सेव्यमानः स्मरोपमः ।
महेश इव योगीन्द्रः सर्वसिद्धिसमन्वितः ॥ १८७ ॥

कामिनीकामदेवोऽसौ सर्वाकर्षणकारकः।
जलसूर्येन्दुवायूनां स्तम्भको राजवल्लभः॥ १८८॥
यशस्वी सत्कविर्धीमान् सन्मन्त्री कोकिलस्वरः।
बहुपुत्रो गजाश्वानामीश्वरो धार्मिकः कृती॥ १८९॥
मार्कण्डेय इवायुष्मान् जरापलितवर्जितः।
नवयौवनयुक्तः स्यादायुर्वर्षसहस्रभाक्॥ १९०॥
बहु किं कथ्यतां तस्य पठतस्तवमुत्तमम्।
न किंचिद् दुर्लभं लोके तस्य स्यादभिवाञ्छितम्॥ १९१॥
ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः।
सर्वमाशु प्रणश्येत्तु स्तवस्यास्य प्रसादतः॥ १९२॥
रजस्वलाभगं पश्यन् जप्त्वा कालीमहामनुम्।
स्तवेनानेन संस्तुत्यसाधकः किन्न साधयेत्॥ १९३॥
परदारपरो वापि जप्त्वा मन्त्रं पठंस्तवम्।
कुबेर इव वित्ताढ्यो जायते मदनोपमः॥ १९४॥
अष्टोत्तरशतञ्जप्त्वा भगमामन्त्र्य तत्त्ववित्।
संगम्य पठनादस्य सर्वविद्येश्वरो भवेत्॥ १९५॥
दिगम्बरो मुक्तकेशः शय्यास्थो मैथुनी नरः।
जप्त्वा स्तुत्वा महाकालीं खेचरो जायतेऽचिरात्॥ १९६॥
शुक्रोत्सारणकाले तु जपपूजापरायणः।
श्मशानकालिकां स्तुत्वा वाणीवत्सत्कविर्भवेत्॥ १९७॥
आलोकयंश्चिन्तयित्वा विवस्त्रां परयोषितम्।
जप्त्वा स्तुत्वा महाकालीं सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ १९८॥
सुरतेषु मनुञ्जप्त्वा स्तुत्वा भगवतीं शिवाम्।
सर्वपापैः परित्यक्तो मानवः स्याच्छुकोपमः॥ १९९॥

कुहूपूर्णेन्दुसंक्रान्तौ चतुर्दश्यष्टमीषु च ।
नवम्यां मंगलदिने पठेत्स्तोत्रं सुसाधकः ॥ २०० ॥
भौमावास्यां निशीथे च चतुष्पथगतो नरः ।
मांसभक्तवलिं दत्वा सदुग्धमीनशोणितम् ॥ २०१ ॥
अष्टोत्तरशतञ्जप्त्वा पठेन्नामसहस्रकम् ।
सुदर्शनो भवेदाशु देवगन्धर्वसेवितः ॥ २०२ ॥
सदाशिवो भवत्येव षण्मासाभ्यासयोगतः ।
येन तेन प्रकारेण कालीस्तुतिपरायणः ॥ २०३ ॥
स्तम्भयेदखिलाँल्लोकान् राजानमपि मोहयेत् ।
आकर्षयेद् देवकन्यां वशयेदपि केशवम् ॥ २०४ ॥
मारयेदखिलां दुष्टानुच्चाटयति शात्रवान् ।
नरमार्जारमहिषमूषकच्छागशोणितैः ॥ २०५ ॥
सास्थिमांसैः समधुभिः साम्रृतैर्दुग्धपायसैः ।
योनिच्छालिततोतेन भगलिंगामृतेन च ॥ २०६ ॥
शुक्रैः पूजाजपान्ते यः कालीं सन्तर्प्य साधकः ।
सहस्रनामभिर्देवीं स्तौति भक्तिपरायणः ॥ २०७ ॥
मातेव कालिका तस्य सर्वत्र हितकारिणी ।
परनिन्दा-परद्रोह-परीवादपराय च ॥ २०८ ॥
खलाय परतन्त्राय भ्रष्टायासाधकाय च ।
शिवाभक्ताय दुष्टाय दूषकाय दुरात्मने ॥ २०९ ॥
हरिभक्तिविहीनाय परदारपराय च ।
पूजाजपविहीनाय स्त्रीसुरानिन्दकाय च ॥ २१० ॥
न स्तवं दर्शयेद्दिव्यं सन्दर्श्य शिवहा भवेत् ।
कुलीनाय महेच्छाय दुर्गाभक्तिपराय च ॥ २११ ॥

वैष्णवाय विशुद्धाय भक्तियुक्ताय मन्त्रिणे।
अद्वैतानन्दरूपाय निवेदितपराय च ॥ २१२ ॥

दद्यात्स्तोत्रं महाकाल्याः साधकाय तदाज्ञया।
गुरुविष्णुमहेशानामभेदेन महेश्वरीम् ॥ २१३ ॥

समन्तां भावयन्मन्त्री महेशो नात्र संशयः।
स शाक्तः शिवभक्तश्च स एव वैष्णवोत्तमः ॥ २१४ ॥

सम्पूज्य स्तौति यः कालीमद्वैतम्भावमावहन्।
देव्यानन्देन सानन्दो देवीभक्तेन भक्तिमान् ॥ २१५ ॥

स एव धन्यो यस्यार्थे महेशो व्यग्रमानसः।
कामयित्वा यथाकामं स्तवमेनमुदीरयेत् ॥ २१६ ॥

सर्वरोगैः परित्यक्तो जायते मदनोपमः।
चक्रं वा स्तवमेनं वा धारयेदंगसंगतम् ॥ २१७ ॥

विलिख्य विधिवत्साधुः स एव कालिकातनुः।
देव्यै निवेदितं यद्यत्तत्सर्वं भक्षयेन्नरः ॥ २१८ ॥

दिव्यदेहधरो भूत्वा देव्याः पार्श्वचरो भवेत्।
नैवेद्यनिन्दकं दृष्ट्वा नृत्यन्ति योगिनीगणाः ॥ २१९ ॥

रक्तपानोद्यताः सर्वे मांसास्थिचर्वणोद्यताः ॥ २२० ॥

तस्मान्निवेदितं देव्यै दृष्ट्वा स्तुत्वा च मानवः।
न निन्देन्मनसा वाचा सर्वव्याधिविवर्जितः ॥ २२१ ॥

आत्मानं कालिकात्मानं भावयँस्तौति मानवः।
शिवोपमं गुरुं ध्यात्वा स एव च सदाशिवः ॥ २२२ ॥

यस्यालये तिष्ठति नूनमेतत् स्तोत्रं भवान्या लिखितं विधिज्ञैः।
गोरोचनालक्तककुंकुमाद्यैः सिन्दूरकर्पूरमधुद्रवेण ॥ २२३ ॥

न तत्र चोरस्य भयं कदाचिन्मनोऽन्यथा वाशनिवह्निभीतिः ।
उत्पातवायोरपि नात्र शंका लक्ष्मीः स्वयं तत्र वसेदलोला ॥२२४॥
स्तोत्रं पठन्नेतदनन्तपुण्यं कालीपदाम्भोजपरो मनुष्यः ।
विधानपूजाफलमेव सम्यक् प्राप्नोति संपूर्णमनोरथोऽसौ ॥२२५॥
मुक्ताः श्रीचरणारविन्दविमुखाः स्वर्गामिनो योगिनो
ब्रह्मोपेन्द्रशिवात्मकार्चनरतालोकेऽपि संलेभिरे ॥
श्रीमच्छंकरभक्तिपूर्वकमहाकालीपदध्यायिनो
भक्तिर्भुक्तिमती स्वयं स्तुतिपरा मुक्तिः करस्थायिनी ॥२२६॥
इति श्रीशिवपरशुरामसंवादे कालिकाकुलसर्वस्वे आद्या-
सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ शुभमस्तु । श्रीरस्तु ॥

श्रीदुर्गा-सहस्रनामस्तोत्रम्

ॐ ह्रीं दुं जगदम्बाभा भद्रिका भद्रकालिका ।
प्रचण्डा चण्डिका चण्डी चण्डमुण्डनिषूदनी ॥ १ ॥

अनसूयास्तुटस्तारा कृत्तिका कुब्जिकाजया ।
प्रलयास्थितिसम्भूतिर्विभूतिर्भयनाशिनी ॥ २ ॥

महामाया महाविद्या मूलविद्या चिदीश्वरी ।
मदालसा मदोत्तुङ्गा मदिरा मदनप्रिया ॥ ३ ॥

आलिव्यालप्रसूः पण्या पवित्रा परमेश्वरी ।
आदिदेवी कलाकान्ता त्रिपुरा जगदीश्वरी ॥ ४ ॥

मनोनाममहालक्ष्मीः सिद्धिलक्ष्मीः सरस्वती ।
सरित् कादम्बरी गोदा गुह्यकाली गणेश्वरी ॥ ५ ॥

गणाम्बिका जया तापी तपना तापहारिणी ।
तपोमयी दुरालम्भा दुष्टग्रहनिवारिणी ॥ ६ ॥

दुःखहा सुखदा माध्वी परमा भूतसूः सुराः ।
सुधा सुधांशुनिलया प्रलयानलसन्निभा ॥ ७ ॥

समस्तसम्पदा भोजनिलया कलिकल्पया ।
विद्येश्वरी विश्वमयी विराट् छन्दोगतिर्मतिः ॥ ८ ॥

धृतिदा दाम्बिकी दोला लोपामुद्रा पटीयसी ।
गरिष्ठा रिष्टहा दुष्टा कृशा काशी कुलाकुला ॥ ९ ॥

अकुलस्यापदन्यासा न्यासरूपा विरूपिणी ।
विरूपाक्षा कोटराक्षी कुलकान्तापराजिता ॥ १० ॥

अजिता कुलिका लम्पा लम्पटा त्रिपुरेश्वरी ।
त्रितयी वेदविन्यासा संन्यासुर्मतिर्भया ॥ ११ ॥

अभया स्वर्मुखा देवी महौषधिरलम्बुसा ।
चपला चन्द्रिका चण्डा चण्डमुण्डनिषूदनी ॥ १२ ॥

चपलाक्षी मदाविष्टा मदिरारुणलोचना ।
पुरीत्रिपुरसूराम्ना रमा रामा मनोरमा ॥ १३ ॥
सन्ध्या सन्ध्याभ्रशीला च शाला श्यामपयोधरा ।
शशाङ्कमुकुटा श्यामा सुरासुन्दरलोचना ॥ १४ ॥
विषमाक्षी विशालाक्षी वशा वागीश्वरी शिला ।
मनःशिला च कस्तूरी मृगनाभिर्मृगेक्षणा ॥ १५ ॥
मृगारिवाहना साध्वी मानदा मत्तभाषिणी ।
नारसिंही वासदेवी वामा वामश्रुतिप्रिया ॥ १६ ॥
पण्यापुण्यगतिः पुण्या पुत्री पुण्यजनप्रिया ।
चामुण्डा उग्रचण्डा च महाचण्डतमा उमा ॥ १७ ॥
तमस्विनी प्रभा ज्योत्स्ना महाज्योतिःस्वरूपिणी ।
स्वरूपा सद्गतिः साध्वी सदा सद्रूपराजिता ॥ १८ ॥
सृष्टिः स्थितिः क्षेमकरी क्षामा क्षामी व्रतिस्तनी ।
क्षोणी क्षयकरी क्षीणा सर्वस्या शिववल्लभा ॥ १९ ॥
दन्तुरा दाड़िमप्रीतिः दया दाम्भिकसूदिनी ।
राक्षसी डाकिनी योग्या योगिनी योगवल्लभा ॥ २० ॥
कबन्धा कन्दरा कृत्या कृत्तिका कण्टकान्तका ।
कलङ्करहिता काली कम्पा काश्मीरवल्लभा ॥ २१ ॥
काशी कीर्तिप्रदा काञ्ची काश्मीरी कोकिलस्वना ।
प्रभावती महारौद्री रुद्रपत्नी रुजापहा ॥ २२ ॥
रतिस्तुतिस्तुरा तुर्या तोतुला भववासिनी ।
तपःप्रिया शरच्छ्रेष्ठा पङ्कपुत्री यमस्वसा ॥ २३ ॥
यामी यमान्तका याम्या यमुना स्वर्नदी तड़ित् ।
नारायणी विश्वमाता भवानी पापनाशिनी ॥ २४ ॥

विगता विगतप्रश्ना कुशा कुष्टासिधारिणी ।
वारी वारा वरधरा वरदी वीरसूदिनी ॥ २५ ॥
वीरसूर्वामनाकारा दीर्घसत्रा दयावती ।
दरी धनप्रिया धात्री धात्रीवल्ली महोदरी ॥ २६ ॥
गणेश्वरी गया काञ्ची काञ्चीकिङ्किणिघण्टिका ।
माया मायावती मत्ता प्रमत्ता प्रवरीश्वरी ॥ २७ ॥
पौरन्दरी शची सीता शीतातपस्वभावजा ।
स्वाभाविकगुणा गण्या गाम्भीर्यगुणभूषणा ॥ २८ ॥
सूतिः सूर्यकला सुप्ता सप्तसप्तिरूपिणी ।
तेजस्विनी सदानन्दा सभा सन्तोषवर्धिनी ॥ २९ ॥
तर्पणा कर्षणा होता सङ्कल्पा शुभमात्रिका ।
दर्भा द्रोणिकला श्रान्ता समिधा सुरवेदिका ॥ ३० ॥
धूम्राद्गतिश्चरमतिश्चामीकररुचिश्चिता ।
चिन्तानलेश्वरी नीला कालानिलसरस्वती ॥ ३१ ॥
अपर्णा सुफला यज्ञा सभया निर्भया वहा ।
भीमस्वना भर्गशिखा भास्वती भास्कराविभा ॥ ३२ ॥
विभावरी नदी नन्द्या नन्द्यावर्तप्रवर्तिनी ।
पृथ्वीधरा विषधरा विश्वगर्भा प्रवर्तिका ॥ ३३ ॥
विश्वमाया विश्ववाला विश्वम्भरविलासिनी ।
उरगेशा पद्मनागा पद्मनाभप्रसूः प्रजा ॥ ३४ ॥
तोरणा तुलसी दीक्षा दक्षा दाक्षायणी द्युतिः ।
सम्पुटा शयना शय्या शासना शमनान्तका ॥ ३५ ॥
श्यामा कवर्णा शार्दूली शष्पनीतांशुवल्लभा ।
स्तुत्या प्रणीता नियतिः कम्पना कम्पहारिणी ॥ ३६ ॥

चण्यका भाचरा चीना दीना दीनजनप्रिया ।
वसन्धुरा वासवेशी वसुनाथा वटेश्वरी ॥ ३७ ॥
समुद्रसङ्गमा पूर्णा तरला तरुवासिनी ।
पार्वती पासरी मान्या माननीया मधुप्रिया ॥ ३८ ॥
माधवी मधुपानस्था मन्दिरा मन्दुरा मृगी ।
मुसूषा रुरुषा रेवा रेवती रमणी रमा ॥ ३९ ॥
ऋद्धिहस्ता सिद्धिहस्ता अन्नपूर्णा महेश्वरी ।
अणुरूपा जगज्योतिः समस्तासुरघातिनी ॥ ४० ॥
गारुड़ी गगनालम्बा लम्बमानकुचप्रिया ।
पीताम्बरा पीतपुष्पा पूतना गातवल्लभा ॥ ४१ ॥
वलाका जगदन्ता च जरा जयवरप्रदा ।
प्रीतिः कठोर-वदना करालरदना रमा ॥ ४२ ॥
जिह्वा हस्ता च वगला प्रणया विनयप्रदा ।
कीरी करालवपुषी शेमुषी मल्लिका मुषा ॥ ४३ ॥
उत्तीर्णा उर्णिका तीक्ष्णा श्लक्ष्णा कामेश्वरी शिवा ।
शिवपत्नी सरोजाक्षी पद्महस्ता सरस्वती ॥ ४४ ॥
तथ्या पथ्यकृती रथ्या रथस्था विततासुरा ।
महती रागिनी मार्गी शुचिहासा हरीश्वरी ॥ ४५ ॥
हरिरत्नाशुलसिता लक्ष्मीनायकसुन्दरी ।
अम्बालिकाम्बा देवेशी अनगाग्निशिखाश्रुतिः ॥ ४६ ॥
अलसाल्पगतिश्चान्त्यानन्तानन्तगुणाश्रया ।
अयाचादित्यसंकाशा आदित्यकुलसुन्दरी ॥ ४७ ॥
आत्मरूपाधिशमनी आदिमायाधिदेवता ।
इन्द्रप्रसूरिन्द्योतिरिनाग्निशशिलोचना ॥ ४८ ॥

उमा उर्वी उरुभुजा उत्तुङ्गा चोन्नवाहना ।
उत्तङ्का चोत्तमा ध्येया उल्लासा चोरुगर्विणी ॥ ४९ ॥
ऊष्मा उष्णा च गुर्वाङ्गी ऊर्ध्वाक्षी ऊर्ध्वमस्तिका ।
ऋद्धि ऋचा ऋवर्णेशी ऋणहर्त्री च वार्तकी ॥ ५० ॥
ऋढिजा चारुवस्त्रा च ऋणिवासा महालसा ।
लृकारा लृक्कुरा लीना लृकारवरधारिणी ॥ ५१ ॥
ऐणाङ्कमुकुटा चेहा चारुचन्द्रकला कला ।
ऐंकारगतिरैश्वर्यदायिनी चेश्वरीगतिः ॥ ५२ ॥
ओंकारबीजरूपा च औंत्रिकी बीजधारिणी ।
अम्बिका लम्पिकांपा च अःस्वरोद्गमरूपिणी ॥ ५३ ॥
काली च भद्रकाली च कालिका कालवल्लभा ।
कदम्बनिलया कन्था काञ्ची मण्डनमण्डिता ॥ ५४ ॥
कलङ्करहिता कुर्या काञ्चनाभाकरीरगा ।
कनकाचलवासा च करुणा कुलमानसा ॥ ५५ ॥
कुलस्था कौलिनी कुल्या कुरुकुल्या कपालिनी ।
कपालकुञ्जनिर्वीण्णा क्रींकारा कञ्जलोचना ॥ ५६ ॥
खञ्जनाक्षी खड्गधरा खेटकायुधभूषणा ।
गणाध्यक्षा गजगतिर्गणेश-जननी गदा ॥ ५७ ॥
गोधा गदाधरप्राज्या गगनेशी महीमला ।
घुर्घुरा घटभर्घूका घुसृणाभा घनेश्वरी ॥ ५८ ॥
घनसारप्रिया साम्या घवर्णरुतभूषणा ।
चान्द्री चन्द्रस्तुता चार्वी चन्द्रका चण्डनिःस्वना ॥ ५९ ॥
चञ्चरीकस्वना देवी चञ्चचामीकरो गदा ।
छत्रिकाच्छरिकाच्छुच्छा छत्रचामरभूषणा ॥ ६० ॥

जींकारी जलजिह्वा च जृम्भिका जलयोगिनी।
जटाजूटधरा जातिर्जातीपुष्पसमानना ॥ ६१ ॥

जलेश्वरी जगद्ध्येया जानकी जननी जटा।
झंझाझरी झरत्कारी जरत्काञ्चीरकिङ्किणी ॥ ६२ ॥

झम्पिकाऽझम्पकृज्झम्पा पुत्रत्रासनिवारिणी।
ञणुरूपाञकहस्ता ञकाराक्षरसम्मता ॥ ६३ ॥

टङ्कायुधा महातथ्या टङ्कारा टरुणाटसी।
ठकुठा ठत्कुरा ठानी डिढीरवसना डला ॥ ६४ ॥

ढण्डानिलमयी ढंडा ढणत्कारकराढसा।
णान्ताननी णीलायुधा णवर्णाक्षरभूषणा ॥ ६५ ॥

तरुणी तुन्दिला तोन्दा तामसी तामसप्रिया।
ताम्रानना ताम्रकरा ताम्रांबरधरा तुला ॥ ६६ ॥

तापत्रयहरा तापी तैलासक्ता तिलोत्तमा।
स्थाणुपत्नी स्थली स्थूला स्थितिः स्थैर्यधरास्थुला ॥ ६७ ॥

दन्तनी दन्तरा दर्वी देवका देवनायका।
दमिनी शमनी दंभ्या दण्डहस्ता दुरानतिः ॥ ६८ ॥

दुर्वारा दुर्गतिर्द्राक्षा द्राक्षा द्रविडवासिनी।
दूरस्था दुन्दुभिर्धाना दरदा दरनाशिनी ॥ ६९ ॥

दुःखघ्नी द्रनगा द्रष्टा दया दाम्भिक्यनाशिनी।
धर्माधर्मप्रसूर्धन्या धनदा धातृवल्लभा ॥ ७० ॥

धनुर्धरा धनुर्वल्ली धनुष्क-वरदायिनी।
धूमाला धूम्रवदना धूमश्रीधूम्रलोचना ॥ ७१ ॥

नलिना नर्तकी नान्ता नङ्गा नलिनलोचना।
निर्मला निगमाचारा निम्नगा नगजा निमिः ॥ ७२ ॥

नीलग्रीवा निरीहा च नीपोप-वन-वासिनी।
निरञ्जनजनी जन्मा निद्रालुर्नीरवासिनी॥ ७३॥
नटिनी नाद्यनिरता नवनीतप्रियानिला।
नारायणी निराकारा निर्लेपा नित्यवल्लभा॥ ७४॥
पद्मावती पद्मकरा पुत्रदा पुत्रवत्सला।
पुरोत्तारा पुरी पाठा पीतश्रोत्रा पुलोमजा॥ ७५॥
पुष्पिणी पुस्तककरा पटुपाठीरवाहना।
पापघ्नी शम्पिनी पापी लीपकी परसुन्दरी॥ ७६॥
पिशाची च पिशाचघ्नी पानपात्रधरापुटा।
पूर्णिमा पञ्चमी पौत्री पुरूरववरप्रदा॥ ७७॥
पञ्चयज्ञा पञ्चशरी पञ्चाशति मनुप्रिया।
पाञ्चाली पञ्चपुत्रा च पूजा पूर्णमनोरथा॥ ७८॥
फलिनी फलदात्री च फल्गुहस्ता फणिप्रिया।
स्फिरङ्गहा स्फीतमतिः स्फीतिः स्फीतिमती स्फुटा॥ ७९॥
बलमाया बलस्तुत्या विहसेना बलाबला।
बगलेश्वरपूज्या च बलिनि बलवर्धिनी॥ ८०॥
बुद्धमाता बोद्धमतिर्वद्धबन्धन-मोचिनी।
भगिनी भगमाला च भगलिङ्गा मृतस्रवा॥ ८१॥
भेमीश्वरी च भीरुण्ढा भगेशी भगसर्पिणी।
भगलिङ्गस्थिता भग्या भाग्यदा भगमालिनी॥ ८२॥
मत्ता मनोहरा मेना मैनाक-जननी सुरी।
मुरली मानवी होत्री वहस्विजनमोदिता॥ ८३॥
मत्तमातङ्गगा माद्री मरालगतिरञ्चला।
यज्ञेश्वरीश्वरी यज्ञा यजुर्वेदप्रिया श्रुता॥ ८४॥

यशोवती यतिस्था च यतात्मा यतिवल्लभा ।
यवनी यौवनस्था च यवा यज्ञजनाश्रया ॥ ८५ ॥
यज्ञसूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञभूर्धूपमूलिनी ।
रञ्जिता राजपत्नी च राजसूर्यफलप्रदा ॥ ८६ ॥
रजोवती रजश्चित्रा राज्यदा राज्यवर्द्धिनी ।
राज्ञी रात्रिचरेशानी रोगघ्नी त्रिपुरेश्वरी ॥ ८७ ॥
ललिता लतिका लाप्या लोपा ललनलालसा ।
लाटीरद्रुमवासा च पाटीरद्रुमवर्तिनी ॥ ८८ ॥
लङ्का ललज्जटजूटा जङ्गिता सुरसुन्दरी ।
लोकेशवरदा लीना लयकर्त्री महालया ॥ ८९ ॥
वेदिर्विमग्ना वाणी च वेणावेणुवनेश्वरी ।
वन्दमानावर्णाढ्या वाराही वीरमातृका ॥ ९० ॥
शङ्खिनी शङ्खवलया शङ्खायुधधराशमा ।
शशिमण्डलमध्यस्था शीतलाम्बुनिवासिनी ॥ ९१ ॥
श्मशानस्था महाघोरा श्मशाननिलयेश्वरी ।
सिन्धुः सूत्रधरा सत्रा समस्तकुलचारिणी ॥ ९२ ॥
सप्तमी सात्त्विकी सत्त्वा सूत्रस्था सुरसूदिनी ।
सुरेश्वरी सम्प्रदाद्या समस्थाचलचारिणी ॥ ९३ ॥
समदा समितिः सस्मा सवना सवनेश्वरी ।
हंसी हरप्रिया हास्या हरिनेत्रा हराम्बिका ॥ ९४ ॥
हेषा हटेश्वरी हीरा हलिनी फलदायिनी ।
हेहा हाहारववला हालाहलहताशया ॥ ९५ ॥
क्षमा क्षेमप्रदा क्षामा क्षौमाम्बरधराक्षया ।
क्षितिः क्षीरप्रिया लक्ष्मीः क्षितिभृत् तुलया क्षुधा ॥ ९६ ॥

क्षत्रियी ब्राह्मणी क्षेत्रा क्षपा क्षाबीजमण्डिता ।
लक्षा बीजस्वरूपा च क्षकाराक्षरमातृका ।। ९७ ।।
दुर्गन्धनाशिनी दुर्वा दुर्गमा दुर्गनाशिनी ।
दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ओंह्रींदुंबीजमण्डिता ।। ९८ ।।
इति नामसहस्रं तु मन्त्रगर्भं महाबलम् ।
दुर्गा यद्दुर्गतिहरं सर्वदेवनमस्कृतम् ।। ९९ ।।
सर्वमन्त्रमयं दिव्यं देवदानवपूजितम् ।
श्रेयस्करं महापुण्यं महापातकनाशनम् ।। १०० ।।
यः पठेत्पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदपि ।
स महापातकैर्मुक्तो देवदानवसेवितः ।। १०१ ।।
इह लोके श्रियं भुक्त्वा परत्र त्रिदिवं व्रजेत् ।
दुर्गानामसहस्रं तु मूलमन्त्रैकसाधनम् ।। १०२ ।।

अर्धरात्रे पठेद् वीरो मधुरस्मयसेवितः ।
त्रिवारं वर्मपूर्वन्तु भवेद् वागीशसन्निभः ।।१०३ ।।

यः पठेद् देवि ! मध्याह्ने स्त्रीयुतो मुक्तकुन्तलः ।
तस्य वैरिकुलं त्रस्येन्यसूदि चैव दर्शनात् ।। १०४ ।।
इहनादिव देवेशि ! पतङ्गकुलमद्रिजे !
यः पठेद् वेतसीमूले सायं पूजितभैरवः ।। १०५ ।।
तस्यास्यकुहराद् वाणी निःसरेद् गद्यपद्यभाक् ।
यः पठेत् सततं देवि ! शयने स्त्रीरताकुलः ।। १०६ ।।
स भवेद् वैरिविध्वंसी धनेन धनदोपमः ।
वाग्भिर्वागीशसदृशः कवित्वेन सितोपमः ।। १०७ ।।
तेजसा सूर्यसंकाशो यशसा सूर्यसन्निभः ।
बलेन वायुतुल्योऽपि लक्ष्म्या गीर्वाणनायकः ।। १०८ ।।

देवि ! किं बहुनोक्तेन स भवेद् भैरवोपमः ।
स्तम्भनाकर्षणोच्चाटवशीकरणकृत्तमः ॥ १०९ ॥
रवौ भूर्जे लिखेद् देवि ! निशीथे वाष्टगन्धकैः ।
स स्तण्यरेतो राजस्कैः साधको मन्त्रसाधकः ॥ ११० ॥
लिखित्वा वेष्टयन् नामसहस्रमणिमीश्वरी ।
श्वेतसूत्रेण सम्वेष्ट्य लाक्षया परिवेष्टयेत् ॥ १११ ॥
सुवर्णरजताद्यैश्च वेष्टयेत्पीतसूत्रकैः ।
सम्पूज्य गुटिकां देवि ! शुभेऽह्नि साधकोत्तमः ॥ ११२ ॥
धारयेन्मूर्ध्नि वा बाहौ गुटिकां कामदायिनीम् ।
रणे रिपून् विजित्याशु कल्याणि ! गृहमाविशेत् ॥ ११३ ॥
वन्ध्या वाम-भुजे धृत्वा कृत्वा साधकपूजनम् ।
पुत्रान् लभेन्महादेवि ! साक्षाद् वैश्रवणोपमान् ॥ ११४ ॥
गुटिकैषा महादिव्या गोप्या कामफलप्रदा ।
साधकैः सततं पूज्या साक्षाद् दुर्गास्वरूपिणी ॥ ११५ ॥
योऽर्चयेत्साधको दुर्गागुटिकां धारयेत् प्रिये !
पठेद् वर्मशिवे मन्त्रं नाम साहस्रिकं परम् ॥ ११६ ॥
अङ्गस्तोत्रं फलं तस्य देवि ! वक्ष्येऽधुना शृणु ।
वने राजकुले वापि दुर्भिक्षे शत्रुसङ्कटे ॥ ११७ ॥
वधे यक्ष-पिशाचादि-भूत-प्रेत-भये तथा ।
वीरो विगतभेर्देवि ! सर्वत्र विजयी भवेत् ॥ ११८ ॥
स्तम्भयेद् वायुसूर्ये च चन्द्रादीन् साधकोत्तमः ।
मोहयेत् त्रिजगत्सद्यः कान्ताश्चाकर्षयेद् ध्रुवम् ॥ ११९ ॥
मारयेदखिलान् शत्रूनुच्चाटयति वैरिणः ।
वशयेद् देवता सद्यः किं पुनर्मायया शिवे ॥ १२० ॥

शमयेदखिलान् रोगान् महोत्पातानुपद्रवान् ।
किं किं न लभते वीरो दुर्गापञ्चाङ्गपूजनात् ॥ १२१ ॥

इदं रहस्यं दुर्गायाः अष्टाक्षर्या महेश्वरी ।
सर्वस्वं सारतत्त्वं च मूलविद्यामयं परम् ॥ १२२ ॥

महाचीनक्रमस्थानां साधकानां यशस्करम् ।
पठेत्संपूजयेद् देव्या मन्त्रनामसहस्त्रकम् ॥ १२३ ॥

इदं सारं हि तन्त्राणां तत्त्वानां तत्त्वमुत्तमम् ।
दुर्गानामसहस्त्रं तु तव भक्त्या प्रकाशितम् ॥१२४॥

अभक्ताय न दातव्यं गोप्तव्यं पशुसन्निधौ ।
अभक्तेभ्योऽपि पुत्रेभ्यो दत्त्वा नरकमाप्नुयात् ॥ १२५ ॥

दीक्षिताय कुलीनाय गुरुभक्तिरताय च ।
शान्ताय भक्तियुक्ताय देयं नामसहस्त्रकम् ॥ १२६ ॥

विना दानं न गृह्णीयान्न दद्याद् दक्षिणां विना ।
दत्त्वा गृहीत्वाप्युभयोः सिद्धिहानिर्भवेद् ध्रुवम् ॥ १२७ ॥

इदं नामसहस्त्रं तु गुप्तगोप्यतमं शिवे ।
तव भक्त्या मयाख्यातं गोपनीय स्वयोनिवत् ॥ १२८ ॥

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे देवीरहस्ये दुर्गासहस्त्रनामाख्यं स्तोत्रं समाप्तम्

श्रीगंगा-सहस्रनामावली

अथ ध्यानम्

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां
करधृतकलशोद्यत्सोत्पलामीत्यभीष्टाम् ।।
विधिहरिहररूपां सेन्दुकोटीरजूटां
कलितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ।। १ ।।

ॐ ओंकाररूपिण्यै नमः, अजरायै नमः, अतुलायै नमः ।
अनन्तायै नमः, अमृतस्रवायै नमः, अत्युदारायै नमः ।
अभयायै नमः, अशोकायै नमः, अलकनन्दायै नमः ।
अमृतायै नमः, अमलायै नमः, अनाथवत्सलायै नमः ।
अमोघायै०, अपां योनये०, अमृतप्रदायै नमः, अव्यक्तलक्षणायै० ।
अक्षोभ्यायै नमः, अनवच्छिन्नायै नमः, अपरायै नमः ।
अजितायै नमः, अनाथनाथायै नमः, अभीष्टार्थसिद्धिदायै० ।
अनङ्गवर्धिन्यै नमः, अणिमादिगुणायै नमः, आधारायै नमः, ।
अग्रगण्यायै नमः, अलीकहारिण्यै नमः, अचिन्त्यशक्तये नमः ।
अनघायै नमः, अद्भुतरूपायै नमः, अघहारिण्यै नमः ।
अद्रिराजसुतायै नमः, अष्टाङ्गयोगसिद्धिप्रदायै०, अच्युतायै नमः ।
अक्षुण्णशक्तये नमः, असुदायै नमः, अनन्ततीर्थायै नमः ।
अमृतोदकायै नमः, अनन्तमहिम्ने नमः, अपारायै नमः ।
अनन्तसौख्यप्रदायै०, अन्नदायै नमः, अशेषदेवतामूर्तये नमः ।
अघोरायै नमः, अमृतरूपिण्यै नमः, अविद्याजालशमन्यै०
अप्रतर्क्यगतिप्रदायै०, अशेषविघ्नसंहर्त्र्यै नमः, अशेषगुणगुम्फितायै०
अज्ञानतिमिरज्योतिषे०, अनुग्रहपरायणायै नमः, अभिरामायै नमः ।

अनवद्यांग्यै नमः, अनन्तसारायै नमः, अकलङ्किन्यै नमः ।
आरोग्यदायै नमः, आनन्दवल्ल्यै नमः, आपन्नार्तिविनाशिन्यै०
आश्चर्यमूर्त्यै नमः, आयुष्यायै नमः, आढ्यायै नमः ।
आद्यायै नमः, आप्रायै नमः, आर्यसेवितायै नमः ।
आप्यायिन्यै नमः, आप्तविद्यायै नमः, आख्यायै नमः ।
आनन्दायै नमः, आश्वासदायिन्यै नमः, आलस्यघ्न्यै नमः ।
आपदाहन्त्र्यै नमः, आनन्दामृतवर्षिण्यै०, इरावत्यै नमः ।
इष्टदात्र्ये नमः, इष्टायै नमः, इष्टापूर्तफलप्रदायै नमः ।
इतिहासश्रुतीड्यर्थायै०, इहामुत्रशुभप्रदायै नमः ।
इज्याशीलसमिज्येष्टायै०, इन्द्रादिपरिवन्दितायै०
इलालङ्कारमालायै नमः, इद्धायै नमः, इन्दिरारम्यमन्दिरायै०
इते नमः, इन्दिरादिसंसेव्यायै०, ईश्वर्यै नमः ।
ईश्वरवल्लभायै नमः, ईतिभीतिहरायै नमः, ईड्यायै नमः ।
ईडनीयचरित्रभृते नमः, उत्कृष्टशक्त्ये नमः ।
उत्कृष्टायै नमः, उडुपमण्डलचारिण्यै०
उदिताम्बरमार्गायै नमः, उस्रायै ममः, उरगलोकविहारिण्यै०
उद्घायै नमः, उर्वरायै नमः, उत्पलायै नमः, उत्कुम्भायै नमः ।
उपेन्द्रचरणद्रवायै०, उदन्वत्पूर्तिहेतवे नमः, उदारायै नमः ।
उत्साहप्रवर्धिन्यै नमः, उद्वेगघ्न्यै नमः, उष्णशमन्यै नमः ।
उष्णरश्मिसुताप्रियायै०, उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिण्यै नमः ।
उपरिचारिण्यै नमः, ऊर्जं वहन्त्यै नमः, ऊर्जधरायै नमः ।
ऊर्जावत्यै नमः, ऊर्मिमालिन्यै नमः, ऊर्ध्वरेतःप्रियायै नमः ।
ऊर्ध्वाध्वायै नमः, ऊर्मिलायै नमः, ऊर्ध्वगतिप्रदायै नमः ।
ऋषिवृन्दस्तुतायै नमः, ऋद्धये नमः, ऋणत्रयविनाशिन्यै०

ऋतंभरायै नमः, ऋद्धिदात्र्यै नमः, ऋक्स्वरूपायै नमः ।
ऋजुप्रियायै नमः, ऋक्षमार्गवहायै नमः, ऋक्षार्चिषे नमः ।
ऋजुमार्गप्रदर्शिन्यै०, एधिताखिलधर्मार्थायै०, एकस्यै नमः ।
एकामृतदायिन्यै नमः, एधनीयस्वभावायै०, एज्यायै नमः ।
एजिताशेषपातकायै०, ऐश्वर्यदायै नमः, ऐश्वर्यरूपायै नमः ।
ऐतिह्यायै नमः, ऐन्दवद्युतये नमः, ओजस्विन्यै नमः ।
ओषधीक्षेत्रायै नमः, ओजोदायै नमः, ओदनदायिन्यै नमः ।
ओष्ठामृतायै नमः, औन्नत्यदात्र्यै नमः, भवरोगिणामौषधायै०
औदार्यचञ्चुरायै नमः, औपेन्द्रायै नमः, औग्र्यै नमः ।
औमेयरूपिण्यै नमः, अम्बराध्वहायै नमः, अम्बष्ठायै नमः ।
अम्बरमालायै नमः, अम्बुजेक्षणायै नमः, अम्बिकायै नमः ।
अम्बुमहायोनये नमः, अन्धोदायै नमः, अन्धकहारिण्यै नमः ।
अंशुमालायै नमः, अंशुमत्यै नमः, अङ्गीकृतषडाननायै०
अन्धतामिस्रहन्त्र्यै०, अन्धवे नमः, अञ्जनायै नमः ।
अञ्जनावत्यै नमः, कल्याणकारिण्यै०, काम्यायै नमः ।
कमलोत्पलगन्धिन्यै०, कुमुद्वत्यै नमः, कमलिन्यै नमः ।
कान्तायै नमः, कल्पितदायिन्यै नमः, काञ्चनाक्ष्यै नमः ।
कामधेनवे नमः, कीर्तिकृते नमः, क्लेशनाशिन्यै नमः ।
क्रतुश्रेष्ठायै नमः, क्रतुफलायै नमः, कर्मबन्धविभेदिन्यै०
कमलाक्ष्यै नमः, क्लमहरायै नमः, कृशानुतपनद्युतये नमः ।
करुणार्द्रायै नमः, कल्याण्यै नमः, कलिकल्मषनाशिन्यै०
कामरूपायै नमः, क्रियाशक्तये नमः, कमलोत्पलमालिन्यै०
कूटस्थायै नमः, करुणायै नमः, कान्तायै नमः ।
कूर्मयानायै नमः, कलावत्यै नमः, कमलायै नमः ।

कल्पलतिकायै नमः, काल्यै नमः, कलुषवैरिण्यै नमः।
कमनीयजलायै नमः, कम्रायै नमः, कपर्दिसुकपर्दुगायै नमः।
कालकूटप्रशमन्यै नमः, कदम्बकुसुमप्रियायै०, कालिन्द्यै नमः।
केलिललितायै नमः, कलकल्लोलमालिकायै०।
क्रान्तलोकत्रयायै नमः, कण्डूवै नमः, कण्डूतनयवत्सलायै०
खड्गिन्यै नमः, खड्गधाराभायै नमः, खगायै नमः।
खण्डेन्दुधारिण्यै नमः, खेखेलगामिन्यै नमः, स्वस्थायै नमः।
खण्डेन्दुतिलकप्रियायै, खेचर्यै नमः, खेचरीवन्द्यायै नमः।
ख्यात्यै नमः, ख्यातिप्रदायिन्यै०, खण्डितप्रणताघौघायै०।
खलबुद्धिविनाशिन्यै०, खातैनःकन्दसन्दोहायै०।
खड्गखट्वाङ्गखेटिन्यै०, खरसन्तापशमन्यै०।
पीयूषपाथसाखनये०, गङ्गायै नमः, गन्धवत्यै नमः, गौर्यै नमः।
गन्धर्वनगरप्रियायै०, गम्भीराङ्ग्यै नमः, गुणमय्यै नमः।
गतातङ्कायै नमः, गतिप्रियायै नमः, गणनाथाम्बिकायै०।
गीतायै नमः, गद्यपद्यपरिष्टुतायै०, गान्धार्यै नमः
गर्भशमन्यै नमः, गतिभ्रष्टगतिप्रदायै०, गोमत्यै नमः।
गुह्यविद्यायै नमः, गवे नमः, गोप्त्र्यै नमः।
गगनगामिन्यै नमः, गोत्रप्रवर्धिन्यै नमः।
गुण्यायै नमः, गुणातीतायै नमः, गुणाग्रण्यै नमः।
गुहाम्बिकायै नमः, गिरिसुतायै नमः।
गोविन्दाङ्घ्रिसमुद्भवायै नमः, गुणनीयचरित्रायै नमः।
गायत्र्यै नमः, गिरीशप्रियायै नमः, गूढरूपायै नमः।
गुणवत्यै नमः, गुर्व्यै नमः, गौरववर्धिन्यै नमः।
ग्रहपीड़ाहरायै नमः, गुन्द्रायै नमः, गरघ्न्यै नमः।

गानवत्सलायै नमः, घर्महन्त्र्यै नमः, घृतवत्यै नमः।
घृततुष्टिप्रदायिन्यै०, घण्टारवप्रियायै नमः।
घोराघौघविध्वंसकारिण्यै नमः, घ्राणतुष्टिकर्यै नमः, घोषायै नमः।०
घनानन्दायै नमः, घनप्रियायै नमः, घातुकायै नमः।
घूर्णितजलायै नमः, घृष्टपातकसन्तत्यै नमः।
घटकोटिप्रपीतापायै०, घटिताशेषमङ्गलायै०, घृणावत्यै नमः।
घृणिनिधये नमः, घस्मरायै नमः, घूकनादिन्यै नमः।
घुसृणापिञ्जरतनवे०, घर्घरायै नमः।
घर्घरस्वनायै नमः, चन्द्रिकायै नमः, चन्द्रकांताम्बुवे नमः।
चञ्चदापायै नमः, चलद्द्युतये नमः, चिन्मय्यै नमः।
चितिरूपायै नमः, चन्द्रायुतशताननायै०, चाम्पेयलोचनायै नमः।
चारवे नमः, चार्वंग्यै नमः, चारुगामिन्यै नमः।
चार्यायै नमः, चारित्रनिलयायै नमः, चित्रकृते नमः।
चित्ररूपिण्यै नमः, चम्प्वै नमः, चन्दनशुच्यम्बुवे नमः।
चर्चनीयायै नमः, चिरस्थिरायै नमः, चारुचम्पकमालाढ्यायै नमः।
चमिताशेषदुष्कृतायै०, चिदाकाशवहायै नमः, चिन्त्यायै नमः।
चञ्चते नमः, चामरवीजितायै नमः, चोरिताशेषवृजिनायै०
चरिताशेषमण्डलायै०, छेदिताखिलपापौघायै नमः।
छद्मघ्न्यै नमः, छलहारिण्यै नमः, छन्नत्रिविष्टपतलायै०
छोटिताशेषबन्धनायै०, छुरितामृतधारौघायै०, छिन्नैनसे नमः।
छन्दगामिन्यै नमः, छत्रीकृतमरालौघायै०
छटीकृतनिजामृतायै०, जाह्नव्यै नमः, ज्यायै नमः।
जगन्मात्रे नमः, जप्यायै नमः, जङ्घालवीचिकायै०
जयायै नमः, जनार्दनप्रीतायै नमः, जुषणीयायै नमः।

जगद्धितायै नमः, जीवनायै नमः, जीवनप्राणायै नमः।
जगते नमः, ज्येष्ठायै नमः, जगन्मय्यै नमः, जीवजीवातुलतिकायै०
जन्मिजन्मनिबर्हिण्यै०, जाड्यविध्वंसनकर्यै०, जगद्योनये नमः।
जलाविलायै नमः, जगदानन्दजनन्यै०, जलजायै नमः।
जलजेक्षणायै नमः, जनलोचनपीयूषायै०, जटातटविहारिण्यै०।
जयन्त्यै नमः, जञ्जपूकघ्न्यै नमः, जनितज्ञानविग्रहायै०
झल्लरीवाद्यकुशलायै०, झलज्झालजलावृतायै नमः।
झिण्टीशवन्द्यायै नमः, झाङ्कारकारिण्यै नमः, झर्झरावत्यै नमः।
टिकिताशेषपातालायै०, एनोद्रिपाटने टङ्किकायै नमः।
टङ्कारनृत्यत्कल्लोलायै०, टीकनीयमहातटायै०, डम्बरप्रवहायै नमः
डीनराजहंसकुलाकुलायै नमः, डमड्डमरुहस्तायै०
डामरोक्तमहाण्डकायै नमः, ढौकिताशेषनिर्वाणायै०
ढक्कानादचलज्जलायै० ढुण्ढिविघ्नेशजनन्यै०, ढणढुणितपातकायै०
तर्पण्यै नमः, तीर्थतीर्थायै नमः, त्रिपथायै नमः।
त्रिदशेश्वर्यै नमः, त्रिलोकगोप्त्र्यै नमः, तोयेश्यै नमः।
त्रैलोक्यपरिवन्दितायै०, तापत्रितयसंहर्त्र्यै नमः।
तेजोबलवर्धिन्यै नमः, त्रिलक्ष्यायै नमः, तारिण्यै नमः।
तारायै नमः, तारापतिकरार्चितायै०, त्रैलोक्यपावनीपुण्यायै नमः।
तुष्टिदायै नमः, तुष्टिरूपिण्यै नमः, तृष्णाछेत्र्यै नमः।
तीर्थमात्रे नमः, त्रिविक्रमपदोद्भवायै०, तपोमय्यै नमः।
तपोरूपायै नमः, तपस्तोमफलप्रदायै०, त्रैलोक्यव्यापिन्यै०
तृप्त्यै नमः, तृप्तिकृते नमः, तत्त्वरूपिण्यै नमः।
त्रैलोक्यसुन्दर्यै नमः, तुर्यायै नमः, तुर्यातीतपदप्रदायै०
त्रैलोक्यलक्ष्म्यै नमः, त्रिपद्यै नमः, तथ्यायै नमः।

तिमिरचन्द्रिकायै नमः, तेजोगर्भायै नमः, तपःसारायै नमः ।
त्रिपुरारिशिरोगृहायै०, त्रयीस्वरूपिण्यै नमः, तन्व्यै नमः ।
तपनाङ्गभीतिनुदे०, तरये नमः, तरणिजामित्रायै नमः ।
तर्पिताशेषपूर्वजायै०, तुलाविरहितायै नमः ।
तीव्रपापतूलतनूनपाते०, दारिद्र्यदमन्यै नमः, दक्षायै नमः ।
दुष्प्रेक्षायै नमः, दिव्यमण्डनायै नमः, दीक्षावत्यै नमः ।
दुरावाप्यायै नमः, द्राक्षामधुरवारिभृते०, दर्शितानेककुतुकायै०
दुष्टदुर्जयदुःखहृते नमः, दैन्यहृते नमः, दुरितघ्न्यै नमः ।
दानवारिपदाब्जजायै०, दन्दशूकविषघ्न्यै नमः ।
दारिताघौघसन्तत्यै०, द्रुतायै नमः, देवद्रुमच्छन्नायै नमः ।
दुर्वाराघविघातिन्यै०, दमग्राह्यायै नमः, देवमात्रे नमः ।
देवलोकप्रदर्शिन्यै नमः, देवदेवप्रियायै नमः, देव्यै नमः ।
दिक्पालपददायिन्यै०, दीर्घायुष्कारिण्यै नमः, दीर्घायै नमः ।
दोग्ध्र्यै नमः, दूषणवर्जितायै नमः, दुग्धाम्बुवाहिन्यै नमः ।
दोह्यायै नमः, दिव्यायै नमः, दिव्यगतिप्रदायै नमः ।
द्युनद्यै नमः, दीनशरणायै नमः, देहिदेहनिवारिण्यै०
द्राघीयस्यै नमः, दाहहन्त्र्यै नमः, दितपातकसन्तत्यै०
दूरदेशान्तरचर्यै नमः, दुर्गमायै नमः, देववल्लभायै नमः ।
दुर्वृत्तघ्न्यै नमः, दुर्विगाह्यै नमः, दयाधारायै नमः ।
दयावत्यै नमः, दुरासदायै नमः, दानशीलायै नमः ।
द्राविण्यै नमः, द्रुहिणस्तुतायै नमः, दैत्यदानवसंशुद्धि-
कर्त्र्यै नमः, दुर्बुद्धिहारिण्यै नमः, दानसारायै नमः ।
दयासारायै नमः, द्यावभूमावगाहिन्यै० दृष्टादृष्टफलप्राप्त्यै०
देवतावृन्दवन्दितायै०, दीर्घव्रतायै नमः, दीर्घदृष्ट्यै नमः ।

दीप्ततोयायै नमः, दुरालभायै नमः, दण्डयित्र्यै नमः।
दण्डनीतये नमः, दुष्टदण्डधरार्चितायै०, दुरोदरघ्न्यै नमः।
दावार्चिषे] नमः, द्रवते नमः, द्रव्यैकशेवधये नमः।
दीनसन्तापशमन्यै०, दात्र्यै नमः, दवथुवैरिण्यै नमः।
दरीविदारणपरायै नमः, दान्तायै नमः, दान्तजनप्रियायै नमः।
दारिताद्रितटायै नमः, दुर्गायै नमः, दुर्गारण्यप्रचारिण्यै०
धर्मद्रवायै नमः, धर्मधुरायै नमः, धेनवे नमः, धीरायै नमः।
धृतये नमः, ध्रुवायै नमः, धेनूदानफलस्पर्शायै।
धर्मकामार्थमोक्षदायै, धर्मोर्मिवाहिन्यै नमः, धुर्यायै नमः।
धात्र्यै नमः, धात्रीविभूषणायै नमः, धर्मिण्यै नमः।
धर्मशीलायै नमः, धन्विकोटिकृतावनायै नमः।
ध्यातृपापहरायै नमः, ध्येयायै नमः, धावन्यै नमः।
धूतकल्मषायै नमः, धर्मधरायै नमः, धर्मसारायै नमः।
धनदायै नमः, धनवर्धिन्यै नमः, धर्माधर्मगुणच्छेत्र्यै०
धत्तूरकुसुमप्रियायै०, धर्मेश्यै नमः, धर्मशास्त्रज्ञायै नमः।
धनधान्यसमृद्धिकृते०, धर्मलभ्यायै नमः, धर्मजलायै नमः।
धर्मप्रसवधर्मिण्यै०, ध्यानगम्यस्वरूपायै०, धरण्यै नमः।
धातृपूजितायै नमः, धुरे नमः, धूर्जटिजटासंस्थायै०, धन्यायै नमः।
धिये नमः, धारणावत्यै नमः, नन्दायै नमः।
निर्वाणजनन्यै नमः, नन्दिन्यै नमः, नुन्नपातकायै नमः।
निषिद्धविघ्ननिचयायै नमः, निजानन्दप्रकाशिन्यै०।
नभोङ्गणचर्यै नमः, नूतये नमः, नम्यायै नमः, नारायण्यै नमः।
नुतायै नमः, निर्मलायै नमः, निर्मलाख्यानायै नमः।
तापसापदांनाशिन्यै०, नियतायै नमः, नित्यसुखदायै नमः।

नानाश्चर्यमहानिधये०, नद्यै नमः, नदसरोमात्रे नमः।
नायिकायै नमः, नाकदीर्घिकायै नमः, नष्टोद्धरणधीरायै नमः।
नन्दनायै नमः, नन्ददायिन्यै नमः, निर्णिक्ताशेषभुवनायै०
निस्सङ्गायै नमः, निरुपद्रवायै नमः, निरालम्बायै नमः।
निष्प्रपञ्चायै नमः, निर्णाशितमहामलायै, निर्मलज्ञानजनन्यै०
निश्शेषप्राणितापहृते०, नित्योत्सवायै नमः, नित्यतृप्तायै नमः।

नमस्कार्यायै नमः, निरञ्जनायै नमः, निष्ठावत्यै नमः।
निरातङ्कायै नमः, निर्लेपायै नमः, निश्चलात्मिकायै०।
निरवद्यायै नमः, निरीहायै नमः, नीललोहितमूर्धगायै०,
नन्दिभृङ्गिगणस्तुत्यायै नमः, नागायै नमः, नन्दायै नमः।
नगात्मजायै नमः, निष्प्रत्यूहायै नमः, नाकनद्यै नमः।
निरयार्णवदीर्घनावे०, पुण्यप्रदायै नमः, पुण्यगर्भायै नमः।
पुण्यायै नमः, पुण्यतरङ्गिण्यै नमः, पृथवे नमः, पृथुफलाय नमः।
पूर्णायै नमः, प्रणतार्तिप्रभञ्जिन्यै०, प्राणदायै नमः।
प्राणिजनन्यै नमः, प्राणेश्यै नमः, प्राणरूपिण्यै नमः।

पद्मालयायै नमः, पराशक्त्यै नमः, पुराजित्परमप्रियायै०
परायै नमः, परफलप्राप्त्यै नमः, पावन्यै नमः, पयस्विन्यै नमः।
परानन्दायै नमः, प्रकृष्टार्थायै नमः, प्रतिष्ठायै नमः, पालिन्यै नमः।
परायै नमः, पुराणपठितायै नमः, प्रीतायै नमः, प्रणवाक्षररूपिण्यै०
पार्वत्यै नमः, प्रेमसम्पन्नायै नमः, पशुपाशविमोचिन्यै०।
परमात्मस्वरूपायै०, परब्रह्मप्रकाशिन्यै नमः, परमानन्दनिष्पन्दायै०
प्रायश्चित्तस्वरूपिण्यै०, पानीयरूपनिर्वाणायै०, परित्राणपरायणायै०।
पापेन्धनदवज्वालायै०, पापारये नमः, पापनामनुदे नमः।
परमैश्वर्यजनन्यै नमः, प्रज्ञायै नमः, परापरायै नमः।

प्रत्यक्षलक्ष्म्यै नमः, पद्मादयै नमः, परव्योमामृतस्रवायै०
प्रसन्नरूपायै नमः, प्रणिधये नमः, पूतायै नमः।
प्रत्यक्षदेवतायै नमः, पिनाकिपरमप्रीतायै०, परमेष्ठिकमण्डल्वे०
पद्मनाभपदार्घ्येण प्रसूतायै नमः, पद्ममालिन्यै नमः।
परर्धिदायै नमः, पुष्टिकर्त्र्यै नमः, पथ्यायै नमः, पूर्तये नमः।
प्रभावत्यै नमः, पुनानायै नमः।
पीतगर्भघ्न्यै नमः, पापपर्वतनाशिन्यै०, फलिन्यै नमः।
फलहस्तायै नमः, फुल्लाम्बुजविलोचनायै नमः, फालितैनोमहा-
क्षेत्रायै नमः, फणिलोकविभूषणायै नमः, फेनच्छलप्रणुन्नेनसने०
फुल्लकैरवगन्धिन्यै०, फेनिलाच्छाम्बुधाराभायै नमः।
फुडुच्चाटितपातकायै०, फाणितस्वादुसलिलायै नमः।
फाण्टपथ्यजलाविलायै नमः, विश्वमात्रे नमः, विश्वेश्यै नमः।
विश्वस्यै नमः, विश्वेश्वरप्रियायै०, ब्रह्मण्यायै नमः।
ब्रह्मकृते नमः, ब्राह्म्यै नमः, ब्रह्मिष्ठायै नमः, विमलोदकायै नमः
विभावर्यै नमः, विरजायै नमः, विक्रान्तानेकविष्टपायै नमः।
विश्वमित्रायै नमः, विष्णुपद्यै नमः, वैष्णव्यै नमः।
वैष्णवप्रियायै नमः, विरूपाक्षप्रियकर्यै०, विभूतये नमः।
विश्वतोमुख्यै नमः, विपाशायै नमः, वैबुध्यै नमः, वेद्यायै नमः।
वेदाक्षररसस्रवायै०, विद्यायै नमः, वेगवत्यै नमः,वन्द्यायै नमः।
बृंहिण्यै नमः, ब्रह्मवादिन्यै नमः, वरदायै नमः, विप्रकृष्टायै नमः।।
वरिष्ठायै नमः, विशोधिन्यै नमः, विद्याधर्यै नमः, विशोकायै नमः।
वयोवृन्दनिषेवितायै०, बहूदकायै नमः, बलवत्यै नमः।
व्योमस्थायै नमः, विबुधप्रियायै नमः, वाण्यै नमः, वेदवत्यै नमः।
वित्तायै नमः, ब्रह्मविद्यातरङ्गिण्यै०, ब्रह्माण्डकोटिव्याप्ताम्बवे नमः

ब्रह्महत्यापहारिण्यै०, ब्रह्मेशविष्णुरूपायै०, बुद्धये नमः।
विभववर्धिन्यै नमः, विलासिसुखदायै नमः, वश्यायै नमः।
व्यापिन्यै नमः, वृषारण्ये नमः, वृषाङ्कमौलिनिलयायै०।
विपन्नार्तिप्रभञ्जिन्यै०, विनीतायै नमः, विनतायै नमः।
ब्रध्नतनयायै नमः, विनयान्वितायै नमः, विपञ्च्यै नमः।
वाद्यकुशलायै नमः, वेणुश्रुतिविचक्षणायै०, वर्चस्कर्यै नमः।
बलकर्यै नमः, बलोन्मूलितकल्मषायै०, विपाप्मने नमः।
विगतातङ्कायै नमः, विकल्पपरिवर्जितायै०, वृष्टिकर्त्र्यै नमः।
वृष्टिजलायै नमः, विधये नमः, विच्छिन्नबन्धनायै०।
व्रतरूपायै नमः, वित्तरूपायै नमः, बहुविघ्नविनाशकृते०।
वसुधारायै नमः, वसुमत्यै नमः, विचित्राङ्ग्यै नमः।
विभावसवे नमः, विजयायै नमः, विश्वबीजायै नमः।
वामदेव्यै नमः, वरप्रदायै नमः, वृषाश्रितायै नमः।
विषघ्न्यै नमः, विज्ञानोर्म्यंशुमालिन्यै नमः, भव्यायै नमः।
भोगवत्यै नमः, भद्रायै नमः, भवान्यै नमः, भूतभाविन्यै नमः।
भूतधात्र्यै नमः, भयहरायै नमः, भक्तदारिद्र्यघातिन्यै०।
भुक्तिमुक्तिप्रदायै०, भेश्यै नमः, भक्तस्वर्गापवर्गदायै०।
भागीरथ्यै नमः, भानुमत्यै नमः, भाग्यायै नमः, भोगवत्यै नमः।
भूतये नमः, भवप्रियायै नमः, भवद्वेष्ट्र्यै नमः, भूतिदायै नमः।
भूतिभूषणायै नमः, भाललोचनभावज्ञायै०।
भूतभव्यभवत्प्रभवे०, भ्रान्तिज्ञानप्रशमिन्यै नमः।
भिन्नब्रह्माण्डमण्डपायै नमः, भूरिदायै नमः, भक्तिसुलभायै नमः।
भाग्यवद्दृष्टिगोचर्यै०, भञ्जितोपप्लवकुलायै०।
भक्ष्याभोज्यसुखप्रदायै०, भिक्षणीयायै नमः, भिक्षुमात्रे नमः।

भावायै नमः, भावस्वरूपिण्यै नमः, मन्दाकिन्यै नमः ।
महानन्दायै नमः, मात्रे नमः, मुक्तितरङ्गिण्यै नमः ।
महोदयायै नमः, मधुमत्यै नमः, महापुण्यायै नमः ।
मुदाकार्यै नमः, मुनिस्तुतायै नमः, मोहहन्त्र्यै नमः ।
महातीर्थायै नमः, मधुस्रवायै नमः, माधव्यै नमः ।
मानिन्यै नमः, मान्यायै नमः, मनोरथपथातिगायै० ।
मोक्षदायै नमः, मतिदायै नमः, मुख्यायै नमः ।
महाभाग्यजनाश्रितायै नमः, महावेगवत्यै नमः, मेध्यायै नमः ।
महायै नमः, महिमभूषणायै नमः, महाप्रभावायै नमः ।
महत्यै नमः, मीनचञ्चललोचनायै०, महाकारुण्यसम्पूर्णायै ।
महर्द्धये नमः, महोत्पलायै नमः, मूर्तिमते नमः ।
मुक्तिरमण्यै नमः, मणिमाणिक्यभूषणायै नमः ।
मुक्ताकलापनेपथ्यायै० मनोनयननन्दिन्यै०, महापातकराशिघ्न्यै० ।
महादेवार्धहारिण्यै०, महोर्मिमालिन्यै नमः, मुक्तायै नमः
महादेव्यै नमः, मनोन्मन्यै नमः, महापुण्योदयप्राप्यायै ।
मायातिमिरचन्द्रिकायै नमः, महाविद्यायै नमः, महामायायै नमः ।
महामेधायै नमः, महौषधायै नमः, मालाधर्यै नमः ।
महोपायायै नमः, महोरगविभूषणायै०, महामोहप्रशमिन्यै० ।
महामङ्गलमङ्गलायै०, मार्तण्डमण्डलचर्यै०, महालक्ष्म्यै नमः ।
मदोज्झितायै नमः, यशस्विन्यै नमः, यशोदायै नमः ।
योग्यायै नमः, युक्तात्मसेवितायै०, योगसिद्धिप्रदायै० ।
याज्यायै नमः, यज्ञेशपरिपूरितायै० यज्ञेश्य नमः ।
यज्ञफलदायै नमः, यजनीयायै नमः, यशस्कर्यै नमः,
यमिसेव्यायै नमः, योगयोनये नमः, योगिन्यै नमः ।

युक्तबुद्धिदायै नमः, योगज्ञानप्रदायै नमः, युक्तायै नमः।
यमाद्यष्टाङ्गयोगयुजे०, यन्त्रिताघोघसञ्चारायै०, यमलोकनिवारिण्यै०
यातायातप्रशमिन्यै०, यातनानामकृन्तयै०, यामिनीमहिमा-
च्छोदायै नमः, युगधर्मविवर्जितायै०, रेवत्यै नमः, रतिकृते नमः।
रम्यायै नमः, रत्नगर्भायै नमः, रमायै नमः, रतये नमः।
रत्नाकरप्रेमपात्रायै०, रसज्ञायै नमः, रसरूपिण्यै नमः।
रत्नप्रासादगर्भायै नमः, रमणीयतरङ्गिण्यै०, रत्नार्चिषे नमः।
रुद्ररमण्यै नमः, रागद्वेषविनाशिन्यै०, रमायै नमः, रामायै नमः।
रम्यरूपायै नमः, रोगिजीवातुरूपिण्यै०, रुचिकृते नमः।
रोचन्यै नमः, रम्यायै०, रुचिरायै नमः, रोगहारिण्यै नमः।
राजहंसायै नमः, रत्नवत्यै नमः, राजत्कल्लोलराजिकायै०।
रामणीयकरेखायै नमः, रुजारये नमः, रोगशोषिण्यै नमः।
राकायै नमः, रङ्कार्तिशमन्यै नमः, रम्यायै नमः।
रोलम्बराविण्यै नमः, रागिण्यै नमः, रञ्जितशिवायै नमः।
रूपलावण्यशेवधये०, लोकप्रसुवे नमः, लोकवन्द्यायै नमः।
लोलत्कल्लोलमालिन्यै नमः, लीलावत्यै नमः, लोकभूमये नमः।
लोकलोचनचन्द्रिकायै नमः, लेखस्रवन्त्यै नमः, लटभायै नमः।
लघुवेगायै नमः, लघुत्वहृते नमः, लास्यत्तरङ्गहस्तायै०।
ललितायै नमः, लयभङ्गिमायै नमः, लोकबन्धवे नमः।
लोकधात्र्यै नमः, लोकोत्तरगुणोर्जितायै०, लोकत्रयहितायै०।
लोकायै नमः, लक्ष्म्यै नमः, लक्षणलक्षितायै नमः, लीलायै नमः।
लक्षितनिर्वाणायै०, लावण्यामृतवर्षिण्यै०, वैश्वानये नमः।
वासवेड्यायै नमः, वन्ध्यत्वपरिहारिण्यै०, वासुदेवाङ्घ्रिरेणुघ्न्यै०।
वज्रिवज्रनिवारिण्यै०, शुभवत्यै नमः, शुभफलायै नमः।

शान्त्यै नमः, शान्तनुवल्लभायै नमः, शूलिन्यै नमः।
शैशववयसे नमः, शीतलामृतवाहिन्यै०, शोभावत्यै नमः।
शीलवत्यै नमः, शोषिताशेषकिल्बिषायै नमः।
शरण्यायै नमः, शिवदायै नमः, शिष्टायै नमः, शरजन्मप्रसवे नमः।
शिवायै नमः, शक्तये नमः।
शशाङ्कविमलायै नमः, शमनस्वसृसम्मतायै०, शमायै नमः।
शमनमार्गघ्न्यै नमः, शितिकण्ठमहाप्रियायै नमः।
शुचये नमः, शुचिकर्यै नमः, शेषायै नमः, शेषशायिपदोद्भवायै०,
श्रीनिवासश्रुतये नमः, श्रद्धायै नमः, श्रीमत्यै नमः, श्रियै नमः।
शुभव्रतायै नमः, शुद्धविद्यायै नमः, शुभावर्तायै नमः।
श्रुतानन्दायै नमः, श्रुतिस्तुतये नमः, शिवेतरघ्न्यै नमः।
शबर्यै नमः, शाम्बरीरूपधारिण्यै०, श्मशानशोधिन्यै नमः।
शान्तायै नमः, शाश्वते नमः, शतधृतिस्तुतायै नमः।
शालिन्यै नमः, शालिशोभाढ्यायै०, शिखिवाहनगर्भभृते०।
शंसनीयचरित्रायै०, शातिताशेषपातकायै०।
षड्गुणैश्वर्यसम्पन्नायै०, षडङ्गश्रुतिरूपिण्यै०।
षण्ढताहारिसलिलायै०, स्त्यायन्नदनदीशतायै०, सरिद्वरायै नमः।
सुरसायै नमः, सुप्रभायै नमः, सुरदीर्घिकायै नमः।
स्वःसिन्धवे नमः, सर्वदुःखघ्न्यै नमः, सर्वव्याधिमहौषधायै नमः।
सेव्यायै नमः, सिद्धायै नमः, सत्यायै नमः, सूक्तये नमः।
स्कन्दसुवे नमः, सरस्वत्यै नमः, सम्पत्तरङ्गिण्यै नमः।
स्तुत्यायै नमः, स्थाणुमौलिकृतालयायै नमः, स्थैर्यदायै नमः।
सुभगायै नमः, सौख्यायै नमः, स्त्रीषु सौभाग्यदायिन्यै नमः।
स्वर्गनिःश्रेणिकायै नमः, सूक्ष्मायै नमः, स्वधायै नमः।

स्वाहायै नमः, सुधाजलायै नमः, समुद्ररूपिण्यै नमः ।

स्वर्ग्यायै नमः, सर्वपातकवैरिण्यै०, स्मृताघहारिण्यै नमः ।

सीतायै नमः, संसाराब्धितरण्डिकायै नमः ।

सौभाग्यसुन्दर्यै नमः, सन्ध्यायै नमः, सर्वसारसवतीमान्यै० ।

हरिप्रियायै नमः, हृषीकेश्यै नमः, हंसरूपायै नमः ।

हिरण्मय्यै नमः, हृताघसंघायै नमः, हितकृते नमः ।

हेलायै नमः, हेलाघगर्वहृते नमः, क्षेमदायै नमः ।

क्षालिताघौघायै०, क्षुद्रविद्राविण्यै०, क्षमायै नमः, ब्रह्मद्रवायै नमः ।

इति श्रीकाशीखण्डोक्ता गङ्गासहस्रनामावली समाप्ता ।

श्रीराम-सहस्रनामस्तोत्रम्

राजीवलोचनः श्रीमान् श्रीरामो रघुपुंगवः ।
रामभद्रः सदाचारो राजेन्द्रो जानकीपतिः ॥ १ ॥
अग्रगण्यो वरेण्यश्च वरदः परमेश्वरः ।
जनार्दनो जितामित्रः परार्थैकप्रयोजनः ॥ २ ॥
विश्वामित्रप्रियो दान्तः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
सर्वज्ञः सर्वदेवादिशरण्यो वालिमर्दनः ॥ ३ ॥
ज्ञानभाव्योऽपरिच्छेद्यो वाग्मी सत्यव्रतः शुचिः ।
ज्ञानगम्यो दृढ़प्रज्ञः खरध्वंसी प्रतापवान् ॥ ४ ॥
धृतिमानात्मवान् वीरो जितक्रोधोऽरिमर्दनः ।
विश्वरूपो विशालाक्षः प्रभुः परिवृढ़ो दृढ़ः ॥ ५ ॥
ईशः खड्गधरः श्रीमान् कौशलेयोऽनसूयकः ।
विपुलांसो महोरस्कः परमेष्ठी परायणः ॥ ६ ॥
सत्यव्रतः सत्यसन्धो गुरुः परमधार्मिकः ।
लोकज्ञो लोकवन्द्यश्च लोकात्मा लोककृत्परः ॥ ७ ॥
अनादिर्भगवान् सेव्यो जितमायो रघूद्वहः ।
रामो दयाकरो दक्षः सर्वज्ञः सर्वपावनः ॥ ८ ॥
ब्रह्मण्यो नीतिमान् गोप्ता सर्वदेवमयो हरिः ।
सुन्दरः पीतवासश्च सूत्रकारः पुरातनः ॥ ९ ॥
सौम्यो महर्षिः कोदण्डी सर्वज्ञः सर्वगोचरः ।
कविः सुग्रीववरदः सर्वपुण्याधिकप्रदः ॥ १० ॥
भव्यो जितारिषड्वर्गो महोदारोऽघनाशनः ।
सुकीर्तिरादिपुरुषः कांतः पुण्यकृतागमः ॥ ११ ॥

अकल्मषश्चतुर्बाहुः सर्वावासो दुरासदः ।
स्मितभाषी निवृत्तात्मा स्मृतिमान्वीर्यवान् प्रभुः ॥ १२ ॥
धीरोदात्तो घनश्यामः सर्वायुधविशारदः ।
अध्यात्मयोगनिलयः सुमना लक्ष्मणाग्रजः ॥ १३ ॥
सर्वतीर्थमयः शूरः सर्वयज्ञफलप्रदः ।
यज्ञस्वरूपी यज्ञेशो जरामरणवर्जितः ॥ १४ ॥
वर्णाश्रमकरो वर्णी शत्रुजित्पुरुषोत्तमः ।
विभीषणप्रतिष्ठाता परमात्मा परात्परः ॥ १५ ॥
प्रमाणभूतो दुर्ज्ञेयः पूर्णः परपुरंजयः ।
अनन्तदृष्टिरानन्दो धनुर्वेदी धनुर्धरः ॥ १६ ॥
गुणाकरो गुणश्रेष्ठः सच्चिदानन्दविग्रहः ।
अभिवन्द्यो महाकायो विश्वकर्मा विशारदः ॥ १७ ॥
विनीतात्मा वीतरागस्तपस्वीशो जनेश्वरः ।
कल्याणप्रकृतिः कल्यः सर्वेशः सर्वकामदः ॥ १८ ॥
अक्षरः पुरुषः साक्षात् केशवः पुरुषोत्तमः ।
लोकाध्यक्षो महामायो विभीषणवरप्रदः ॥ १९ ॥
आनन्दविग्रहो ज्योतिर्हनूमत्प्रभुरव्ययः ।
भ्राजिष्णुः सहनो भोक्ता सत्यवादी बहुश्रुतः ॥ २० ॥
सुखदः कारणं कर्त्ता भवबन्धविमोचनः ।
देवचूडामणिर्नेता ब्रह्मण्यो ब्रह्मवर्धनः ॥ २१ ॥
संसारोत्तारको रामः सर्वदुःखविमोक्षकृत् ।
विद्वत्तमो विश्वभर्ता विश्वहर्ता च विश्वकृत् ॥ २२ ॥
नित्यो नियतकल्याणः सीताशोकविनाशकृत् ।
काकुत्स्थः पुण्डरीकाक्षो विश्वामित्रभयापहः ॥ २३ ॥

मारीचमथनो रामो विराधवधपण्डितः ।
दुस्वप्ननाशनो दम्यः किरीटी त्रिदशाधिपः ॥ २४ ॥

महाधनुर्महाकायो भीमो भीमपराक्रमः ।
तत्त्वस्वरूपी तत्त्वज्ञस्तत्त्ववादी सुविक्रमः ॥ २५ ॥

भूतात्मा भूतकृत्स्वामी कालज्ञानी महावटुः ।
अनिर्विण्णो गुणग्राही निष्कलंकः कलङ्कहा ॥ २६ ॥

स्वभावभद्रः शत्रुघ्नः केशवः स्थाणुरीश्वरः ।
भूतादिः शम्भुरादित्यः स्थविष्ठः शाश्वतो ध्रुवः ॥ २७ ॥

कवची कुण्डली चक्री खड्गी भक्तजनप्रियः ।
अमृत्युर्जन्मरहितः सर्वजित्सर्वतापसः ॥ २८ ॥

अनुत्तमोऽप्रमेयात्मा सर्वादिर्गुणसागरः ।
समः समात्मा समगो जटामुकुटमण्डितः ॥ २९ ॥

अजयः सर्वभूतात्मा विष्वक्सेनो महातपाः ।
लोकाध्यक्षो महाबाहुरमृतो वेदवित्तमः ॥ ३० ॥

सहिष्णुः सद्गतिः शास्ता विश्वयोनिर्महाद्युतिः ।
अतीन्द्र अर्जितः प्रांशुरुपेन्द्रो वामनो बली ॥ ३१ ॥

धनुर्वेदविधाता च ब्रह्मा विष्णुश्च शंकरः ।
हंसो मरीचिर्गोविन्दो रत्नगर्भो महामतिः ॥ ३२ ॥

व्यासो वाचस्पतिः सर्वदर्पितासुरमर्दनः ।
जानकीवल्लभः पूज्यः प्रकटः प्रीतिवर्धनः ॥ ३३ ॥

संभवोऽतीन्द्रियो वैद्योऽनिर्देशो जांबवत्प्रभुः ।
दमनो मथनो व्यापी विश्वरूपी निरञ्जनः ॥ ३४ ॥

नारायणोऽग्रणीः साधुर्जटायुःप्रीतिवर्धनः ।।
नैकरूपो जगन्नाथः सुरकार्यहितः स्वभु. ॥ ३५ ॥

जितक्रोधो जितारातिः प्लवगाधिपराज्यदः ।
वसुदः सुभुजो नैकमायो भव्यप्रमोदनः ॥ ३६ ॥
चण्डांशुः सिद्धसंकल्पः शरणागतवत्सलः ।
अगदो रोगहर्ता च मन्त्रविन्मन्त्रभावनः ॥ ३७ ॥
सौमित्रिवत्सलो धुर्यो व्यक्ताव्यक्तस्वरूपधृक् ।
विशिष्टो ग्रामणीः श्रीमान् अनुकूलप्रियंवदः ॥ ३८ ॥
अतुलः सात्त्विको धीरः शरासनविशारदः ।
ज्येष्ठः सर्वगुणोपेतः शक्तिमांस्ताटकान्तकः ॥ ३९ ॥
वैकुण्ठः प्राणिनां प्राणः कमठः कमलापतिः ।
गोवर्धनधरो मत्स्यरूपः कारुण्यसागरः ॥ ४० ॥
कुम्भकर्णप्रभेत्ता च गोपीगोपालसंवृतः ।
मायावी स्वापनो व्यापी रैणुकेयबलापहः ॥ ४१ ॥
पिनाकमथनो वन्द्यः सम्मतो गरुड़ध्वजः ।
लोकत्रयाश्रयो लोकचरितो भरताग्रजः ॥ ४२ ॥
श्रीधरः सद्गतिर्लोकसाक्षी नारायणो बुधः ।
मनोवेगी मनोरूपी पूर्णः पुरुषपुङ्गवः ॥ ४३ ॥
यदुश्रेष्ठो यदुपतिर्भूतावासः सुविक्रमः ।
तेजोधरो धरोऽव्यग्रश्चतुर्मूर्तिर्महानिधिः ॥ ४४ ॥
चाणूरमर्दनो दिव्यः शान्तो भरतवंदितः ।
शब्दातिगो गभीरात्मा कोमलाङ्गः प्रजागरः ॥ ४५ ॥
लोकगर्भः शेषशायी क्षीराब्धिनिलयोऽमलः ।
आत्मयोनिरदीनात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ ४६ ॥
अमृतांशुर्महागर्भो निवृत्तविषयस्पृहः ।
त्रिकालज्ञो मुनिः साक्षी वैहायसगतिः कृती ॥ ४७ ॥

पर्जन्यः कुमुदो भूतावासः कमललोचनः ।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीरामो वीरहा लक्ष्मणाग्रजः ॥ ४८ ॥
लोकाभिरामो लोकारिमर्दनः सेवकप्रियः ।
सनातनतमो मेघश्यामलो राक्षसान्तकृत् ॥ ४९ ॥
दिव्यायुधधरः श्रीमानप्रमेयो जितेन्द्रियः ।
भूदेववन्द्यो जनकप्रियकृत्प्रपितामहः ॥ ५० ॥
उत्तमः सात्त्विकः सत्यः सत्यसंधस्त्रिविक्रमः ।
सुव्रतः सुलभः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुधीः ॥ ५१ ॥
दामोदरोऽच्युतः शार्ङ्गी वामनो मथुराधिपः ।
देवकीनन्दनः शौरिः शूरः कैटभमर्दनः ॥ ५२ ॥
सप्ततालप्रभेत्ता च मित्रवंश प्रवर्धनः ।
कालस्वरूपी कालात्मा कालः कल्याणदः कविः ॥ ५३ ॥
संवत्सरो ऋतुः पक्षः अयनो दिवसो युगः ।
स्तव्यो विविक्तो निर्लेपः सर्वव्यापी निराकुलः ॥ ५४ ॥
रसो रसज्ञः सारज्ञो लोकसारो रसात्मकः ।
सर्वदुःखातिगो विद्याराशिः परमगोचरः ॥ ५५ ॥
शेषो विशेषो विगतकल्मषो रघुनायकः ।
वर्णश्रेष्ठो वर्णवाह्यो वर्ण्यो वर्ण्य गुणोज्ज्वलः ॥ ५६ ॥
कर्मसाक्ष्यमरश्रेष्ठो देवासुरनमस्कृतः ।
देवादिदेवो देवर्षिर्देवासुरवरप्रदः ॥ ५७ ॥
सर्वदेवमयश्चक्री शार्ङ्गपाणिरनुत्तमः ।
मनोबुद्धिरहंकारः प्रकृतिः पुरुषोऽव्ययः ॥ ५८ ॥
अहल्यापावनः स्वामी पितृभक्तो वरप्रदः ।
न्यायो नयधरः श्रीमान्नयो नगधरो ध्रुवः ॥ ५९ ॥

लक्ष्मीविश्वम्भराभर्ता देवेन्द्रो बालीमर्दनः ।
बाणारिमर्दनो यज्वाऽनुत्तमो मुनिसेवितः ॥ ६० ॥

देवाग्रणीः परध्यानतत्परः परमः परः ।
सामगानप्रियोऽक्रूरः पुण्यकीर्तिः सुलोचनः ॥ ६१ ॥

पुण्यः पुण्याधिकः पूर्वः पूर्णः पूरयिता रविः ।
जटिलः कल्मषध्वान्तः प्रभञ्जनविभावसुः ॥ ६२ ॥

अव्यक्तलक्षणोऽव्यक्तो दशास्यद्विपकेसरी ।
कलानिधिः कलारूपो कमलानन्दवर्धनः ॥ ६३ ॥

जयो जरारिः सर्वाघशमनो भवभञ्जनः ।
अलङ्करिष्णुरचलो रोचिष्णुर्विक्रमोत्तमः ॥ ६४ ॥

अंशुः शब्दपतिः शब्दगोचरो रञ्जनो रघुः ।
निश्शब्दः प्रणवो माली स्थूलः सूक्ष्मो विचक्षणः ॥ ६५ ॥

आत्मयोनिरयोनिश्च सप्तजिह्वः सहस्रपात् ।
सनातनतमः स्रग्वी पेशलो जविनांवरः ॥ ६६ ॥

शक्तिमान् शङ्खभृन्नाथः गदापद्मरथाङ्गभृत् ।
निरीहो निर्विकल्पश्च चिद्रूपो जितसाध्वसः ॥ ६७ ॥

शताननः सहस्राक्षः शतमूर्तिघनप्रभः ।
हृत्पुण्डरीकशयनो कठिनो द्रव एव च ॥ ६८ ॥

उग्रो ग्रहपतिः कृष्णः समर्थोऽनर्थनाशनः ।
अधर्मशत्रुरक्षोघ्नः पुरुहूतः पुरुष्टुतः ॥ ६९ ॥

ब्रह्मगर्भो बृहद्गर्भो धर्मधेनुर्धनागमः ।
हिरण्यगर्भो ज्योतिष्मान् सुललाटः सुविक्रमः ॥ ७० ॥

पितृपूजारतश्चैव भवानीप्रियकृद्वशी ।
नरो नारायणो रामः कपर्दी नीललोहितः ॥ ७१ ॥

उग्रः पशुपतिः स्थाणुर्विश्वामित्रो द्विजेश्वरः ।
मातामहो मातरिश्वा विरिंचो विष्टरश्रवाः ॥ ७२ ॥
अक्षोभ्यः सर्वभूतानां चण्डः सर्वपराक्रमः ।
वालखिल्यो महाकल्पः कल्पवृक्षः कलाधरः ॥ ७३ ॥
निदाघस्तपनोऽमोघः श्लक्ष्णः परबलापहन् ।
कबन्धमथनो दिव्यः कम्बुग्रीवः शिवप्रियः ॥ ७४ ॥
शंखोऽनिलः सुनिष्पन्नः सुरभिः शिशिरात्मकः ।
असंस्पृष्टोऽतिथिः शूरः परधिः पापनाशकृत् ॥ ७५ ॥
वसुश्रवाः कव्यवाहो प्रतपा विश्वभोजनः ।
रामो नीलोत्पलश्यामो ज्ञानस्कन्धो महाद्युतिः ॥ ७६ ॥
पवित्रपादः पारपो मणिपूरो नभोगतिः ।
उत्तारणो दुष्कृतिहा दुर्धर्षो दुस्सहोऽभयः ॥ ७७ ॥
अमृतांशोऽमृतवपुर्धर्मश्चापि कृपाकरः ।
भर्गो विवस्वानादित्यो योगाचार्यो दिवस्पतिः ॥ ७८ ॥
उदारकीर्तिरुद्योगी वाङ्मयः सदसन्मयः ।
नक्षत्रमाली नाकेशः स्वाधिष्ठानः षड़ाश्रयः ॥ ७९ ॥
चतुर्वर्गफलो वर्गी शक्तित्रयफलं निधिः ।
निधानगर्भो निर्व्याजो गिरीशो व्याजमर्दनः ॥ ८० ॥
श्रीवल्लभः शिवारम्भः शान्तिर्भद्रः समञ्जसः ।
भूयशो भूतिकृद्भूतिः भूषणो भूतवाहनः ॥ ८१ ॥
अकायो भक्तकायस्थो कालज्ञानी महावटुः ।
परार्थवृत्तिरचलो विविक्तः श्रुतिसागरः ॥ ८२ ॥
स्वभावभद्रो मध्यस्थः संसारभयनाशनः ।
वेद्यो वैद्यो वियद्गोप्ता सर्वामरमुनीश्वरः ॥ ८३ ॥

सुरेन्द्रः करणं कर्म कर्मकृत्कर्म्यधोक्षजः ।
धैर्योऽग्रधुर्यो धात्रीशः संकल्पः शर्वरीपतिः ॥ ८४ ॥
परमार्थगुरुर्वृद्धः शुचिराश्रितवत्सलः ।
विष्णुर्जिष्णुर्विभुर्वन्द्यो यज्ञेशो यज्ञपालकः ॥ ८५ ॥
प्रभविष्णुर्ग्रसिष्णुश्च लोकात्मा लोकभावनः ।
केशवः केशिहा काव्यः कविः कारणकारणम् ॥ ८६ ॥

काव्यकर्ता कलाशेषो वासुदेवः पुरुष्टुतः ।
आदिकर्ता वराहश्च माधवो मधुसूदनः ॥ ८७ ॥
नारायणो नरो हंसो विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
विश्वकर्ता महायज्ञो ज्योतिष्मान् पुरुषोत्तमः ॥ ८८ ॥
वैकुण्ठः पुण्डरीकाक्षः कृष्णः सूर्यःसुरार्चितः ।
नारसिंहो महाभीमो वक्रदंष्ट्रो नखायुधः ॥ ८९ ॥

आदिदेवो जगत्कर्ता योगीशो गरुड़ध्वजः ।
गोविन्दो गोपतिर्गोप्ता भूपतिर्भुवनेश्वरः ॥ ९० ॥
पद्मनाभो हृशीकेशो धाता दामोदरः प्रभुः ।
त्रिविक्रमस्त्रिलोकेशो ब्रह्मेशः प्रीतिवर्धनः ॥ ९१ ॥

वामनो दुष्टदमनो गोविन्दो गोपवल्लभः ।
भक्तप्रियोऽच्युतः सत्यः सत्यकीर्तिर्धृतिः स्मृतिः ॥ ९२ ॥
कारुण्यं करुणो व्यासः पापहा शान्तिवर्धनः ।
संन्यासी शास्त्रतत्त्वज्ञो मन्दराद्रिनिकेतनः ॥ ९३ ॥

बदरीनिलयः शान्तस्तपस्वी वैद्युतप्रभः ।
भूतावासो गुहावासः श्रीनिवासः श्रियः पतिः ॥ ९४ ॥

तपोवासो मुद्रावासः सत्यावासः सनातनः ।
पुरुषः पुष्करः पुण्यः पुष्कराक्षो महेश्वरः ॥ ९५ ॥

पूर्णमूर्तिः पुराणज्ञः पुण्यदः पुण्यवर्धनः ।
शङ्खी चक्री गदी शार्ङ्गी लाङ्गली मुसली हली ॥ ९६ ॥
किरीटकुण्डली हारी मेखली कवची ध्वजी ।
योद्धा जेता महावीर्यः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ॥ ९७ ॥
शास्ता शास्त्रकरः शास्त्रं सततं शंकरस्तुतः ।
सारथिः सात्त्विकः स्वामी सामवेदप्रियः समः ॥ ९८ ॥
हवनः साहसः शक्तिः संपूर्णाङ्गः समृद्धिमान् ।
स्वर्गदः कामदः श्रीदः कीर्तिदोऽकीर्तिनाशनः ॥ ९९ ॥
मोक्षदः पुण्डरीकाक्षः क्षीराब्धिकृतकेतनः ।
सर्वात्मा सर्वलोकेशः प्रेरकः पापनाशनः ॥ १०० ॥
सर्वदेवो जगन्नाथः सर्वलोकमहेश्वरः ।
सर्गस्थित्यन्तकृद्देवः सर्वलोकसुखावहः ॥ १०१
अक्षय्यः शाश्वतोऽनन्तः क्षयवृद्धिविवर्जितः ।
निर्लेपो निर्गुणः सूक्ष्मो निर्विकारो निरञ्जनः ॥ १०२ ॥
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तः सत्तामात्रव्यवस्थितः ।
अधिकारी विभुर्नित्यः परमात्मा सनातनः ॥ १०३ ॥
अचलो निर्मलो व्यापी नित्यतृप्तो निराश्रयः ।
श्यामो युवा लोहिताक्षो दीप्तास्यो मितभाषणः ॥ १०४ ॥
आजानुबाहुः सुमुखः सिंहस्कन्धो महाभुजः ।
सत्यवान् गुणसम्पन्नः स्वयंतेजा सुदीप्तिमान् ॥ १०५ ॥
कालात्मा भगवान् कालः कालचक्रप्रवर्तकः ।
नारायणः परंज्योतिः परमात्मा सनातनः ॥ १०६ ॥
विश्वसृड् विश्वगोप्ता च विश्वभोक्ता च शाश्वतः ।
विश्वेश्वरो विश्वमूर्तिर्विश्वात्मा विश्वभावनः ॥ १०७ ॥
सर्वभूतसुहृच्छान्तः सर्वभूतानुकम्पनः ।
सर्वेश्वरेश्वरः सर्वः श्रीमानाश्रितवत्सलः ॥ १०८ ॥

सर्वगः सर्वभूतेशः सर्वभूताशयस्थितः ।
आभ्यन्तरस्य तमसश्छेत्ता नारायणः परः ॥ १०९ ॥
अनादिनिधनः स्रष्टा प्रजापतिपतिर्हरिः ।
नारसिंहो हृषीकेशः सर्वात्मा सर्वदृग्वशी ॥ ११० ॥
जगतस्तस्थुषश्चैव प्रभुर्नेता सनातनः ।
कर्ता धाता विधाता च सर्वेषां प्रभुरीश्वरः ॥ १११ ॥
सहस्रमूर्तिर्विश्वात्मा विष्णुर्विश्वदृगव्ययः ।
पुराणपुरुषः स्रष्टा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ ११२ ॥
तत्त्वं नारायणो विष्णुः वासुदेवः सनातनः ।
परमात्मा परंब्रह्म सच्चिदानन्दविग्रहः ॥ ११३ ॥
परंज्योति परंधाम पराकाशः परात्परः ।
अच्युतः पुरुषः कृष्णः शाश्वतः शिव ईश्वरः ॥ ११४ ॥
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरुग्रः साक्षी प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भः सविता लोककृल्लोकभृद्विभुः ॥ ११५ ॥
रामः श्रीमान् महाविष्णुः जिष्णुर्देवहितावहः ।
तत्त्वात्मा तारकब्रह्म शाश्वतः सर्वसिद्धिदः ॥ ११६ ॥
अकारवाच्यो भगवान् श्रीपतिर्भूपतिः पुमान् ।
सर्वलोकेश्वरः श्रीमान् सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ ११७ ॥
स्वामी सुशीलः सुलभः सर्वज्ञः सर्वशक्तिमान् ।
नित्यसम्पूर्णकामश्च नैसर्गिकसुहृत्सुखी ॥ ११८ ॥
कृपापीयूषजलधिः शरण्यः सर्वदेहिनाम् ।
नारायणश्च स्वामी च जगतां पतिरीश्वरः ॥ ११९ ॥
श्रीशः शरण्यो भूतानां संश्रिताभीष्टदायकः ।
अनन्तः श्रीपती रामो गुणभृन्निर्गुणो महान् ॥ १२० ॥

इति श्रीराम-सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

परिशिष्ट

पुस्तक के प्रारम्भ के कई अध्याय छप जाने के अनन्तर श्रीश्रीमाँ के श्रीमुख से और भी कई संगीत सुनने का सौभाग्य हमें हुआ था। हमारे लिए वह अमूल्य वस्तु है। इस कारण वे संगीत यहाँ जोड़ दिये गये हैं।

—प्रकाशक

(१)

जय गुरुदेव जय गुरुदेव
जय गुरुदेव जय गुरुदेव
अपराध क्षमा करो।
भूले हुए को सुधारो।
सुधारो सुधारो सुधारो।
भूले हुए को सुधारो------
हे भगवान हे भगवान हे भगवान हे भगवान
हे भगवान हे भगवान हे भगवान हे भगवान
ज्वाला निवारो (हे प्रिय)
हे प्रिय हे प्रिय हे प्रिय।
अपराध क्षमा करो।
भूले हुए को सुधारो--------
हे भगवान क्षमा करो
हे भगवान कृपा करो
दया करो दया करो दया करो।
अपराध क्षमा करो
भूले हुए को सुधारो*-----------------

* सत्संग के भीतर एक महात्मा से किसी के प्रश्न करने पर माँ को ये पद ख्याल में आये थे। बाद में माँ उन्हें मिला-मिला कर गा रही थीं।

(२)

हरि भजन बिना सुख नाहिं नाहिं रे,

हरि भजन करो मन प्यारे।

हरि हरि भजो मन प्यारे—

हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल

मन प्यारे।

हरिबोल हरिबोल हरिबोल हरिबोल

हरिबोल हरिबोल मन प्यारे।

कृष्ण भजन करो, राम भजन करो,

शिव भजन करो, मन प्यारे—

माँ भजन करो, दुर्गा भजन करो,

काली भजन करो मन प्यारे।

हरि भजन करो, हरि भजन करो,

हरि भजन करो, मन प्यारे।

हरि भजन बिना सुख नाहिं नाहिं रे················*

* सूक्ष्ममें माँ ने ब्रह्मचारी विभुको ये पद गाते सुना था। बाद में उन्हें ही माँ ने मिला दिया था।

(३)

प्रेम की पुतलिया तुम भजन करो हृद।
प्राण की पुतलिया तुम भजन करो हृद।
चाम की पुतलिया तुम भजन करो हृद।
हृदय की पुतलिया तुम भजन करो हृद।

पश्न— कौन तुम्हारी बहन भानजी, कौन तुम्हारी माता ?
कौन तुम्हारे संग चलेगा, कौन बने गुरुमाता ?

उत्तर—गंगा हमारी बहन भानजी, नदी हमारी माता।
पुण्य हमारे संग चलेगा, धर्म बने गुरुमाता।

प्रश्न— कौन तुम्हारा देवर लगता, कौन तुम्हारा जेठ ?
कौन तुम्हारी ननद लगती है, चमके चारों देश ?

उत्तर—चन्द्र मेरा देवर लगता है, सूरज मेरा जेठ।
बिजली मेरी ननद लगती है, चमके चारों देश।

प्रश्न— कौन तुम्हारा सखा लगता है, कौन तुम्हारा साथी ?
कौन तुम्हारा परम पिता है, कौन तुम्हारा पति ?

उत्तर—सत्य मेरा सखा लगता है, धीरज मेरा साथी।
पिता मेरा जगत् पिता है, आत्मा मेरा पति।

प्रेम की पुतलिया तुम भजन करो हृद······

संगीतों तथा स्तुतियों की सूची

———